रेडियो नाटक संग्रह

(भाग-2)

सम्पादन
रमेश नरायण तिवारि
फकीर चन्द

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मन्त्रालय
भारत सरकार

फाल्गुन 1908 ● मार्च 1987

प्रकाशन विभाग

मूल्य 35 00

निदेशक प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, पटियाला हाउस, नई दिल्ली–110001 द्वारा प्रकाशित ।

विक्रय केन्द्र ● प्रकाशन विभाग

● सुपर बाजार (दूसरी मंजिल), कनाट सर्कस, नई दिल्ली–110001
● कामर्स हाउस, करीमभाई रोड बालार्ड पायर बम्बई–400038
● 8, एस्प्लेनेड ईस्ट, कलकत्ता–700069
● एल० एल० ऑडीटोरियम, 736 अन्ना सलै, मद्रास–600002
● बिहार राज्य सहकारी बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ पटना–800004
● निकट गवर्नमेंट प्रेस, प्रेस रोड, त्रिवेन्द्रम–695001
● 10-बी, स्टेशन रोड, लखनऊ–226019
● राज्य पुरातत्त्वीय संग्रहालय बिल्डिंग, पब्लिक गार्डन, हैदराबाद–500004

प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित ।

प्रस्तावना

आकाशवाणी से प्रसारित नाटकों का यह एक नया संकलन पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। इससे पूर्व जब प्रकाशन विभाग ने रेडियो नाटकों का प्रथम संकलन प्रकाशित किया था, तब भी हमारा मूल आकांक्षा यही थी कि श्रव्य-विधा के जो नाटक नाट्य-साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं, उन्हें मुद्रित रूप मे भी प्रस्तुत किया जा सके।

इस संकलन मे 1972 और 1979 की अवधि मे आकाशवाणी से प्रसारित उन सभी महत्वपूर्ण रेडियो नाटकों को संगृहीत करने का प्रयास किया गया है जो विषय-वस्तु और शिल्प, दोनों ही दृष्टियों से उल्लेखनीय हैं। ये नाटक क्षेत्रीय संस्कृति और वहां के निवासियों की मनोभावनाओं, आकांक्षाओं और संघर्षों का प्रतिबिम्बित करते हैं।

इस संग्रह में कहानी और उपन्यासों के रेडियो-नाट्य-रूपान्तरों के साथ-साथ मूलतः रेडियो के लिए लिखे गये नाटक भी संकलित हैं। इस संदर्भ में उल्लेखनीय नाटक है 'सेप्टोपस की भूख' जिसे अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त फिल्म निर्देशक सत्यजित राय ने विशेषतः रेडियो के लिए लिखा है।

परिवार कल्याण की ज्वलन्त और महत्वपूर्ण समस्या पर लिखा गया एक संवेदनशील नाटक 'शोर और संगीत' भी इस संकलन मे है, जो इस बात का प्रमाण है कि रेडियो नाटक बिना शोर मचाये भी अपना संदेश लाखों-करोड़ों श्रोताओं तक पहुंचा सकता है।

सम्पादक

अनुक्रम

कोलाहल

[प्रारम्भिक सगीत। मेज पर चाय के प्याले-प्लेट और चम्मच की आवाज़--फिर कुर्सी के खिसकने की ध्वनि]

नमिता — क्या हुआ, मा ?

मा — (दूर जाते हुए) कुछ भी तो नही ।

नमिता — चाय क्या नही पी ?

मा — (दूर से) पीने की इच्छा नही है ।

नमिता — क्यो ?

मा — आह, नमिता, तू ता [illegible] !

नमिता — नही मा, मैं जानना चाहती हू कि क्यो चाय पीने की इच्छा नही है ?

मा — यो ही ।

नमिता — यो ही ? यो ही पीने की इच्छा नही है ? पिताजी ने चाय नही पी, तुम्हे भी इच्छा नही है। आखिर हुआ क्या ? आज फिर झगडा हुआ ?

मा — अरी, तू क्यों झगडे की चर्चा [illegible] है ! झगडा होता तो अच्छा होता। [illegible] ! झगडा [illegible] हू इसीलिए तो घर का काम-काज चलता है। झगडा करती हू, इसीलिए तो घर [illegible] है। चाय मिल जाती है। अब तो लडाई-झगडा सब [illegible] गया सब खत्म हो गया। (कहती-कहती दूर चली जाती है)

नमिता — आखिर क्या हुआ, मा ? [illegible] ।

मा — (दूर से) अपने पिताजी से ही पूछ ता (चली जाती है)

नमिता — (कुछ देर बाद) पिताजी, आप ही बताइए। [illegible] है ? [illegible] चुप क्यो है ? मेरे सामने कहने [illegible] बात [illegible] है [illegible] !

पिता — हू !

नमिता — बताइए न पिताजी ? आखिर हुआ क्या ? क्या मुझे मालूम नहीं होना चाहिए ?

पिता — क्या मालूम नहीं होना चाहिए । मालूम न होने से कब तक चलेगा ? और ये तो छिपाने लायक बात भी नहीं है । लेकिन बेटी, अभी सुनने में अच्छी लगेगी क्या ?

नमिता — उफ ! घुमा फिराकर आप लोग क्यों समय बर्बाद कर रहे हैं ? साफ-साफ बताइए न कि

पिता — अच्छा, तो नमिता, सुनो ! मैं साफ-साफ बताए देता हूं । हमारे दफ्तर में कुछ पैसे का गोलमाल हुआ है । काफी रुपया गबन हुआ है । उस गबन के लिए मुझे ही जिम्मेदार ठहराया गया ।

नमिता — (चौंक कर) क्या मतलब ?

पिता — मतलब यह कि गबन का वह जुर्म मुझ पर थोप दिया गया है ।

नमिता — थोप दिया गया है या सचमुच ही आपने कुछ किया है ?

पिता — हां, मैंने सचमुच गबन किया है ! मगर लोग सोच भी नहीं पा रहे हैं कि मैंने ही यह जुर्म किया ।

नमिता — बात कैसे निकली ? कोई इन्क्वायरी हुई ?

पिता — बहुत दिनों से इन्क्वायरी चल रही थी । अब इन्क्वायरी करीब-करीब खत्म हो गई है ।

नमिता — अब क्या होगा ?

पिता — हूं !

नमिता — बताइए न, पिताजी, अब क्या होगा ?

पिता — क्या होगा, ठीक-ठीक पता नहीं सकता । जहां तक मैं जानता हूं अब वे मुझे तुरंत सस्पेंड करेंगे । उसके बाद पता नहीं, मेरा केस पुलिस के हवाले किया जाता है या

नमिता — कितने रुपयों का गोलमाल है ?

पिता इन्क्वायरी मे तो गोलमाल करीब पचास हजार रुपया का मिला है । किन्तु तेरे सामने झूठ बोलने का कोई फायदा नही । मैं मानता हू कि गोलमाल सत्तर हजार रुपयो का है ।

(दूर कहीं गोली चलने की आवाज । कौओ का कोलाहल)

पिता क्या है ?

नमिता लगता है, बाहर किसी ने कौओ और चिड़िया पर गोली चलाई है । वह बाहर पड़े है न ।

(कौओं का कोलाहल धीरे धीरे बन्द होता है)

मा (आते हुए) नमिता ? क्या यह गबन की खबर अखबारो में छपेगी ?

नमिता पता नही ।

पिता छपनी तो चाहिए । शायद छपेगी ।

मा ओह, उस खबर से हमारी कितनी बदनामी होगी । शर्म के मारे किसी को मुह दिखाना मुश्किल होगा । सुनो! यह मामला कब शुरू हुआ ?

नमिता हा, पिताजी, जरा बताइए तो

पिता हू ! दिन और तिथि ठीक से याद नही है । और ऐसा काम कब, किस दिन आरम्भ होता है, यह कोई नहीं बता सकता, नमिता । कुछ दिनो मे मैं भी मन ही-मन यही बात सोच रहा था । और सोचने पर मुझे लगा कि यह एक ऐसा कुर्ता है, जिसे धोबी ने धोया, फिर गन्दा हो गया । किस समय से कुर्ता गन्दा होने लगता है किसी को पता नहीं । सिर्फ एक दिन घोषित किया जाता है कि कुर्ता गन्दा हो गया है । कुर्ते का गन्दा होना इस बात पर निर्भर है कि चारो तरफ कितना धुआ, धूल और गन्दगी है । लो फिर वे कौए !

(दूर कौओ की काव काव सुनाई देती है)

मा कौओ को मारो गोली । मैं पूछती हू, तुमने यह गबन की बात हमें पहले क्या नही बताई ? और और उन सारे रुपया का तुमने क्या किया ?

पिता उन रुपयो का मैंने क्या किया ? अरे भई खर्च ! किये । यहा घर के अन्दर जो कुछ है, उसी से पता चल सकता है कि कितना खर्च किया

मां — बात को उलझाओ नहीं । हम साफ-साफ बताओ । हाय ! पहले से अगर मुझे मालूम होता, तो तुम्हें शक्ती और यहां तक नौबत न आने देता । तुम्हारे गन्दे पैसों के बिना भी घर का काम चल सकता था । आह ! अब सारे घर के बदनामी का ढिंढोरा पिटेगा ।

पिता — तो क्या, इस जुर्म के लिए मैं, जिम्मेदार हूं तुम घर वाले नहीं ? ठीक है कसूर मेरा ही है इसलिए सिर्फ मेरी ही बदनामी होनी चाहिए, क्यों ? ठीक है न ? जिस दिन अखबार में गबन की खबर छपेगी उस दिन ही मैं एक विज्ञापन दे दूंगा कि इस जुर्म के लिए मेरी पत्नी जिम्मेदार नहीं है ।

मां — मेरा मतलब यह तो नहीं कि

पिता — **(अचानक गरज कर)** अरे याद है तनख्वाह मिलते ही घर लाया करता था । कितने ? सात सौ रुपये । और तुम्हारे हिसाब के अनुसार घर का खाने पीने का खर्च कितना था ? एक हजार रुपये । यह सब जानते हुए भी याद है तुम क्या कहती रहती थी

(फ्लश बैक—बच्चे का क्रन्दन)

मां — **(बच्चे को मारकर)** अरे चुप रह नासपीटे ! मैं अकेली जान तुझे संभालूं या घर का काम करूं ? इसी तरह कटते हुए जीवन खत्म होगा । बच्चे हमारे घर में हैं हैं क्या ? और बच्चों के माए तो जहां जी चाहे जाती हैं, मौज सपाटा करती हैं । सिर्फ मैं ही इस घर में बांदी की तरह कैद हूं । और इससे तो बेहतर है दूसरों के घर में नौकरानी बनना । **(बच्चे से)** अरे चुप होता है या लगाऊं एक और झापड़ !

घर में एक नौकर होता तो

(रोना बन्द । फ्लैश बैक समाप्त)

पिता — और फिर घर में नौकर रखा गया । और अब ठाठ करो ।

(फ्लश बैक)

मां — ओह ! मैं रोज इस तरह दूसरों के घर से बर्फ मंगवा कर तुम लोगों को शर्बत नहीं पिला सकती । या तो तुम्हारे पिताजी घर

मे अपना फ्रिज लाने का इन्तजाम करे, और या बर्फ से ठण्डा शर्बत पीने की आदत छोड दें । अजी सुन रहे हो !

(फ्लैश समाप्त)

पिता — और फिर घर मे अपना फ्रिज आ गया, और अब याद करो अपनी वह बात ।

(फ्लैश बैक)

मां — मैं कहती हूं, अन्दर के कमरो का फ्लोर चाहे जैसा भी हो, लेकिन बरामदे का फ्लोर तो आखो को अच्छा लगने वाला होना चाहिए। मीरा मौसी का बाथरूम कितना बढ़िया है। फ्लोर मोज़ेक का, और दीवारें सिर के ऊपर तक संगमरमर की और शावर

(फ्लैश बैक समाप्त)

पिता — और पूरा मकान मोज़ेक, संगमरमर और टाइलों से सज गया । और अब याद करो

(फ्लैश बैक)

मां — कुछ जरूरी बातें तो सगे सम्बन्धियो और साथियो से करनी ही पड़ती हैं । रोज रोज पड़ौसियो के घर जाकर फोन करना भी अच्छा नही लगता । ऊपर से वो पड़ौसी कुछ नही कहते, लेकिन मन मे जरूर कुढते हैं कि चले आते हैं रोज फोन करने । काल के पैसे देने पर भी मुह बनाते हैं । इसलिए सोच रही हू कि अपने घर म जब तक फोन नही लग जाता, तब तक किसी से बात करना ही छोड दूंगी । पता नही क्या बात है, वेटिंग लिस्ट में हमारा नाम बस, सबसे नीचे ही चला आ रहा है । हू !

(टेलीफोन की घण्टी— फ्लश बक समाप्त)

पिता — और फिर घर में टेलीफोन भी आ गया । और अब याद करो

(टेलीफोन की घण्टी की आवाज)

मां — हैलो ! हा, मैं बोल रही हू पता लगाया ? कार की कण्डीशन कैसी है ? अरे भई ! हमे तो शहर के भीतर जरा घूमने के लिए ही चाहिए । किसी लाग जर्नी पर तो जाना नही पडता । पुरानी ही चलेगी । दाम के बारे मे कुछ कहा ? मैं इन्हें सामवार तक खबर

करने की वह्रगी। हा भाई, रोज-रोज बस के लिए इन्तजार करना पड़ता है। कौन दूसरा राज अपनी कार मे लिफ्ट देता है। कार अपनी हो, तो आराम भी और समय की बचत भी। हा, कार तो नेसेसिटी है, नेसेसिटी

(कार के हार्न के साथ फ्लैश समाप्त)

पिता — और फिर दरवाजे पर अपनी कार भी आ गई। और अब याद करो।

(फ्लैश बैक)

मां — अरे! अपने नसीब मे कहा, कि औरो की तरह खुद अपना पैसा खर्च करके जगह-जगह की सैर करें, घूमें फिरें। लोग कश्मीर जाते है, बैंगलोर और कन्याकुमारी जाते है। उसके लिए कम से कम तीन चार हजार गाठ मे होने चाहिए। लेकिन हम जायें तो सरकारी गेस्ट हाउस फ्री मिल जायगा और रेल का कन्सेशन भी मिल जायेगा। अगर हिसाब करे, तो हमारे परिवार के एक व्यक्ति पर हजार-ग्यारह सौ से ज्यादा खर्च नही होगा। हा, अगर कश्मीर जायेंगे तो, थोड़ी-बहुत शापिंग करनी ही पड़ेगी। लेकिन जैसा कि सुना है वह भी दो-तीन हजार से क्या ज्यादा होगी। लेकिन, यह सब अपने नसीब मे कहा? मुझे तो सारी जिन्दगी इसी घर मे कैद रहना

(रेल की सीटी के साथ फ्लैश समाप्त)

पिता — और फिर हम हर साल दूर दूर सैर को जाने लगे। अब लड़के की पढाई का मामला भी याद करो।

(फ्लैश बैक)

मां — (गुस्से मे) कान खोल कर सुन लो, मैं अपने इकलौते लड़के की जिंदगी इस तरह बर्बाद नही होने दूंगी। यहा खाक पढाई होती है। और यहा जिन लड़को की उसे सगत मिल रही है, वह तो उसका सत्यानाश कर देंगे। हा, मैंने साफ-साफ बता दिया। नमिता लड़की है। वह घर मे रह कर जितना चाहे, जैसा चाहे पढे। लेकिन, लड़के की बात अलग है। तीन साल बम्बई मे रहकर पढने से वह अच्छा नाम कमायेगा।

आप जरा सोचिए तो। वह लन्दन-अमरीका जाने की बात तो नहीं कर रहा है। बम्बई ही जाना चाहता है।

(हवाई जहाज की आवाज के साथ फ्लैश समाप्त)

पिता — याद आया न ? कब कब कितनी बार तुमने यह सब कहा। याद है न ? यदि यह सब याद है, तो यह क्या पूछती हो कि मैं कब से दफ्तर मे पैसे का गोलमाल कर रहा हू ? यह सवाल तुमने बाथरूम व कमरो के मोजेक और सगमरमर लगवाते समय क्यो नही पूछा ?

नमिता — पिताजी, जरा चुप तो रहिए !

पिता — लडके ने बम्बई मे तीन साल की पढाई पाच साल में पूरी की। उसे हर महीने मे जब तीन-सौ रुपये मनीआडर भेजता था, तब क्या न पूछा कि रुपया कहा से आ रहा है ?

नमिता — जरा चुप हो जाइए न, पिताजी !

पिता — यह कीमती कश्मीरी कार्पेट खरीदते समय क्या नहीं पूछा कि

नमिता — (गुस्से से) पिताजी, मैं कहती हू, जरा चुप हो जाइए ! आपकी ये बातें

पिता — हा, मेरी ये बातें कार मे फर्राटे से सैर करने जैसी तो नही, लेकिन

मा — लेकिन, ये बातें आज

नमिता — मा, तुम जरा दूसरे कमरे म चली जाओ।

मा — मैंने यहा रानी बन कर राजमहल का सुख तो नही भोगा। मैके मे मेरा जसा पालन-पोषण हुआ था, जैसे जीवन की मैं वहा आदी थी, मैंने वैसा ही जीवन यहा जीना चाहा, तो क्या बुराई की। जिन लोगो में उठती-बैठती हू, मैंने अगर उनके जैसे रहन-सहन की इच्छा की तो क्या बुराई की ? अगर इतना-सा सुख आराम चाहना भी अपराध है, तो

पिता — कौन सुख-आराम नहीं चाहता ? लेकिन, सवाल यह है कि तुम किस हैसियत के आदमी के सुख-आराम की बराबरी करना चाहती थी ! मेरी तनख्वाह सिर्फ हजार रुपये है। तुम

आठ-सौ रुपया की तनख्वाह वाले आदमी के सुख जैसा सुख चाह सकती थी । आखिर वह भी तो कम आमदनी में भी सुख महसूस करता है । लेकिन नहीं, तुम्हारी नजर तो अठारह-सौ रुपया की हैसियत वाले आदमी के सुख की ओर थी। नतीजा क्या निकला ? मुझ जैसे हजार रुपयों की हैसियत वाले आदमी ने दफ्तर में छल-कपट करके अठारह-सौ रुपया की हैसियत वाला बनने की कोशिश की और

मां — ये बातें अब तक पेट में क्या छिपा रखी थी ?

पिता — सोचता था कि जैसे लोग पत्थर भी हजम कर लेते हैं, मैं भी इन्हें पचा लूगा ।

मां — लेकिन मैं पूछती हू

नमिता — मा, अब बहस करने से कोई फायदा नही । तुम जरा देर बाहर चली जाओ । (कड़ाई से) जाओ !

मा — जाती हू । पचास हजार रुपये सिर्फ मेरे ही पेट मे नही गये । क्या सिर्फ मेरा ही भेजा ठण्डा करने के लिए यह फ्रिज लाया गया था ? क्या इस कश्मीरी कार्पेट पर सिर्फ मेरे ही पाव पड़ते है ? लेकिन दोष मेरे ही माथे मढा जा रहा है

(कहती हुई चली जाती है)

पिता — (जोर से) अरे, दोष तुम्हारा नही, मेरा ही है ! मैं किसी के माथे यह दोष नहीं मढूगा । मैं ही अपनी करनी का फल भुगतूगा ।

नमिता — पिताजी !

पिता — बेटा, मैं एक मामूली आदमी था और और मन से दुर्बल भी था । आज भी दुर्बल हूं, कमजोर हू । कभी मैं सोचता था कि मैं तुम्हारी मा के प्रति अपनी जिम्मेदारी पूरी तरह निभा नहीं पा रहा, मन में वह जिस सुख आराम की आदी थी, वह सुख-आराम उसे दे नहीं पा रहा, सो मैंने मैंने समझ गई न, नमिता ? (अपने आप बड़बड़ाते हुए) लालच बुरी बला है । धीरे धीरे बढ़ना ही जाता है । उसके साथ जरूरतें भी बढ़ती

जाती है। तब यह चिंता नहीं रहती कि रुपये कहाँ से, कैसे आ रहे हैं

(तभी टेलीफोन की घण्टी बजती है)

नमिता — ठहरिए, टेलीफोन मैं सुनती हूँ। (फोन पर) हैलो, जी

माँ — (जल्दी से आकर) किसका फोन है?

नमिता — पिताजी, फोन पर आपके मित्र शर्मा जी हैं।

पिता — (फोन पर) क्या? खबर प्रेस को मिल गई है? अच्छा! ठीक है!

माँ — हाय, सत्यानाश हो गया! कल अखबारों में खबर छपेगी, तो हम मुँह दिखाने लायक नहीं रहेंगे।

नमिता — माँ, चुप हो जाओ! यों शोर न मचाओ! पिताजी, मैं अभी जाकर भैया को तार देती हूँ उन्हें फौरन यहाँ पहुँचना चाहिए अब वही कुछ कर सकते हैं

(अंतराल संगीत)

(फोन पर घण्टी बजती है)

नमिता — (रिसीवर उठाकर) हैलो! कौन नन्दन? हाँ, हाँ, हाँ, मैं नमिता बोल रही हूँ मैं तुम्हारे फोन का इंतजार कर रही थी। हाँ समझ गई तुमने यह खबर अखबार में पढ़ी होगी क्या? कुछ कहा नहीं जा सकता क्या? पिताजी इन्कार नहीं करते हाँ चर्चा तो हो ही रही है मुझे यह सब अच्छा नहीं लग रहा बाहर निकलने को भी जी नहीं चाहता। क्या? नहीं, नन्दन, अभी तुम हमारे घर न आना क्या? हाँ, भैया को तार दिया था, वे कल रात आ गये नन्दन, मैं बहुत परेशान हूँ तुम ही कुछ सोचो नन्दन, तुमसे बात करके मुझे बहुत सहारा मिला है देखूँ, भैया क्या सोचते हैं अच्छा, बाई-बाई!

(अंतराल संगीत। मेज पर चाय के बर्तन आदि की आवाज)

नमिता — भैया, चाय के साथ कुछ लोगे?

भैया — नहीं।

[library stamp, partly illegible]

नमिता भाभी को साथ क्या नही लाये ?

भैया क्या जरूरत थी लाने की ।

नमिता यह खबर सुनकर भाभी क्या कह रही थी ?

भैया वह क्या कहेगी ? करतूत तो मेरे बाप की है। सब के मुह पर कालिख पुत गई ।

नमिता वह सब तो ठीक है, लेकिन आते ही तुम जिस तरह पिताजी पर बरस पडे, वह ठीक नही था ।

भैया क्यो ठीक नही था, नमिता ? उन्होने हम सब को कही मुह दिखाने लायक नही रखा। मैं जानना चाहता हूँ कि इतना पैसा

नमिता देखो भैया ! जो हो गया सो हो गया। अब इस मुसीबत का कोई हल सोचो, उपाय सोचो। पिताजी जो इस हालत को पहुचे है उसके लिए थोडे बहुत तुम भी तो जिम्मेदार हो ।

भैया वाह ! मैं कैसे जिम्मेदार हुआ ?

नमिता पिताजी ने वह पैसा जुए मे तो नही गवाया ।

भैया तो क्या मेरे नाम बैंक मे जमा कराया ?

नमिता बैंक मे न जमा कराया हो, लेकिन तुम पर खर्च तो हुआ ।

भैया मुझ पर कैसे खर्च हुआ ?

नमिता भैया, यह क्या कह रहे हो ? सब भूल गये ?

भैया (सव्यग्य) नही, भूला नही। पिताजी ने मुझे पढाई के लिए पैसा दिया था, कपडे खरीदने के लिए पैसा दिया था, रोटी खाने के लिए पैसा दिया था दूध पीने के लिए पैसा दिया था, और जब मैं बच्चा था, तो दूध की बोतल और खिलौनो के लिए पैसा दिया था और अन्नप्राशन, मुण्डन-सस्कार के लिए भी पैसा दिया था। इसके लिए कौन जिम्मेदार है ? अगर पिताजी मुझे पैदा न करते, तो उन्हें मुझे इतना पैसा देना न पडता ।

नमिता चुप हो जाओ, भैया। अपने बाप के बारे मे ऐसी बातें तो गन्दी बस्ती का कोई लुच्चा लफगा शराब पीकर भी नही करेगा ।

भया (गुस्से मे) जबान सभाल कर बात करो, नमिता ।

नमिता कैसे जबान सभालू ? तुम्हारे लिए पिताजी ने जो कुछ किया

भैया पिताजी ने मेरे लिए जो कुछ किया, वह मुझ पर कोई एहसान नही किया । बाप होने के नाते मेरे पालन-पोषण पर खर्च करने का उनका जो फर्ज था, वह उन्होंने पूरा किया । मुझे कोई कर्ज नही दिया था कि आज मैं उन्हें लौटा दू ।

नमिता छि, छि ! लोग तुम्हारे बारे मे जो कहते थे, उस पर पहले मैं यकीन नही करती थी । आज पिताजी के प्रति तुम्हारा रुख अपनी आखो से देख कर पता चला कि

भया अब पता चल गया न ? (उत्तेजित होकर) तो कहना, अब बताओ मेरा क्या कर्तव्य है ? पिताजी ने पचास हजार का जो गबन किया, उसे लौटाकर मैं घर की लाज बचाऊ ? लेकिन, मेरे पास इतने रुपये नही । उनके दफ्तर जाकर गबन के मामले को खुदबुद करा दू ? मै ऐसा भ्रष्ट काम नही करूगा । वकील खडा करके कोर्ट कचहरी मे मुकदमा लडू ? यह काम तो खुद तुम अच्छी तरह कर सकती हो, पिताजी भी कर सकते है । अब मेरे करने को क्या रह गया ?

नमिता कुछ भी नही । तुम अभी जब अपनी वकालत कर रहे थे, तो मैंने सब कुछ सोच समझ लिया । यह पता चल गया कि तुम पिताजी को बचाने के लिए न कुछ कर सकते हो, न कुछ करना चाहते हो, लेकिन मैं तुम्हे इसके लिए कभी क्षमा नहीं करूगा ?

भया तो क्या तुम मुझे सजा दोगी, मुझे फासी पर लटका दोगी ?

नमिता कौन किसे सजा दे सकता है ? यह भी पता नही कि पिताजी को कौन सजा दे रहा है ? भैया, अब मै तुमसे और कुछ नही कहूगी । तुम हमे हमारे हाल पर छोडकर चले जाओ, फौरन चले जाओ । भाभी को यहा भेजने का कष्ट न करना । उस जगह यहा के अखबार नही पहुचते । वहा किसी को न पिताजी का नाम मालूम होगा और न ही तुम्हारा उनसे रिश्ता नाता । पिताजी के कारण वहा तुम्हारी कोई बदनामी नही होगी ।

भैया — बड़ी बढ़ चढ़कर बातें बनाने लगी है, तू ! लेकिन मैं पूछता हूं, तुझे अचानक घर की इज्जत की चिन्ता क्या होने लगी ?

नमिता — (व्यंग से) चिंता कैसी ? पिताजी जेल जायेंगे। उसकी भी भला क्या चिंता ? भैया, तुम निश्चिन्त होकर जाओ। ऐसी गड़बड़ में यहां भाभी को हर्गिज न भेजना। जब घर में कोई उत्सव या खुशी का मौका होगा तब मैं खबर कर दूंगी

भैया — तू अपनी भाभी को क्यों कोस रही है ? उसने तेरा क्या बिगाड़ा है।

नमिता — भाभी ने क्या नहीं बिगाड़ा है ? तुम्हें आज जो घर की इज्जत की परवाह नहीं, बाप की इज्जत की परवाह नहीं, यह उसी की करतूत है।

भैया — जरा सोच, जिस घर की इज्जत की तू रट लगाये हुए है, उसके लिए तूने क्या किया ?

नमिता — मैंने क्या किया ?

भैया — मैं जब भी कभी यहां आया, शहर भर में मैंने तेरे किस्से सुने। क्या तब यह घर बदनाम नहीं होता था।

नमिता — पहले तो कभी तुमने ऐसे किस्सों की बात नहीं कही।

भैया — अपनी बहन के बारे में ऐसी बात मुंह से कैसे निकलती ?

नमिता — यह क्यों नहीं कहते कि तुममें हिम्मत नहीं थी।

भैया — कैसी हिम्मत ?

नमिता — बहन की बदनामी की बात करने की हिम्मत, बहन का लेकर अपनी करतूतें बखानने की हिम्मत। खैर, अब जब तुमने मेरे किस्सों की बात छेड़ ही दी है, तो मैं भी साफ-साफ कहे देती हूं। मक्कारदानी में लुक छिप कर कुछ प्रेम करने के बजाय खुले खजाने चिल्ला कर कहना बेहतर है। मेरी उम्र 24 साल की हो गयी है। एम० ए० पास करके मैं बेकार घर बैठी हूं। मेरे लिए मां कभी-कभी दुखी होती हैं परन्तु पिताजी हमेशा दुखी रहते हैं। शहर में सिर्फ एक ही व्यक्ति है, जिससे मेरा मेल-जोल है उसका नाम है नन्दन मजूमदार। मैं उसे अच्छा आदमी समझती

हूँ। हमारे बीच समझौता हो चुका है और भविष्य के बारे में भी बात तय हो चुकी है।

भैया तो तुम अपने भविष्य की ही चिंता कर रही हो, इस घर के भविष्य की नहीं।

नमिता क्या मतलब ?

भैया मैं जब भी यहाँ घर में आया, तो यही सुना कि नमिता के लिए जेवरों का सेट बनवाया गया है, नमिता के लिए सिलाई की मशीन खरीदी गयी है, ये-ये कपड़े खरीदे गये हैं ये-ये सामान लाया गया है। घर की हालत की परवाह न करके अपने दहेज पर इतना खर्चा कराना क्या

नमिता (गुस्से में) अच्छा ! तो अभी बताती हूँ।

(जोर से दरवाजा पीटने, अलमारी खोलने और चीजें फेंकने की आवाज)

नमिता यह लो मेरे दहेज के कपड़े, बर्तन

माँ (जल्दी से आकर) अरी नमिता! यह क्या कर रही है। अलमारी से कपड़े और बर्तन निकाल निकाल कर बाहर क्या फेंक रही है?

(भारी भरकम चीजें गिरने की आवाज)

नमिता यह लो सिलाई की मशीन, यह रेडियो सेट, यह जेवरों का सेट

माँ (उसे रोकते हुए) अरी ! पागल हो गई है क्या ? सब कुछ तोड़-फोड़ रही है।

नमिता और भैया, उधर उस कमरे में फर्नीचर रखा है। मुझे अपने माता पिता की सौगंध है, जो मैं उस फर्नीचर को कभी छूकर भी देखूँ ? और और अब यह भी सुन लो मैं इस घर को हमेशा हमेशा के लिए छोड़कर चली जाऊँगी।

माँ नमिता ! यह क्या बक रही है ? आ मेरे साथ !

नमिता ठहरो, माँ ! आज अपने इस भाई से आखिरी बार बात कर लूँ। भैया ! अगर तुम में जरा भी शर्म-हया है तो इस मकान में अपने

ये मनहूस व्यवस्था वर्मा। ग ग्यना मैं ग्र, मकान और जमान जाप शाद रा। बेचकर पिताजी। ना मेन न्गृग। पिताजी का बचाऊगा,, गन्ना मजदूरी करने मैं अपन बूढ़ मा गाप का देखभाल करूगा, सेवा करूगा। तुम्हारा। मन्द नहा चाहिए, नहीं चाहिए।

मां बेटा, बेटा !

(नमिता रोती चिल्लाती दूर जाती है और साथ ही मां भी। दोनों के शोर मे कौओं का शोर भी शामिल हो जाता है)

पिता **(आते हुए)** तो ! पड पर फिर काआ न का ।नहेंग मचा दिया। **(कुछ देर बाद)** बेटा, मैंन तुम्हारी आर नमिता की बातें सुना। तुम बेकार उस बेचारा पर नाराज हो रहे थे। बेटा, जब तुम बच्चे थे, तब मेरा माला हालत अच्छ। नहीं था। इसीलिए, तब न ता मैं तुम्हारी मा का कोई सुख द सका, न अच्छी तरह तुम्हारा पालन-पोषण कर सका। मुझे खेद है कि मेरे ही कारण तुम दाना का कष्ट उठाना पड़ा। अब मुझे पता चला कि नमिता जिस नन्दन मजूमदार को चाहता है, उसका भी माला हालत अच्छ नहीं। टेलीफोन एक्सचेंज म काम करता है। यह साच कर कि व्याह क बाद नमिता का भ। तुम्हारी मा की तरह कष्ट न उठान पड़ें नमिता का भ। सुख सुविधा स वंचित न होना पड़े, मन खुद हा। नमिता के दहेज का यह सामान इकट्ठा किया। तुम्हारा मा अपन बेट का जा चीजें देना चाहती थी, वे सब खरीदी, जा खच हुआ, उसम नमिता का कोई लोभ नहीं। उस बेचारा न तो हमस कभ। कुछ मागा नहीं, कुछ चाहा नहीं। देख् कहा गइ वह। **(कौओ का शोर उभरता है और अतराल में घुलमिल जाता है और फिर सुनाई देती है दरवाजा खटखटाने और फिर दरवाजा खोलने की आवाज)**

नन्दन कौन ? अहा नमिता ! **(सकपकाया सा)** आओ, अन्दर आओ !

नमिता नहीं, घर क अन्दर नहीं जाऊगा, नन्दन। तुम्हें मेरा प्रण तो याद हा है न कि शादा स पहले इस घर का दहलीज पार नहीं करूगा ?

नन्दन (सकपकाया सा) हां, वह तो ठीक है, लेकिन आज मतलब यह कि यो बाहर गली में खड़े खड़े बातें करना

नमिता अब तक तो हम बाहर गलियों, बाजारों, पार्कों में ही मिलते रहे हैं। मैं तुम्हारे फोन का इंतजार करती रही। एक्सचेंज में फोन किया, तो कुछ पता नहीं चला। इसलिए घर चली आई। आज शाम को कुछ देर के लिए हमारे यहां आ जाना। कुछ जरूरी बातें करनी हैं। आओगे न ?

नन्दन (घबराया सा) क्यों नहीं, लेकिन नमिता, पहले तुम्हें अपना प्रण भूल कर मेरे घर के अन्दर जाना होगा।

नमिता अच्छा ! नन्दन, तुम मजबूर करते हो, तो

(फेड इन—फेड आउट)

नन्दन माफ करना, घर सब गन्दा हो रहा है

नमिता कोई बात नहीं।

नन्दन यहां बैठो। दरअसल मैं बाहर गया हुआ था। कई दिन बाहर रहा। उस दिन एक्सचेंज से तुम्हें जब फोन किया था न, बस उसके बाद अचानक मुझे जाना पड़ गया।

नमिता लेकिन जाने से पहले मुझे

नन्दन क्या बताऊं तुम्हें खबर करने का वक्त ही नहीं मिला। एक्सचेंज में काम कर रहा था कि वहीं बहन का टेलीग्राम मिला। बिना कुछ बताए तार दे कर गये थे कि जल्दी घर पहुंचो। मैंने सोचा, शायद बापू कहीं बीमार न हों। चार बजे एक ट्रेन जाती थी। सो बिना किसी तैयारी के मैं फौरन चला गया।

नमिता वहां सब कुशल है न ? तुम्हारे बापू ?

नन्दन ठीक हैं, बिल्कुल ठीक हैं।

नमिता वहां से कब आये ?

नन्दन कल नहीं, नहीं, परसों। आते ही ऐसा व्यस्त हुआ कि

नमिता यहां घर में एकदम खामोशी छाई हुई है।

नन्दन — पर म गया मैं । नीरव घर सोता है । (झिझकता-सी हँसी हँसकर) घर वाले पता नहीं कब, कहाँ गए हैं, क्या ?

नमिता — हाँ । तो फिर तुम भी कुछ

नन्दन — मैं जरा आराम में हूँ । पर अभी तुम मेरे आग्रह पर भी यहाँ पर म हो आई । ना आज तुम्हें यहाँ आया देखकर , मेरा खाना-पीना भी चाय लाना तो भूल ही गया । अभी लाया ।

नमिता — नहीं म चाय नहीं पिऊँगी । मुझे जल्दी जाना है । अच्छा चलती हूँ ।

नन्दन — नहीं, नहीं जरा ठहरो ! कुछ बातें

नमिता — कहो न ! (खामोशी) अगर बातें शायद नहीं हैं तो मत कहो ।

नन्दन — नहीं नहीं, ऐसी बात नहीं । दरअसल कुछ घरेलू बातें

नमिता — देखो जब तुम यहाँ का टेलीग्राम पाकर घर गये थे वैसे ही मेरा भाई भी वहाँ का टेलीग्राम पाकर घर आया था, कुछ घरेलू बातें करने के लिए

(बर्तन गिरने और नल से पानी गिरने की आवाज आती है)

नन्दन — ओह ! यह नौकर कितना लापरवाह है । (जोर से) अरे गुड्डू ! नल म पानी आया है, तो बर्तनों म भर ले न

नमिता — अच्छा, तो म चलती हूँ ! शाम को तुम

नन्दन — नहीं, नहीं, नमिता, अभी जाओ नहीं । बैठो । दरअसल वहाँ घर म जो बात हुई, वह कुछ ऐसी थी कि मैं तुम्हें बताने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा ।

नमिता — कुछ उलझन पैदा हो गई क्या ?

नन्दन — नहीं, नहीं हाँ समझ लो कुछ उलझन ही

नमिता — अखबार म मेरे पिता के बारे म जो खबर छपी थी, उसी का पढ़कर घर वालों ने वह टेलीग्राम दिया होगा ।

हाँ ।

नमिता फिर तो बात सुननी ही चाहिए। (जरा रुक कर) क्या सोच रहे हो? नन्दन, सकोच न करो। इस खबर के छपने के बाद मैं इतनी बातें सुन चुकी हू, सुनने की आदी हो चुकी हू, कि अब कुछ और सुनने से मुझे जरा भी परेशानी नही होगी। बताओ, वहा घर मे मा-बाप, बहन, सब ने क्या कहा?

नन्दन (जरा रुक कर) नमिता, तुम तो मुझे अच्छी तरह जानती हो, मेरे घर-परिवार के बारे मे भी जानती हो। यह स्वाभाविक ही था कि तुम्हारे पिता की खबर से मेरे माता पिता को चिंता हुई और

नमिता क्या कहा उन्होंने?

नन्दन उन्होंने कहा कहा कि

नमिता कि एक बदनाम घराने की लडकी से शादी बहुत बडा बोझ बन जायेगी।

नन्दन नही, नही, उन्होने ऐसा तो नही कहा, लेकिन

नमिता लेकिन, जो कहा उसका साराश यही है। नन्दन यह अनुमान मैं तुम्हारी इस समय की सकपकाहट से लगा रही हू।

नन्दन देखो नमिता, मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हू कि मैं कई मामलो मे एकदम आजाद हू। हमारे घर के लोग भी आजाद तबियत के है। तुम्हें याद होगा, तुम्हारे पिताजी से मेरे बापू ने क्या कहा था। मेरे बापू ने कहा था, 'चौधरी साहब, और लोग जन्मपत्री दिखाते है, कई तरह का गणित कराते हैं, अगूठी पहनाते है। लेकिन हम लोगो को इस तरह के किसी भी रस्म रिवाज मे कोई दिलचस्पी नही।"

नमिता यह तो पुरानी बात हो गई। तुम्हारे बापू ने अब क्या कहा?

नन्दन बात दरअसल यह है कि अब ये नए हालात पैदा हो गये है और हालात से सीधा जुडने की नौबत आ गई है।

नमिता नन्दन बात को घुमाओ फिराओ नही। साफ बताओ कि तुम्हारे घरवालो ने आखिरी फैसला क्या किया?

नन्दन फैसला तो कुछ भी नहीं किया । सिर्फ मुझे सोच विचार करने को कहा है ।

नमिता तो तुमने क्या सोच विचार किया ?

नन्दन मैं अभी तक कुछ भी तय नहीं कर पाया । एक दो दिन में सोचूंगा कि

नमिता (बीच में काट कर) एक दो दिन में सोचने से क्या लाभ होगा ? देखो नन्दन तुम्हें परेशान होने की कोई जरूरत नहीं । जो हकीकत है वह सामने है । आखिर मेरे पिता को जेल जाना ही होगा । अगर वे जेल न भी गये, तो भी वे जीवन भर इस गोलमाल के मामले के बोझ, बल्कि यूं कलंक से मुक्त नहीं हो पायेंगे । उनके साथ मैं भी मुक्त नहीं हो पाऊंगी ।

नन्दन नहीं नहीं, तुम्हें ऐसा नहीं सोचना चाहिए ।

नमिता देखो, नन्दन, इस ख्याल से कि मैं बुरा मानूंगी, तुम बात को टालो नहीं । इस समय मैं पहली बार महसूस कर रही हूं कि हम दोनों के बीच कुछ फर्क आ गया है एक दरार-सी पड़ गई है । मैं हालात का दूर तक सामना करने को तैयार हूं । तुम अपने मन की बात पहले की तरह खुल कर नहीं कर पा रहे । तुम्हारे मन में एक झिझक है, संकोच है । मैं तुम्हारे इस संकोच को झेलना नहीं चाहती, भविष्य में भी नहीं झेल पाऊंगी ।

नन्दन नमिता, ऐसा न कहो । दरअसल हालात ने अचानक ऐसा मोड़ लिया है कि एक अजीब-सी चिंता

नमिता नंदन, मैं सब समझती हूं । मैं बहुत थक गई हूं । इस नई चिंता के कारण अपना रास्ता बदलने की न मुझमें इच्छा है और न ही शक्ति । सीधे रास्ते पर चलने से आगे दूर तक दिखाई देता है लेकिन रास्ते से जरा भी मुड़ जाए, तो कुछ दिखाई नहीं देता । साफ बात यह है कि मेरे-तुम्हारे बीच एक रिश्ता जुड़ा था, हमने शादी की बात भी लगभग तय कर ली थी । लेकिन मैं सोचती हूं कि अब हालात बदल गये हैं तो उन पुरानी बातों का भी अब कोई अस्तित्व नहीं रहना चाहिए ।

नन्दन— यह तुम क्या [illegible] ?

नमिता— हां, मैं ठीक कह रही हूं, नन्दन। आगे चल कर पुरानी बातें रास्ते में न आ जाएं, इसलिए इन को मिटा देना ही उचित है।

नन्दन— वाह! वे बातें, वे रिश्ते, क्या इतनी आसानी से मिटाये जा सकते हैं?

नमिता— क्या नहीं मिटाए जा सकते? ऐसी कई मिसालें मेरे सामने हैं। सुनने में आया कि दोनों का संबंध इतना गहरा हो चुका है कि उन्हें मौत ही जुदा कर सकती है। लेकिन ऐसे संबंध भी टूटे और कोई भी नहीं मरा। मैंने हृदय का ऐसा सच्चा प्रेम भी देखा है जो ज़रा-सी ठेस से झूठा पड़ गया, बिखर गया। ऐसी स्थिति में भी किसी की लाश [illegible] नहीं दी। देखो, हम दोनों सामने हैं। [illegible] हम बच्चों को [illegible] पीटेंगे और [illegible]।

नन्दन— तो तुमने फैसला कर लिया?

नमिता — तो आज मैंने तुम्हारी उस सारी बेचैनी का अंत कर दिया।

नन्दन — तो तुम समझती हो कि इतनी जल्दी सब खत्म हो जायगा ?

नमिता — और चारा ही क्या है ? (आह भर कर) कई दिनों तक मन में एक कसक बनी रहेगी—कभी इतना प्यार किया था, इतने कौल-करार किये थे (रुलाई दबाते हुए) आह ! अब मुझसे नहीं कहा जा रहा। मैं चलती हूं। मेरा रास्ता छोड़ो !

नन्दन — नमिता। मैं समझ नहीं पा रहा कि तुम इतनी जल्दी, इतनी आसानी से सब कुछ खत्म करके

नमिता — नन्दन, सच यह है कि मैं तुम्हारा भला चाहती हूं, कल्याण चाहती हूं। अब आगे बात बढ़ाने से कोई फायदा नहीं। मेरी स्थिति वाकई बदल चुकी है। हो सकता है कि मुझे अपने बाप की पूरी तरह देखभाल करनी पड़े, उनका पेट पालने की भी जिम्मेदारी उठानी पड़े। तुम्हारा साथ निभाने का मेरे पास समय नहीं होगा, इसलिए आज तुमसे हमेशा-हमेशा के लिए विदा ले रही हूं, तुम्हें हर तरह की चिंता से मुक्त कर रही हूं। और हां, एक बात और। अब मुझ से कभी भी मिलने की कोशिश न करना।

(इसके साथ ही रुलाई भरे संगीत का जैसे कोलाहल मच जाता है। उसके फेड आउट होने पर दफ्तर का वातावरण उभरता है)

नमिता — सेक्रेटरी साहब अंदर हैं ?

चपरासी — हां, हैं।

नमिता — मुझे उनसे मिलना है।

चपरासी — इस चिट पर अपना नाम और काम लिख दीजिए।

नमिता — अच्छा लाओ !

(दरवाजा खोलने और बंद करने की आवाज) फेड आउट फेड इन)

चपरासी — जाइए अंदर !

नमिता — नमस्कार !

सेक्रेटरी — नमस्कार ! कैसे आई हो ?

नमिता — सर ! मैं रमाकांत चौधरी की लड़की हूं, नमिता ।

सेक्रेटरी — रमाकांत चौधरी ... ग्राह समझा ! बैठो । तुम भी यही नौकरी करती हो ?

नमिता — जी नहीं ! लेकिन ग्रब करना चाहती हू ।

सेक्रेटरी — हू !

नमिता — सर ! ग्रगर अनुमति हो तो एक बात पूछ ?

सेक्रेटरी — पूछो !

नमिता — मेरे पिताजी के केस के बारे मे तो ग्राप जानते ही होंगे ?

सेक्रेटरी — हा, जानता हू !

नमिता — सर ! ग्राप मुझे बता सकते हैं कि ग्राखिर इस केस का ग्रंत क्या होगा ?

सेक्रेटरी — (सोचते हुए) तुम्हारे साथ इस संबंध मे बात करना क्या ठीक होगा ?

नमिता — सर ! जो बात ग्राप मेरे साथ नहीं कर सकते हैं, उसका जिक्र मै भी नहीं करूंगी ।

सेक्रेटरी — क्या बताऊ ! तुम्हारे बाप का केस विभिन्न विधियो ग्रौर प्रक्रियाग्रो से गुजरेगा, जाचा जायेगा, बाद म क्या होगा ग्रभी बताना कठिन है ।

नमिता — सर ! मैं ग्रापसे एक ग्रनुरोध करना चाहती हू । पिताजी से जो कसूर हुग्रा है, उसे प्रमाणित करने मे ग्राप लोगो को कोई कठिनाई नहीं होगी, क्योंकि पिताजी ग्रपने को बचाने के लिए कोई कोशिश नहीं करेंगे ।

सेक्रेटरी — (आश्चर्य के स्वर में) क्यो ?

नमिता — कारण मैं स्वय हू । मैंने पिताजी से कहा कि उन्होंने यदि सचमुच जुर्म किया है, तो बचने की कोशिश करने से उनका दोष बढ़ेगा ही, घटेगा नहीं । मै ग्रापसे वायदा करती हू कि जितने रुपयो का पिताजी ने गबन किया है वह सब मैं ब्याज सहित वापिस कर दूंगी । इसलिए मेरी प्रार्थना है कि ग्राप उन्हें नौकरी से हटाये जाने की ही सजा दीजिए, जेल जाने से बचाइए ।

सेक्रेटरी (सोचते हुए) तुमने क्या नाम बताया ? हां नमिता। तुम पचास हजार रुपये कैसे लौटा सकोगी ?

नमिता मैं अपने बाप की जमीन-जायदाद बेच दूंगी।

सेक्रेटरी फिर तुम लोग रहोगे कहां ?

नमिता कहीं भी। सिर छिपाने लायक कहीं-न-कहीं जगह मिल ही जायेगी।

सेक्रेटरी लेकिन अपना घर ?

नमिता सर ! उस घर में रहना मुश्किल हो गया है। उस घर में भूतों का वास है। यदि आप मेरे पिता को जेल की सजा से बचाने का वचन दें, तो मेरे परिवार पर बड़ा एहसान होगा। बाकी सारी सजाएं हम झेल लेंगे। वैसे तो पिताजी के लिए जेल के बाहर या भीतर रहना एक ही बात होगी, फिर भी

सेक्रेटरी अच्छा सोचूंगा।

(अन्तराल संगीत)

(विभिन्न दफ्तरों के शोर-शराबे के बीच नमिता की अनुनय विनय भरी आवाज बार बार गूंजती है—"मुझे नौकरी चाहिए, मुझे कोई काम चाहिए, नौकरी चाहिए।")

मेम्बर-1 क्या नाम ?

नमिता जी, नमिता चौधरी, मिस नमिता चौधरी !

मेम्बर-2 पहले कहीं कभी नौकरी की है ?

नमिता जी नहीं।

मेम्बर-3 कहां तक पढ़ी हो ?

नमिता एम० ए०।

मेम्बर-1 सर्टीफिकेट दिखाओ !

(दफ्तरों का शोर शराबा उभर कर फेड आउट)

मेम्बर-2 मिस नमिता चौधरी, तुम नौकरी क्या करना चाहती हो ?

नमिता रोजी रोटी कमाने के लिए और अपने आपको व्यस्त रखने के लिए।

मेम्बर 3 तुम्हारे बाप का नाम ?

नमिता रमाकांत चौधरी।

तीनो रमाकांत चौधरी ? यानी कि वही रमाकांत चौधरी जो,

नमिता जो स्टेट डिपार्टमेंट मे आफिसर थे और जिन्हें कई दिन हुए सस्पेंड कर दिया गया था।

तीनो हूं ! (कुछ देर खामोशी)

मेम्बर 1 अच्छा ! मिस चौधरी, क्या तुम बता सकती हो कि तुम्हारे बाप को क्यों सस्पेंड किया गया था ?

नमिता उन्होंने दफ्तर मे बहुत सारे रुपयों का गबन किया था। (कुछ देर खामोशी) सर ! मैं विनयपूर्वक एक बात कहना चाहती हूं।

तीनो कहो।

नमिता मैं दफ्तर मे नौकरी करना चाहती हूं, यह साबित करने के लिए कि सस्पेंड हुए रमाकांत चौधरी की बेटी होकर भी मैं पूरी ईमानदारी और योग्यता से अच्छा काम कर सकती हूं।

(दफ्तरों का शोर शराबा उभर कर फेड आउट)

मेम्बर-2 मिस चौधरी, तुम लगातार नौकरी कर सकोगी ?

नमिता जी हां।

मेम्बर-3 लेकिन शादी के बाद घर-गृहस्थी बसाने पर भी नौकरी कर सकोगी ?

नमिता सर ! यह सवाल पैदा ही नहीं होता। इस समय मेरी स्थिति ऐसी नहीं कि मैं शादी करके घर-गृहस्थी बसा सकूं।

(दफ्तरों के शोर के साथ इन्टरव्यू बोर्ड का कोलाहल उभरता है)

मेम्बर-1 अच्छा ! तो मिस चौधरी, बताओ, सरोजिनी नायडू कौन थी ?

मेम्बर 2 हमारे देश में अभ्रक कहां मिलता है ?

मेम्बर-3 फ्लाइंग सॉसर क्या चीज है ?

मेम्बर-1 'चीन की भाबू' कहलाने वाली नदी का नाम क्या है ?

मेम्बर-2 कभी तुमने क्रिकेट का खेल खेला है ?

मेम्बर-3 'क्वायट फ्लोज द डान' नामक पुस्तक का लेखक कौन है ?

मेम्बर-1 मार्टिन लूथर किंग ?

मेम्बर-2 चेरापूंजी ?

मेम्बर-3 लक्ष्मीनाथ बेज बरुआ ?

मेम्बर-2 मशाम क्यूरी ?

मेम्बर-1 यूनेस्को ?

मेम्बर-3 रायल बंगाल टाइगर ?!

तीनों नहीं ! नहीं !! नहीं !!!

(इन्टरव्यू का गूंजता हुआ स्वर उभर कर फेड आउट । फिर बच्चों का शोर सुनाई देता है)

पुरुष-1 तुम्हारा नाम क्या है ?

नमिता नमिता चौधरी ?

पुरुष-2 सर्टिफिकेट्स लाई हो ?

नमिता जी, यह रहे सर्टिफिकेट्स और

पुरुष अरे ! तुम तो एम०ए० पास हो । बेटी, पर यहां तो मामूली तनख्वाह वाली बहुत ही छोटी-सी नौकरी है । घर के इन छोटे छोटे बच्चों को पढ़ाना है इनको देख भाल करनी है । मुझे तो इतनी हाई क्वालीफिकेशन की टीचर नहीं चाहिए ।

नमिता जी, मुझे नौकरी की सख्त जरूरत है । नौकरी कैसी भी हो, मुझे मंजूर है । मेरी ऊंची पढ़ाई के सर्टिफिकेट्स को आप भुला दीजिए । मैं तो भूलने की कोशिश कर ही रही हूं । मैं इन बच्चों की पढ़ाई और देखभाल का काम अच्छी तरह कर सकती हूं । मुझे कम तनख्वाह पर ही नौकर रख लीजिए । मुझे नौकर रख लीजिए ।

पुरुष अच्छा, अच्छा ।

(बच्चो का शोर उभर कर क्लास मे बदल जाता है)

बच्चा-1 दीदी, मुझे पढाओ !

बच्चा 2 नही दीदी, पहले मुझे यह खेल सिखाओ ।

बच्चा-3 नही दीदी, पहले मुझे गाना सिखाओ ।

नमिता सुनो, बच्चो ! बारी-बारी से मैं पढाऊगी, खेलना सिखाऊगी, गाना सिखाऊगी !

सब बच्चे (झगडते हुए) नही दीदी, पहले मुझे, पहले मेरी किताब मेरी गेंद मेरा बाजा

(बच्चो का शोर उभर कर फेड आउट और फिर अन्तराल सगीत)

पिता बेटी !

नमिता अरे ! पिताजी, आप अभी तक सोये नही ?

पिता आज से तुमने शाम की दूसरी नौकरी भी शुरू कर दी ?

नमिता घर का खर्च चलाने के लिए और पैसो की जरूरत थी न ।

पिता बेटी मेरे लिए

नमिता पिताजी, आप कहते-कहते रुक क्यो गये ?

पिता बेटी, मेरे लिए तुमने यह जो इतना कुछ किया है, कर रही हो, इससे अब मुझे कष्ट होने लगा है ।

नमिता कष्ट ? पिताजी, मैं समझती हू कि इस तरह का कष्ट कुछ नही । आप जरा सोचिए, अगर आप मुकदमा लडकर कानून की मदद से साफ बच भी जाते, तो भी वह बचना नाम मात्र का होता । दाग तो लगा ही रहता । उस दाग को छिपाने के लिए आपको कई स्वाग भरने पडते । और फिर हर अपराधी को कानून की मदद से अपने को निरपराध साबित करने का मौका भी तो नही मिलता । पिताजी, हम अपनी जमीन जायदाद खोकर गरीब हो गये हैं, यही सजा तो आपको मिली है । यह सजा जेल की सजा से तो अच्छी है ।

पिता — नहीं, नमिता, नहीं। मैं अपनी बात नहीं कर रहा। बल्कि मुझे तुम्हारी हालत देख कर हो रहा है। तुम्हें इस हालत में रख कर जीना ही मेरे लिए कष्टकर हो गया।

नमिता — पिताजी, मैंने आपसे कितनी बार कहा है कि आप मेरे लिए दुखी न हों। बहुत से लोग तो धनी बन कर सब कुछ खो देते हैं और तब गरीबी की जिन्दगी बसर करने को मजबूर होते हैं। मैंने तो अपनी जिन्दगी गरीबी से ही शुरू की है। जिन्दगी में लोग कई परीक्षाओं से गुजरते हैं। आपने जो अपराध किया वह भी एक तरह से परीक्षा थी और मैं देखना चाहती हूँ कि उस परीक्षा में से मैं कितनी खरी होकर निकलती हूँ। कम-से-कम मैं भैया से तो बड़ी हो ही गई हूँ। क्यों, पिता जी?

(पिता के मन की वेदना संगीत का
कोलाहल बनकर उभरती है)

पिता — हूँ!

नमिता — बोलिए, पिताजी, क्या अब मैं भैया से भी बड़ी नहीं हो गई?

पिता — क्यों नहीं। नमिता बेटी, तुम अपने भैया से ही नहीं, मुझसे भी बड़ी हो गई हो, बहुत बड़ी। लेकिन ... लेकिन ...

नमिता — लेकिन क्या? आप कहना क्या चाहते हैं, पिताजी?

पिता — मैं कहना चाहता हूँ ... मेरा मतलब है कि मैंने ... मैंने फैसला कर लिया है

नमिता — (घबराकर) क्या फैसला? बताइए न, पिता जी!

पिता — कुछ नहीं, कुछ नहीं, बेटी।

(कोर्स की आवाज के साथ संगीत का कोलाहल उभरता है और फिर रेलवे स्टेशन पर रेल की सीटी और रेलगाड़ी के चलने की आवाज सुनाई देती है)

पिता — (स्वगत) नमिता बेटी, मैं तुम्हें बिना बताये ही जा रहा हूँ। क्यों जा रहा हूँ। दरअसल तुम मुझसे इतनी बड़ी बन गई थी कि मैं दिनों दिन बहुत छोटा होता जा रहा था। मेरे

भीतर की बेचैनी और पीड़ा ने मेरी हस्ती को ही मिटाना शुरू कर दिया था। आखिरकार मैं तुम्हारे बड़प्पन और प्यार के सामने अपने आप को नहीं टिका पाया। मैं जा रहा हूं। कहां जा रहा हूं, इसका मुझे भी पता नहीं। अब तक तुम्हें मेरे सिरहाने में नीचे रखी मेरी चिट्ठी मिल गई होगी। उसमें लिखी अंतिम बात को न भूलना। मुझे खोजने की बेकार कोशिश न करना। तुम्हारा मुझे न खोजना ही तुम्हारे प्यार का सबूत होगा

(रेलगाड़ी सीटी के साथ शोर मचाती हुई समापन संगीत में घुल-मिल जाती है)

मूल असमिया भवेन्द्र नाथ सइकीया

रूपांतरकार तरुण आजाद डेका

एक गीत की मौत

उदघोषक — यह आकाशवाणी है । नाटको के अखिल भारतीय कार्यक्रम मे आज प्रस्तुत है श्री कालिंदीचरण पाणिग्रही की सुप्रसिद्ध उडिया कहानी 'मासर विलाप' का हिंदी रेडियो नाट्य रूपातर 'एक गीत की मौत'

(प्रसग — सगीत उभरता है—हर्षोल्लास भरी वासती नत्य-धुन, जिस पर युवा स्त्री-पुरुष के स्वरों द्वारा स्थाई और अतरा का शब्दहीन आकार गीत का स्वरूप प्रस्तुत करता है। कुछ देर बाद हर्ष भरा गीत विलाप मे परिवर्तित होकर उदघोषणा की पृष्ठभूमि मे चला जाता है)

उद्घोषक — 'मासर विलाप' नामक उडिया कहानी की गणना भारत की सवश्रेष्ठ कहानियो म होती है । इसका अनुवाद अग्रेजी आदि विश्व की कई भाषाओ मे हो चुका है। इसके लेखक श्री कालिंदी चरण पाणिग्रही उडिया के सुविख्यात अग्रणी साहित्यकार ह और आकाशवाणी से सम्बद्ध रह चुके हैं । उन्होंने उच्चकोटि के अनेक उपन्यासो, कहानियो और काव्य-ग्रथो से उडिया-साहित्य को समृद्ध किया है। तो सुनिए उन्ही की कहानी का श्री चिरजीत द्वारा किया हुआ यह हिंदी रेडियो नाट्य रूपान्तर 'एक गीत की मौत'

(विलाप सगीत उभर कर सुनसान जगल के रात के वातावरण मे घुलमिल जाता है। झींगुर की आवाज, और फिर सुनाई देती है कुछ दूरी पर एक विलायती नस्ल के कुत्ते के रोने की आवाज)

मार्धया — (चौंककर) ऐं, यह आवाज ! (परेशान-सा)। आह! यह आवाज तो उसी की जान पडती है । मैं अच्छी तरह पहचानता हू, यह उसी की आवाज है ।

जतीन (हैरान-सा) कौन-सी आवाज ? किसकी आवाज, चाचा जी ? अरे ! खाना खाते-खाते आप यों व्याकुल क्यों हो उठे, एकाएक आपको हुआ क्या, चाचा जी ? दरवाजा बंद कर दीजिए, वर्ना कोई जंगली जानवर

माधिया (अनसुनी करते हुए) उस लकड़हारे ने ठीक कहा था कि रात को इस जंगल में आज भी उसका विलाप सुनाई देता है। यह खबर सुनते ही बेचैन हो उठा था। जतीन, तुम मेरे यहां जंगल में अचानक आने का कारण पूछ रहे थे ? कल रात सपने में मैंने तुम्हारी स्वर्गीया चाची को देखा था। उसके साथ राजकुमारी भी थी। दोनों ने मुझे बहुत डांटा, बहुत कोसा, राजकुमारी के सामने तुम्हारी चाची हंसी-हंसी में मेरा मुर्गा बनाने की बात कहा करती थी। कल रात सपने में भी उसने यही कहा—मजाक में नहीं, गुस्से में, जैसे कि मैं सचमुच कोई अपराधी हूं। आज सवेरे उठा, तो मैं इस जंगल को भागा पागल की तरह। चौदह मील का पैदल सफर पता नहीं कैसे तय किया ? मुझे याद भी नहीं था कि तुम यहीं के फारेस्ट आफिसर हो। तुमसे मिले कितने बरस हो गये। अच्छा ही हुआ कि तुमने मुझे देख लिया । (कुत्ते के रोने की आवाज़)

माधिया फिर उसकी आवाज़। जतीन तुम्हें लगता नहीं, जैसे अपनी प्रिया से बिछुड़ा हुआ कोई प्रेमी विलाप कर रहा हो।

जतीन प्रेमी ? चाचा जी आप किसकी बात कर रहे हैं ? जंगल के इस रेस्ट हाउस में आज भर आपके सिवा और कोई नहीं। रात को इधर कोई नहीं आता। आपने यहां ठहरने की जिद की तो

(फिर दूर से कुत्ते के रोने की आवाज)

माधिया (दुखी सा) हां, यह वही रो रहा है—मेरा प्यारा ड्यूक रो रहा है।

जतीन कौन ड्यूक ?

माधिया (झुंझलाकर) बड़े फारेस्ट आफिसर बनते हो और जानते नहीं कि (रुक कर) लेकिन लेकिन तुम ड्यूक को कैसे जान सकते हो ? छब्बीस वर्ष पहले, तुम तो तब बच्चे ही थे, जब ।

जतीन — तो चाचा जी, क्या आप उस ज़माने की बात कर रहे हैं, जब आप राजा इन्द्रजीत सिंह देव के यहा पहले-पहल नौकर हुए थे ? आपने ही एक बार बताया था कि सन् 47 से पहले राजा साहब अंग्रेजों के बड़े भक्त थे। एकदम अंग्रेजी फैशन और ठाठ-बाठ से रहते थे। राजमहल में अंग्रेजी ढंग का खाना बनाने वाले खानसामा थे, नौकर-चाकर थे और नन्ही-मुन्नी राजकुमारी की देखभाल के लिए ऐंग्लो इण्डियन आया थी, जिससे बाद में आप से शादी कर ली थी। लेकिन राजा साहब के यहा इग्लैंण्ड से आया हुआ कोई ड्यूक भी था इसके बारे में आपने कभी नहीं बताया।

माधिया — ड्यूक राजा साहब के शिकारी कुत्ते का नाम था।

जतीन — (हस कर) कुत्ते का नाम ड्यूक !

माधिया — (डाट कर) हसो नहीं, जतीन। यह मेरे जीवन का एक दुखन घाव है।

(फिर दूर से कुत्ते के रोने की आवाज सुनाई देती है)

माधिया — एकाएक फिर उसकी आवाज सुनाई दी। सुनो वह रो रहा है।

जतीन — (जैसे ध्यान से सुनकर) हा, आपने कुत्ते का ज़िक्र किया तो बात समझ में आई। यह आवाज कुत्ते की ही जान पड़ती है—जगल के उस दक्षिणी भाग से आ रही है।

माधिया — (जल्दी से) तो आओ मेरे साथ।

जतीन — नहीं नहीं रुकिए चाचा जी। रात के इस घुप अंधेरे में उधर जाना खतरे से खाली नहीं। सारा जगल हिंस्र-वनैले पशुओं से भरा पड़ा है। मिट्टी के तेल के इस लम्प के सिवा हमारे पास रोशनी का कोई प्रबन्ध नहीं। बन्दूक है पर हम इसका यहा इस्तेमाल नहीं कर सकते। जैसा कि आप जानते ही हैं स्वाधीनता के बाद अन्य रियासतों के साथ, राजा इन्द्रजीत सिंह देव की रियासत का भी भारत में विलय हो गया और उनकी रियासत का यह जगल उड़ीसा राज्य के वन विभाग का अंग बन गया, लेकिन उनका जगल-सम्बन्धी कानून आज भी यहा चलता है।

माधिया — कौन-सा कानून ?

जतीन इस जगल म किसी भी पशु-पक्षी को मारने की मनाही है, शिकार खेलन की मनाही है ।

माधिया हा, याद आया ! उस दुघटना के बाद राजा साहब ने यह कानून बनाया था, सारी रियासत मे डाडी पिटवाकर इसका ऐलान किया था। पहले केवल हिरना के वध पर ही प्रतिबन्ध लगाया था और फिर

जतीन कौन सी दुघटना चाचा जी ?

माधिया बताता हू । (एकाएक) ऐं ! ड्यूक फिर रो रहा है ? नही, यह मेरा भ्रम था । अब वह वहा जिदा होगा । उसकी प्रेतात्मा ही जगल के उस दुघटना-स्थल पर मडराती हुई रो रही होगी । शायद अब वह भी थक कर सा गई है । सुनो जतीन ! जब से तुम्हारी चाची का देहान्त हुआ है, मुझे उस भूली बिसरी दुघटना की रह रह कर याद आने लगी है । अब मैं मानन लगा हू कि केजवानो के जिस शाप ने राजा साहब का सुख-वैभव का ससार उजाड दिया था, उसी शाप ने मेरे घर को भी (सभल कर) हा, तो तुम उस दुघटना का हाल जानना चाहते हो ? आज मैं सब बताऊगा और अपराध स्वीकार करूगा । कोई 26-27 वप पहले मैं राजा साहब का पसनल एटेंडेंट नियुक्त हुआ था, लेकिन मेरा असली काम था ड्यूक की दख भाल । विलायती नस्ल का वह शिकारी कुत्ता राजा साहब को बहुत प्रिय था । वह बडा ही ताकतवर और खूख्वार था, लेकिन मुझसे वह बहुत ही हिला हुआ था । वह मेरा हर इशारा समझता था, मेरी हर बात मानता था । लेकिन उस दुघटना के बाद वह मुझ से ऐसा नाराज हुआ कि जजीर तोड कर जगल की ओर भाग गया । राजा साहब न उसे बहुत ढुढवाया, मैं खुद हफ्ता जगल की खाक छानता रहा, पर वह नही मिला, नही मिला । म जानता हू कि अपनी प्राण प्रिया के वियोग म वह ।

जतीन कौन थी उसकी प्राण प्रिया ?

माधिया जॉली नाम की एक अत्यन्त सुदर और सुकुमार हिरनी !

जतीन (चकित सा) कुत्ते का प्यार हिरनी से ?

मार्गिया हाँ, प्यार भी ऐसा कि उसके सामने स्त्री-पुरुषों की तमाम प्रेम कथाएं फीकी जान पड़ती हैं। वह हिरनी, जब अभी बच्ची ही थी, तो राजा साहब उस जंगल से उठा कर लाये थे। राजा साहब ने उसका नाम जॉली रखा। राजकुमारी के लिए पहले वह खिलौना बनी और फिर सहेली। शुरू में सब को डर था कि खूंखार शिकारी कुत्ते ड्यूक से जॉली की जान को कभी भी खतरा हो सकता है, लेकिन भगवान की इच्छा कुछ और थी। ड्यूक ने जॉली से सिर्फ दोस्ती ही नहीं की, उससे प्यार भी करने लगा। मांस खाने वाले का हिरनी से प्यार, थी न अजीब बात? आस-पास के दूसरे कुत्ते जब कभी जॉली पर झपटने आते, तो ड्यूक उन्हें भगा देता। और यह प्यार एकतरफा नहीं था। जॉली को भी ड्यूक के बिना चैन नहीं लगती थी। ड्यूक के पांव में चोट लगी, तो जॉली तब तक उसके पास बैठी रही, जब तक कि वह फिर से चलने फिरने लायक नहीं हो गया। एक बार जॉली बीमार पड़ी, तो ड्यूक दिन-रात उसके पास ही बैठा रहा। एक दिन तो उसने कुछ खाया पिया भी नहीं था। जॉली स्वस्थ होकर जब चलने फिरने लगी, तो ड्यूक खुशी से जैसे नाचने लगा। जॉली तो हमेशा नाचती रहती थी। राजकुमारी ने उसके गले और पांव में घुंघरू बांध दिए थे। ड्यूक के साथ शाही बाग के हरे भरे लान में कल्लोल करती हुई जब वह थिरकती, नाचती, चौकड़िया भरती, तो सारा वातावरण उसके घुंघरुओं से संगीतमय हो जाता। दरअसल ड्यूक और जॉली का प्यार एक मदमाता रूमानी गीत था। उस गीत की स्थायी जॉली थी, तो ड्यूक अंतरा था जॉली साज़ थी, तो ड्यूक संगीत था। वह गीत राजमहल, राज दरबार शाही बाग—सब जगह लहरा कर प्रेम का जादू फैलाने लगा था। बिन मां की नन्हीं राजकुमारी उस जॉली के संग हमेशा हंसती-खेलती दिखाई देती। महारानी के देहांत के बाद राजा साहब उदास और विरक्त से रहते थे। अब वे भी प्रसन्न नज़र आने लगे और लगता था, जैसे वे जल्दी ही दूसरी शादी रचायेंगे। मैं भी जीवन में पहली बार प्यार के मर्म को समझने लगा और मेरा मन ऐंग्लो इण्डियन आया के प्रेमजाल में फंस गया।

(फ्लैश-बैक—प्यार के स्वरों से ओत प्रोत प्रसग-सगीत संवादों के पीछे से उभरता है फिर सवादों की पृष्ठ भूमि में चला जाता है)

माधिया अरी, आया !

एलिस (प्यार से रुठ कर) मैं नही बोलती ।

माधिया अरी, रूठ गई ।

एलिस तुम आया आया क्यों बोलते हो ? मेरा नाम एलिस है । मैं तुम्हें औरो की तरह अरे 'माधिया' नही कहती, मधु बाबू कहती हू। तुम मुझे 'एलिस' कह कर क्यो नही बुलाते ?

माधिया ओह, भूल हुई ! माफ कर दो, एलिस ।

एलिस (जैसे मुस्करा कर) अब कहो, क्या कह रहे थे ?

माधिया उधर लॉन में देखो—ड्यूक और जॉली को । ड्यूक जॉली के सामने बैठा कैसा विभोर-सा उसे निहार रहा है ।

एलिस (विभोर सी) कैसा सच्चा लव है दोनो में ? कोई मुझसे ऐसा लव करे, तो

माधिया (शरारत से) तो

एलिस (नखरे से) यू नाटी ब्वाय

माधिया नॉटी ब्वाय तो ड्यूक है, जो (एकाएक) अरे ! तुम्हारे कारण मैं उधर ध्यान से देख ही नही सका । आज जॉली को लाल जरी के कपडे क्यो पहनाये गये है ? बिल्कुल दुल्हन की तरह सजी हुई है । क्या ड्यूक से इसकी शादी है ?

एलिस शादी नही, आज इसकी—वह क्या कहते है—एक वर्ष के बाद ? हा, हा आज इसकी वर्षगाठ है ।

माधिया वर्षगाठ, यानी कि बर्थ डे ?

एलिस बर्थ डे नही, बुद्धू ! आज से ठीक एक वर्ष पहले महाराज इसे जगल से पकड कर राजमहल मे लाये थे । राजकुमारी को वह दिन याद था । कल उसने जरी की कढाईवाली लाल मखमल मगवाई, दर्जी को बुलवाकर जॉली के नाप की कुर्ती बनवाई और

माधिया — तो फिर ड्यूक के लिए भी कोई काट-बोट बनना चाहिए था।

एलिस — नहीं, नहीं, ड्यूक से राजकुमारी बहुत ऍंगरी है। राजकुमारी चाहती हैं कि जॉली हमेशा उसके पास रहे, लेकिन ड्यूक इसे अपने पास बुला लेता है, एक मिनट भी उससे अलग नहीं होता।

माधिया — (हँस कर) यह तो वही बात हुई, दो प्रेमी, एक प्रेमिका। सुनो एलिस। क्या राजकुमारी जॉली को उतना ही चाहती है, जितना ड्यूक उसे चाहता है ?

एलिस — नहीं, नहीं, सवाल यह होना चाहिए कि क्या जॉली राजकुमारी से उतना प्यार करती है, जितना वह ड्यूक से करती है ?

(तभी दूर से आती हुई 6-7 वर्षीया राजकुमारी की आवाज सुनाई देती है)

राजकुमारी — जॉली ! जॉली !! कहां हो जॉली ? आया, तुम

एलिस — राजकुमारी, जॉली वह सामने लॉन मे है, ड्यूक के पास।

राजकुमारी — ओह फिर ड्यूक के पास पहुंच गयी ! ओह यह दुष्ट ड्यूक तो (गुस्से में) माधिया ! तू ड्यूक को उधर कुत्ता घर मे बांध कर क्यों नहीं रखता ?

माधिया — राजकुमारी जी !

राजकुमारी — पापा ने तुझसे कई बार कहा, लेकिन तू हमेशा उसे खुला छोड देता है। हम पापा से तेरी शिकायत करेंगे कि तू ड्यूक की ठीक तरह से निगरानी नहीं करता।

माधिया — (डर कर) राजकुमारी जी भूल हुई। क्षमा कर दीजिए। महाराज से कुछ न कहिएगा। ड्यूक को मैंने कुत्ता घर में बांध कर रखा था। मैं इसके खाने का प्रबंध करने इधर आया, तो यह पीछे से जंजीर से निकल कर भाग आया।

राजकुमारी — तू इसके लिए पक्की जंजीर क्यों नहीं लाता ?

माधिया — मैं आज ही लाऊंगा, राजकुमारी जी। फिर कभी ऐसी भूल नहीं होगी, क्षमा कर दीजिए।

एलिस — राजकुमारी, यह माधिया बड़ा केयरलेस है, इसका मुर्गा बनाइए न ।

माधिया — (धीरे-से) माया !

राजकुमारी — माया, हंस क्यों रही हो ? अगर इस माधिया ने फिर ड्यूक को खुला छोड़ा, तो हम इसे नौकरी से निकलवा देंगे । माधिया, देख क्या रहा है, ड्यूक को पकड़ कर यहां से ले जा । आज जॉली के साथ हमारी दोस्ती की वर्षगांठ है । देख, कैसा गुड़िया की तरह सजाया है इसे हमने । आज दिन-भर हम इसके साथ खेलेंगे, नाचेंगे, गायेंगे । ड्यूक हमारे बीच नहीं आना चाहिए ।

माधिया — मैं ड्यूक को अभी यहां से ले जाता हूं, राजकुमारी जी !

राजकुमारी — जल्दी ले जा । माया, तुम हमारी जॉली के लिए मुलायम-सी हरी घास लाओ ।

(प्रसन्न संगीत उभरता है । उसके ऊपर हिरनी के घुंघरुओं की आवाज सुनाई देती है)

राजकुमारी — (पुचकार कर) आ, जॉली, आज मैं तुम्हें अपने हाथ से खाना खिलाऊं । देख, कैसी मुलायम-मुलायम हरी-हरी घास है यह । खाना खा कर फिर नाच दिखाना—छूम, छनन छनन ।

(कुत्ते की भौं-भौं सुनाई देती है)

अरे ! यह दुष्ट फिर आ गया । देख, माया, यह ड्यूक मेरे हाथ से घास छीन रहा है । माधिया को हमने इतना डांटा था, लेकिन

माधिया — (हांफता कांपता हुआ) राजकुमारी जी, क्षमा कर दीजिए । यह बदमाश फिर जंजीर तोड़कर भाग आया । मैं इसे अभी उठा कर ले जाता हूं और

सिंहदेव — (आते हुए) नहीं, माधिया !

सब — (चौंक कर) महाराज !

सिंहदेव — ड्यूक के साथ जबरदस्ती न करो । जॉली के वर्षगांठ-समारोह में इसे भी शामिल होने दो । जॉली की वर्षगांठ की इसे भी तो खुशी है ।

राजकुमारी — पाप घुसी है ! पापा, आपने ड्यूक को बड़ा सिर चढ़ा रखा है।

सिंहदेव — बेटी, ऐसा न कहो। जॉली तुम्हारी सहेली है और ड्यूक जॉली का मित्र। जो जॉली का मित्र यह तुम्हारा भी मित्र।

राजकुमारी — पापा, ड्यूक जॉली का मित्र नहीं, बैरी है बैरी। देखिए, यह-जॉली को घास खाने नहीं देता।

सिंहदेव — (हंसते हुए) ठीक ही तो करता है। आज घास खाने का नहीं, मिठाई खाने का दिन है। भोला, आप घर अन्दर से मिठाई के थाल ला! राजकुमारी जॉली की वर्षगांठ यहां लॉन में ही मनायेंगी। क्यों, बेटी? आया, तुम घर के तमाम नौकर-नौकरानियों को यहीं बुला लाओ।

एलिस — येस योर हाइनेस !

(प्रसंग संगीत उभरता है)

सिंहदेव — वाह वा ! जॉली की वर्षगांठ का समारोह बहुत अच्छा रहा। बेटी, अब तुम अपनी जॉली के साथ भीतर जाओ। सन्ध्या के उतरते ही सर्दी बढ़ गयी है।

राजकुमारी — पापा, माधिया से कहिए कि ड्यूक को हमारे पीछे न आने दे।

सिंहदेव — (हंस कर) अच्छा-अच्छा, यह ड्यूक पीछे नहीं आयेगा। क्यों ड्यूक, तू जाली के पीछे नहीं जाएगा न? (कुत्ता कौं कौं करता है।) अरे! हमारे पांव क्यों छूने लगा। ओ! अब हमारी कुर्सी के नीचे बैठ गया। बड़ा ही चापलूस है। आया, तुम राजकुमारी और जॉली को लेकर अन्दर जाओ।

एलिस — येस योर हाइनेस ! आइए राजकुमारी ! आओ जाली !

(घुंघरूओं की आवाज फेड आउट)

सिंहदेव — माधिया, इस ड्यूक को ले जाओ ! ऐं ! यह तो हमारी टांगों से चिपट गया।

माधिया — ड्यूक !

सिंहदेव — नहीं माधिया, इसे या खींचो नहीं, यह हमारे पास कुछ देर रहना चाहता है। लेकिन इस पाजी की आंखें तो उधर ही लगी

हैं, जिधर जाती गयी है । कैसा अनुपम प्रेम है यह ! अगर यह जबान से बोल पाता तो

माधिया सरकार, दीवान जी आ रहे हैं ।

सिंहदेव आह ! कोई विशेष बात जान पड़ती है । बड़ी तेजी से इधर आ रहे हैं । (क्षणिक विराम) आइए, दीवान जी !

दीवान क्षमा कर, महाराज ! अभी अभी यह एक्सप्रेस टेलीग्राम आया है, कटक से ।

सिंहदेव कटक से टेलीग्राम ? किसका है ?

दीवान डी० आई० जी० पुलिस मि० हैमिल्टन का । वे क्रिसमस की छुट्टियों में यहां शिकार खेलने आ रहे हैं ।

सिंहदेव (खुश होकर) अरे ! टेलीग्राम का नाम सुनकर हम बेकार ही घबरा गये थे । दीवान जी, यह तो आपने खुशी की खबर सुनाई । मिस्टर—नहीं, नहीं, कर्नल हैमिल्टन डी० आई० जी० के रूप में ब्रिटिश सरकार के बड़े अफसर तो हैं ही, वे हमारे पुराने घनिष्ठ मित्र भी हैं । पिछली बार जब हम गवर्नर साहब से मिलने कटक गये थे, तो मि० हैमिल्टन ने हमें अपने घर दावत पर बुलाया था । और हमने भी उन्हें यहां शिकार खेलने के लिए आमंत्रित किया था—सपरिवार आमंत्रित किया था ।

दीवान और सरकार, उनके साथ मिसेज हैमिल्टन और मिस हैमिल्टन भी आ रही हैं ।

सिंहदेव अरे, यह तो और भी बड़ी खुशी की खबर हुई । कब आ रहे हैं वे ?

दीवान कल सवेरे वे कटक से चलेंगे ।

सिंहदेव तो लंच तक यहां पहुंच जायेंगे ?

दीवान जी हां ! मैं अभी गेस्ट-हाउस में उनके ठहरने और खाने का प्रबंध करवाता हूं ।

सिंहदेव दीवान जी, प्रबंध बहुत बढ़िया होना चाहिए । वैसे तो हर साल क्रिसमस पर कोई न कोई बड़ा अंग्रेज अफसर हमारी रियासत में

शिकार खेलने आता है—गवनर साहब भी आ चुके हैं, और सब मे स्वागत-सत्कार का आप बहुत अच्छा प्रबन्ध करते रहे हैं। लेकिन अबकी बार जो डी० आई० जी० हैमिल्टन साहब आ रहे हैं, उन्हें आप हमारा विशेष रूप से प्रिय मेहमान समझें। दरअसल इनसे हमारी पहली भेंट कोई छह वष पहले लन्दन में हुई थी, जब हम इस विश्व युद्ध से पहले दूसरी बार इंग्लैण्ड की यात्रा पर गये थे। तब ये मिलिट्री में थे। सयोग देखिए कि विश्व युद्ध के समाप्त होने पर इस वष के शुरू में इनकी नियुक्ति डी० आई० जी० पुलिस के पद पर हमारे ही उडीसा प्रात में हुई और अब ये आ रहे हैं सपरिवार हमारी रियासत में शिकार खेलने। मेरी नाक नही कटनी चाहिए।

दीवान महाराज, आप कैसी बात कर रहे हैं। मि० हैमिल्टन और उनके परिवार के स्वागत सत्कार मे कोई कमी नही रहेगी। उन्हें यहा किसी भी किस्म की कोई तकलीफ नही होगी। रियासत का सारा स्टाफ उनकी सेवा में उपस्थित रहेगा।

सिंहदेव (एकाएक) अरे! हम कैसे भुलक्कड हैं। असल बात तो अब याद आई। जब कटक में हमने मि० हैमिल्टन को क्रिसमस की छुट्टियो में यहा आने के लिए आमत्रित किया था, तो उन्होंने एक बात स्पष्ट कही थी और वह यह कि वे हमारी राजधानी या रियासत देखने नही, सिर्फ शिकार खेलने आयेंगे।

दीवान कोई बात नही। कल सवेरे ही हमारे आदमी जगल में टेंट आदि लगा कर उनके ठहरने का प्रबन्ध कर देंगे।

सिंहदेव दीवान जी, जगल में उनके लिए सब तरह का बढिया प्रबन्ध होना चाहिए। किसी भी चीज की कमी न रहे। उनके साथ उनकी पत्नी और बेटी भी होंगी न? और हा, हमारे जगल में शिकार तो काफी है न ?

दीवान जी हा, हर तरह का काफी शिकार है।

सिंहदेव ठीक है तो आप फौरन सब प्रबन्ध कीजिए। और हा, मि० हैमिल्टन को अभी टेलीग्राम दे दीजिए कि हम उनके और उनके परिवार के स्वागत के लिए तैयार हैं।

दीवान — जो आज्ञा । (जाता है)

सिंहदेव — (स्वगत) मि० हैमिल्टन आ रहे हैं, मिसेज़ हैमिल्टन आ रही हैं और उनके साथ आ रही है सिलविया—मिस सिलविया हैमिल्टन ।

माधिया — महाराज !

सिंहदेव — (चौंक कर) कौन ? ओह, माधिया ! तू अभी तक यहीं खड़ा है ?

माधिया — महाराज, यह ड्यूक आप के चरणों में बैठा है न !

सिंहदेव — अरे हां ! कल हम भी मि० हैमिल्टन के साथ शिकार खेलने जायेंगे और यह ड्यूक हमारे साथ चलेगा । तू भी चलेगा ?

माधिया — सरकार ! सेवक आपसे यही पूछना चाहता था । सरकार, क्या यह ड्यूक जॉली के बिना वहां जंगल में रह सकेगा ? आपको याद होगा, जब आप पिछली बार इसे अकेले को शिकार के लिए अपने साथ ले गये थे, तो यह शाम को जॉली के पास वापस भाग आया था ।

सिंहदेव — माधिया, तूने ठीक याद दिलाया । मि० हैमिल्टन की शिकार पार्टी में ड्यूक का रहना बहुत आवश्यक है । मि० हैमिल्टन जितने दिन जंगल में रहेंगे, उतने दिन ड्यूक को वहां रहना होगा । और तेरा यह कहना भी ठीक है कि जॉली के बिना यह एक मिनट भी वहां नहीं रहेगा । हूं ! तो जॉली को भी साथ ले जाना होगा । (एकाएक) अरे ! यह ड्यूक उठकर किधर भागा ?

माधिया — सरकार, लगता है कि भीतर राजकुमारी जी के कमरे की ओर गया है । जॉली वहीं है न ?

सिंहदेव — (हंस कर) वाह रे पागल प्रेमी ! राजकुमारी फिर नाराज़ होगी । आ मेरे साथ ।

(प्रसंग संगीत उभर कर फेड आउट)

राजकुमारी — (हैरान-परेशान-सी) क्या कहा, पापा ! कल आप जॉली को अपने साथ जंगल में ले जायेंगे ?

सिंहदेव — हाँ, बेटी ! ड्यूक बिना जॉली के जायेगा नही, इसलिए

राजकुमारी — (झुंझलाकर) ड्यूक ! ड्यूक !! मैं तंग आ गयी हू इस कुत्ते से। नही पापा ! जॉली मुझे छोड कर नही जायेगी । जॉली मेरे पास रहेगी । ड्यूक जाय-न-जाय, मेरी बला से !

सिंहदेव — बेटी, जिद न करो ! हमारी इज्जत का सवाल है। कटक से हमारे बहुत ही प्रिय अंग्रेज मित्र आ रहे हैं शिकार खेलने। ड्यूक के बिना उनका शिकार सफल नही होगा और ड्यूक जॉली के बिना जायेगा नही ।

राजकुमारी — अच्छा, तो जॉली के साथ मैं भी चलूगी !

सिंहदेव — नही, बेटी, तुम इतनी छोटी हो कि

राजकुमारी — वाह पापा ! जॉली क्या बहुत बडी है ? और पापा, आपने अभी बताया था कि मि० हैमिल्टन के साथ उनकी बेटी भी शिकार पार्टी मे जायेगी ।

सिंहदेव — मि० हैमिल्टन की बेटी तो बहुत बडी है, 22-23 वर्ष की।

राजकुमारी — क्या नाम है उसका ?

सिंहदेव — सिलविया, मिस सिलविया हैमिल्टन। बहुत ही अच्छी अंग्रेज लडकी है। जब लदन मे पढती थी, तो भारत की प्राचीन संस्कृति के विषय मे उसकी बहुत रुचि थी। जब उसके पिता मि० हैमिल्टन डी० आई० जी० बन कर कटक आये, तो वह भी भारत की संस्कृति का अध्ययन करने के लिए साथ चली आयी। आते ही यूनिवर्सिटी मे भर्ती हो गयी। छुट्टियों मे वह कभी कोणार्क जाती है और कभी जगन्नाथपुरी। वह बनारस भी हो आयी है। उसे भारत के जंगल और जीव-जन्तु देखने का भी बडा शौक है। दरअसल मि० हैमिल्टन ने अपनी बेटी की खातिर ही हमारी रियासत के जंगल मे शिकार खेलने का प्रोग्राम बनाया है। तो बेटी, क्या तुम चाहोगी कि सिलविया हमारे यहा से निराश लौटे ? क्या तुम चाहोगी कि शिकार के प्रोग्राम मे कोई विघ्न पडे, हमने बताया न कि शिकार का प्रोग्राम तभी सफल रहेगा, जब ड्यूक भी साथ जाये और ड्यूक तभी जायेगा, जब

राजकुमारी जॉली साथ जाये। पापा, एक वायदा कीजिए! मेरी जॉली को जगल म कोई कष्ट नही होगा!

सिहदेव नही, बिल्कुल कष्ट नही होगा! ड्यूक के साथ वह एक अलग टेंट में रहेगी। माधिया और भोला इसकी देखभाल करेंगे (हस कर) और उनसे भी अधिक जॉली की देखभाल खुद ड्यूक करेगा।

राजकुमारी यह तो मै जानती हू। पापा! जगल म कितने दिन लगेंगे?

सिहदेव यही कोई तीन-चार दिन।

राजकुमारी तो पापा! वायदा कीजिए कि तीन दिन बाद आप मेरी जॉली को सही-सलामत मेरे पास लायेंगे।

सिहदेव इस बात का हम पक्का वायदा करते हैं। बेटी, एक बात कहू? एक वर्ष पूर्व, जब हम जॉली को जगल से लाये थे, तो हमने इसकी सुरक्षा का आश्वासन दिया था

राजकुमारी किसे?

सिहदेव फिर कभी बतायेंगे। आज हम इतना ही कहेंगे कि जॉली को हम अपनी छोटी बेटी मानते है। अरे माधिया!

माधिया जी, सरकार!

सिहदेव कल जॉली भी ड्यूक के साथ जायेगी! कहा है वह?

माधिया सरकार! बाहर बरामदे मे ड्यूक के साथ खेल रही है।

सिहदेव (हस कर) पता नही, पिछले जन्म मे ये दोनो क्या थे?

राजकुमारी माधिया, रात हो गयी। अब तो ड्यूक को यहा से ले जा।

माधिया अभी ले जाता हू, राजकुमारी जी!

(फेड आउट - फेड इन)

माधिया (धीरे से) कौन? माया!

एलिस फिर तुमने मुझे

माधिया नही, नही, एलिस! तुम यहा ओट मे खडी क्या कर रही थी?

एलिस — बाप-बेटी की बातें सुन रही थी। लगता है, ड्यूक और जॉली के प्रेम का रोग यहां छूत की बीमारी बन गया है।

माधिया — उस बीमारी का एक शिकार तो यहां हाजिर है।

एलिस — असली शिकार खुद महाराज जान पड़ते हैं। उनके मुंह से सिलविया की प्रेज -- माई मीन, सराहना सुनी।

माधिया — ओह! अब पता चला कि महाराज बार-बार फटक क्या जाते रहे हैं।

एलिस — (हंस कर) अब शिकारी फटक से यहीं आ रहा है।

माधिया — और मुझे अपने शिकारी से इतने दिनों के लिए बिछुड़ना पड़ रहा है।

एलिस — अच्छा, अच्छा, अब ड्यूक के साथ यहां से चलते फिरते नजर आओ।

माधिया — नहीं, एलिस

एलिस — बुलाऊं राजकुमारी को ?

माधिया — मेरा मुर्गा बनाने के लिए ?

(दोनों हंसते हैं। प्रसंग-संगीत उभर कर फ्लश बैक की समाप्ति सूचित करता है। झींगुर की आवाज उभरती है)

माधिया — और जतीन, दूसरे दिन

जतीन — ठहरिए, चाचा जी! पहले यह बताइए, आपकी और एलिस की शादी कब हुई ?

माधिया — उस दुर्घटना के कोई आठ महीने बाद—ठीक 15 अगस्त 1947 के दिन। खैर, दूसरे दिन सवेरे कोई दस-ग्यारह बजे डी० आई० जी०, मि० हैमिल्टन जब अपनी पत्नी और लड़की सिलविया के साथ आये, तो उनका बहुत ही शानदार स्वागत किया गया। दोपहर को बड़े शाही ठाठ से मेहमानों को लंच खिलाया गया। राजा साहब ने राजकुमारी को सिलविया से विशेष रूप से मिलाया। सिलविया अत्यन्त सुंदर, सुकुमार और सौम्य थी। उसके विपरीत उसका बाप एकदम खूंखार गुरिल्ला जान

पड़ता था। वह शिकार के लिए उतावला हो रहा था इसीलिए लंच के फौरन बाद कारों और जीपों में मेहमानों का काफिला जंगल की ओर रवाना हुआ। कुछ सुविधा और खाने पीने का सब सामान लाद कर ले जाया गया। साथ में कई खानसामे, बैरे और नौकर-चाकर भी गये। मैं और भोला ड्यूक और जॉली के साथ एक जीप में थे। चौदह मील का सफर तय करके जब राजा साहब के साथ मेहमानों का काफिला जंगल में पहुंचा, तो वहां एक किनार पहाड़ की ढलान पर टेंटों और छोलदारियों की छावनी-सी बसी हुई मिली। रियासत के दीवान ने रातों रात 'जंगल में मंगल' वाला कमाल कर दिखाया था। शिकार के लिए हांका लगाने वाले लोग और शाम को मेहमानों का मनोरंजन करने वाले लोक-नर्तक और गायक भारी संख्या में वहां पहले से ही एकत्र किये गये थे। मि० हैमिल्टन तीसरे पहर बंदूक लेकर शिकार के लिए जंगल में घुस गये। उनके साथ बंदूक और कारतूसों से लैस राजा साहब, ड्यूक और मैं थे, और थे हांका लगाने वाले लोग। शिकार खेलने का यह सिलसिला लगातार चार दिन तक चला। मि० हैमिल्टन रोज जो ढेरों शिकार मार कर लाते उन्हें वहीं रात को भूना जाता, पकाया जाता, और दस्तरख्वान पर सजाया जाता। मि० हैमिल्टन ने शिकारी की ऐसी हिंस्र वृत्ति पाई थी कि सैंकड़ों पशु-पक्षियों को मार कर भी उसकी तृप्ति नहीं हो पा रही थी। हांका लगाने वाले थक गये, हम सब नौकर-चाकर थक गये, लेकिन मि० हैमिल्टन का शिकार का जोश ठण्डा नहीं हुआ। राजा साहब अपने प्रिय मेहमान का हर तरह से साथ दे रहे थे। इधर कैम्प में दोनों अंग्रेज महिलाएं लोक-गीतों को दिन भर बड़े चाव से सुनतीं, लोक नृत्यों में शामिल होतीं। कैम्प में ड्यूक और जॉली का अद्भुत प्रेम भी अपना असर दिखा रहा था, जीव-हिंसा के खूनी धब्बों पर मादक भावनाओं के फूल खिला रहा था। राजा साहब की प्यासी आंखें सिलविया को ढूंढतीं। सिलविया की मदमाती आंखें स्वागत में पलक-पांवड़े बिछातीं। पांचवें दिन की सुबह की बात है। टेंट के बाहर ड्यूक और जॉली की प्रेम-लीला चल रही थी और मैं एक शीशम के पेड़ की ओट में बैठा

मुग्ध भाव से उसे देख रहा था। तभी पहाड़ से उतरते हुए राजा साहब और मिस सिलविया का स्वर सुनाई दिया ।

(फ्लैश बैक—प्रसग सगीत उभरता है)

सिलविया (हाफती सी) आह, मि० सिंहदेव ! जस्ट सी, मेरा हार्ट अभी तक धक धक कर रहा है !

सिंहदेव इस चट्टान पर कुछ देर बैठ जाइए, मिस हैमिल्टन।

सिलविया ओह, उस एक्सीडेंट को इमेजिन करके ही मैं काप जाती हू। न जाने कैसे पहाड की चोटी पर पाव फिसला। अगर आप जल्दी से मुझे थाम न लेते, तो आई वुड हैव बीन डेड बाई नाउ। आपने मेरी जान बचाई।

सिंहदेव वह तो मेरी ड्यूटी थी मिस हैमिल्टन। मेरे रहते आप को

सिलविया मेरा नाम सिलविया है, डियर।

सिंहदेव (खुश होकर) आपने मुझे नाम लेकर बुलाने का अधिकार दिया, इस कृपा के लिए मैं मैं

सिलविया डोंट बि फार्मल, डियर। उस पर्वत के एकात मे मैंने फर्स्ट टाइम फील किया कि मैं अपने जीवन की सेफ्टी का भार किसी पुरुष को सौंप सकती हू।

सिंहदेव (विभोर से) सिलविया, माई डार्लिंग !

सिलविया पता नहीं, ह्वाट हैज हैपेण्ड टु मी टुडे ? आज मैं चाहती हू, आई वाट टु ओपेन माई माइंड बिफोर यू। मम्मी डैडी कहते है मैरी सू, मैरी सू। इग्लैण्ड मे मुझे कोई मन-पसद जीवन-साथी नही मिला। यहा कटक की इगलिश सोसायटी मे भी कोई नही मिला। लगता है, इडिया की एनशेंट कल्चर की जो मैंने स्टडी की, एनशेंट लिटरेचर के ट्रासलेशसन की जो स्टडी की, उससे जीवन-साथी के बारे मे मेरे व्यूज बदल गये हैं। आज फर्स्ट टाइम फील किया है कि जैसे मुझे जीवन-साथी मिल गया।

सिंहदेव सिलविया, माई डार्लिंग ! पहली पत्नी के देहान्त के बाद मैंने तय किया था कि दुबारा शादी नहीं करूगा, लेकिन जब से तुमको

देखा है, इस अलौकिक रूप को निहारा है, मुझे अपना एकाकीपन खलने लगा है। मैं मैं आज कितना खुश हू, जा

(तभी कुत्ते की भौं-भौं और हिरनी के घुंघरुओं की आवाज सुनाई देती है।)

सिलविया अरे! आप का यह ग्रे-हाउड आकर आपके पाव से लिपट गया। लो, पीछे पीछे हिरनी भी क्या नाम है इसका ?

सिहदेव जॉली !

सिलविया हाऊ स्वीट !

सिहदेव यह इस ड्यूक की स्वीट हार्ट है।

सिलविया (हस कर) ड्यूक की स्वीट हार्ट जॉली। लवली, वण्डरफुल ! मैंने देखा है यह ग्रे हाऊड इस कैम्प मे एक मिनट के लिए भी जॉली से अलग नही होता।

सिहदेव दोनो मे सच्चा प्रेम है।

सिलविया पहले मैं सोचती थी—व्हाई डिड यू ब्रिंग जॉली टु दिस शिकार-कैम्प ? आप इसे यहा क्या लाए ?

सिहदेव शिकार के लिए ड्यूक को लाना जरूरी था न ?

सिलविया हा, मैं समझ गयी। यह ड्यूक जॉली के बिना न आता। इगलिश ग्रे हाउड इन लव विद ऐन इडियन डियर। रियली वण्डरफुल ! लगता है इन दोनो को यहा देख कर मैं मैं

सिहदेव डार्लिंग ! देखो, यह जॉली तुम्हे कैसे प्यार से देख रही है ?

सिलविया इसे पता चल गया है कि मैं भी इससे लव करती हू। लिसेन, वह कालिदास के ड्रामे की हीरोइन ?

सिहदेव शकुन्तला।

सिलविया येस, शकुतला ऐसे ही फॉरेस्ट मे रहती थी। हिरनियों से लव करती थी। उन्हें ग्रीन ग्रास ब्लेड्स खिलाती थी। आज से यह जॉली मेरी गल फ्रेण्ड है। (पुचकारते हुए) कम ऑन, जॉली डियर, मेरी गोद मे बैठ जाओ।

नही समझती थी, लेकिन मैंने अपने दुष्कृत्य के लिए इससे क्षमा मागी और इसकी मरी हुई मा को साक्षी बना कर प्रण किया कि मैं इसे अपनी बेटी की ही तरह पालूगा, हमेशा जी-जान से इसकी रक्षा करूगा ।

सिलविया (भर्राए गले से) ओह, डियर सिंहदेव ! यू आर ऐन एजेल, मेरे डैडी तो एकदम क्रुअल हैं । मर्सलेस हैं । आप कितने मर्सीफुल हैं, दया-ममता वाले हैं । लाइक जीसस क्राइस्ट, लाइक लॉर्ड बुद्धा । आई लव यू । सिंसीयरली लव यू ।

(तभी दूर से मि० हमिल्टन की भारी भरकम और रोबदार आवाज़ सुनाई देती है ।)

मि०हैमिल्टन सिलविया !

सिलविया (चौंक कर) ओह, डैडी इज़ कमिंग ! (ऊचे स्वर से) डैडी, आई एम हियर !

मि०हैमिल्टन (आ कर) हमने तुमारा वायस सुना था । कोटशिप चल रहा है । (हसता है ।) तुमारा ममी बेकार वरी कर रहा था ।

मिसेज हैमिल्टन (आते हुए) हम वरी कर रहा, तुम इतनी देर यहा रह गयी, सिलविया !

सिलविया ममी, मि० सिंहदेव ने आज मेरी लाइफ सेव की । पहाड पर मेरा पाव स्लिप कर गया था, इन्होंने फौरन कूद कर मुझे बचाया ।

मिसेज हैमिल्टन ओह, आइ एम सो हैप्पी टु सी यू सेफ ऐण्ड साउण्ड ! थैंक यू, मि० सिंहदेव ! यू आर ऐन ऐंजल ।

मि०हैमिल्टन (हस कर) एजेल जगल मे शिकार खेलता है । मि० सिंहदेव आज हमारा लास्ट डे है शिकार का । कल हम अर्ली मॉर्निंग कटक के लिए चल देगा । आज हम खूब शिकार खेलना मागता है । कब चलें ?

सिंहदेव लच के फौरन बाद ।

मि०हैमिल्टन राइट नाउ लच इज़ रेडी । आओ खाना खायें ! (जाता है)

सिहदेव — सिलविया, इस हिरनी के साथ तुम सचमुच वन-कन्या शकुतला जान पडती हो ।

सिलविया — और आप किंग दुष्यत । (दोनों हसते ह)

सिहदेव — एक बात बताऊ । यह जॉली मेरी बेटी के समान है ।

सिलविया — तो फिर आपकी दो डॉटर्ज हुईं—एक वह राजकुमारी और दूसरी यह जॉली । मैं दोना को लाइक करती हू । आई एश्योर यू, मि० दुष्यत । आई मीन, डियर सिहदेव ।

सिहदेव — एक वष हुआ, मैंने इस जॉली को इसी जगल मे उस सामने वाले शीशम के पेड के नीचे से पाया था ।

सिलविया — हाऊ ?

सिहदेव — बडी ही ददनाक पैथिटिक स्टोरी है । पिछले वर्ष इन्ही क्रिसमस की छुट्टियो मे डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर मि० फरगूसन यहा शिकार खेलन आये थे हम दोनो ने दूर से देखा कि उस शीशम के पेड के नीचे खडी एक हिरनी अपने बच्चे को दूध पिला रही है । मि० फरगूसन ने मेरी निशानेबाजी का कमाल देखने के लिए शत लगाई और कहा—ऐसा निशाना लगाइए कि हिरनी मर जाए, लेकिन बच्चे का बाल-बाका न हो । मैंने शत मजूर की और निशाना बांध कर गोली दाग दी । गोली हिरनी की गदन मे लगी । वह लडखडाई, नीचे गिरी और देखते-देखते तडप कर खत्म हो गयी । जब हम दोना पास पहुचे, तो उसका बच्चा—यानी कि यह जॉली सही सलामत थी । इसे खरौंच तक नही आई थी । यह स्तब्ध-सी, जडवत-सी, डरी-डरी अपनी मा की तडपती हुई लाश का अपलक देख रही थी । उस पर जो वज्रपात हुआ था, उसे जसे समझ नही पा रही थी । हम पास पहुचे, तो हमारी आहट से यह अपनी जगह से हिली-डुली नही । तब यह मुश्किल से तीन चार महीने की होगी । इसकी दशा देख कर मेरा हृदय चीत्कार कर उठा, मेरा रोम रोम पश्चात्ताप से रोने लगा । मुझे अपनी निदयता पर ग्लानि हुई । मैंने लपक कर हिरनी की बच्ची इस जॉली को अपनी गोद मे उठा लिया । यह मेरी बात तो

नहीं समझती थी, लेकिन मैंने अपने दुष्कृत्य के लिए इससे क्षमा मांगी और इसकी मरी हुई मां को साक्षी बना कर प्रण किया कि मैं इसे अपनी बेटी की ही तरह पालूगा, हमेशा जी-जान से इसकी रक्षा करूंगा।

सिलविया (भर्राए गले से) ओह, डियर सिंहदेव ! यू आर ऐन एजेंल, मर डडी तो एकदम क्रुग्ल हैं। मर्सीलेस हैं। आप कितने मर्सीफुल हैं, दया-ममता वाले हैं। लाइक जीसस क्राइस्ट, लाइक लॉड बुद्धा। आई लव यू। सिंसीयरली लव यू।

(तभी दूर से मि० हमिल्टन की भारी भरकम और रोबदार आवाज सुनाई देती है।)

मि०हैमिल्टन सिलविया !

सिलविया (चौंक कर) ओह, डैडी इज कमिंग ! (ऊंचे स्वर से) डैडी, आई एम हियर !

मि०हैमिल्टन (आ कर) हमने तुमारा वायस सुना था। श्रोटशिप चल रहा है। (हंसता है।) तुमारा ममी बेकार वरी कर रहा था।

मिसेज हैमिल्टन (आते हुए) हम वरी कर रहा, तुम इतनी देर कहां रह गयी, सिलविया !

सिलविया ममी, मि० सिंहदेव ने आज मेरी लाइफ सेव की। पहाड़ पर मेरा पांव स्लिप कर गया था, इन्होंने फौरन कैच कर मुझे बचाया।

मिसेज हैमिल्टन ओह, आइ एम सो हैप्पी टु सी यू सेफ ऐण्ड साउण्ड! थैंक यू, मि० सिंहदेव ! यू आर ऐन ऐंजल !

मि०हैमिल्टन (हंस कर) एंजेल जंगल में शिकार खेलता है। मि० सिंहदेव आज हमारा लास्ट डे है शिकार का। कल हम अर्ली मार्निंग कटक के लिए चल देगा। आज हम खूब शिकार खेलना मांगता है। कब चलें ?

सिंहदेव लंच के फौरन बाद।

मि०हैमिल्टन राइट नाउ लंच इज रेडी। आओ खाना खायें ! (जाता है)

सिंहदेव — माधिया ! माधिया !!

माधिया — (आ कर) हुक्म, सरकार !

सिंहदेव — ड्यूक के साथ तयार रहना ! कोई आधे घंटे मे शिकार के लिए चल देंगे। और हां, हांका लगाने वालों को, तो अभी जगल मे आगे भेज दो।

माधिया — जी सरकार !

(जगल का वातावरण उभरता है। हांका लगाने वालों का शोर और बन्दूक चलने की आवाजें सुनाई देती है।)

मि०हैमिल्टन — (झुंझलाकर) ओ गॉड ! चार बज गये और डिनर के लिए एक भी शिकार नही मिला।

सिंहदेव — हमे बडा अफसोस है, मि० हैमिल्टन ! लेकिन आप निराश न हों, शिकार जरूर मिलेगा।

मि०हैमिल्टन — हा जरूर मिलना चाहिए। मि० सिंहदेव, क्यो न और आगे चलें।

सिंहदेव — चलिए। माधिया, तुम ड्यूक और अपने आदमियों को लेकर आगे चलो।

माधिया — जो हुक्म, सरकार ! लेकिन सरकार, हम कैम्प से काफी दूर आ गये है—लगभग चार मील। और जरा उधर पूर्व की ओर देखिए ! काले बादल उठ रहे हैं।

सिंहदेव — अरे हां ! आधी पानी के आसार नजर आ रहे हैं। समय से पहले ही अंधेरा होता जा रहा है।

मि०हैमिल्टन — हम जल्दी शिकार ढूंढना मांगता है—जल्दी।

सिंहदेव — आइए !

(हांका लगाने वालों के शोर के साथ पहले हवा की सांय-सांय और फिर बादलों की गरज और बिजली की कड़क सुनाई देती है। कुछ देर बाद पूरे वेग से तूफान का शोर सुनाई देता है—और सुनाई देता है जगली जानवरों का शोर और लोगों की आवाजें—भागो ! भागो !! तूफान आ गया)

सिंहदेव (चिल्ला कर) मि० हैमिल्टन ! हम फंस गये तूफान में ।

मि० हैमिल्टन हेलो ! हेलो मि० सिंहदेव ! आप यहां हैं ? आह ! इस आंधी और तूफान ने मुझे जैसे एकदम अंधा बना दिया । अंधेरा ऐसा कि कुछ सूझ नहीं रहा । हेलो, मि० सिंहदेव !

सिंहदेव (चिल्लाकर) मि० हैमिल्टन ! घबराइए नहीं, मैं बिल्कुल आपके पास हूं । बड़ी भयंकर आंधी है यह ! आप नाक, कान, मुंह और आंखें बंद करके जमीन पर लेट जाइए ।

मि० हैमिल्टन (रुंधे गले से) थैंक यू, मि० सिंहदेव ! लेकिन बड़े जोर की बारिश आ गई ।

सिंहदेव आह, यह असमय की बारिश ! एं, मूसलाधार बारिश होने लगी । भाग कर पेड़ के नीचे आ जाइए मि० हैमिल्टन !

(आंधी-तूफान और जंगली जानवरों का शोर और भी तेज होता है)

माधिया (चिल्ला कर) ड्यूक ! ड्यूक !! लगता है कैम्प की तरफ भाग गया जॉली के पास । अरे, ओ कपिला ! हरिया ! बिसिया ! नथुआ ! तुम लोग कहां मर गये ?

एक स्वर (चिल्ला कर) हम यहां हैं, माधिया बाबू ! अंधेरे में कुछ दिखाई नहीं दे रहा ।

माधिया अरे, महाराज और मि० हैमिल्टन कहीं मिल नहीं रहे !

वही स्वर हम उन्हें ढूंढ रहे हैं !

माधिया ओह, इस आंधी-पानी और अंधेरे में कहां ढूंढें उन्हें ! हे चंडी माता, हमारे महाराज की रक्षा करना ! ओह, अचानक यह कैसी प्रलय आ गई !

(कुछ देर बाद आंधी, पानी और तूफान का शोर धीरे-धीरे फेड आउट होता है और कैम्प का वातावरण उभरता है)

मिसेज है० थैंक गॉड, आप दोनों बच कर आ गये ! आई थांक बरीड !

सिल्विया डेडी, आई एम हैप्पी । आप दोनों सही सलामत आ गये ।

मि०हैमिल्टन ओह, ऐसा आँधी-तूफान लाइफ में कभी नहीं देखा और कोई शिकार भी नहीं मिला।

सिंहदेव मि० हैमिल्टन, मुझे अफसोस है कि आपको आज इतना कष्ट उठाना पड़ा है। सिमसम पर पहले कभी ऐसा तूफान नहीं आया।

मि०हैमिल्टन मि० सिंहदेव। आई एम ग्रेटफुल टु यू। आपने हमारा जान बचाया।

मिसेज है० मॉनिंग में इन्होंने हमारी सिलविया का जान भी बचाया।

मि०हैमिल्टन डार्लिंग, एक बहुत बड़ा पेड स्टॉर्म से अपरूट होकर हम पर गिरने वाला था। मि० सिंहदेव ने जल्दी से हम खींच कर बचा लिया और फिर इस अंधेरे में हाथ पकड़ कर यहां तक लाये।

सिंहदेव मुझे शर्मिंदा न कीजिए। मि० हैमिल्टन, जल्दी से कपड़े बदल डालिए। आप तो बिल्कुल भीग गये हैं।

मिसेज है० आओ डियर जल्दी में कपडे चेंज कर लो। कम ऑन!

(दोनों जाते हैं)

सिंहदेव माधिया, बैरा से कहो, साहब को ब्रांडी पेश करे।

माधिया जो हुक्म सरकार!

सिंहदेव और सुनो! डयूक कहा है?

माधिया जॉली के पास है।

सिलविया वह स्टार्म और रेन में जंगल की तरफ से भागा भागा आया और जॉली के पास पहुंच गया। ही इज ए ग्रेट लवर। मि० देव, आप भी कपडे बदल डालिए न! आप बुरी तरह भीगे हुए हैं। आई वाज रियली वरीड अबाउट यू—ऐंड डैडी।

सिंहदेव मिस सिलविया, मुझे आपकी और आपकी ममी की चिंता हो रही थी। यहां आकर देखता हूं कि पर्वत की ओट और

ऊचाई के कारण कैम्प को कोई नुकसान नही पहुचा। फिर भी आपको कष्ट जरूर हुआ होगा। आई एम सॉरी!

सिलविया प्लीज फरगेट इट! जल्दी से कपडे बदलिए।

सिंहदेव अभी बदलता हू। (पुकार कर) माधिया!

माधिया (आकर) जी, सरकार!

सिंहदेव आठ बज गये। हेड खानसामा से कहो कि डिनर तयार कर दे। आज कोई शिकार तो मिला नही। और हा, वह नाचने-गाने वाले कहा मर गये। उनसे कहो कि मेहमानो का मन बहलाने के लिए फौरन नाच-गाना शुरू कर।

माधिया जो हुक्म, सरकार! (जाता है)

सिलविया (प्यार से) डियर देव, आपको हमारी चिंता है, अपनी नही।

सिंहदेव आप हमारे मेहमान है—अत्यत प्रिय मेहमान। मेरा सौभाग्य है कि आप यहा आई।

(लोक गायको का उडिया भाषा मे नाच-गाना उभरता है जो कुछ देर बाद पृष्ठभूमि मे चला जाता है)

सिंहदेव (परेशान-सा) तो खानसामा, डिनर के लिए गोश्त बिल्कुल नही।

खानसामा *बिल्कुल नही, महाराज! हैमिल्टन साहब रोज जो शिकार* मार कर लाते थे, वही हम पका कर परोसते थे। आज वे कोई शिकार लाये नही।

सिंहदेव ओह, यह तो बहुत बुरा हुआ! आज हमारी तो नाक कट जायेगी। माधिया, शहर से कुछ मगवाया जा सकता है क्या?

माधिया सरकार, मगवाया तो जा सकता है, लेकिन बारिश और तूफान के कारण सब रास्ते बद हो गये है। चारो तरफ पानी-ही-पानी है। कोई जीप या कार नही जा सकती। पूरा चौदह मील का सफर है, महाराज!

खानसामा — महाराज, आज बिना गोश्त के ही डिनर बनने दीजिए ! मजबूरी जो है ।

सिंहदेव — (झल्ला कर) आह, दीवान साहब ने ठीक प्रबंध नहीं किया ! हम उसे दंड देंगे । आज हमारी नाक कट गई । मेहमानों के सामने हम क्या मुंह लेकर जाएं ।

(नाच-गाना उभरता है और फिर पृष्ठभूमि में चला जाता है)

मिसेज ह० — मि० सिंहदेव, आप क्या बात कर रहे हैं ? आप क्या अपसेट हो रहे हैं ? पिछले चार दिनों में हम बढ़िया लंच और डिनर खा रहे हैं आज सिम्पल फूड ही सही । क्यों सिलविया ?

मि० हैमिल्टन — सिलविया तो उधर इंडियन औरत-लोग के साथ डांस कर रही है । डॉलिंग ! तुम और सिलविया सिंपल फूड खाओ ! और तुम जानती ही हो कि ब्रिटिश आर्मी का यह कर्नल और कटक का डी० आई० जी० तो बिना मांस मछली के कभी खाना नहीं खाता । हम हंड्रेड पर्सेंट नान वेजिटेरियन है । आज हम फास्ट करेगा । फास्ट हेल्थ के लिए अच्छा होता है न ? (हंसता है)

सिंहदेव — (परेशान-सा) आप उपवास करेंगे ? ओह ! मैं बहुत शर्मिन्दा हूं जो अपने प्रिय मेहमानों को मनपसंद खाना नहीं खिला पा रहा । आंधी-तूफान ने सब गड़बड़ कर दिया । गोश्त का इंतजाम नहीं हो पा रहा । आह मेरे लिए कितनी शर्म की बात है !

मि० हैमिल्टन — ना ना, मि० सिंहदेव आप शेम फील न कीजिए । आज हमको शिकार नहीं मिला, तो डिनर भी नहीं । हम ! आज रात फास्ट ।

मिसेज ह० — नहीं डियर तुम फास्ट क्यों कर रहे हो ? तुम इनके प्रिय मेहमान हो । प्रिंस बिल्कुल ठीक है । क्यों मि० सिंहदेव?

सिंहदेव — मैडम मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा । मेरे प्रिय मेहमान आज भूखे रहेंगे ? आह !

मि०हैमिल्टन — मि० सिंहदेव, अगर आपको हमारा फास्ट करना पसंद नहीं, तो हमारी एक सजेशन है, सुझाव है !

सिंहदेव — जल्दी कहिए, कर्नल हैमिल्टन ! आपके लिए मैं अपनी जान तक देने को तैयार हूं।

मि०हैमिल्टन — थैंक यू ! थैंक यू !! हमारा सजेशन सिम्पल है। कैम्प में आप की वह हिरनी जॉली है न ।

सिंहदेव — (चौंक कर) जी ! जॉली? (बाहर नाच-गाना बन्द हो जाता है)

मि०हैमिल्टन — हां, जॉली ! ऐसी हिरनियां जंगल में बहुत मिल जायेंगी आपको, कल कोई दूसरी पकड़ कर ले जाइए। आज जॉली को हमारे डिनर के लिए

सिंहदेव — (परेशान सा) लेकिन लेकिन वह

मिसेज है० — (क्रोध से) मि० सिंहदेव, अगर वह जॉली आपको इतनी प्यारी है तो

सिंहदेव — नहीं, नहीं, मैडम, मि० हैमिल्टन जैसे मेहमान की तुलना में जॉली का कोई महत्व नहीं। मैं अभी

मिसेज है० — थैंक यू माई डियर, डियर फ्रेंड। यू आर जेम आफ ए मैन! जॉली का गोश्त बड़ा सॉफ्ट और टेस्टी होगा।

सिंहदेव — हां, हां, लेकिन लेकिन जॉली की मां मैंने उसे वचन दिया था, प्रण किया था आज मैं उसे ।

मि०हैमिल्टन — करेक्ट। आप जॉली को हमारे हवाले कर रहे हैं। जैसे जॉली की मदर ने उसे अपने पेट में रखा था, उसी तरह हम उसे अपने पेट में रखेगा। हम जॉली का मदर बनेगा। मदर !

(मि० और मिसेज हैमिल्टन हंसते हैं)

सिंहदेव — (पिटा पिटा सा) क्या नहीं, क्यों नहीं ! (पुकार कर) माधिया ! माधिया !!

माधिया — (आकर) हुक्म, सरकार !

सिंहदेव — (दुर्बल स्वर से) जॉली को लाओ यहां !

माधिया　　जी, अभी लाया ! (जाता है)

मि०हैमिल्टन　डार्लिंग, हमारे सूटकेस से शिकार का वह बड़ा नाइफ़ निकालो, वह लम्बी छुरी !

मिसेज़ है०　यस डियर !

(दूर कुत्ते के भौंकने की ऐसी आवाज़ आती है, जैसे वह किसी से उलझ रहा है)

सिंहदेव　माधिया, जॉली को लेकर नहीं आया। मैं देखता हूँ !

(कुत्ते के भौंकने की आवाज उभरती है)

सिंहदेव　माधिया जॉली को यहां लेकर क्या खड़ा है ।

माधिया　सरकार, यह ड्यूक　।

सिंहदेव　सरकार, यह ड्यूक　। रोकने से रुक गया । और तूने नालायक, तू एक कुत्ते के रोकने से रुक गया । और तूने इसे खुला क्या छोड़ रखा है ? जॉली को हमारे हवाले कर और इस ड्यूक के गले में जंजीर डाल कर उस शीशम के पेड़ से बांध दे । जल्दी कर ।

(कुत्ते के भौंकने की आवाज आती रहती है)

माधिया　जो हुक्म सरकार !

मि०हैमिल्टन　(आकर हंसते हुए) यह ग्रे हाउंड जॉली को बचाना चाहता है ?

सिंहदेव　नहीं मि० हैमिल्टन, यह नौकर लापरवाह है हरामखोर है । लीजिए, जॉली हाजिर है ।

मि०हैमिल्टन　वेरी गुड । खानसामा ! बैरा ! तुम लोग इस जॉली को पकड़ो, हम एक ही वार में

(कुत्ता भौंकता हुआ लपक कर आता है और पकड़ो-पकड़ो का शोर मचता है)

मिसेज़ है०　ओह, दिस डॉग इज़ मैड ! बचो, डियर !

सिंहदेव　(गुस्से से) माधिया, ड्यूक को फिर छोड़ दिया ? देखा, यह साहब पर हमला कर रहा है !

माधिया सरकार, यह जंजीर तोड कर भागा आया ! बाबू मे नहीं आ रहा। जॉली के लिए यह

सिंहदेव (गुस्से से) नमक हराम ! बदमाश ! तुझ से कोई काम नही होता। भोला, हरिया, नथुआ ! कम्बख्तो ! तमाशा क्या देख रहे हो ! ड्यूक को पकड कर इधर ले आओ ! इस मजबूत जंजीरो से बाध दो।

(कुत्ते के भौंकने और उसे पकडने का शोर मचता है। यह शोर धीरे धीरे दूर चला जाता है।)

सिलविया (आकर) यह क्या हो रहा है ? ड्यूक का यह हाल

मि० हैमिल्टन सिलविया, वह ग्रे हाउड अपनी फ्रेंड को हमारी छूरी से बचाना चाहता था !

सिलविया (घबराकर) तो डडी, आप ? ना, ना !

मि० हैमिल्टन नो, नो क्या ? यह देखो, सिलविया, हम एक ही स्ट्राक से कैसे इस हिरनी का गला काटते हैं।

सिलविया नो ! नो !! मि० सिंहदेव ।

मि० हैमिल्टन वन-टू थ्री ! फिनिश्ड !

सिलविया (चीखकर) ओह ! (चीखता, हाहाकार मचाता हुआ संगीत चारो ओर फल जाता है और कुछ देर बाद फेड आउट होता जाता है—झींगुर की आवाज उभरती है।)

माधिया और जनीन, उस रात जॉली का गोश्त कई रूपो मे डिनर टेबल पर परोसा गया। अपने प्रिय मेहमानो का मन रखने के लिए राजा साहब भी उस डिनर मे सम्मिलित हुए। उनके भीतर की व्याकुलता, ग्लानि और पश्चाताप की भावना उनके चेहरे पर प्रकट नही हो रही थी। मेहमाननवाजी की सनक म वे अपने मन के भावो को दबा कर मुस्कराने की कोशिश कर रहे थे। मि० हैमिल्टन और उनकी पत्नी जॉली के स्वादिष्ट गोश्त की सराहना करते हुए बडे आनद से प्लेट-पर-प्लेट साफ किये जा रहे थे। लेकिन बहुत आग्रह

कहने पर भी सिलविया ने उस गोश्त को नहीं छुआ। वह अस्वस्थता का बहाना बनाकर थाल प्लेट पर नजर गड़ाए गुमसुम बैठा रहा। राजा साहब से उसने एक बार भी आँख नहीं मिलाई। राजा साहब मि० हैमिल्टन की प्रशंसा करने में लगे थे, नौकर ज्यों ही उन्होंने जॉनी का गोश्त मुँह में डाला वह जैसे उनके हलक में अटक गया। उन्हें उबकाई आ गई। दूसरे दिन मेहमानों का काफिला जंगल से वापस चला। रास्ते का जिस स्थान पर जॉनी का वध हुआ था, ड्यूक पागल की तरह उसके चक्कर लगा रहा था। खून से लाल हुई मिट्टी को सूँघ रहा था। उसकी हालत देखकर मेरा अपराधी मन आत्मग्लानि से रो उठा। रात को राजा साहब के हुक्म से ही तो जॉनी को उस वध-स्थल पर ले गया था। ड्यूक को मैंने दूसरे नौकरों की सहायता से जंजीर से बाँधकर बड़ी मुश्किल से जीप में अपने साथ बैठाया। काफिले के पीछे-पीछे जीप जब चल दी, तो भी ड्यूक भौंकता रहा, मेरी गिरफ्त से छूटकर जंजीर तोड़कर बाहर कूदने की कोशिश करता रहा। जीप के आगे राजा साहब की कार थी। वे बार-बार पीछे मुड़-मुड़ कर देखते थे। उनकी आँखों में अजीब सी निराशा, झुंझलाहट और पीड़ा थी। पाँच दिन पहले जंगल की तरफ आते समय सिलविया राजा साहब के साथ कार में बैठी थी। अब लौटते समय वह अपने ममी-डैडी के साथ दूसरी कार में बैठी थी। लगता था, जैसे जॉनी के वध की दुर्घटना ने उसके और राजा साहब के बीच दीवार खींच दी थी। प्यार एक घृणा में परिवर्तित हो गया था। तीनों मेहमान तड़के चले गये। जब राजा साहब अपने राजमहल में पहुँचे, तो उन्हें लपलपाती घृणा का मुखर रूप देखने को मिला—(फ्लैश बैक)

राजकुमारी (घबराई-सी) पापा! पापा!! मेरी जॉनी कहाँ है?

सिंहदेव (अपराधी की तरह) कौन जॉनी? हाँ, हाँ! वह वह

राजकुमारी आप आ गये, वह नहीं आई?

सिंहदेव वह नहीं आई? आ जायेगी, अभी आती है, बेटी!

राजकुमारी पापा, आपने इन गोरे मेहमानों के साथ शिकार पर जाते समय मुझे वचन दिया था कि आप मेरी जॉली को सही सलामत वापस लायेंगे । वह आपकी छोटी बेटी है । लेकिन, पापा, मुझे नौकरों ने बताया है कि

सिंहदेव (भड़ककर) किस नौकर ने बताया ? हम उस नमकहराम को गोली से उड़ा देंगे ।

राजकुमारी हां, पापा, आप किसी को भी गोली से उड़ा सकते हैं । आप बहुत बड़े शिकारी हैं !

सिंहदेव यह क्या कह रही है, बेटी ?

राजकुमारी पापा, आपने पहले कभी झूठ नहीं बोला । आप मुझे भी हमेशा यही सीख देते रहे हैं कि झूठ बोलना पाप है । लेकिन आज आप खुद झूठ बोल रहे हैं । सच क्यों नहीं कहते कि कल रात जंगल में उस गोरे राक्षस ने मेरी जॉली को खा लिया ?

सिंहदेव (परेशान-से) बेटा, क्या बताऊं वह मि० हैमिल्टन हमारे मेहमान थे न, और मेहमान की इच्छा पूरी करनी पड़ती है । सो सो

राजकुमारी (गुस्से से रोकर) सो अगर वह मेहमान आपकी इस बेटी का भी खून पीना चाहता, तो आप हंसते-हंसते

सिंहदेव बेटी यह क्या कह रही है ? एक मामूली-सी हिरनी के लिए इस कदर दुखी हो रही है । मैं आज ही जंगल से तुझे जॉली से भी सुंदर एक और हिरनी मंगवा दूंगा ।

राजकुमारी (रोकर) तो आप मानते हैं कि आपने मेरी जॉली को, अपनी छोटी बेटी को मार कर उस गोरे राक्षस

सिंहदेव (कांपता से) नहीं बेटा, मैंने जॉली को नहीं मारा, नहीं मारा !

राजकुमारी (रोकर) नहीं, आपने ही उसे मारा, आपने ही उसे मरवाया । आप हत्यारे हैं । आप मुझे भी मार सकते हैं । आज से मैं आपकी बेटी नहीं ! मैं आपकी बेटी नहीं !!

(कहती हुई दूर चली जाती है)

सिंहदेव — सुनो बेटी। सुनो।। आया, देखा राजकुमारी कहाँ गई है? गुस्से में वह नादान कुछ कर न बैठे। ओह। पता नहीं, हमें क्या हुआ है। हमसे उठा नहीं जा रहा। हमारा दिल ओह।

एलिस — महाराज, आप परेशान न हों। बच्ची है, गुस्से के कारण अनाप शनाप बोल गई। मैं राजकुमारी को अभी मना कर लाती हूँ।

माधिया — (जल्दी से आकर) महाराज! महाराज।। ड्यूक फिर भाग गया।

सिंहदेव — (हताश सा) ड्यूक भाग गया? कैसे भाग गया? तूने उसे क्या भागने दिया?

माधिया — महाराज! क्षमा चाहता हूँ। मैंने उसे बड़ी मजबूत जंजीर से बांधा था, परंतु वह उसे भी तोड़ कर भाग गया, एकदम गायब हो गया। मैं सब जगह ढूँढ आया, लेकिन वह कहीं नहीं मिला।

सिंहदेव — (आह भरकर) अब वह यहाँ कैसे मिलेगा। वह जंगल में अपनी जॉली को ढूंढने गया होगा। और और जॉली तो यहाँ है, मेरे पास। उसकी चमकती हुई, डरी हुई, छलछलाती हुई बड़ी-बड़ी आँखें मुझे साफ दिखाई दे रही हैं। जॉली मुझसे कह रही है मेरी रक्षा करो। मासूम जॉली मुझे मेरा वह प्रण याद दिला रही है जो मैंने उसकी दम तोड़ती हुई माँ को साक्षी बना कर किया था कि मैं जॉली को अपनी बेटी की तरह पालूँगा, हमेशा जी जान से उसकी रक्षा करूँगा (रोकर) जॉली, मेरी बेटी, मैं अपना वह प्रण पूरा नहीं कर सका। अपना वचन पूरा नहीं कर सका।। मैं पापी हूँ, हत्यारा हूँ। मुझे माफ कर दो, बेटी। बेटी मुझे इस तरह घृणा से न देखो, मैं मैं

(फूट-फूट कर रोने लगते हैं फ्लैश बैक समाप्त।)

माधिया — और जतीन, उस दिन के बाद से उस राजमहल का मानो दिल कर टूट गया। रूप और उल्लास की जगह गहरे

विषाद छा गया। राजकुमारी ने अपने पिता को क्षमा नहीं किया। सिलविया ने भी राजा साहब से कोई सम्पर्क नहीं रखा। घृणा के उस आघात और पश्चाताप की आग से राजा साहब ऐसे बीमार पड़े कि हालत पागलों जैसी हो गई। जब कुछ स्वस्थ हुए, तो उन्होंने पहले अपने शिकार के शौक को तिलांजलि दी और फिर रियासत भर में डौंडी पिटवा कर हिरन हिरनियों के वध पर प्रतिबंध लगा दिया। स्वाधीनता के बाद जब रियासत का भारतीय गणतंत्र में विलय हुआ, तो राजा साहब का साम्राज्य सिमट कर अपने महल की चारदीवारी तक ही सीमित रह गया।

जतीन वह सब मैं जानता हूँ, चाचा जी। राजकुमारी की मृत्यु के बाद से राजा साहब की हालत तो उस राजमहल के अकेले बंदी जैसी हो गई है। उस कुत्ते का, मतलब ड्यूक का क्या हुआ ?

माधिया राजा साहब ने उसे बहुत ढुंढवाया। मैंने स्वयं हफ्तों उस जंगल की खाक छानी, लेकिन वह नहीं मिला।

जतीन तो फिर आप कैसे मानते हैं कि उस दुर्घटना के 26 बरस बाद वह आज भी इस जंगल में है ?

माधिया जतीन, यदि तुमने ड्यूक और जॉली के प्रेम अपनी आंखों से देखा होता, तो तुम भी यही मानते। ड्यूक की आत्मा जन्म जन्मांतर से जॉली से बंधी हुई थी। जंगल में जिस जगह जॉली का वध हुआ था, वह ड्यूक के प्राणों का अवश्य तीर्थ बन गई होगी।

(दूर से कुत्ते के रोने की आवाज सुनाई देती है)

जतीन चाचा जी, क्या हुआ ? आप फिर उठ कर दरवाजे पर पहुंच गये।

माधिया ड्यूक इसी जंगल में है। वह रो रहा है। मैं उसकी आवाज पहचानता हूं। ड्यूक की आवाज ही नहीं, मुझे जॉली की करुणा और याचना से भरी दो आंखें भी दिखाई दे रही हैं। कल रात सपने में (कहता कहता दूर जाता है)

जतीन — चाचा जी, आप इस अंधेरी रात में कहाँ जा रहे हैं?

माधिया — (दूर से) ड्यूक से क्षमा माँगने, जॉली से क्षमा माँगने। उन दोनों के क्षमादान से ही मैं शाप मुक्त हो सकता हूँ, मेरी आत्मा को शांति मिल सकती है।

(स्वर फेड आउट हो जाता है)

जतीन — चाचा जी, सुनिए। जंगल में वनैले पशुओं का खतरा है। चाचा जी, रुक जाइए चाचा जी।

(जतीन की आवाज के ऊपर कुत्ते के रोने की आवाज छा जाती है)

मूल उड़िया — कालिन्दीचरण पाणिग्रही

रूपांतरकार — चिरंजीत

सेप्टोपस की भूख

[प्रारम्भिक संगीत के बाद टेलीफोन की घण्टी बजती है]

परिमल — आह हा, अजीब मुसीबत है! कलम हाथ में ली कि बस

(कुर्सी खिसका कर उठने और टेलीफोन रिसीवर उठाने की आवाज)

परिमल — हैलो

आवाज — 461532 ?

परिमल — उफ, क्या आफत है! अरे साहब, यह 1632 है! आप जरा इस बार अच्छी तरह से देखभाल कर डायल कीजिए, समझे ?

(टेलीफोन रिसीवर रखने की आवाज)

परिमल — कार्तिक !

कार्तिक — (दूर से) आवत है, बाबूजी !

परिमल — जरा इधर आ, सुन जा !

कार्तिक — (नजदीक आकर) जी, बाबूजी !

परिमल — देख, इस वक्त मैं पूजा, विशेषांक के लिए लेख लिख रहा हूं। अभी तक दिमाग में कुछ भी नहीं आया है। सिर्फ दो दिन का वक्त और रह गया है। इसके अलावा उपन्यास के प्रूफ भी देखने है। कल ही देने है। वरना पूजा तक किताब निकल नहीं पायेगी, समझ गया न ?

कार्तिक — जी हां बाबूजी

परिमल — लिहाजा फोन की घण्टी बजने पर तू उठायेगा। कोई बहुत ही जरूरी फोन या निहायत जाना-पहचाना न होने पर साफ कह देना मैं घर पर नहीं हूं। क्या, आई बात समझ मे ?

कार्तिक	जी, बाबूजी !
परिमल	और दरवाजा
कार्तिक	किवाड़ ?
परिमल	हां, अगर कोई दस्तक दे
कार्तिक	कह देंगे कि उहाँ घर पर नहीं !
परिमल	कोई निहायत जरूर, मसलन या पहचाना आदमी न हो तब। क्यों, समझ गया न ?
कार्तिक	जी हां, समझ गइली बाबूजी !
परिमल	और सुन, कॉफी बना ! जरा कड़ी करके, कम दूध, कम चीनी।
कार्तिक	बहुत अच्छा बाबूजी !
	(टेलीफोन की घण्टी बजती है)
परिमल	भई मामला क्या है ?
कार्तिक	हम उठा रहल बान, बाबूजी !
	(टेलीफोन उठाने की आवाज)
	हैलो जी हां बानी, केतानि
परिमल	ऐं ! कौन है ?
कार्तिक	अभिजीत बाबू बाड़ें। (रिसीवर देकर)
परिमल	आ, अच्छा, तू जा कॉफी बना। हैलो !
अभिजित	अरे ! आज तेरे बदले कार्तिक कैसे ?
परिमल	कुछ नहीं यार, सुबह से इन लोग नम्बरों ने परेशान कर रखा है। लगातार तीन-तीन आ चुके हैं एक साथ। काम छोड़ कर अब कहां तक बार बार उठा जाय इनके लिए।
अभिजित	काम क्या, वह लिखाई न ?
परिमल	अरे हां, भाई, पूजा विशेषांक की लिखाई। सच, कुछ भी नहीं आ रहा है दिमाग में।
अभिजित	क्या गिनाए की सारी कहानियां खत्म हो गया क्या ?

परिमल अरे यार, और कब तक सुनाता रहूं उन्हें ? पिछले सात सालों से तो वही लिखता आ रहा हूं।

अभिजित अच्छा, तूने एक बार एक महाशय की बात कही थी न मुझसे ? असम के जंगलों में कौन जो वो बूढ़ा मिला था तुझे। अरे यार, तूने ही तो चर्चा की थी उस बूढ़े की !

परिमल बूढ़ा ?

अभिजित अरे हां, यार, वही जो पेड़-पौधे इकट्ठा किये फिरता था !

परिमल अच्छा अच्छा, वो कांति बाबू ?

अभिजित हां, वही तेरे कांति बाबू ! उन पर ही लिख डाल न कुछ।

परिमल अरे यार, वो तो आज दस बारह सालों से लापता हैं !

अभिजित तो इससे क्या फर्क पड़ता है। तुझे तो सब कुछ मुंहजबानी याद है। जरा सोचने भर की देर है। हुक्म पाते ही कलम सरपट दौड़ने लगेगी।

परिमल अब और चारा भी क्या है। कोशिश कर देखता हूं। शायद कुछ बात बन जाए।

अभिजित अरे यार, असल बात तो रह ही गई कहने की ! जिसे बताने के लिए तुझे टेलीफोन किया है।

परिमल क्या, क्या बात है ?

अभिजित मेरे कुत्ते ने प्राइज जीता है।

परिमल भई वाह ! मुबारक, इस बार भी पटठा ले उड़ा।

अभिजित अपना बादशाह शहनशाह जो ठहरा।

परिमल बादशाह मतलब वही भोजपुरिया ?

अभिजित अरे नहीं ! रामपुर हाउंड।

परिमल सो सारा ! न जाने कितने किस्म के कुत्ते पाल रखे हैं तुने भी। ससुरे याद ही नहीं रहते इनके नाम। कुल मिलाकर कितने हुए अब तक ?

अभिजित ग्यारह।

परिमल — यार, अब इति भी कर इनकी।

अभिजित — अभी कैसे ? दर्जन तक तो पूरे हों। ले सुन, सुन रहा है न ?

(टेलीफोन पर कुत्ते का भौंकना सुनाई पड़ता है।)

परिमल — ये हो तग बादशाह है क्या ?

अभिजित — प्राइज मिलने के बाद से रह रह कर कभी-कभी अपनी महत्ता प्रकट करने लगता है, बस। नरह। अच्छा भई ! अब रखता हू फोन। तू इत्मीनान से लिख बैठकर। और सुन, वो

परिमल — अब फिर वो ?

अभिजित — अरे यार, वही, कोई अच्छा कुत्ता नजर मे आये तो बताना।

परिमल — (हस कर) ऑल राइट, ऑल राइट, जरूर बताऊगा।

(टेलीफोन रखता है)

कार्तिक — कापी ठण्डा होत बा, बाबूजी।

परिमल — ओ, काफी, वेरी गुड ! (कॉफी सिप करते हुए) आह, बहुत अच्छे

(तभी दरवाजे पर दस्तक होती है)

न, न, यह सचमुच ज्यादती है सरासर ज्यादती है।

कार्तिक — (दूर से) हम देखतानी, बाबूजी !

(दरवाजा खुलने की आवाज)

कार्तिक — (ऑफ मायक) काके चाही ? बाबूजी के ? राउर नाम ? रउआ तहिजा ठहरी, हम आवतानी।

परिमल — कौन है, रे ?

कार्तिक — (नजदीक आकर) कोई बूढा हउए। जहा क महतानी कि रउआ के अच्छी तरह स चीन्हत बानी।

परिमल — (विरक्त भाव से) अरे नाम क्या है उसका, बता न ?

कार्तिक — जा, नाम कांति मुखर्जी है। अइसे कुछ बतारी है।

परिमल — अरे, कमाल है ! कांति दा !

(चेयर ठेल कर उठने की आवाज और फिर कुछ पदचाप)

परिमल — अरे वाह, क्या बात है ! आइए, आइए, कांति बाबू ! अन्दर चले आइए ।

कांति — पहचाना मुझे ?

परिमल — कमाल है, भला पहचानूगा नही ? अभ-अभी कुछ देर पहले आपकी ही चर्चा चल रही थी।

कांति — तो काफी दिनो तक जीने की उम्मीद है, क्यो ?

परिमल — बेशक ! जरूर जियेंगे आप। बैठिए।

कांति — कुछ लिख रहे हो शायद ?

परिमल — जी हा, बस यू ही कुछ इधर-उधर की ।

कांति — अच्छा हुआ जो तुम अब भी लिख पढ रहे हो, वरना तुम्हें खोज निकालने मे बडी परेशानी होती मुझे। तुम्हारे प्रकाशक से नाम ठिकाना सब कुछ मिल गया और सीधे चला आया यहा। अपनी टेलीफोन डाइरेक्टरी मे तो इक्तालिस जने हैं, पी० के० बोस नाम के।

परिमल — कहिए, कब लौटे आप अमरीका से ?

कांति — साल भर हो गया वापस आये।

परिमल — बताइए तो कब मुलाकात हुई थी मेरी आपसे आखिरी बार ?

कांति — सन इक्सठ के मार्च महीने मे। काजीरगा फॉरेस्ट में। याद आया ?

परिमल — तारीख याद नही थी। आपके हाथो में कोई मगनीफाइग ग्लास था। शायद किसी पौधे को तलाशते फिर रहे थे आप हेपेन या कुछ ऐसा ही नाम था उस पौधे का।

कांति — हेपेन नही, नेपेनथिस।

परिमल — हा-हा, नेपेनथिस ! याद आया।

(पॉज)

कांति — देख रहा हू तुम्हारा वो आर्किड अब तक सही सलामत है।

परिमल जी हा।

कांत मेरा ही दिया हुआ है न?

परिमल जी हा, आपका ही दिया हुआ है।

कांत और तुम्हारी वो बन्दूक? अब भी है न?

परिमल जी हा, है।

कांत क्या अचूक निशाना था तुम्हारा भी। अब भी है न वही बात?

परिमल अब कैसे बताऊ। यहा तो आजमाने का मौका ही नही मिलता। सरकार ने कानून बना कर शिकार करना ही बन्द करवा दिया है।

कांत अलबत्ता कही कोई पागल हाथी या नरभक्षी बाघ जैसा कोई कुछ खतरनाक न निकल आये, तब तक के लिए शिकार-विकार ठप्प। क्यो, यही बात है न?

परिमल जी हा, बस ऐसा ही समझिए। दरअसल बात यू भी है, कांत बाबू, कि अब उम्र भी तो बढ चली है अपनी। जीव-हत्या जैसी बात अब कुछ जचती नही।

कांत अच्छा! सौ चूहे खा कर बिल्ली हज को चली? मास-मछली खाना छोड दिया है क्या? बिल्कुल निरामिष?

परिमल (हसते हुए) नही-नही ऐसी बात नही है। सब कुछ खा रहा हू।

कांत तो फिर मुर्गा-बकरा, हिलसा-भागुर रोहू सब कुछ चबाये जा रहे हो। यह सिर्फ जीव हत्या ही नही बल्कि जीवो को बाकायदा हजम करना है। फिर शिकार से ही परहेज क्या?

परिमल बात ठीक ही है आपकी। अब से निरामिष ही बनूगा।

कांत ओ, निरामिष बनोगे तो क्या खाओगे फिर?

परिमल यही साग-सब्जी, दाल भात, जो सब खाते है।

कांत इनमें क्या जीव नही है?

परिमल	है तो सही, पर ये पेड-पौधे घास फूस कोई जानवर तो नही हैं न।
कांत	काफी फर्क है क्या इनमे ? क्या ख्याल है तुम्हारा ?
परिमल	क्यो, फर्क नही है क्या? अब देखिए, मिसाल के तौर पर पेड-पौधे कोई चल फिर नही सकते। आवाज भी नही कर पाते। ये अपने मन के भाव भी जाहिर नही कर सकते। यहा तक कि पेड-पौधो में मन नाम की कोई चीज है भी, इसमे भी मुझे शक है।
कांत	हू
परिमल	क्या, ऐसा नही है क्या ?
कांत	तुम्हारी कॉफी ठण्डी हो रही है।
परिमल	छि छि ! मैं भी अजब आदमी हू। बातो ही बातो में बिल्कुल ध्यान ही नही रहा कि आप कहिए क्या लीजिएगा चाय या कॉफी ?
कांत	तुम जो ले रहे हो वही और क्या ?
परिमल	(आवाज देता है) कार्तिक !
कार्तिक	(ऑफ वायस) आवतानी, बाबूजी !

(अंतराल संगीत)

कांत	अपनी बन्दूक लेकर एक बार आओगे हमारे यहा ?
परिमल	(दबी आवाज मे) बन्दूक लेकर ?
कांत	हू। कहना न होगा कि भरी हुई हो।
परिमल	हा, हा, वो तो रहेगी ही, लेकिन
कांत	कारण इस वक्त न पूछो मुझ से। आओगे तो पता लग जायेगा।
परिमल	ओह ! पर बात यह है कि कही किसी आदमी-वादमी का खून ?

कांति — किसी दण्डनीय अपराध में हम तुम्हें नहीं फंसवायेंगे, इसकी गारण्टी है।

परिमल — खैर, ठीक है। आ जाऊंगा।

कांति — मेरा मकान बारासात में है।

परिमल — बारासात?

कांति — हां! स्टेशन से करीब चार मील अन्दर मधुमुरली पोखर है। किसी से भी पूछ लेना, बता देगा। वहीं एक खण्डहर नील-कोठी है। ठीक उसकी बगल में ही मेरा मकान है। मकान बहुत ही बढ़िया है। आओगे तो अच्छा लगेगा तुम्हें।

परिमल — ग्रीन हाउस तो होगा ही।

कांति — हां, हां, ग्रीन हाउस तो है ही, पर आर्किड नहीं है, दूसरे और किस्मों के अनेक पेड़ पौधे हैं। आओगे तो खुद ही देख लेना।

परिमल — लेकिन वो बात यह है कि मेरे पास अपनी कोई कार नहीं है।

कांति — कार नहीं है?

परिमल — पर खैर, कोई बात नहीं मेरे एक मित्र की है।

कांति — मित्र?

परिमल — हूं!

कांति — कैसा मित्र है वो?

परिमल — बहुत ही गहरा जिगरी दोस्त है वो मेरा।

कांति — रिलायबुल?

परिमल — जी हां, अपना ख्याल तो यही है।

कांति — अच्छी बात है! उसके साथ ही आ जाना।

परिमल — ठीक है! पहुंच जाऊंगा।

कांति — कल ही।

परिमल — (चकित होकर) कल ही?

कांति — परिमल, इस पैंसठ वर्ष की उम्र मे कितनी परेशानियों के बाद तुम्हारा पता लगा कर, जब इतनी दूर आ पहुंचा हू, तो तुम्हें यह खुद समझ लेना चाहिए कि मामला कितना गम्भीर है।

परिमल — ठीक है, मैं आ जाऊंगा ! दोपहर के अन्दर-अन्दर जरूर पहुंच जाऊंगा।

कांति — उहु, ऐसा नही !

परिमल — नही ?

कांति — दोपहर नही, सुबह के अन्दर ही पहुंचो सात बजे घर से रवाना हो जाना। समझे ?

परिमल — ठीक है, यही होगा !

(अन्तराल—कार रुकने की आवाज। कार का दरवाजा खुला और झटके से बन्द हुआ। घर के दरवाजे पर दस्तक। घर का दरवाजा खुलता है।)

परिमल — कमाल है ! यार, तू तो बड़ा जबदस्त पक्चुअल है !

अभिजित — अरे, कुत्ते की खबर मिले और मैं भला देर करूं ? कभी हो ही नहीं सकता।

परिमल — अच्छा खैर रुक जरा ! एक चीज आर लेना है। आ, अन्दर आ जा।

अभिजित — लेकिन तूने यह तो बताया नहीं कि किसका कुत्ता है, किस नस्ल का है।

परिमल — सब मालूम हो जायेगा। सरप्राइज। हो गया ? चल अब।

अभिजित — अरे, यह क्या ? बन्दूक ?

परिमल — हां, बन्दूक !

अभिजित — पर क्यों ?

परिमल — यह तो मुझे भी नहीं मालूम।

अभिजित — अजीब बात है, मतलब ?

परिमल — मतलब तो वहीं पहुंच कर मालूम होगा। (आवाज देकर) कार्तिक, दरवाजा बन्द कर!

कार्तिक — (ऑफ वायस) भावतानी बाबूजी!

(कुत्ते के गुर्राने की आवाज। जूतों का शब्द भी उभरता है)

परिमल — अरे, यह क्या? कार के अन्दर ये किसे बैठा रखा है?

अभिजित — क्यों भाई, बात तो बराबर है। तू अगर बन्दूक ले सकता है तो क्या मैं अपने बादशाह को नहीं ले सकता?

परिमल — मर गये!

अभिजित — अरे, मरने की क्या बात है, यार! घबरा नहीं, तेरी गर्दन नहीं पकड़ेगा यह उछल कर।

परिमल — अरे नहीं यार, मैं यह सोच रहा था

अभिजित — सोच-वोच की कोई जरूरत नहीं? अपना बादशाह लाखों में एक जेंटलमैन है। चल-चल, बैठ कार में!

(कार स्टार्ट होने का स्वर)

अभिजित — कमाल है, यार! कल ही उस भले आदमी की चर्चा चली और कल ही हाजिर?

परिमल — इसी को कहते हैं टेलीपैथी।

अभिजित — पर क्या बुलाया है, यह कुछ नहीं बताया तुझे?

परिमल — उहूं! लेकिन एक बात है। कांतिचरण मुखर्जी किसी बात के लिए कहे और वह न निभाई जाय, यह जरा मुश्किल ही है।

अभिजित — फर्ज कर अगर उसका सिर फिर गया हो, तो? पिछले बारह सालों में उसके जीवन में न जाने क्या-क्या बातें घटी हैं, तुझे तो कुछ भी पता नहीं है उसका।

परिमल — हां, सो बात तो है!

अभिजित — तो फिर?

परिमल — पर यार, मेरा मन कहता है कि उसका दिमाग बिल्कुल दुरुस्त है।

अभिजित — अच्छा उसके इधर उधर देखने के तौर-तरीके पर अच्छी तरह से गौर किया था क्या?

परिमल — किया था? पागलपन का कोई आसार नजर नही आया। लेकिन कुछ अजीब घबराहट-सा लगा। मतलब किसी गहरी आशका मे डूबा-डूबा-सा।

अभिजित — कौन जाने भैया, क्या राज है? अब तुझसे जहा तक मैंने सुन रखा है, उससे तो यही अन्दाज होता है कि जनाब की खोपड़ी मे जरूर कुछ गड़बड़ है। दिन-रात जगलो मे पेड़-पौधे ही तलाशते फिर रहे है और वो भी ऐसे पेड़-पौधे जिनका कभी किसी ने नाम तक नही सुना।

परिमल — नेपेनथिस।

अभिजित — क्या?

परिमल — एक पेड़ का नाम नेपेनथिस

अभिजित — यह किस चीज का पेड़ है?

परिमल — इसका सरल नाम 'पिचर प्लाण्ट' या कलमी पेड़ [illegible] का एक 'कारनीवोरस प्लाण्ट' भी है।

अभिजित — ओह! मासाहारी पेड़। पेड़ मास खाता है?

परिमल — हू! कारनीवोरस प्लाण्ट।

(अतराल गीत)

कांति — आओ, भाई परिमल, अन्दर चलो!

परिमल — पहले इनसे मिलिए। यह मेरे घनिष्ट मित्र है, अभिजित सेन।

कांति — नमस्कार!

अभिजित — नमस्कार! आपके बारे मे तो ढेर सारी बातें सुन रखी है मैंने परिमल से।

कांति — लेकिन, वो हजरत कौन है?

अभिजित — मेरा कुत्ता है। हाइली ट्रेण्ड। उससे आप बेफिक्र रहिए।

कांति (हल्की हंसी हंसकर) अरे कुत्ते से भला मैं डरता थोड़े ही हूं ! कोई बात नहीं। उसे भी ले आइए साथ। एक काम कीजिए। फिलहाल उसे बरामदे का रेलिंग के साथ चेन से बांध दीजिए।

अभिजित लेकिन आप मेरे कहने का मतलब समझे नहीं, मिस्टर मुखर्जी मेरा बादशाह

कांति (शांत दृढ़ स्वर में) मिस्टर सेन, मैं कहता हूं उसे बांध दीजिए।

अभिजित जी, अच्छा कम आउट !

(कुत्ते का छटपटाना)

अभिजित बस-बस, ठीक है ! अब उछल-कूद कर मेरा नाम न डुबा, समझा ? बिल्कुल चुपचाप बैठ यहां, बि क्वाएट ! गुड !

परिमल कितना शांत माहौल है। अच्छा, वही आपका ग्रीन हाउस है न ?

कांति हां, वही है ग्रीन हाउस। अच्छा, जब तक चाय आता है तब तक मैं तुम लोगों को कुछ पेड़-पौधे दिखा दूं। आइए-अभिजित बाबू ! बैग यहीं छोड़ दो, परिमल।

अभिजित देखिए साहब मैं, सेंट-पर-सेंट शहर का आदमी हूं। आम जामुन-कटहल, कुछ नहीं पहचानता। और फिर मांसाहारी पेड़-पौधे तो बिल्कुल ही नहीं। (जोरों से हंसता है)

परिमल अच्छा, कांति बाबू, वो टीन की छावनी वाला घर कैसा है ?

कांति घर नहीं, वो भी एक कोठरी है।

परिमल कोठरी है ? इतनी बड़ी ?

कांति हां ! उसमें थोड़ा देर बाद चलेंगे। पहले, इसे दिखा दूं। आइए मिस्टर सेन ! देखिए, जरा सर बचा कर !

अभिजित अरे ! बाप रे यह तो ठीक चिड़ियाखाने के दरबे जैसा है ! वहां इसी तरह के कांच के दरबे में सांप रहते हैं !

कांति लेकिन, इन दरबों में पेड़ों के सिवा और कुछ नहीं है।

अभिजित यहीं तो देख रहा हूं। (पॉज) अरे बाप रे यह भी कोई पेड़ है क्या?

कांति इसे नेपाल से लाया हूं (पॉज) और उसे अफ्रीका से।

परिमल ऐसी चीज तो आज तक नहीं देखी मैंने।

कांति इस पेड़ को तुम जरा गौर से देखो, परिमल! आइए अभिजित बाबू

(पॉज)

अभिजित अजब पत्ते हैं इसके तो।

परिमल दोनों तरफ तेज दांत जैसे कटे हुए हैं।

कांति इधर देखो! इस बोतल के अन्दर देखो! क्या देख रहे हो?

परिमल पतिंगे हैं शायद?

कांति हां पतिंगे ही हैं!

(बोतल के ढक्कन खोलने की आवाज)

कांति इसमें से एक पतिंगा मैं इस दरबे के अन्दर छोड़े देता हूं। यह लो, अब देखो!

(बोतल बन्द करने का शब्द)

अभिजित अरे, वो तो पत्ते पर ही जा बैठा!

परिमल अरे बाप रे!

कांति पेड़ से एक किस्म की गंध निकलती है, जो सीधे कीड़े को अट्रैक्ट करती है।

परिमल, अभि, इधर देख! पत्ता बीच से मुड़कर तह होने लगा है।

अभिजित अरे बाप रे! पतिंगा कहां गायब हो गया?

परिमल अन्दर बंद हो गया है।

अभिजित पत्ते के दोनों तरफ के दांत सिमटकर एक दूसरे पर बैठते जा रहे हैं। भई अपनी आंखों से देखकर भी विश्वास नहीं हो पा रहा है, परिमल, कि आखिर यह क्या करिश्मा है?

कांति — कीड़े को मसल कर मारा जा रहा है, इतना तो समझ रहे हो न ?

दोनों — जी हां, बिल्कुल !

कांति — ये पतिंगे ही इस पेड़ के आहार हैं। इसे ही कारनीवोरस प्लाण्ट या मांसाहारी पेड़ कहते हैं।

(पाँच)

कांति — बैठो, परिमल ! आइए, बैठिए, अभिजित बाबू ! चाय आ गई।

(कुत्ते की पीठ थपथपाने का शब्द)

अभिजित — देख रहे हैं न, मेरा कुत्ता कितना वेल विहेव्ड है ?

कांति — हूं, वही तो देख रहा हूं !

परिमल — आपके उस आदमी के हाथ में बैण्डेज क्यों है ?

कांति — ज़रा ज़ख्म आ गया है उसके हाथ में। क्यों प्रयाग, दर्द अब कुछ कम है न ?

प्रयाग — जी हां, बाबूजी !

कांति — यह तो किस्मत समझिए जो बायां हाथ ही ज़ख्मी हुआ।

(कुत्ते के छटपटाने की आवाज़)

अभिजित — (डांट कर) बादशाह !

परिमल — : बिस्कुट की गंध मिल गई शायद उसे।

अभिजित — नहीं, जब तब खाने की आदत नहीं है उसे ! (बादशाह को सम्बोधित करते हुए) बस, अब कोई हरकत नहीं! चुपचाप जा बैठकर !

परिमल — ले, चाय ले !

(सियार और मुर्गे की आवाज़ उभरती है)

परिमल — अरे, यह मुर्गा लेकर कहां चला आपका नौकर ?

कांति — वह उस टीन की छावनी वाली कोठरी में जा रहा है।

परिमल — अच्छा ! सच, अब तो उस कोठरी को देखने की उत्सुकता बढ़ती जा रही है।

कांति — सचमुच ? खैर, चाय वाय पी लो, उसके बाद हम उस तरफ ही चलेंगे।

(पाँच)

कांति — यह कोठरी सिर्फ एक पेड के लिए ही बनी है।

परिमल — अच्छा ! तब तो मालूम होता है, पेड काफी बडा है ?

कांति — हाँ ! उसे मैं उस समय लाया था, जब कि वह एक नन्हा-सा पौधा था। मध्य अमरीका की निकारागुआ झील के किनारे एक जगल म दिखाई पडा था यह मुझे। इस पेड की खबर मुझे प्रोफेसर ईंस्टन नाम के एक बाटेनिस्ट की डायरी से लगी थी। वह भी उस जगल में गया था, लेकिन वापस नही आ सका।

अभिजित — वापस नही आ सका ? मतलब ? मारा गया क्या ?

कांति — शायद यही बात हो, पर उसकी लाश कही दिखाई नही पडी। एक जगह पर सिर्फ उसकी डायरी पडी हुई मिली थी।

(लोहे का भारी दरवाजा खोलने का शब्द)

कांति — आओ तुम लोग, सीधे चले आओ मेरे साथ !

परिमल — अरे, यह पेड है क्या ?

कांति — जड देख रहे हो न ?

परिमल — हा, जड ही तो है लेकिन वो क्या है ? इसकी डाले है क्या ?

अभिजित — वो जो ऐसी दिख रही है, जैसे हाथी के सूड हो।

कांति — वे ही डाले है।

परिमल — कमाल है ! कितने चिकने दिख रहे हैं। पत्ते वत्ते कुछ भी नहीं। सारे तने पर चौकोर-सा दाग है।

कांति — जरा गिन कर तो देखो कितने सूड है ?

परिमल — एक-दो-तीन-चार

अभिजित — सात है।

कांति — हां, तभी मैंने इसका नाम सैप्टपस रखा है अर्थात् सप्तपाश, मतलब सात फंदे।

परिमल — इसकी सूंडें सदा इसी तरह हर वक्त जमीन पर लौटती रहती है?

कांति — नहीं, ऐसी बात नहीं है। हर वक्त नहीं लौटती रहती। अभी पेड़ सो रहा है।

परिमल — सो रहा है। मतलब, पेड़ नींद ले रहा है। भई वाह!

(जोरों से हंसी)

(मुर्गे की आवाज धीरे-धीरे नजदीक होती हुई)

कांति — प्रयाग, अब जगा दे इसे, नौ बज गये।

प्रयाग — हां, बाबूजी, जगाता हूं। मैं घड़ी देख कर ही आया हूं।

परिमल — अरे बाप रे! यह क्या?

(छपाक् छपाक जैसे कुछ स्वर उभरे)

परिमल — यह तो बिल्कुल जिन्दा है।

अभिजित — सचमुच कैसा भयंकर लग रहा है देखने में।

कांति — खाना सामने आ गया है न, तभी उतावला हो रहा है। दे प्रयाग, मुर्गा छोड़ दे, उसके सामने देख सम्हल के जरा, नजदीक मत जाना।

प्रयाग — नहीं बाबूजी, एक बार शिक्षा पा गया अब गलती कभी न होगी।

(मुर्गा छोड़ने और पंख फड़फड़ाने की आवाज)

प्रयाग — चल बे, जा उधर!

(छपाक का एक स्वर और फिर मुर्गे की फड़फड़ाने की आवाज समाप्त)

अभिजित — अरे, यह क्या, साबुत मुर्गा गायब!

परिमल — यह पेड़ हर्गिज नहीं है, कांति बाबू। यह तो कोई जानवर है।

कांत — व ताया न तुम्हे, न ह पौधे की हालत में मिट्टी से उखाड कर ले आया था मैं इस। उस वक्त यह डेढ हाथ ऊंचा था और अब इसकी सिर्फ जड ही साढे सात फुट ऊंची है।

अभिजित — अभी देखा नहीं, परिमल, सूड के उस निचले हिस्से से एक अदृश्य ढक्कन-सा खुल गया और फिर उसके अन्दर पूरा मुर्गा चला गया।

परिमल — सच, कांति बाबू, इस तरह का दृश्य आखो से देखा नही जाता। मेरा तो सिर चकराने लगा है।

कांत — कल प्रयाग जरा बचपना कर बैठा। मुर्गा उसके सामने ले जा कर उसे ललचा रहा था कि इतने मे एक सूड ने उस पर हमला बोल दिया। झपट्टे में उसके बायें हाथ का थोडा मा मांस नुच गया।

परिमल — फिर ?

कांत — फिर क्या। उस नुचे हुए मांस को इसने अपनी खोह मे डाल लिया।

अभिजित — मतलब खा गया ? यानी प्रयाग का नुचा हुआ मांस का हिस्सा हजम कर गया।

कांत — प्रयाग तो यही बताता है। मैं उस वक्त यहां नही था।

(फिर वही छपाक छपाक का स्वर उभरा)

परिमल — अरे, वह अपनी सूडा को फिर क्या हिलाने लगा ? उसकी भूख नही मिटी क्या अब तक ?

कांति — पहले तो जरा से मे ही पेट भर जाया करता था, लेकिन आजकल देख रहा हू

(बादशाह का चीत्कार सुनाई पडता है)

अभिजित — अरे, बादशाह अचानक

(अभिजित के पदचाप उभरे बादशाह का भौंकना जारी रहा)

अभिजित — बादशाह, शट अप ! बादशाह !

कांति — क्या हो गया उसे ?

(चेन तोड़ने की आवाज कुर्सी उलटती है और फिर किसी आदमी के गिरने की आवाज उभरी)

परिमल — बादशाह उस काटरी की तरफ ही दौड़ा है।

कांति — फौरन बन्दूक ले लो, परिमल ! चले आओ मेरे साथ।

परिमल — (आवाज देता है) अभि !

(छपाक छपाक का स्वर—बादशाह के भौंकने की आवाज नजदीक आती है)

अभिजित — बादशाह ! बादशाह !! माई गॉड !

(बादशाह का चीत्कार रुक जाता है)

परिमल — अभि ! रुक तो ! यह क्या कर रहा है तू ?

अभिजित — फर्स्ट सेव मी

कांति — दागो बन्दूक ! अरे भई, मारो गोली !

परिमल — अभि भी तो फंस गया है ! कहीं उसे ?

(अभिजित की कराहट सुनाई पड़ी—छपाक छपाक का स्वर फिर उभरा)

कांति — विल दट ट्री ! अभि को दबोचने लगा है।

अभिजित — परि परिमल

कांति — दागो बन्दूक !

परिमल — मेरे तो हाथ कांप रहे हैं !

कांति — नानसेंस ! वह मर जायेगा नहीं तो हमारी गोली

अभिजित — उफ !

(गोली छूटती है किसी शरीर के धप से जमीन पर गिरने का स्वर पदचाप)

कांति — अभि बच जायेगा। घबराने की कोई बात नही है।

परिमल — लेकिन बादशाह?

कांति — अब उसके लिए अफसोस करन से कोई फायदा नही। जो होना था सो तो हो ही गया।

परिमल — यह क्या? यह क्या निकल रहा है पेड के बदन से?

कांति — खून है, परिमल! हरा खून

परिमल — पेड का खून?

कांति — थैंक यू, परिमल! तुम्हारा निशाना अब भी अचूक है।

(अंतराल संगीत)

(दरवाजे पर दस्तक। दरवाजा खुलता है)

परिमल — आइए, कांति बाबू! अन्दर आ जाइए।

कांति — पहले यह बताओ कि तुम्हारे मित्र कैसे है?

परिमल — कल उसका प्लास्टर खुलेगा। पसली की दो हड्डिया टूट गई है।

कांति — सच, उनके कुत्ते की याद आते ही मन खराब हो जाता है।

परिमल — खैर, एक और कुत्ते का इतजाम हो गया है।

कांति — इतनी जल्दी?

परिमल — (हस कर) हां, यह भी हाउड है, पर किसी और नस्ल का है।

कांति — सारे पेड फिकवा दिये है मन। एक बार सोचा कि चलो, इनमें से एक तुम्हारे लिए भी लेता चलू। उस दिन तुम्हारे कमरे मे दो दो तिलचट्टे दिखाई पडे थे मुझे।

परिमल — माफ कीजिएगा कांति बाबू! मेरे घर म इनके लिए ही तो लोगो का आना जाना है। कल दोपहर के वक्त सेण्ट्रल ब्यूरो के कुछ लोग आ रहे है। उन दानवी पेडो की मुझे कतई जरूरत नही है। अच्छा खैर, मैं आपको अपनी तरफ से धन्यवाद तो दे दू!

कांति — धन्यवाद! क्यो, किस बात के लिए?

परिमल — पूजा विशेषांक की लिखाई खतम कर ली है मैंने, और यह सिर्फ आपकी बदौलत ही हो पाई है।

कांति — अच्छा।

परिमल — हां, और उसका शीर्षक दिया है मैंने 'सप्टापस की भूख'।

कांति — इसे क्या तुमने सच्ची घटना बताया है?

परिमल — जरूर। सच्ची घटना नहीं तो क्या यह कोई मनगढ़ंत कहानी है?

कांति — इसे कहानी ही रहने दो, परिमल।

परिमल — क्या?

कांति — सच्ची घटना कहोगे तो इसकी किसी बात का भी कोई विश्वास नहीं करेगा।

मूल बंगला सत्यजित राय
रूपांतरकार दीप नारायण मिठौलिया

कहानी कहां खत्म हुई

[बाजार का वातावरण—झोंपड़ों का वातावरण-सूअरों की आवाज]

बिजली	ई० क्या है? इक्को रुपल्लो ?
पुरुष स्वर	क्या, क्या बात है, काफी नही ?
बिजली	वाह साहब! मैं तो पहले ही कह चुकी !
पुरुष स्वर	खूब है तू भी। (फीकी हसी हसकर) कोई बात नही। इस बैपार में तूने अपनी पूजी थोड़े ही लगाई।
बिजली	सुन ले कान खोल कर, साहब! इस बिजली के सामने ये नखरे नही चलते। जो कह दिया सो कह दिया। गाठ से निकाल कर पैसे यहा रख दो और बस, चलते बनो !
पुरुष स्वर	(घबराकर) अरी ! चिल्लाती क्या है, धीरे बोल। कोई सुन लेगा तो
बिजली	दइया री धीरे बोलू ! बडे भले मानुस हो, जी! आये रण्डी के पास, और करे मोल-तोल । चुपके से रख दो मेरे पैसे।
पुरुष स्वर	और कितने रुपये चाहती है ?
बिजली	एक रुपया और।
पुरुष स्वर	एक रुपया और?
बिजली	हां, हां! ! जी साहब! एक रुपया और—कुल दो रुपये।
पुरुष स्वर	अच्छा, तो ले ये दूसरा रुपया। चिल्लाती क्या है ? (प्यार से) जरा बात तो सुन
बिजली	एक्के बार नही, दुइ बार नही, दूर रहो, और इधर, इस रास्ते से चलते बनो !
तोताराम	मेरी प्यारी बिजली ! तू तो मेरी सच्ची औरत ठहरी। जब दुकान खोल रखी है, तो मोल भाव सही-सही चलना चाहिए। जो बात पक्की हो, पक्की ही रहनी चाहिए।

बिजली — तू कब आया रे ?

तोता राम — देखते हैं न ! अभी-अभी चला आ रहा था कि तेरी प्यारी प्यारी आवाज कान में पड़ी।

बिजली — तो तू यहीं बैठा रह, मैं अभी आई जरा चाय पी के। (चलती है)

तोता राम — बात तो ठीक है, तू घर जो गई बेचारी, चाय पीने जा रही है। पर जरा मेरी बात भी सोच न ?

बिजली — लड़के से तोते बेच रहा था, उन पैसों का क्या हुआ ?

तोता राम — तोते के पैसे? अरी बावरी! वो तोते की तरह उड़ गये। पूरे तोते बेचकर पैसे लिये चला आ रहा था कि रास्ते में वो नमक-हराम ताड़ीवाला बूढ़ा है न? उससे सामना हो गया। पुराने कर्जे के नाम पर सारे पैसे उड़ा ले गया साला! वो बूढ़ा पूरा दरिद्दर ठहरा। बीच-सड़क में गला पकड़ कर गालियां देने लगा। मैं तोता-राम ठहरा। मैं तोताराम होकर ताड़ी बेचकर जाने वाले कुर्मी से गालियां क्यों सुनूं? वह भी खाली पेट ? बस! पैसे निकाल कर उसके मुंह पर दे मारे। साला, कुत्ते की तरह पूंछ हिलाता चला गया।

बिजली — (दिल्लगी उड़ाती हुई) अच्छा किया। वो कुत्ते की तरह चला गया, और तू शेर की तरह घर लौट आ। (चली जाती है)

तोता राम — अरी मेरी बिजली! तू चुपके से चली जा रही है। मेरे तो हाथ पैर टूटे जा रहे हैं। थोड़ी देर में काठ मार जायेगा।

बिजली — कोई बीमारी है?

तोता राम — अरी मेरी प्यारी बिजली! क्या तू नहीं जानती मेरी पुरानी बीमारी? यही वक्त जो हो गया है न?

बिजली — तो तू ताड़ी पीने जायेगा? सुन ले कान खोलकर तू मरे-पचे, मेरे पास पैसे नहीं है। तेरे हाथ पैर टूटे जा रहे हैं? तेरे हाथ-पैर टूटें या काठ मार जाये, मैं एक पैसा भी नहीं दूंगी! जा भाड़ में!

तोता राम	अरी मेरी प्यारी बिजली! तू चाहे मुझे सौ गालियां दे ले, लेकिन पैसे भी दे दे। आखिर तो तू पैसे देगी ही और मैं पिऊंगा ही।
बिजली	चाहे तू अपनी जीभ खींच ले, चाहे गला काट ले, मेरे पास एक दमड़ी भी नहीं है।
तोता राम	धत तेरी! दमड़ी! दमड़ी तो अंधे सूरदास को भी देगी तो वह भी तेरे ही मुंह पर दे मारेगा। तेरे पास दो रुपये हैं—दे दे।
बिजली	(घबराकर सम्भल जाती है) दो रुपये? मेरे पास नहीं हैं।
तोता राम	अरी बिजली, झूठ मत बोल! मैं सब बातें सुन चुका हूं। इस राहगीर के कान ऐंठ कर तू दो रुपये वसूल कर चुकी है। मैं सब कुछ देख चुका हूं (बेशर्म की हंसी हंसता है) अच्छा, रुपये दे दे, और प्यार से दे दे। मैं तेरा मर्द प्यार से कह रहा हूं—दे दे।
बिजली	नहीं, मेरे पास रुपये नहीं हैं। मैं नहीं दूंगी।
तोता राम	बिजली, आज तो तू कुछ नये सुरों में बोल रही है! प्यार से नहीं देगी तो मार से दे देगी। यही न?
बिजली	मैं तुझे आज एक पैसा भी नहीं दूंगी, नहीं दूंगी। दूर हट, छू नहीं मुझे, नामर्द!
तोता राम	तो तू भले ढंग से जीना नहीं चाहती है, यही न? तो यही सही।
बिजली	मैं भले ढंग से जीने के लिए ही पैदा होती, तो तेरे पल्ले क्यों पड़ती? और एक कीड़े की जिन्दगी क्यों जीती?
तोता राम	(क्रुद्ध होकर) अब बकना बन्द करती है कि नहीं! तेरे नखरे, मेरे पास नहीं चलने के। समझ गई? सीधे से रुपये दे दे, नहीं जबरदस्ती रुपये उगलवा लूंगा। समझ गई न?
बिजली	दूर! नामर्द! औरत से रुपये लेने में लाज नहीं लगती। मर्द कहता है अपने को?

तोताराम — बस ! बकना बन्द कर दे। मैं तुझसे पैसे जबरदस्ती लूंगा। यह ले ले रहा हूं। (खींचातानी होती है) बस ! ले लिया न ! मैं प्यार से कह रहा था पैसे दे दे। तू मानती ही नहीं। क्या करता ? तू न तो अपनी ही इज्जत बचा सकी और न मेरी ही।

बिजली — (रोती हुई) बेशर्म कहीं के ! चोर कहीं के ! मेरी जिन्दगी में आग लगा दी तूने ! मेरे लिए यमराज बन बैठा है !

(बिजली रोती ही रहती है–हिचकियां बंध जाती हैं)

अन्धा सूरदास — (दूर से भजन गाता हुआ लकड़ी टेकता हुआ) अरी बिजली बेटी ! तू फिर रोने लगी ? रोती काहे है री ? क्या ये कोई नई बात है आज ? रोज का टंटा है।

बिजली — मेरा तो जिन्दगी भर का रोना है बाबा ! मैं भी बेशर्म हूं–वो भी बेशर्म है। बदन बेच के पैसे पैदा कर रही हूं मैं, वो बेशर्म ताड़ी पी-पी कर सारे पैसे उड़ा रहा है। चाय के भी पैसे न छोड़े बेशर्म ने।

सूरदास — क्या जोड़ी बनाई है दइया ने ? आखिर उस नालायक को छोड़ती क्यों नहीं ? उसे छोड़ दे। उसे तो न अपनी औरत की भली-बुरी से मतलब है, न सुख दुख से। फिर उसे लेकर क्या करेगी ? छोड़ दे नालायक को ?

बिजली — क्या करूं, बाबा ! मेरा तो नसीब ही खोटा है ?

सूरदास — नसीब वसीब, कुछ नहीं। तू झुकती है और वह तेरे कन्धे पर सवार होकर बैठ जाता है। वह नाचता है, तो तू उसके साथ ढोल बजाती है। फिर वह क्यों सुने किसी की बात ?

बिजली — मैं औरत जो ठहरी बाबा ? आखिर करूं भी क्या ?

सूरदास — छोड़ दे साले को, बस रोटी-दाल का भाव मालूम हो जायेगा !

बिजली — समझ लो, बाबा ! उसे छोड़ दिया, उसके बाद ?

सूरदास — उसके बाद क्या है ? बदन म जब तक जवानी रहे चार पैसे जुटा ले। भाड़े वक्त काम आयेंगे।

बिजली — बाबा ! ये छोडना-बोडना मुझसे होने का नही। रोना धोना ही मेरी नसीब मे लिखा है।

सूरदास — क्या बात करती हू, बेटी ! छोड देगी तो वह करेगा क्या ?

बिजली — बाबा, मैं छोड भी दू, तो वह छोड़ेगा नही। (बात बदलते हुए) छोडो, सूरदास बाबा, इन न होने वाली बातो को। जरा आराम करो।

सूरदास — बिजली बेटी ! अब क्या वक्त होगा ?

बिजली — साझ को सिनेमा शुरू हो गई, सूरदास बाबा !

सूरदास — छोटा अभी घर नही लौटा है ?

बिजली — आ जायेगा, बाबा, आ जायेगा। पालिस के लिए जूते बहुत मिले होगे। बैठे-बैठे पैसे जोडता होगा।

सूरदास — (अपने आप) अधेरा तो हो गया होगा। सडक पर आने-जाने वाली मोटर गाडिया, लारिया दौडती होगी। यह छोकरा न आगे देखता है न पीछे। उमग हो गई तो बस ! दौड लगायेगा !

बिजली — ऐसे डरते क्या हो, बाबा ! तुम्हारी आखें जो न रही इसी से डरते हो। यह तो आखो वाला चगा छोकरा है। आता होगा। काहे फिजूल की चिंता करते हो ?

सूरदास — तू समझती नही बिजली ! मेरी आखें गई तो तू समझती है कि मैं अधा हू। गया, नही ? मैं तो छोटे की आखो से ही सारी दुनिया को देख रहा हू। भगवत को यह किरपा है मुझ पर। आखो के बदले म छोटे को दिया है।

बिजली — सूरदास बाबा, वह बेशम सारे पैसे उडा ले गया। एक अठन्नी दे दो बाबा ! फिर कोई राहगीर लगेगा ही। लगते ही तुम्हारी अठन्नी लौटा दूगी।

सूरदास — अठन्नी ? क्या करेगी अठन्नी लेकर ?

बिजली — जोर की भूख लग रही है, बाबा! चन्दू की दुकान पर जाकर एकाध रोटी खा लूंगी, थाम पी के चली आऊंगी।

सूरदास — अरी पगली! इसीलिए तो कह रहा था कि चार पैसे इकट्ठा कर ले, आड़े वक्त काम आएंगे। समझी न? ये ले, अठन्नी!

बिजली — भला हो बाबा का! मैं अभी आई बाबा! इतने में छोटा भी आ जायेगा।

सूरदास — हां, बिजली, छोटा रास्ते में कहीं दिखाई दे, तो कह देना जल्दी घर लौटे।

बिजली — हां, कह दूंगी बाबा!

हैड पुलिस — अरी बिजलिया किधर चल पड़ी?

बिजली — राम राम! पुलिस मामा!

हैड पुलिस — तेरा राम भला करे लौंडिया! पहले बता दे किधर हीं जा रही है? राहगीरों को फंसाने तो नहीं निकली? साली! अब की पकड़ी गई तो सीधे जेल जायेगी फिर न छूटेगी! समझी?

हैड पुलिस — नहीं, हैड बाबू! कान पकड़ती हूं—अब फिर कभी, पाप की रोटी न खाऊंगी। मेरी बात मान लो हैड बाबू! रोटी नहीं मिलती तो, हाथ पैर सिकोड़ कर झोंपड़ी में पड़ी रहती हूं। पानी पी पी कर पेट भर लेती हूं। सच मानो हैड बाबू! मां बाप की सौगंध है! पाप की रोटी अब नहीं खाती।

हैड पुलिस — हूं! मां बाप की क्या, तू काशीनाथ, विश्वनाथ की भी सौगंध खाएगी? जब पकड़ी जाएगी तो पैरों गिरेगी, तोबा, तोबा करने लगेगी? तेरी जात क्या मैं नहीं जानता? खबरदार! चेताने आया हूं। अब की फिर अपना जाल फैलाया तो हड्डी हड्डी चकनाचूर कर दूंगा—समझी?

बिजली — जी हैड बाबू! समझी!

पुलिस — अब मैं चलता हूं—याद रख, हड्डियां, चूर चूर हो जायेंगी (चला जाता है)।

बिजली (साँस छोडकर) हे राम ! आज जल्दी ही पुलिस वाले से पिंड छूटा । (चली जाती है) ।

(सूरदास का गाना थोडी दूर पर सुनाई देता है ।)

(कबीर या किसी सत-कवि का गाना हो सकता है)

(खूब पीकर पूरे नशे में झूमता हुआ प्यार का गाना गाता है—यह गाना, आजकल की किसी फिल्म का हो सकता है और यह गाना सूरदास के गाने से कुछ दूर से सुनाई दे रहा था)

तोताराम (गाना बद कर के) क्यो सूरदास जी, हाय रे अन्धे महाराज ! आज तो आप अभी यही पर विराजे हुए हैं। शाम वाली सिनेमा तो शुरू हुए बहुत देर हो गई। आखिर बात क्या हुई ? हडताल ता नही बोल दी साथी यारा ने ?

सूरदास (हसता हुआ) वाह ! वाह !! हडताल ! और मुझ पर ? मुझ अन्धे पर हडताल बोल देना, समझो आसमान पर हडताल बाल देना है (हसता है) ।

तोताराम नही, तो फिर अभी तक यही क्या विराजे हो ?

सूरदास सुना है कि कोई बडा सरकारी अफसर आयेगा। बस, टेसन से सभी भिखमगे भगा दिये गये। तब, वो कुबडा किसन है ना? वह बहुत गिडगिडाता हुआ, मेरे पैरो पर गिर पडा कि मैं सिनेमा हाल वाली अपनी भीख मागने की जगह उसे किराये पर दे दू ।

तोताराम तो, तूने दे दी ?

सूरदास हा, दे दी ! भीख के जो पैसे मिलेंगे, उनम एक चौथाई पर दे दी है।

तोताराम वाह रे अन्धे महाराज ! तू भी खूब है। यहा भी आने-जाने वाले राहगीरा से पैसा वसूल करेगा, और वहा से तो एक चौथाई के पैसे ऐंठने की तेरी अक्लमन्दी लाजवाब है हीं। आखिर हा ना मद ।

सूरदास — अरे बेशर्म! औरत की कमाई खाने वाले नामर्द! तू भी मेरी ओर उंगली उठाता है?

तोताराम — क्या कहा सूरदास जी महाराज! मैं, बेशर्म और नामर्द? वाह! खूब कहा! अरे आंखों के अन्धे! शर्म और मर्दानगी–ये दोनों चीजें जो हैं, सिर्फ कहने सुनने की हैं। आजकल तो इन चीजों को बड़े-बड़े आसमान छूने वाले महलों में रहने वाले राजे-महाराजे भी छोड़ बैठे हैं। तेरी मेरी क्या हस्ती है सूरदास!

सूरदास — अरे तोताराम! कभी तूने अपनी बिजली के बारे में ठंडे दिमाग से कुछ सोचा है? कभी कोई ख्याल भी आया तेरे दिल में, वो बिचारी बिजली, कैसी कैसी तकलीफें उठा कर पैसे कमा रही है?

तोताराम — (हंसता हुआ) अरे अन्धे! तू ने भी कभी मेरे बारे में कुछ सोचा है? अगर बिजली न कमाती तो मुझे कैसी-कैसी तकलीफें उठानी पड़ती। सुन ले अन्धे! सीधी सी बात है! इस दुनिया में जो भी चीजें हम जुटाते हैं, चाहे वह मोटा कागज का टुकड़ा हो, या छोटी जवान लड़की हो, चीज हमारे काम की होनी चाहिए। हमारी जरूरतें पूरी हो जानी चाहिए–यही मेरा सास्तर (शास्त्र) है। और वह हमारे कन्धे का बोझा हो जाय तो गिरा दें किसी गड्ढे में। बस! तू पागल है, अन्धा है, तू नहीं जानता इस दुनिया को। (थोड़ी देर रुक कर) अरे अन्धे! कितनी बार कह दिया मैंने तुझ से, ये अपने चीथड़े मेरी जगह न रखा कर, उठा ले अभी!

सूरदास — (नाराज होकर) क्या बकता रे बेशर्म! क्या यह जगह तेरे दादा की जागीर है?

तोताराम — वाहरे अन्धे! तू भी मर्द की तरह बोलता है। सुन ले कान खोलकर! इस जगह पर, बीसहा पूरे बीस साल से मैं रहता हूं। इस पर मेरा हक है। इस खम्भे से इधर की जगह सारी मेरी है और उधर की तेरी है। उठा ले यहां

मे अपने चीथड़े ! नही, तो मैं उठाकर दूर फेंक दूंगा ! समझा ? चुपके से अपनी इज्जत बचा ले !

सूरदास (लकडी टेकने की आवाज—जाता हुआ) क्या कहा, मैं अपनी इज्जत बचा लूं ! तू ने समझ रक्खा है कि ये अंधा है, कुछ नही कर सकता ! यही न ? अब हाथ लगा मेरे चीथडा को, तेरी खोपडी न ताड दी तो देखू ?

तोताराम अरे अंधे ! खोपडी तोडेगा तू ? देखू तो !

सूरदास *(कडी आवाज से)* अरे खोपडी फूट जाने के बाद क्या देखेगा ? चीथडे को हाथ लगा तो बता दूं ।

तोताराम ले ये लगाया !

सूरदास ले ये मने लगाया (थप्पड़ मारता है) अब की खोपड़ी उडेगी ।

(दोनो चिल्लाते ह —हाथापाई होती है)

तोताराम बाप-रे ! बाप ! इस अंधे बदमाश ने मुझे मार डाला ! हाय ! हाय !! मेरा खून कर रहा है ! बचाओ ! कोई बचाओ !!

सूरदास (गरज कर) अब की, मने छोड दिया । जा । आज तू बच गया ! अब कभी मेरी ओर झाका भी, तो तेरी गदन मरोड दूगा, याद रख !

तोताराम (डरता हुआ भी क्रोध की आवाज मे) अरे अंधे ! आज तू ने मुझे मारा है । याद रख, तोता राम को मारा है ! (गुर्राता हुआ) तोता राम को तू नही जानता है। वह काला साप हैं । वह ऐसा जहर उगलेगा तू खाक हो जायेगा । तोताराम अपने दुश्मन को कभी नही भूलता । एक दिन आयेगा, जब एक मार की जगह तू दस मार खायेगा !

सूरदास तोता राम ! तू नामद क्या कर सकता है, औरत की कमाई खाने वाला । अपना सिर बचाये रख, यही अच्छा है ।

तोताराम   है तो अधा! और बुड्ढा भी! लेकिन पट्ठे ने हड्डिया चूर-चूर कर दी है।

(छोटा हाफता हुआ आता है)

छोटा   (दूर से) दादा!

सूरदास   छोटे! तू आ गया बेटा!

छोटा   (नजदीक) हा! दादा! आ गया। मैं वहा सिनेमा के पास तुम्हारी बहोत खोज करता रहा। तुम मिले नही दादा! आखिर वो कुबडा किसन है न? वह मिल गया। वो कह रहा था, आज तेरे दादा ने जल्दी ही घर लौटने को कहा है बस! दादा, दौडता हुआ तुम्हारे पास चला आया।

सूरदास   छोटे! तेरी यही बात मुझे अच्छी नही लगती! कई बार कह चुका, बेटा! सडक पर न दौडा कर। पर तू मानता नही, गाडिया चलती है, मोटरें दौडती हैं, लारियो की बात ही नही, अधाधुध उडती जाती है? बेटा! कोई बुरी बात हो गई, तो अधा सूरदास बरबाद हो जायेगा।

छोटा   कोई डर नही दादा! तुम तो बहुत डरते हो फिजूल मे

तोताराम   हा! तेरा दादा बहुत डरता है कि कही तू किसी लॉरी के नीचे चला गया तो उसकी, सोने की अण्डे देने वाली, बतख गायब हो जायेगी—है न सूरदास!

सूरदास   अरे चुप भी रह तोते! बाझ क्या जाने बच्चो का प्यार। न तूने बच्चे जने है, न तूने बच्चे पाले है। तू ठूठ क्या जाने बच्चो की प्यारी-प्यारी बातें।

तोताराम   मै बाझ और ठूठ सही। तू ने तो इस अपने छोटे को नौ महीने पेट मे रखकर पाला है, और बाहर निकाल के अब पाल रहा है। है न?

सूरदास   अरे बेशर्म! बदमाशी की बातें मत कर। कोख की सतान से गोद की सतान ज्यादा प्यारी होती है।

तोताराम हा ! ये तो तुम ने पते की बात बताई सूरदास जी ! मेरे ये कागज के तोते, पेट-जने से, गोद पले बच्चा से भी मुझे ज्यादा प्यारे लगते हैं। क्योंकि ये तोते तो रुपये पैदा करते हैं—इसलिए। है न ? (हसता है) ।

सूरदास छि बदतमीज ! तुझसे बात करना भी भूल है। छाटे। आज इतनी देर क्या हो गई रे ?

छोटा हा, दादा ! कुछ देर जरूर हो गई। रेल टेसन के पास मदरसा है न ! वही, गोरो का मदरसा।

सूरदास हा ! है, वही कान्वेंट वाला । वहा क्या हुआ बेटा !

छोटा कल मदरसे में उनका कोई त्योहार है, दादा। कल बच्चो के सभी मा-बाप वहा आयेंगे। इसीलिए आज बहुतेरे लडकी लडको ने अपने-अपने बूट-पॉलिस करा लिये। इसीलिए देरी हो गई।

तोताराम तो ये बात है। बहुत पैसे मिले होंगे। इसीलिए इतनी खुशी है। कितने रुपये मिले छोटे ?

सूरदास अरे जा-जा ! बहुत से रुपये मिले। तुझ से क्या वास्ता है। जो मिला मिला।

छोटा दादा ! वहा तो बहुतेरे बच्चे हैं। छाटे छोटे बच्चे हैं। मेरी उमर के भी हैं। मुझ से बडे भी हैं। बहुत से बच्चे हैं दादा ! दादा ! छोटे-छोटे बच्चे भी खूब अग्रेजी बोलते हैं।

सूरदास हा छोटे ! अग्रेजी तो उनको छोटी उमर से ही पढाई जाती है। इसीलिए छोटे बच्चे भी अग्रेजी बोल लेते हैं।

छोटा दादा ! ये क्या चीज है, बता दो देख लू ?

सूरदास इधर दे दे। देख लू (टटोलता है) छोटे ! ये पोथी सी मालूम होती है। क्या खरीद लिया है, इसका ?

छोटा — हां दादा ! मैं पोथी है। मदरसे की एक लडकी ने मुझे दे दी है। पोथी देते ही उसे खोल कर कोई बात थी दादा? उस लडकी ने बाची और मुझे भी बालने के लिए कह रही थी (लजाता हुआ) कौन-सी बात थी वह, याद नहीं आती दादा ?

सूरदास — याद नही आती है। कौन सी बात थी वह छोटे ?

छोटा — याद नही आती दादा !

सूरदास — अच्छा कोई बात नही, जाने दे। छोटे ! इस पोथी को लेकर क्या करेगा ? क्या करने लाया है ?

छोटा — क्यो दादा ? इसे तो पढूगा। मै पढना-लिखना चाहता हू।

सूरदास — तू पढेगा, छोटे ! कौन तुझे पढायेगा।

छोटा — क्या दादा ? तुम तो हो। तुम बाचोगे और मुझे पढाओगे।

तोताराम — खूब है छोटे ! तू ने ता खूब सोचा है। तेरा यह सूरदास दादा गजब की पढाई पढायेगा तुझे। तेरा दादा, अपनी जिन्दगी भर मे जो कुछ भी सीखा वो सब तुझको पढायेगा। पढाओ न अंधे महाराज !

सूरदास — छोटे ! जब मेरी आखे थी, मैं तभी नही पढा लिखा। अब तो मेरी आखे भी गई ! मै कैसे बाचूगा ? और तुझे कैसे पढा सकूगा ?

छोटा — तोताराम मामा ! तुम्हारी तो आखें है। तुम ही पढाओ न मुझे।

तोताराम — मैं ? मै पढाऊ तुझे ? इधर देख छोटे। इस पोथी का कवर वाला जो मोटा कागज है न ? वो बहुत रगीन दिखता है। फाडकर उसे मुझे दे दे। यह, म एक अच्छा खूबसूरत तोता जो बना रहा हू, उसका एक पख लगा लूगा। इसके बदले मे तुझे मैं एक अच्छा सा छोटा तोता बना कर दे दूगा।

छोटा — तुम भी गज़ब के आदमी हो मामा ! मैं तो इस पोथी को पढने लाया हू। और तुम चाहते हो कि मैं इसे फाडकर तुम को दे दू ? नही, मैं कभी नही दूगा।

तोताराम — छोटे ! न दे। कोई बात नही। आखिर पढ लिखकर क्या करेगा तू ?

सूरदास — अरे तोता राम, तुम भी बेवकूफ हो, कैसा सवाल है यह ? वह कल का बच्चा क्या जवाब देगा ?

तोताराम — खैर ! जाने दो। वह तो कल का बच्चा है। तुम तो पुराने बच्चे हो न, तुम दो जवाब ?

सूरदास — क्या ? पढ-लिख कर, वह सब-इन्सपैक्टर बन सकता है। कलक्टर भी बन सकता है।

छोटा — (खुशी से फूलकर) हा ! हा !! क्यो नही बन सकता ? मोटर पर सवार होकर घूमूगा।

तोताराम — खूब, खूब कहा छोटे ने ! जब छोटा कलक्टर बनेगा, तो उसे मोटर पर सवार होने का वक्त ही नही मिलेगा। तुम अन्धे महाराज खाली बैठकर क्या करोगे ? तुम चक्कर लगाते रहो मोटर पर चढकर। है, ठीक है न ? (हस पडता है)

सूरदास — हस ले रे तोता राम ! खूब हस ले। लेकिन याद रख, आज जो ज़मीन सूखी-रूखी पडी है, वही कल फूलेगी-फलेगी भी।

तोताराम — पर, सूरदास ! मै बताये देता हू, सूखी रूखी ज़मीन तो फूलेगी-फलेगी जरूर। लेकिन हमारी सूखी रूखी जिन्दगिया सूखी की सूखी ही रहेगी। हमारी जिन्दगी तो सूखी कच्ची फली है, वो वैसी ही झड जायेगी।

सूरदास — तोता राम ! हम झुलस झुलस कर झड गये, यह ठीक है। पर वह तो कल का बच्चा है। न जाने कल उस में क्या फूल खिलें ? मेरा छोटा तो राजा बेटा है !

तोताराम क्या कहा अधे ! मेरी बातें अट-सट की है ? अरे छोटे ! यह देख, जानता है यह मेरा हाथ कैसे टूट गया ?

छोटा नही तो, कैसे टूटा मामा ?

तोताराम एक बार क्या हुआ था, नई सिनेमा आयी। पहले दिन, पहला खेल था। देखने वाले इतने थे कि मानो जमीन फोडकर निकल आये हो। झुण्ड के-झुण्ड लाग लुगाई धक्कम धक्का कर रहे थे। मैं आखें मूदकर झुण्ड मे घुस पडा था। बचो या मरो टिकट लेना ही था। टागा मे से घुस कर टिकट-बाबू की खिडकी के पास पहुच गया था। तभी झुण्ड ने मुझे ढकेल दिया। मैं गिर पडा और मेरा हाथ टूट गया। लेकिन खैरियत हुई कि टिकट नही फटा।

छोटा ये कैसी बेवकूफी है मामा ! फालतू मे टिकट के लिए हाथ तुडवा लिया।

तोताराम यही तो मर्दानगी है छोटे ! जो काम हाथ मे लिया, उसे आखिर तक निभाना चाहिए। चाहे जान चली जाये।

सूरदास छोटे ! उसकी बातें सुनता रहेगा तो, वह तुझे पागल बना देगा। आ, इधर चला आ !

तोताराम अरे सूरदास महाराज ! मैं भी देखू जब वो कलक्टरी करेगा, और तुम कराओगे।

छोटा तो दादा ! मेरी मा नही आयेगी, और मुझे नही ले जायेगी ? क्या मुझे जिन्दगी भर यही बूट-पॉलिस करते जीना होगा ?

सूरदास नही छोटे ! तेरी मा आयेगी। तुझे खोजती हुई जरूर आयेगी !

तोताराम हा ! हा !! आयेगी जरूर। अरे ! छोडा—जो औरत दस दिन के मास पिंड को सडक पर फेंक कर चली गयी थी, वो फिर खाजती हुई आयेगी ? छोटे ! अपने दादा की बात मान कर आस लगाये बैठा रह।

छोटा तो दादा ! बिना पढे ही मुझे ऐसे ही जीना पडेगा।

तोताराम — हा ! हा ! ! क्यो नही, वह राजा बेटा है, और तुम वजीर-बेटे हा (हसता है) (स्वर बदल कर) अरे अन्धे बुड्ढे ! काहे फिजूल की आस लगाये बैठे हो ?

सूरदास — फिजूल की आस नही तोताराम ! छोटे की जिन्दगी जरूर सुधरेगी । वह हमारी तरह इस बदबूदार दलदल मे कभी नही धसेगा ? उबर जायेगा ।

तोताराम — हा ! हा ! ! उबर जायेगा । विलायत से गोरे राजा पुष्पक विमान भेजेंगे ? अरे राजा बेटे ! कपडे उपडे सभाल के तैयार होकर बैठ । (स्वर बदल कर) छोटे ! सुन ले मेरी बात । ये तेरा दादा, बुड्ढा और अन्धा है । इसने दुनिया को देखा-भाला नही । कहे देता हू, यह पढाई-लिखाई तुझे न रोटी खिलायेगी और न पानी पिलायेगी । तेरी यही बूट पालिश, तेरी लछिमी है । वही तुझे खिलाएगी-पिलाएगी ।

सूरदास — छोटे ! तू इधर आ जा । उसकी बातें मत सुन ।

तोताराम — छोटे ! सुन, अधे की सिखाई न सीख, मै बता देता हू—सुन ले—आजकल बडे-बडे कालेजा मे जाकर, बडे-बडे पोथे पढने वाले बाबू लोगो तक को नौकरिया नही मिलती है । बस पेट के गड्ढे को भरने के लिए सडक की धूल छान रहे है । आखिर में राम-नाम लेकर बूट-पालिस करके पेट भर रहे है । बस ! मुझे जो कहना था, वह कह दिया । पढ ले या लिखले । जो अक्लमद है वह कभी पढाई के पीछे पागल न होगा । आगे तेरी मर्जी जो चाहे कर ।

छोटा — तो फिर मामा ! कोई रोटी कैसे कमाए ? कैसे जिए ?

तोताराम — (उमग के साथ) यह पूछ । बताऊ ? शेर की तरह जीना चाहिए । जो काम हाथ मे लिया आखिर तक उसे निभाकर ही छोडना चाहिए । चाहे बाघ सामने आकर पजा उठावे तो भी डरना नही चाहिए । ये ही मरदमी है ।

सूरदास — (घबरा कर) अरे छोटे ! बात सुनने वाला मिल जाय तो, यह तोता राम अट-सट की बातें बहुत बकेगा ।

तोताराम	क्या कहा अबे ! मेरी बातें अट सट की है ? अरे छोटे ! यह देख, जानता है यह मेरा हाथ कैसे टूट गया ?
छोटा	नही तो, कैसे टूटा मामा ?
तोताराम	एक बार क्या हुआ था, नई सिनेमा आयी। पहले दिन, पहला खेल था। देखने वाले इतने थे कि माना जमीन फोडकर निकल आये हो। झुण्ड के-झुण्ड लोग-लुगाई धक्कम धक्का कर रहे थे। मै आखें मूदकर झुण्ड म घुस पडा था। बचो या मरो टिकट लेना ही था। टागा मे से घुस कर टिकट बाबू की खिडकी के पास पहुच गया था। तभी झुण्ड ने मुझे ढकेल दिया। मै गिर पडा और मेरा हाथ टूट गया। लेकिन खैरियत हुई कि टिकट नही फटा।
छोटा	ये कैसी बेवकूफी है मामा ! फालतू मे टिकट के लिए हाथ तुडवा लिया।
तोताराम	यही ता मर्दानिगी है छोटे ! जो काम हाथ म लिया, उसे आखिर तक निभाना चाहिए। चाहे जान चली जाये।
सूरदास	छोटे ! उसकी बातें सुनता रहेगा तो वह तुझे पागल बना देगा। आ, इधर चला आ !
तोताराम	अरे सूरदास महाराज ! मै भी देखू जब वो कलक्टरी करेगा, और तुम कराओगे।
छोटा	तो दादा ! मेरी मा नही आयेगी, और मुझे नही ले जायेगी ? क्या मुझे जिन्दगी भर यही बूट-पालिस करते जीना होगा ?
सूरदास	नही छोटे ! तेरी मा आयेगी। तुझे खोजती हुई जरूर आयेगी !
तोताराम	हा ! हा !! आयेगी जरूर। अरे ! छोडो—जा औरत दस दिन के मास पिंड को सडक पर फेंक कर चली गयी थी, वो फिर खोजती हुई आयेगी ? छोटे ! अपने दादा की बात मान कर आस लगाये बैठा रह।
छोटा	तो दादा ! बिना पढे ही मुझे ऐसे ही जीना पडेगा।

सूरदास — नही छोटे ! तेरी मा आयेगी, बडी चमकती मोटर पर बैठ कर आयेगी !

छोटा — सचमुच आयेगी दादा !

सूरदास — हा ! सचमुच आयेगी ! तुझे ले जायेगी। तुझे बडे-बडे कालिजो में पढ़ायेगी। तू बहुत बडी नौकरी करेगा। तब तेरा यह तोताराम मामा तुझे झुक झुक कर सलाम करेगा।

तोताराम — अरे छोटे बाबूजी ! अभी ले। यह मेरा सलाम। ये श्रोष वन तोते यहा रखे है---देखते रहना। मै अभी आया, उधर की वह दुकानवाला है न ? वह तोते मागता था, ये तोते उसे दे आऊ

तोताराम — अरे ! आप हो हैड-पुलिस बाबू ! पा लागन हैं, पा लागन !

हेड पुलिस — अरे बदमाश ! तोता राम ! किधर चला ?

तोताराम — यही हैड बाबू ! उस दुकानदार को तोते देने जा रहा था कि आप के दरसन हो गये।

हैड पुलिस — अरे दरसन हो गये रे झूठे ! सुनता हू, खूब ताडी पी करके तू लोगों से लडता-झगडता है।

तोताराम — नही, हैड बाबू ! सच बताऊ। आप मेरी बात सच मानिए--मै पहले ताडी पीता था जरूर। आजकल एकदम छोड दी। आप ही कहिए हैड बाबू ! अगर पीना चाहू भी, आजकल खरी ताडी कहा मिलती है ? दो रुपल्लियाँ दो, तो भी दा बूद खरी ताडी नही मिलती है ? फिर पिएगे भी तो क्या पिए ? फिर भी अगर हैड बाबू ! थोडा पी भी गये, साला, नशा ही नहीं चढता, उस पर तुर्रा यह कि चार घटे बराबर बदबू निकलती है। नशा तो दो मिनिट को भी नही टिकता। आजकल ताडी की बडी बुरी हालत है हैड बाबू ! सच मानिए।

हैड पुलिस — क्या बकता है रे बदमाश ! फिर जेल की हवा खाना चाहता है।

तोताराम हैड वाबू ! वडा पुन्न होगा आपका, आपकी चप्पल ढोऊ। वडी किरपा होगी, कुछ करके एक वार जेल भिजवा दीजिए। यहा वाहर रह कर भी क्या करू, वही खरी ताडी ही नही मिलती ? नशा ? नशा किये सालो वीत गये। हैड वाबू ! आपकी पा-वोसी करू, जेल भिजवा दीजिए। वही रामनाम लेता हुआ आराम से पडा रहूगा।

हैड पुलिस वाह रे वदमाश ! तू पहुचा हुआ पियक्कड है। इस में तेरी गलती भी कुछ नही, जमाने का रग ही वदल गया। जव से, जेल जाने वाला हर आदमी मिनिस्टर वनने लगा, तभी मे लाग, न जेल मे डरते हैं, और न पुलिस से।

तोताराम नही-नही, हैड वाबू ! ऐसी कोई वात नही। सच मानिए। मैं तो आपकी याद आते ही थर-थर काप जाता हू।

हैड पुलिस काप जाता है रे वदमाश ! अगर यही वात सच होती ता क्या मेरे सामने तू ऐसी वकवास कर सकता था ?

तोताराम माफ कीजिए हैड वावू ! मैं तो कीडा हू—कुछ वक गया। आप की आग्या हा ता ये तोते उधर उस दुकानदार को दे आऊ।

हैड पुलिस हा रे तोता राम ! मै असली वात तो भूल ही गया था। दस दिन मे हमारे वडे सरकार के छाटे लडके की वरस-गाठ मनाई जायेगी। तू अच्छे अच्छे दा ताते वनाकर मुझे दे दे, मैं उन्हें ले जाकर नजराना चढाऊगा।

तोताराम हा हुजूर ! जरूर, दा नही तीन ताते वनाकर आपके घर दे आऊगा। अव आग्या दीजिए।

हैड पुलिस चला चलो क्या है रे छाटे ? क्या कर रहा है ?

छोटा पाथी पढ रहा हू पुलिस वावू !

हैड पुलिस वाह रे छाकर, वडी उमग म है ! अच्छा ! ता जा पढना है, आज ही पूरा पढ ले। कल तडके ही इस्टेसन चले आना वूट-पालिस करनी है। परसा परेड होगी। तडके ही चले आना। हा ! समझा कि नही ? क्या साच रहा है र छाकर ?

छोटा — जी ! हैड बाबू ! कुछ नहीं बात ये है, हैड बाबू ! मैं, सिर्फ कल ही आऊंगा । उसके बाद कभी नहीं आऊंगा ।

हैड पुलिस — बाद कभी नहीं आयेगा ? कहां जायेगा रे छोकरे !

छोटा — मदरसे में भरती हो जाऊंगा, और रात दिन खूब पढूंगा, उसके बाद इन्सपैक्टर हो जाऊंगा ।

सूरदास — क्या बकता है रे छोटे ! छोटा बड़ा भोला है हैड बाबू ! उसकी बातों से नाराज न होइए ।

हैड पुलिस — इसमें नाराज होने की क्या बात है सूरदास ! ज़माना बदल रहा है । छोकरा मीठे सपने देख रहा है । देखने दो, तुम लोगों की तरह, वह भी काहे को पच मरे ? कौन कह सकता है कि किसकी खुश-नसीबी किस बात में है ? हम, तुम बूढ़े होने चले हैं। मीठे सपने तो देख नहीं सकते । वो अभी, कल का बच्चा है। देखने दो मीठे सपने। जीने दो सुनहले सपनों में ।

सूरदास — आप का दिल बहुत बड़ा है हैड बाबू !

हैड पुलिस — बड़ा हो, छोटा हो, कौन पहचानता है सूरदास ! तुमने मुझे पहचाना । अगर मेरे बड़े अफसर साहब मुझे पहचानते तो मैं तीन साल के पहले ही, इन्सपैक्टर हो गया होता । खैर ! जाने दो, किसकी बद नसीबी कौन मिटा सकता है । अच्छा ! मैं चला सूरदास ! छोकरे ! कल तड़के ही इस्टेशन चले आना ।

सूरदास — छोटे ! ताताराम लौट आया है ?

छोटा — अभी नहीं आया दादा ! दूकानदार को तार देने गया हुआ है न ?

सूरदास — इधर सुन छोटे ! उस बदमाश ताताराम की बातों पर कान न दे । वो दिन ही दिल में कुढ़ता है कि हम दोनों रोज पैसे कमा कर इकट्ठा कर रहे हैं । वह चाहता है कि किसी तरह हम दोनों में झगड़ा पैदा हो ।

छोटा — वह कुछ नहीं कर सकता दादा ! (धीमी आवाज से) दादा ! मुझे मदरसे में कब भरती कराओगे ?

सूरदास तेरी मा आ जायेगी न, तब ।

छोटा अगर मा न आये ?

सूरदास नही आयेगी तो मै ही अपने छोटे को मदरसे मे भरती करवा दूगा । इसीलिए तो छोटे ! मै रुपये इकट्ठा कर रहा हू ।

छोटा (अचरज से) क्या दादा ! तुम मेरी पढाई लिखाई के लिए इकट्ठा कर रहे हो ?

सूरदास हा ! हा !! बता दे, देख लू अब तक कितने रुपये इकट्ठे हुए होगे ?

छोटा दो-सौ ।

सूरदास नही, सात-सौ ।

छोटा सात-सौ रुपये इकट्ठे किये दादा ! तो मुझे, मदरसे मे अभी क्या नही भरती करवा देते ?

सूरदास अब थोडे दिन सब्र कर, भरती करवा दूगा । बाकी तीन-सौ रुपये इकट्ठे कर दे तो पूरे हजार हो जायेंगे । बस ! तू मदरसे म भरती हो जायेगा । समझा ?

छोटा (सोचता सा) तो दादा ! उस मदरसे के लडके जब छोटे-छोटे मे बच्चे थे— सुना है—तभी से उस मदरसे मे पढ रहे थे । मैं तो अब उनके बराबर का हो गया हू ? अब जाकर भरती होऊ और पढने लगू तो क्या मैं उनसे पिछड न जाऊगा ? तब क्या करू ?

सूरदास छोटे ! तू डर मत, तेरा दिमाग बहुत बडा है । उन बच्चो की चार दिन की पढाई, तू एक दिन म ही पढ जायेगा ।

छोटा दादा ! मै रात को सोऊगा नही, पढता ही रहूगा ।

सूरदास नही छोटे ! बच्चे रात भर पढा नही करते । इससे तन्दुरुस्ती बिगड जायेगी ।

छोटा जाय भाड मे तन्दुरुस्ती । मैं तो पढूगा ही ।

सूरदास अर पागल ! तन्दुरस्ती बिगड जान पर पढकर भी क्या हागा ? नौकरी कैस करोगे ?

छोटा नौकरी क्या दादा ? म ता कलक्टर बन जाऊगा न ? तब बहुत सी अच्छी अच्छी दवाइया मगवा लूगा और खा लूगा, अच्छा चगा हो जाऊगा ?

सूरदास अच्छा! अच्छा!! तू ऐसा ही करगा। कान आया छाटे ?

बिजली म हू बिजली, दादा ! छाटे तू क्या कर रहा है ?

छोटा दखती नही, ये पोथा है, मै पढ रहा हू ?

बिजली बाप र ! ये कान सी भाषा है ? अधे ! तू सारे पस गाठ बाध कर रख लेता है। क्या नहीं दो पैसे का तेल लाता ? और बच्चे के सिर म लगाता ? कमाता ता छोटा है।

सूरदास तू भी अच्छी ह बिजली ! ये क्या नही कह दती कि छाटे का जल्दी शादी कर द ? अरी भाली ! म ता अधा ठहरा। तल बेल कस लाता ग्रार कैस लगाता ?

छोटा बिजली ! मै ता जा ही रहा हू।

बिजली किधर जा रहा है र ?

छोटा अपनी मा के पास जाऊगा और मजे म पढूगा।

बिजली अच्छा ! तो कब जा रहा है रे ?

छोटा जब चमकता हुई बडी माटर म बठकर मरा मा आ जायेगी, तब।

बिजली (हस देती) वाह ! वाह !! खूब है।

छोटा क्या झूठ समझता है मरी बात बिजली ! दादा स पूछ, बता दगा।

बिजली (प्यार से) छाटे ! न आन वाली मा की याद करके तू इतना गुम है। भाले ! मुझे ही मा क्या नही मान लेता। मै ता बडे प्यार से तुझे गाद लूगी।

छोटा — छि छि तुझे मैं अपनी मा मान लू ?

बिजली — हा, मान ले छोटे ! मै तुझे बहुत प्यार करूगी।

छोटा — तू मेरी मा ! कभी नही, कभी नही। मैं तुझे अपनी मा नही मानूगा। चाहे कुछ ही हो जाय ।

बिजली — क्या, क्या नही मानता छोटे, ? क्या मैं बुरी हू ?

छोटा — हा ! हा !! तू सौ बार बुरी है। आने जाने वाले मर्दों को देखकर तू गन्दी हसी हसती है । तू और ताताराम मामा, हमेशा झगडते रहते ह। गालिया देते हैं। तू उसे काटती है वह तुझे मारता है। छि मै कभी तुझे अपनी मा नही मानूगा !

बिजली — (दुख मे) हा छोटे ! मैं बहुत बुरी हू। सभी मुझ से नफरत करते हैं। कोई मुझे नही चाहता। मै किसी लायक न रही (रो पडती है)

सूरदास — अरी बिजली ! तू रो पडी। वह कल का बच्चा है। कुछ बक गया तो तू रो पडी। चुप हो जा ।

बिजली — नही दादा ! छोटा सच कहता है। वह भला-बुरा कुछ नही जानता। इसीलिए जो दिल मे है उगल दिया। इसकी जगह दूसरे होते हैं तो, मुझे सामने देखकर कुछ बेढगी हसी हस देते ह, और पीठ-पीछे खाक कर थूक देते है। और मैं बेशर्म, उन्ही के फेंके पैसा से अपना पेट भर लेती हू। अपनी जरूरत चुकाने के लिए (छिछली हसी हसते हुए), लोग मेरे पास सरक कर आते हैं, और चुपडी-चुपडी बाते करते ह। दो रुपये मेरे मुह पर फेंक कर चले जाते हैं। सब अपनी जरूरत के बन्दे हैं। (रोती हुई) दादा ! मैं यह जिंदगी जी भी नही पा रही हू, और मर भी नही पा रही हू।

(फफक-फफक कर रोती हुई चली जाती है — थोडी देर में, दूर दूर से उसका रोना सुनाई देता है)

छोटा — दादा ! बिजली क्यो रोती हुई चली गई ? शायद मैं कुछ बुरा कह गया था ?

सूरदास (लम्बी साँस भरकर) कुछ नहीं छोटे! सब भगवत का खेल है। बिजली पगली है बेचारी! (स्वर बदल कर) छोटे! चल जरा उधर घूम आएगे।

(विराम सूअर का स्वर)

तोताराम आइए साब, आइए, किसी काम से आये होगे! आइए।

पत्रकार हा, काम से ही आया हू।

तोताराम आप जो इस रात के समय यहा पधारे हैं तो मै समझ गया। जरा ठहरिए। मै अभी उसे बुलाए लाता हू।

पत्रकार अरे! किसे बुलाए लाते हो?

तोताराम उसे ही साहब! शायद उसी झोपडी मे होगी!

पत्रकार कौन झोपडी मे होगी?

तोताराम वही साहब! जिसके लिए आपने यहा आने की तकलीफ उठाई है। बिजली।

पत्रकार बिजली! कौन बिजली?

तोताराम वही हमारी बिजली साहब!

पत्रकार हमारी बिजली? अरे! हम बिजली विजली कुछ नही चाहते। तुम इधर चले आओ।

तोताराम (थोडा हसकर) आप आप बडे गजब के साहब है। साहब!

पत्रकार मै तो हू ही। तुम्हारा नाम?

तोताराम तोता राम है साहब!

पत्रकार बडा ही सुन्दर नाम है। राम तो राम है। तोता जो है फूलो के धनुष पर भौरो की डोरी चढ़ाने वाले कामदेव का वाहन है। बडा ही सुन्दर नाम है तुम्हारा।

तोताराम साहब ता काई बडी बात कह रहे है। मै तो वेवकूफ हू, कुछ भी नहीं समझ पाया।

पत्रकार खैर! जाने दो। नही समझे ता काई बात नहीं। चलो, बताग्रो तुम क्या करते हो ?

तोताराम जी साहब! मै मै कागज के ताते बनाता हू, ग्रौर बेचकर उसी पर गुजर करता हू। साहब! मै ग्रकेला नहीं हू यहा। यहा एक ग्रधा सूरदास है। उसका नाती है।

पत्रकार रहने दा तुम एक ताता बनाते हुए इधर बैठ जाग्रो, मै तुम्हारी तस्वीर खीचूगा।

तोताराम साहब! (अचरज से) तस्वीर? (लजाता हुग्रा) तस्वीर की क्या जरूरत है माहब! नही साहब!

पत्रकार ग्ररे भाई! लडकी की तरह लजाते क्या हो? तस्वीर निकालेंगे बैठ जाग्रो। हा! हा!! रैडी!

तोताराम साहब! ग्राप कोई सिनमा वाले बाबू है?

पत्रकार नही, नही, सिनमा-उनमा कुछ नही। तुम बैठो पहले। (तोताराम बैठ जाता है) बस! वैसे ही वैठे रहो, हिलो-जुला नही, हा, रैडी! बस। हो गया।

तोताराम साहब! ग्राप मेरी वा तस्वीर क्या करेगे?

पत्रकार तुम्हारी तस्वीर ग्रखबारा मे छपेगी। क्या तुम पढना-लिखना जानते हो?

तोताराम जी! साहब! मेरी बिजली तो ग्रच्छी तरह पढ लेती है। मै मै ता कुछ, कुछ नही साहब! मेरे लिए तो काले ग्राखर भैस के बराबर है।

पत्रकार तुम्ही खुशनसीब हा। मै तुम मे कुछ सवाल पूछता हू। साच-विचार कर जवाब देना।

तोताराम जी! हा! ठीक-ठीक, सही-सही जवाब दूगा। लेकिन साहब जीभ ता मेरी इस वक्त कुछ कडवी-सी हा गयी है। मेहरबानी करके एक सिगरट हा तो दिला दीजिए।

पत्रकार (हसता हुआ) अच्छा ! यह लो सिगरेट !

तोताराम बड़ी मेहरबानी है आपकी। अब पूछिए साहब ! देखिए साहब ! एक बात पूछू ?

पत्रकार पूछो !

तोताराम आप तो कह रहे थे मेरी तस्वीर अखबारो म छपे मेरे जवाब भी अखबारो मे छपेंगे ?

पत्रकार छपेंगे तो जरूर। लेकिन कुछ कहानी की सी

तोताराम तो आप अखबार-बाबू ह ?

पत्रकार हा ! ऐसा ही समझो।

तोताराम अब सवाल पूछिए अखबार-बाबू !

पत्रकार तुम किस गाव क रहने वाले हो ? और क्या क हो ?

तोताराम अखबार बाबू ! मैं इस गाव का नहीं हू। बचपन म मर गयी थी। मेरे बाप न औरत को लाकर रख लिया था। वो बड़ी बुरी वह मेरे बाप के कान भरा करती थी। मेरा बच्चा था। जो वह लौंडी कहती थी मार मुझे मारता था।

पत्रकार तो तुम कुछ बोलते न थे ?

तोताराम बोलता क्या अखबार-बाबू ! एक दिन मार्टी और मेरे बाप की जो रखैल थी [illegible]
दिया। और जो कुछ उसके सिर, [illegible]
कई [illegible] का [illegible]
[illegible] म [illegible] गया। [illegible]
[illegible]
के लिए [illegible]

पत्रकार तुम ने शादी नहीं की ?

तोताराम शादी ? शादी तो समझिए अखबार-बाबू ! जैसी है-वैसी है। यही जो हमारी बिजली है न ?

पत्रकार अच्छा ! सुनो, और एक सवाल पूछूं ? तुम अब तक जैसी बुरी जिन्दगी में आदी हो गए हो क्या आगे भी ऐसी ही जिन्दगी बिताना चाहते हो या कोई दूसरा रास्ता ढूंढना चाहते हो ? यानी हर एक आदमी की कुछ ख्वाहिशें जरूर होती हैं। क्या कभी तुम्हें अपनी इस बीती जिन्दगी से नफरत पैदा हुई ? अगर नफरत पैदा हुई यानी ।

तोताराम (बात काटता हुआ) ठहरिए अखबार बाबू ! पहली बात तो यह है, मैं अपने को बहुत प्यार करता हूं और अपने किए को भी प्यार करता हूं। मुझे अपनी जिन्दगी पर कभी नफरत न पैदा हुई और न पैदा होगी। अब रही ख्वाहिशों की बात। क्या सुनाऊं अखबार–बाबू ! मेरे उन साली ख्वाहिशों की नानी ? साली, बहुतेरी मेरी ख्वाहिशें आज तक जैसी की-तैसी, पड़ी रहीं। एक भी पूरी हो न पाई। जिन्दगी की मेरी पहली ख्वाहिश थी। मैं खुद अपनी एक ब्राकेट-कम्पनी चलाता। लेकिन, या मेरी बिजली ने कभी उस कम्पनी को चालू न होने दिया। कहती है—मर्द का पसीना बहाकर पैसा कमाना चाहिए। कहती है कि धोखे बाजी के पैसे नहीं पचते। अखबार-बाबू ! मैं तो मूरख और उजड्ड ठहरा। कुछ नहीं जानता। लेकिन आप ही बताइए आसमान को छूने वाले मंजिल-पर-मंजिल मकान बनाते चले जाते हैं, बाबू लोग। का हराम का पैसा कैसे पच जाता है ? और कुछ नहीं बाबू जी ! सच तो यह है, जैसे भी हो रुपये हथिया लो, और मौज उड़ाओ। यही आखिरी और सच्ची बात है। मेरी बिजली तो पगली है बाबू ! छोटी बच्ची जैसी अपने आप खेलती रहना चाहती है। मैं कभी कह देता कि रसिया राहगीर (चौंककर) धत् तेरी, माफ कीजिए अखबार बाबू ! करी बात मुंह से निकल ही गई ।

पत्रकार   कहा भाई ! कहो, इसमे चौक पड़ने की व
तो अच्छी तरह समझ गया हू कि
से प्यार का क्या मतलब है ।

तोताराम   आप तो पढ़े-लिखे बाबू हैं, सब कुछ समझ लेते ह
बाबू ! मेरे मुह स कोई झूठी बात निकल ग
मारिए । मैं खाऊगा । अब मरी बात सु
मैं कागज के तोते बनाता हू आजकल । प्यारे
तोते बनाता हू । आखिर क्यो बनाता हू ?
लिए तो बनाता हू । अपन कधा पर विठाए
चक्कर लगाने के लिए नहीं, यही न बाबू ! जो बाद
चाहते है, वे दुअन्नी या चौवन्नी मेरे मुह पर फेंक
तोते ले जाते हैं । जबरदस्ती करके तो किसी स
खरीदवा नही सकता हू । हम गरीब जैसे
कौन पूछने वाला है अखबार बाबू ! अगर थोड़ी
आप समझ लें कि तोताराम अपने बनाए त
मे लोगा म बाट रहा है—तो हर कोई साला दौड़ आय
तोता मुफ्त मे ले जायेगा । लेकिन अखबार-बाबू
ही बताइए कि मुफ्त मे मेरे तोते ले जाने वालो म एक
निकलेगा जो तोताराम का नाम याद रखेगा ? नही
आदमी ऐसा नही निकलेगा । अगर मुफ्त मे तोता लेने
कोई मेरा नाम याद रखेगा तो मैं कहूगा कि—वह
गवार, नालायक है । असली और सच्ची बात यह है
जो हमारी चीज लेना चाहता है उस हमे अपनी चीज
देनी चाहिए । यह लेन देन का व्यापार है । यही दुनिया
यही धरम है । बडे बडे पढ़े लिखे कहते ह कि
स जीना चाहिए । यही बात है । अखबार
मैं पूछता हू कौन वह आसमान की है
मे देवता को देख आया है ?
ह कि धरम वही है जो हम अपने

पत्रकार   वाह रे तोताराम ! वाह ! वाह ! !
गोली मार दी है । एक तरह

अाछे दर्जे की ही क्या न हो, जो शक्ल-सूरत, तुमने मेरे सामने रखी है, वह गजब की है। कोई शक नहीं, तुम को लेकर एक बड़ा उपन्यास लिखा जा सकता है।

तोताराम
जी! अखबार-बाबू! आप उपन्यास लिखिए या कहानी लिखिए, जो कुछ भी करिए। लेकिन मुझ को लेकर आप लिखना चाहते हैं, तो आप बारह रुपये मेरे मुंह पर फेंक दीजिए।

पत्रकार
ज़रूर! ज़रूर!! जरूर देंगे। तुम तो बस-स्टैंड मार्क वाले बाबा हो,— ये लो दस रुपये!

तोताराम
अखबार-बाबू! यहां एक अंधा सूरदास है। उससे भी आप ऐसे सवाल पूछना चाहें तो उसे भी बुलाऊं। क्या आप उसकी भी तस्वीर निकालिएगा? अखबार—बाबू! उस अंधे साले के पास काफी पैसा इकट्ठा पड़ा है। एकदम, ओछी तबियत का बदमाश है। उसका एक नाती है, जो सिर्फ नाम का है। वह झूठ मूठ का नाती हमेशा हवा में महल बनाता रहता है। और यह अंधा बदमाश, उस नाती के हवा-महलों के लिए सूने में चूना इकट्ठा करता है। वह बेचारा नाती, पूरा पागल है। बूट-पॉलिस करके खूब पैसा कमाता है। और यह अंधा साला, उसके सारे पैसे फुसला फुसला कर हथिया लेता है।

पत्रकार
तो क्या वह बूर्जुवा, अब यहां आयेगा?

तोताराम
क्या कह रहे थे बाबू? कौन है वह?

पत्रकार
वही, अंधा सूरदास!

तोताराम
आह! आप अंधे सूरदास की बात कह रहे थे। (दूर से गाना सुनाई देता है) वह लीजिए, गाना सुनाई दे रहा है न? वही सूरदास आ रहा है। जो रोटी खाता है, वह पचती नहीं, इस लिए चिल्ला चिल्ला कर गाने गाता रहता है। यह लीजिए आ गये दोनों। इसका असली नाम तो हम मालूम ही नहीं, इसलिए हम लोगों ने इसका प्यारा नाम रखा है—अंधा। जो भी अंधा है, वह सूरदास होता ही है। इसीलिए हुआ इसका

नाम मधा सूरदास । यह लडका जो है, इस मधे का नाती है। सच्चा हो या झूठा । कहलाता तो है—नाती । इसे हम छोटा कहते हैं ।

सूरदास (बडे दीन स्वर से) बाबू ! अधा हू बाबू ! एक पैसा दो बाबू ! न साथी है, न सगी है बाबू ! अधा हू एक पैसा दो बाबू ! आपकी कमाई सलामत रहे बाबू ! मैं न काम कर सकता हू न कमा सकता हू बाबू ! आप बाबुओं की ही कमाई का भरोसा है बाबू ! एक पैसा दो बाबू !

तोताराम देखते है न अखबार बाबू यह कुत्ता है दूर की सूघ लेता है ! समझ गया कि यहा कोई बाबू पधारे हुए है । बस ! अपना राग अलापने लगा ।

पत्रकार (नाराज होकर) तुम चुप रहो जी ! सूरदास ! लो ये रुपया !

सूरदास (अचरज से) रुपया बाबू ! आपके बाल-बच्चे खुश रहे बाबू ! खुश रहे !

पत्रकार इधर सुनो सूरदास ! तुमसे जरा काम पडा है । इसीलिए आया हू ।

तोताराम अरे ! ये बाबू है खूब पढे लिखे । असल म आप ।

पत्रकार अजी ! तोताराम ! तुम थोडी देर चुप रहो तो मै बोलू ।

छोटा बाबू साहब ! इतने मे आप अपने बूट मुझे दे दीजिए मैं पॉलिश करू तो आप देखेंगे, ये नए बूट हो जायेंगे । चमक जायेंगे । बस ! दस पैसे दीजिए काफी है ।

पत्रकार तुम्हारा नाम क्या है लडके ?

तोताराम कलक्टर

छोटा मेरा नाम है बाबू जी छोटा ! सब लोग मुझे छोटा कहते है ।

पत्रकार वह तो प्यार का नाम होगा । असली नाम क्या है ?

छोटा जी साहब ! मुझे मालूम नहीं, मेरे दादा से पूछिए ।

छोटा दादा ! वो पुराना कपडा इधर दे दो ।

सूरदास यह ले, पेड के नीचे बैठ जा, और अच्छा पालिस कर दे बाबू बडे दिल के हैं ।

तोताराम हां, छोटे ! तेरे दादा को तो अभी एक रुपया दे चुके हैं साहब !

पत्रकार अरे तुम चुप भी रहो तोताराम ! सूरदास ! तुम्हारा क्या नाम है ?

सूरदास यही अंधा सूरदास है बाबूजी !

पत्रकार ये नहीं, असली नाम बताओ सूरदास !

सूरदास असली नाम है बापू जी ! बीर-भद्दर !

पत्रकार अच्छा ! वीर भद्र ! तुम्हारा कौन सा गांव है ?

सूरदास विजयवाडा के पास एक देहात है बाबू ! बाबू साहब ! मैं तो मूरख हूं जानता नहीं कुछ । बाबू ! ये सारी बात लेकर क्या करोगे आप ?

पत्रकार ये सारी बातें लेकर एक कहानी लिख देंगे और अखबार में छपवा देंगे ।

सूरदास (हंसकर) शायद गरीबों की जिन्दगी, बाबू लोगों को कहानी सी लगती होगी ?

पत्रकार सूरदास ! गरीब की ही जिन्दगी नहीं हर एक आदमी की जिन्दगी दूसरों को कहानी ही लगती है । लेकिन असली बात यह है कि हम जिन्दगी की इस कहानी से क्या सीखते हैं ? इसलिए तुम अपनी कहानी हमें सुनाओ, हम कुछ सीखेंगे ?

सूरदास हां, बाबू ! आप ठीक ही कह रहे हैं । अब सुनिए गरीब की कहानी । जब मेरे आखें थीं, मैं भी अपने पसीने की कमाई खाता था ।

पत्रकार तुम्हारी आखें कैसे जाती रहीं सूरदास ? सिर पर कोई जबरदस्त चोट लगी थी या और कुछ ?

तोताराम मगवार-बाबू ! ये मधा बड़ा पापी है। इसकी आखें रहेंगी ही कैसे ? ये पाजी तो, उस दूध पीते छोटे बच्चे से

पत्रकार (बात काट कर)–हूंश ! तोताराम ! (स्वर बदलकर) अच्छा ! देखो तोताराम ! दुकान से एक सिगरेट का पैकेट लाओ, लो ये पैसे । और वहीं एक प्याला चाय भी पीते चले आना, जाओ जल्दी । देखो आराम से आना ।

तोताराम जी मगवार-बाबू ! अभी गया और आया । अपने लिए बीड़िया भी ले आऊगा ।

पत्रकार अच्छा ! अब बताओ सूरदास तुम्हारी आखें कैसे गई ?

सूरदास जी, बाबू ! मेरी औरत थी अच्छी भली । उसने एक बच्ची को जना और जच्चे-खाने मे आखिरी सास छोड गई । मैंने बाबू ! फिर दूसरी शादी नही की । उस बच्ची को बडे प्यार से पाला-पोसा । वह मेरी बच्ची बडी हो गयी । सयानी भी हो गयी थी । ठुमक ठुमक कर चलती थी । बडी खूबसूरत लडकी थी बाबू ! शायद इस दुनिया मे गरीबो का खूबसूरत होना भी बडा शाप है बाबूजी !

पत्रकार क्या तुम्हारी बेटी बडी खूबसूरत थी ?

सूरदास जी, बाबू ! सोने की पुतली थी । दिन भर मे पसीना बहा बहा कर थका-हारा घर पहुच जाता तो, उसकी प्यारी मुसकान देखकर सारी थकान भूल जाता था । लेकिन बाबू ! उसकी उसी मुसकान ने उसकी जान ले ली थी बाबू ! (सूरदास रो पडता है)

पत्रकार (भर्राई आवाज से) उस पर क्या ... सूरदास ?

सूरदास हमारे गाव के पटवारी थे बडे अ[illegible] ...र थे । लेकिन, उनका जवान लडका था [illegible] जवान लडकियो के पीछे पडता था । [illegible] साथ हो गये थे । एक दिन मेरी [illegible] से पानी लाने जा रही थी तो [illegible] लिया और

हाथ पकड लिया । मेरी लडकी ने अपना हाथ छुडाकर एक थप्पड मारा लौंडे को । अच्छा

पत्रकार अच्छा ही किया !

सूरदास अच्छा तो किया था बाबू ! लेकिन वह पटवारी का लडका जहरीला काला साप था। आखिर उसने दात गाड ही दिया था । लडकी ता लडकी ही होती है बाबूजी ! कितनी ही छीना झपटी करे, जवान मद से कस अपने को बचा सकती थी बाबू जी ! मेरी लडकी बडी वो थी बाबूजी ! उसने अपन मुठलाए बदन को मुझे ही नही, किसी का भी फिर न देखने दिया। तीसरे दिन सबेर उसकी लाश गाव के उसी पोखर मे तरती दिखाई दी थी । बाबूजी ! (रो पडता है)

पत्रकार फिर तुमने क्या किया था ?

सूरदास मैंने साचा था बाबूजी ! जिसकी वजह स मेरी लडकी मर गई उसके टुकडे-टुकडे कर दूगा । लेकिन इस बार भी भगवान उसी के साथ था बाबूजी !

पत्रकार हुआ क्या था आखिर ?

सूरदास होना क्या था बाबूजी ! भेड जाकर पहाड मे टकराए ता क्या होता है बाबूजी ! वही मेरी भी बुरी हालत हुई । पटवारी के लडके का, न जाने कैसे ?—पता लग गया था कि मैं उसे मार डालन की ताक म हू । बस ! डर के मार, शहर की पुलिस को खबर द दी और उसे बुलाकर गाव मे रख दिया । पुलिस वाला ने मुझे ऐसा मारा जैसे किसी जानवर को भी नही मारा जाता है । न सिर, न पैर, मेरी हड्डिया चूर चूर हो गई थी । बाबूजी ! न जान, कैसी कोई चोट लगी थी, मेरी आखें भी धीरे धीरे बुझ गई थी ।

पत्रकार सूरदास ! ये छोकरा कौन है, जिस ताता राम, तुम्हारा नाती कह रहा था ?

सूरदास बाबू जी ! तो ताता राम लौट आया है ?

पत्रकार अभी नही लौटा है, बताओ ।

सूरदास ये छोकरा मुझे मिल गया था बाबू जी !

पत्रकार तुम को मिल गया ?

सूरदास हां, बाबू जी ! मिल गया था।

पत्रकार कहां मिला और कैसे मिला ?

सूरदास जी, बाबू जी ! बात ऐसी थी कि, मेरी लडकी तो मर गई थी। मेरी आंख भी बुझ गई थी, तो अपने गांव मे कैसे जी सकता था ? मेरी इज्जत भी खाक मे मिल गई थी। तो मै अंधा, गांव छोडकर, माता कनक दुर्गा माई के मन्दिर की शरण मे चला आया था। भीख मांगता था, पेट भर लेता था। एक दिन की बात थी बाबू जी ! कोई बडे घर के लोग माता के दरशन करने मोटर पर आये थे, और मंदिर में गये थे, न जाने कौन थी वह अभागी माता, अपने दस दिन के नन्हे बच्चे को बाहर खडी हुई मोटर पर लिटा कर, चली गई थी। मोटर-वाले, जब मंदिर से लौटे थे तो उन्होने अपनी मोटर में इस बच्चे को देखा था। वे भी बाल-बच्चे वाले थे, इसीलिए इस बच्चे को मेरे पास लिटा कर चले गये थे।

पत्रकार उसके बाद क्या हुआ था ?

सूरदास उसके बाद मैं इस बच्चे को उठा लाया था। सोचा था आगे जाकर, यह लडका, मुझ अंधे का सहारा होगा। इस नन्हें बच्चे को लेकर मैं यहां से चला गया था। साला, कई शहरों का चक्कर लगाता रहा। कैसे हो किसी तरह इसे पाला-पोसा। जब लडका थोडा चलने फिरने लगा तो, मैं लौटकर फिर इसी कनक दुर्गा माता की शरण में आ गया था।

पत्रकार कितने साल हुए होंगे सूरदास ! जब यह बच्चा तुम्हें मिला था ?

सूरदास (सोचता सा) हां, यही बाबू जी ! पिछले बारह साल को, जो कृष्णा पुष्कर पडा था बाबू जी ! उसका पहला ही दिन था। बाबू जी ! आपके पैरों पड़ूं—ताना राम मैं ये न कहिए यह बच्चा मुझे यहां पडा मिला था।

पत्रकार क्या तोता राम इस बात को नही जानता ?

सूरदास नही जानता बाबूजी ! मैने तो बना बना कर एक कहानी गढ ली थी। यही कह दिया था कि कोई बडे घर की बेटी थी शादी के पहले ही इस बच्चे को जना था। और मुझे दे गई थी। और कह दिया था बाबू जी ! वह किसी दिन लौट आयेगी। अपने बच्चे को ले जायेगी।—बाबूजी ! आपके पा लागू —तोता राम से असली बात न कहिए। वो तो बहुत कुढता है कि छोटा अपनी कमाई मुझे दे देता है।

छोटा ये लीजिए बाबू जी ! देखिए ये आपके बूट कैसे चमकने लगे।

पत्रकार (पास में) बहुत अच्छी पॉलिस की है तूने बच्चे ! थैंक्यू ! थैंक्यू !!

छोटा (जसे बात याद आई हो) हा ! हा !! दादा ! वह यही थी, मदरसे की उस लडकी ने कहा था, जिसने मुझे पोथी दी थी।—थाकुस ! थाकुस !!

पत्रकार ये ले तेरे पॉलिस के पैसे !

छोटा दादा ! रुपये के छुट्टे पैसे दो, बाबू जी को देना है।

पत्रकार नही, रख ले रुपया।

छोटा पूरा रुपया रख लू बाबू जी ! यह बाबू जी बडे अच्छे है दादा ! बाबू जी ! थाकुस ! थाकुस !! (अचानक) हा ! बाबू साहब ! आप कलक्टर है ?

पत्रकार नही बच्चे !

छोटा तो फिर सब इस्पेक्टर हैं ?

पत्रकार वह सब, कुछ नही !

छोटा आप तो पढे-लिखे हैं बाबू जी ! अगरेजी तो जानते होगे ?

पत्रकार हा ! हा !! जानता तो हूं ।

छोटा (सोचता सा) तो दादा। बाबू साहब हैं, अगरजी जानते हैं। फिर भी न कलक्टर हैं, न इस्पैक्टर हैं। यह कैसे हो सकता है दादा।

सूरदास काहे कोई नौकरी करे छोटे। पढ़े लिखे हैं, और दौलतमद हैं। फिर काहे कलक्टर बनें ?

छोटा बाबू जी। क्या आपका घर, यहा से नजदीक है ?

पत्रकार क्यो क्या बात है ?

छोटा मै रोज आपके घर आना चाहता हू। आप मुझे पढ़ाइए, मैं पढ़ूगा।

पत्रकार (अचरज और प्यार से) तू पढेगा बच्चे ?

छोटा हा, बाबू-साहब। मैं पढ़ूगा। मैं ये बूट-पालिस करके जीना नही चाहता हू। मैं अगरेजी पढ़ूगा कलक्टर बनूगा। मोटरो पर घूमूगा। बडे-बडे दुमजिले मकानो मे रहूगा।

पत्रकार तो तब, आज तक क्या करते रहे ? पढते रहना चाहिए था ?

छोटा मैं तो यही चाहता हू बाबू साहब। जभी मैं अपने दादा से पूछता हू तो कहता है कि तेरी मा आयेगी। और मोटर पर चढाकर तुझे ले जायेगी, तुझे पढायेगी। लेकिन बाबू साहब। वह मेरी मा आती ही नही, क्या करू ?

सूरदास छोटे। तेरी मा नही आयेगी तो न सही। मैं तो हू। मै तुझे पढाऊगा।

छोटा नही सब झूठ है। हमेशा यही बात कहा करते हो।

सूरदास नही, छोटे, अब की जरूर तुझे मदरसे मे भरती करवा दूगा, और पढाऊगा।

छोटा अच्छा। देखता हू। अब की, मदरसे मे भरती न करवाओगे तो, मै बूट-पॉलिस वाली थैली यही फैंक दूगा और मैं भाग निकलूगा।

पत्रकार क्या बच्चे। तुझे यहा अच्छा नही लगता ?

छोटा — नही, बाबू जी ! यहा मुझे एकदम अच्छा नही लगता । मेरा दादा तो आने-जाने वाले सभी लोगो से भीख मागता है । कोई देता है, और कोई नही देता है । कोई-कोई तो गालिया देकर चला जाता है । बिजली तो राहगीरों से छुपी छुपी हसती है और आख मिलाती है । और यह तोताराम मामा तो पियक्कड है । खूब पी-पी कर सबको गालिया देता है । और बिजली को मार-मार कर रुलाता रहता है ।

सूरदास — छोटे ! बहुत भूख लगी है । चल ना चदू की दुकान पर ? रोटिया खाकर चले आयेंगे ।

छोटा — हा, चलो दादा !

पत्रकार — बच्चे! जरा ठहर ! तू अपने दादा के पास खडा हो जा । मै तुम दोनो की तस्वीर निकालूगा ।

छोटा — तस्वीर निकालिएगा बाबू साहब ! थाकुस ! थाकुस !!

पत्रकार — ठीक-ठीक खडे हो जाओ दोनो । हा ! रेडी ! (कैमरे की आवाज) बस ! हो गया । बच्चे ! थैंक्यू !

छोटा — (अपने आप मे) थाकुस थाकुस !

सूरदास — चल छोटे ! रोटी खाकर चले आयेंगे !

(विराम—सूअर का स्वर)

बिजली — (धीमी आवाज मे बिजली की हसी) क्या सर्दी लग रही है, बाबू साहब ?

पत्रकार — (अनमना-सा) हा ! लगती तो है ।

बिजली — (फिर धीरे हसती है) तब तो, जरा आप ही के पास बैठ जाऊगी। बाबू-साहब ! बडी भूख लग रही है । आपके पास दो रुपये हो तो

पत्रकार — हा ! हा !! दो रुपये ह—ले लीजिए ।

बिजली — क्या बाबू साहब ! मै खूबसूरत नही हू ?

पत्रकार — क्यो नही, आप बहुत खूबसूरत हैं ।

बिजली	तब क्या पुलिस का डर है आपको ? यहां पुलीस-उलीस कोई नहीं आती ।
पत्रकार	(चुप रहता है) ।
बिजली	आप तो कुछ बोलते चालते नहीं । यह कैसा रसियापन है ? देर हो जाय तो फिर मेरा वह मर्द लौंडा आ जायेगा ।
पत्रकार	आने दीजिए ।
बिजली	तो क्या आपको मेरी जरूरत नहीं ?
पत्रकार	उहूं !
बिजली	तब फिर ये रुपये कैसे दिये ?
पत्रकार	आपने मांगे थे, मैंने दे दिये ।
बिजली	बाबू-साहब ! आजतक किसी आदमी ने मेरे साथ इज्जत से इस तरह बात नहीं की, इसीलिए यह सब आज नया-नया सा सुनाई दे रहा है ।
पत्रकार	मेरे लिए भी यह नई बात है कि मैं किसी अनजान औरत को तू कहूं ।
बिजली	जान-पहचान की क्या बात है ? वह तो पलक मारते ही हो जायेगी ।
पत्रकार	खैर ! आप मुझे माफ करें ।
बिजली	तो आपने मुझे ये रुपये भीख में दिये है ?
पत्रकार	(चुप रहता है)
बिजली	आप बोलते क्यों नहीं ? मैं भीख मांगने वाली औरत नहीं हूं । भीख नहीं लेती । अगर आपको मेरी कोई जरूरत नहीं तो आप अपने रुपये वापस ले लीजिए ।
पत्रकार	कोई बात नहीं, रख लीजिए !
बिजली	सुन लीजिए साहब ! इस बिजली के पास ऐसी बातें नहीं चलने की हैं । मेरा मोल भाव सही सही सच्चा-सच्चा चलता है । मैं मुफ्त में पैसे लेने वाली औरत नहीं हूं ।

पत्रकार — आप मुफ्त मे मेरे रुपये लेना नही चाहती हैं और इन रुपयो के बदले मे, आप जो देना चाहती है, मैं वह लेना नही चाहता हू ।

बिजली — नही चाहते ? तो फिर इस वक्त आपने यहा तशरीफ लाने की तक्लीफ क्यो उठायी ?

पत्रकार — मैं जरनलिस्ट हू ।

बिजली — यानी ?

पत्रकार — यानी मैं अखबारो मे कहानिया और लेख, कुछ और भी, एस लिखता रहता हूं ।

बिजली — क्या लिखन उखने के लिए, इससे अच्छी जगह आपको और नहीं मिली बाबू-साहब ।

पत्रकार — मैं अखबारो म कुछ खास-खास बातो पर लेख लिखा करता हू । इसके लिए आप जैस लोगो से मिल कर खबरें इक्ट्ठी कर लेता हू । उन्हें कथा-कहानी का रूप देकर छापने भेज देता हू ।

बिजली — इससे हम जैसो को क्या फायदा मिलता है बाबू-साहब !

पत्रकार — बात यह है । सब को, सभी की जिन्दगी पूरी पूरी नही मालूम होती है । सब लोग सभी बातें तो जान भी नही पाते हैं । इसीलिए कई लोग ऐसे होते हैं, जो दूसरो की जिन्दगी की कहानी जानना चाहते हैं । मैं तो आप जैसे लोगो से—जो अभागे हैं, जिनकी काई ख्वाहिश, जिन्दगी भर मे कभी पूरी नही होती—जाकर मिलता हू । उनकी दुखी जिन्दगी की बातें जान लेता हू । और कहानी या लेख लिखकर अखबारा को भेज देता हू । वे छपते हैं और लोग पढकर आप लोगा की अभागी जिन्दगी की दुख भरी कहानिया जान लेते हैं ।

बिजली — कौन हैं साहब ! हमारी बेकार की कहानी पढने वाले ? यही न, बडी-बडी तोदें बढा-बढा कर, सुस्ताने वाले दौलत मद ? पखो के नीचे, गद्दो पर लेट कर, जब तक नीद नही आती, हमारी फिजूल की कहानी, आराम से पढ लेते हैं । और अगर बीच मे ही आखें लग गयी तो हमारी कहानी, अधूरी ही पढ़कर, फेंक दी जाती है ।

पत्रकार जरा सुनिए ! आप तो बहुत नाराज हो गइ हैं। शायद म अपनी बात आपको अच्छी तरह नही समझा सका। अगर सच पूछा जाय तो, न मैं आप की जिन्दगी को बदल सकता, न आप मेरी जिन्दगी को बदल सकती ! लेकिन हर एक आदमी का यह फ़र्ज है कि वह जानले कि, दूसरे लोग कैसी जिन्दगी बिता रहे हैं। और साथ ही, उसका यह भी फर्ज है कि दुखी प्राणियो के दुख की याद म दो आसू भी बहा ले।

बिजली बाबू साहब ! क्या उनके आसुओ से हमारा पेट भरता है ?

पत्रकार आप नही जानती ह— वे आसू दुख का दूर करने वाली वे ठण्डी-ठण्डी बातें, कभी-कभी उनको भी नसीब नही होती, जिनका पेट भरा हुआ है !

बिजली नही, मैं नही चाहती, मेरे लिए कोई अनजान, दो आसू बहाये। मुझे इसकी जरूरत नही। मेरे पास, बाबू साहब ! इतने भरे आसू छलक रहे हैं कि मेरी इसी जिन्दगी के लिए ही नही, ऐसी सैंकडा मेरी जिन्दगियो के लिए काफी ह। *(भर्राई आवाज से)* बाबू साहब ! काफी ही नही जरूरत से भी ज्यादा है।

पत्रकार इसीलिए तो बहिन ! मैं आप से विनती कर रहा था कि आप अपनी कहानी मुझे सुनावें। दिल म दर्द दुख को दूसरो का सुनायेंगी, तो कुछ-न-कुछ तसल्ली जरूर मिल जायेगी।

बिजली वाह ! खूब है—क्या कहा आपने मुझे ? बहिन ! सुन लीजिए साहब ! किसी की बहन बनना नही चाहती मैं। मैं चाहती हू कि मेरी कहानी मेरे ही साथ खत्म हा जाय। अगर आपन मेरी कहानी के लिए ही रुपये दिये हैं, तो लीजिए आपके रुपये लौटाये देती हू।

सीताराम (फिर खूब पीकर आता हुआ) अरी पगली ! क्या लौटाये देती है ? रुपये ? प्यार स रुपये दिये साहब ने, लेले ! अखबार बाबू ! ये मेरी बिजली बावरी है। कुछ नही जानती। यह लीजिए सिगरट-पाकेट।

बिजली माभा !

तोताराम तू जरा चुप रह पगली ! आप ही कहिए अखबार बाबू ! लोग चाहते ह कि दुनिया का सारा पैसा, उन्ही के पास इकट्ठा हो जाय ! और एक यह भी है, मेरी पगली बिजली! जो हाथ लगे पैसे को लौटा देना चाहती है। अब कहिए साहब ! यह पगली है या अच्छी ?

बिजली लौटा नही देती तो क्या करती ? साहब चाहते ह कि मैं अपनी कहानी उनको सुनाऊ। क्या सुनाऊ अपनी कहानी मैं ?

तोताराम अरी पगली ! सुनायेगी, तो क्या जाता है तेरा, मैंने अपनी कहानी सुनाई, अघे ने अपनी कहानी सुनाई। साहब ने दोनो को रुपये दिये। तू भी सुना। तुझे भी पैस मिलेंगे।

पत्रकार हा ! हा! ! आपको भी दूगा।

बिजली (कुछ रुककर) कितने रुपये देंगे ?

पत्रकार आपको कितने रुपये चाहिए ?

बिजली पाच नही दस रुपये दीजिएगा ?

पत्रकार जरूर देंगे।

बिजली (एक फीकी हसी) शायद आप हमारी इस जिदगी को बहुत इज्जत देते हैं । न मैं आपके रुपये चाहती हू और न मैं अपनी जिन्दगी को आपके नुमाइश घर मे रखना चाहती हू।

तोताराम अरी, तेरे पागलपन की भी कोई हद है ? लक्ष्मी ड्योढी पर आती है तो दरवाजा बन्द कर लेती है ? अखबार-बाबू ! वो रुपये इधर फेंक दीजिए, मैं सुनाऊगा इसकी कहानी ?

पत्रकार क्या आप अपनी कहानी न सुनाइएगा ?

बिजली मैं सुनाऊ या न सुनाऊ—ये बात दूसरी है। अगर आप उसको रुपये दीजिएगा तो मैं कभी अपनी बात आपको सुनाऊगी ही नही, ये बात पक्की है।

तोताराम — अजी ! अखबार-बाबू ! आप झिझकिए नहीं, रुपये इधर दे दीजिए। उसकी एक भी ऐसी बात नहीं, जो मैं न जानता होऊं। उसके नसीब की हर एक छोटी से छोटी लकीर भी मैं पहचानता हू। दे दीजिए रुपये हा, अब आपको बिजली से कोई मतलब नहीं, जब पैसे आपने मुझे दे दिये, तो उसकी सारी बातें आपको बता दूगा। अब पूछिए आपको जो कुछ पूछना है। जल्दी पूछिए, फिर मुझे भी कुछ काम है।

बिजली — हा ! हा !! तुझे काम क्या न होगा ? रुपये हाथ लगते ही, ये अब ताडी की दुकान भी तुझे बुलाती होगी। और दुकान-वाली चमेली भी तेरी राह देखती होगी।

तोताराम — अरी चुप रह डाइन ! गले मे ताडी, बगल मे चमेली, वाह ! वाह !! वो स्वरग है। स्वरग। स्वरग दिखाई देगा।

बिजली — हां ! हा !! क्यो नही दिखाई देगा ? हाथ के रुपये चुक जायेंगे तो, वही चमेली स्वरग नही, झाडू दिखायगी।

तोताराम — क्या बकती है री साली ! मुह बन्द करले, नही हड्डिया चूर चूर हो जायेगी।

बिजली — हड्डिया अब क्या चूर होगी, जब तेरे पल्ले पड़ी थी, तभी मेरी जिन्दगी ही चूर चूर हो गयी थी।

तोताराम — बिजली ! मुझे गुस्सा न दिला, अब की मैं रहम खाकर छोड़े देता हू समझी ?

बिजली — तू बडा मर्द है न ? इसलिए नाराज हो जायेगा।

तोताराम — मर्द हू। इसीलिए रहम खाता हू।

बिजली — क्या नही, तू बडा मर्द है। जो अपनी औरत को पैसे के लिए औरो की सेज पर लिटा देता है, वही तो बडा मर्द है ?

तोताराम — तो तू बकना बन्द नही करेगी ?

पत्रकार — तोताराम ! ठहर जाओ। अपनी ही औरत पर तुम मर्दानगी दिखाओगे ?

बिजली (बेबसी और क्रोध) मारने दीजिए बाबू साहब ! यह उसके लिए कोई नई बात नहीं। मैं अपना बदन बाजार में ले जाकर बेच देती हूं, और पैसा कमाती हूं। और इस बेशर्म को खिलाती हूं, पिलाती हूं। और यह छाती तान कर कहता है कि मैं मर्द हूं।—अफ़सोस है बाबू-साहब ! ऐसे मर्दों को न जाने भगवान क्यों नहीं उठा लेता !

पत्रकार बहन ! आप ही क्यों नहीं चुप हो जातीं ?

बिजली चुप ही रही थी बाबू साहब ! आज तक इस नामर्द ने कठ-पुतली की तरह जो भी नाच नचाया मैं नाचती रही। इसने जो भी बुरा किया। सहती रही। कुछ न बोली। आखिर औरत की जो लाज है, उसे भी इसके हाथ में रख दिया। इसने मेरी इज्जत, औरत की इज्जत, जो भी बदमाश, बाजार में मिला, उसी के हाथ बेच दी। इसे न शर्म है, न लाज है। यह नामर्द है बाबू साहब !

तोताराम अखबार-बाबू ! आपने मेरी बिजली की, मेरे खिलाफ, शिकायत सुनली। अब मेरी भी सुन लीजिए। मेरी तो कोई शिकायत है ही नहीं। लेकिन मैं कहता हूं— हम गरीब हैं। बेघर बार के हैं। बे ठिकाने के हैं। अगर हम लोग लाज-शर्म की इज्जत की, आबरू की गांठ बांध करके झापडी में या किसी पेड़ के नीचे बैठे रहें तो दानों टैम इस पेट के लिए रोटियां कैसे मिलेंगी ? कहां से मिलेंगी ? कौन देगा ? यह बेवकूफ औरत रोटी की बात क्यों नहीं सोचती ? फिर भी बद-नसीब मैं हूं। वो ऊपरवाला, जो भगवत है वह बड़ा बदमाश है। उसने मेरे नसीब में यह लिख रखा है कि यह खोटी औरत, जो भी खरी खोटी मुझे सुनाये, सुनता रहूं।

बिजली कैसी भोली भोली बातें करता है तू बेशर्म ! मैं हूं अभागिन। अपने गांव में अपनों के बीच में न रह सकी ! आसमान पर चढ़ना चाहती थी। घर-बार छोड़ा, अपनों को छोड़ा। आधी रात में भाग निकली थी। घर में भागी तो थी। लेकिन किस घर जाती, किसके पास जाती ? —यह पहले सोच न पायी

थी। पेड के नीचे लेटी सोच रही थी। थकी थकी थी। नींद लग गयी थी। अरे राक्षस! उस बेबसी मे, नशे मे चूर तूने मेरी आबरू लूटी थी? या उस भगवत ने? जिसे तू अभी बदमाश कह रहा था।

तोताराम नशे मे चूर मैंने तेरी आबरू लूटी थी। मैं मान लेता हूं। इसीलिए तो मैंने हमेशा के लिए तेरा हाथ पकड लिया था और तेरा हो गया था। इस रास्ते मैंने अपनी गलती सुधार ली थी।

बिजली सुधार ली थी। खूब! सुधार क्या ली थी? तूने मेरे गले मे मोटा रस्सा बाध दिया था, जिसे मै आज तक तुडा न पाई और इस जिन्दगी मे तुडा भी नहीं पाऊंगी।

पत्रकार तोताराम को अपनी इस गलती का पछतावा है। आपको अब तक यह बात मालूम हो गयी होगी। इसने आपको अपना लिया था न?

बिजली बाबू साहब! मैं आप जैसे बडे लोगो की नजर मे इसकी ब्याही औरत हू। लेकिन इसकी नजर मे, मैं उसका बनाया कागज का तोता हू। उन तोता का यह बेच देता है। और मुझे? मुझे किराये पर दे देता है।

पत्रकार मैं एक बात पूछू?

बिजली पूछिए!

पत्रकार आप जिस काम को इतना बुरा समझती हैं उसे करती ही क्यो हो? आप उसके खिलाफ आवाज उठा सकती थी न?

बिजली अपनी इज्जत बचाने का वह खेल भी खेल चुकी हू बाबू साहब! उसका नतीजा यह हुआ था कि आज मेरे बदन की एक हड्डी भी ऐसी नहीं है जो इस मेरे मर्द के मुक्कों से चूर-चूर न हो गयी हो।

बिजली (हताश होकर) हां ! मर्जे में छोड सकती थी । छोड़ के कहा जाती ? किसके आसरे जाती ? क्या कर सकती थी मै औरत ? और क्या भरोसा था (भर्राई आवाज) बाबू साहब ! इससे भाग कर, क्या मैं इससे अच्छी जिन्दगी जी सकती ?

(रो पड़ती है)

पत्रकार आपके कोई बाल-बच्चे नहीं ?

बिजली इस दलदल की जिन्दगी के लिए वही एक कमी रह गई है बाबू साहब !

पत्रकार पैदा ही नहीं हुए थे ?

बिजली पैदा हुआ था एक लडका ?

पत्रकार अब कहा है वह ? क्या कर रहा है ?

बिजली अब नहीं है, बाबू साहब !

पत्रकार बेचारा गुजर गया ?

बिजली नहीं, मेरा लडका जिन्दा है ।

पत्रकार तब, क्या किया था उसे आपने ?

तोताराम हमने उसे बेच डाला था अखबार बाबू ?

बिजली नहीं, हमने उसे नही बेचा था । ये झूठ बोल रहा है !—मैंने ही उसे कहीं छोड दिया था ।

पत्रकार कही छोड दिया था ? अपनी कोख के जने का आप ने कही छोड दिया था ? आपके मा के दिल ने कैसे माना ?

बिजली माना था साहब ! माना था। क्या करती ? मेरा चाद-सा लडका था। इस बाप के राक्षसी दिल ने सोचा था कि उस नन्हें से बच्चे के हाथ या पैर ताड कर, उसे लगडा-लूला बना कर, उसके आसरे भीख मागकर रुपये पैदा करू ?

तोताराम फिजूल के झूठ क्यो बोलती है बिजली ! क्या तभी मन तुझ से नही कहा था कि वैसे ही हसी-दिल्लगी में, मैं वह बात कह गया था । तू डर गयी थी, तो मैं क्या करता ?

बिजली क्या मैं नहीं पहचानती तुझे ? बेशर्म ! तू जो करना चाहता है, उसे जैसे भी हो करके ही छोड़ता है। इसीलिए मैंने दिल को पत्थर बना लिया था। और याद से बच्चे को कहीं छोड़ आई थी।

पत्रकार कुछ याद है कहां छोड़ आई थी ?

बिजली हां ! याद है। क्या कभी उन बातों को भूल सकती हूं। बाबू साहब ! इसी कनक-दुर्गा माता के मन्दिर की सीढ़ियों के पास। कोई धनी औरत और मर्द, अपनी मोटर सीढ़ियों के पास खड़ी करके पहाड़पर जा रहे थे माता के दरसन करने। उन्हीं की मोटर मे अपने बच्चे को लिटा कर, चली आई थी और इस अपने मर्द से कह दिया था, उसे बेच आई हूं।

पत्रकार कब छोड़ आई थी ? कुछ याद है ?

बिजली याद क्यों नहीं बाबू ! वही, पिछले बारह साल वाले कृष्णा पुसकर का पहला दिन था

पत्रकार उसके बाद, कभी आपने अपने बच्चे की कुछ खोज की थी ?

बिजली नहीं बाबू ! अपने बच्चे को छोड़ आई कि हम दोनों नेल्लूर चले गये थे। और पूरे साल के बाद फिर यहां लौटे थे।

पत्रकार क्या आप जानती हैं—अब आपका लड़का कहां है ?

तोताराम आप भी अखबार-बाबू ! बड़े भोले मालूम होते हैं। पैसे के नशे से चूर उस औरत और मर्द ने अपनी मोटर मे इस बच्चे को देखते ही, अपना पिंड छुड़ाने के लिए उसे बाहर ढकेल दिया होगा और किसी कुत्ते ने काटकर खा लिया होगा। बस ! किस्सा खतम।

बिजली नहीं, ऐसा नहीं हो सकता बाबू जी ! उसे मैंने भगवान के भरोसे छोड़ दिया था। भगवान जरूर ही उसकी रक्षा करता होगा।

तोता राम हां ! हां !! क्या नहीं भगवत का काम ही ये है कि हम जैसे भिखमंगे, बच्चों का पैदा करके फेंक दिया करें और वह भगवत उनको पाला-पोसा करे।

छोटा — अजी ! बाबू साहब ! आप तो अभी यहीं बैठे हुए हैं।

सूरदास — कौन है छोटे ?

छोटा — यही बाबू-साहब है दादा ! जिसने हमारी तस्वीर निकाली थी न ? वह ।

सूरदास — किसी काम से हों तो अभी तक बैठे हुए होंगे छोटे ! चल, गुदड़ी बिछा, थोड़ी देर लेट लें।

पत्रकार — भगवान की भी, गजब की लीला होती है। जैसे आपने कहा, वैसे ही आपके बच्चे की भगवान ने रक्षा की थी। आपका बच्चा सही सलामत है ।

बिजली — कहां ? कहां है मेरा बच्चा, बाबू-साहब !

पत्रकार — आप घबराइए नहीं, आपका बच्चा यही है।

तोतराम — अरी पगली ! अखबार बाबू ! हमारा मजाक उड़ा रहे हैं।

पत्रकार — सूरदास बाबा ! तुम कह रहे थे कि यह छोटा, तुमको कहीं मिला था ?

सूरदास — (घबराता हुआ) क्या, क्या बाबू ! यह छोटा मुझे कहीं नहीं मिला था। मेरा नाती है।

पत्रकार — सुनो सूरदास ! मैं तुम्हें दस रुपये दूंगा, ये लो, लेकिन सच-सच बोलो, इसमें तुम्हारा नुकसान कुछ न होगा। मेरी बात मानो ।

सूरदास — पिछले बारह साल वाले कृष्णा पुष्कर का पहला दिन था बाबू ! इसी माता कनक-दुर्गा के मंदिर की सीढ़ियों के पास मिला था।

पत्रकार — कैसे मिला था ? जरा ब्योरे से बताओ न। लो। ये रुपये लो, अब बताओ ।

सूरदास — इस बच्चे को कोई धनी सेठ साहूकार की मोटर में लिटा कर चली गयी थी। मोटर-वालों ने इसे मेरे पास छोड़ दिया था। उस दिन, मां के दरसन करने वाले यात्री भी बहुत ही कम थे। मैंने इसे अपनी गोद में ले लिया था, इसे पाला-पोसा, बड़ा किया बाबू-साहब !

पत्रकार सुन रही हैं आप ? यही छोटा आप का लड़का है।

तोताराम वाह रे बदमाश अंधे ! तूने इतने दिनों तक कैसी-कैसी कहानियां गढ़ कर सुनाई थी हमें। यह मेरा बच्चा है, इसी वजह से इसे देखते ही मेरा दिल उछल पड़ता था और खुशी से भर जाता था। जब इससे बातें करने लगता था, घंटों बात करने का दिल चाहता था। जब छोटा पैसा कमा-कमा कर इस अंधे को दे देता था तो, दिल कहता था कि यह तेरा ही पैसा है—यह तेरा ही पैसा है।

बिजली बाबू-साहब ! मैं कभी आपको भूल नहीं सकती। जिन्दगी भर आपकी याद करती रहूंगी। खोए हुए मेरे बच्चे को आपने फिर मुझे दिया है ! आप मेरे लिए भगवान है।

पत्रकार वाह रे वाह ! आपने मुझे भगवान ही बना डाला है। मेरे इस छोटे से काम के लिए भगवान का दर्जा आपने मुझ से नीचा कर दिया। वाह ! खूब है ! अच्छा ! अब जाइए अपने बच्चे की देख भाल कीजिए।

छोटा (अचरज और दुःख भरी आवाज में) तो क्या यही बिजली मेरी मां है ?

सूरदास हां ! छोटे ! वह अखबार वाले बाबू यही तो कहते हैं (निराशा से)

बिजली (नजदीक से और बड़ी दीनता से) सच है छोटे ! मैं ही तेरी मां हूं।

तोताराम मैं ही तेरा बाप हूं छोटे ! (जोर से) अरे अंधे ! सालों तक मेरे लड़के ने सैकड़ों रुपये कमा कर तुझे दिये हैं। सब रुपये तूने गांठ में बांध कर रखे हैं। ला, निकाल सभी रुपये।

सूरदास वो रुपये मेरे हैं तेरे कैसे हो सकते हैं ?

तोताराम अरे ! कैसे हो सकते के बच्चे ! पहले रुपये यहां उगल। पीछे बात कर। नहीं तो ।

सूरदास नहीं तो क्या करेगा रे ! आज भी छोटा मेरा ही लड़का है। आज तक उसे मैंने पाला-पोसा है। तुझे रुपये दे दूंगा तो फिर मेरा क्या रखा है ?

तोताराम   तूने छोटे को पाला-पोसा है, इसलिए मेरे और मेरे लडके के सारे रुपये उडा ले जायेगा ? कितना बडा लालची है रे तू अधे !

बिजली   अरे मामा ! जाने दो रुपये भाड मे। हमारा खोया बच्चा, फिर हमे मिल गया है। यही बडे भाग हैं।—छोटे ! मेरे बच्चे ! मेरे पास आ जा एक बार अपना मुह चूमन दे बच्चे ! आ ! बेटे ! मेरी छाती से लग जा !

तोताराम   ' आ जा ! छोटे ! हमी तेरे मा-बाप है।

छोटा   नही, तुम मेरे मा-बाप नही, दादा ! तुम बोलते क्या नही, कह दो न, ये मेरे मा-बाप नही ह। क्यो दादा ! यह बिजली मेरी मा है ? बोलो दादा !

सूरदास   (चुप रहता है)

बिजली   छोटे ! देखता है न ? दादा कुछ नही बोल रहा है। मैं ही तेरी मा हू। एक बार कह रे बेटा ! मा !

छोटा   नही, मैं नही कहूगा, तू मेरी मा नही हो सकती। तू बिजली है, तू बिजली है !

बिजली   नही बच्चे ! इतने साल, हम और तू, भूल मे रहे। अगर तू पतियाता नही, तो बाबू-साहब से पूछ ले न ?

छोटा   (दीनता-से) क्यो बाबू साहब ! यह बिजली मेरी मा है ? कह दीजिए बाबू-साहब ! यह मेरी मा नही है।

पत्रकार   नही बच्चे ! यही तेरी मा है !

छोटा   (रोता हुआ) तो साहब ! क्या अब मैं मदरसे मे भरती न होऊगा ? अब क्या मैं नही पढ पाऊगा।

पत्रकार   रो नही, छोटे !

छोटा   तो बाबु साहब ! मुझे जिन्दगी भर यही बूट-पॉलिस करते हुए जीना होगा ? (रो पडता है)

पत्रकार   रो नही, छोटे ! रो नही।

छोटा (आवाज बढ़ाकर—धीरज से) मुझे पढ़ना ही होगा बाबू साहब ! मैं यह बूट पॉलिस अब कभी नहीं करूंगा । कभी नहीं । मैं जा रहा हूँ ।

बिजली छोटे ! जा नहीं बेटा ! कहा जा रहा है मेरे बच्चे ! मामा ! जल्दी करो न ? छोटा कही चला जा रहा है, उसे लौटा लाओ न ?

(छोटे को पकड़ने तोताराम दौड़ता है, बिजली दौड़ती है। पत्रकार भी दौड़ता है । छोटा उनके हाथ मे नहीं आता। सड़क को पार करते समय छोटे से लॉरी टकराती है और छोटा मर जाता है। हेड पुलिस सीटी बजाता हुआ आता है)

बिजली हाय ! हाय !! हेड-बाबू ! मेरा बच्चा चला गया । मेरा छोटा चला गया (रोती है)

हेड पुलिस बिजली ! रोती क्यों है री ! अब रोने धोने से कुछ न होगा। मैंने सीटी बजाई थी। लेकिन वह साला लारी वाला अधा धुध मोटर चलाता दौड गया। लेकिन मुझ से बचकर कहा जायेगा बदमाश ! उस मैं कल शाम तक पकड कर जेल मे ठूस दूगा ।

सूरदास हाय ! छोटे ! तू अपने अधे दादा को भी छोड कर चला गया। हाय ! मेरा सहारा चला गया (रोता है) ।

हेड पुलिस रोने से क्या होगा सूरदास ! अब दिल को समझा। जब वह ड्राइवर साला पकडा जायेगा तब लॉरी के मालिक से तुझे कुछ रुपये दिलवा दूगा । अब चुप हो जा ।

सूरदास आपके पैरों पडू हेड बाबू ! इस अधे को कुछ दिलवा दीजिए।

तोताराम (अब तक जो चुप रहा रुपयों की बात सुनते ही रोने लगा) हाय रे मेरे बच्चे ! तू हमे छोड कर चला गया। भगवत ने भी हमारी ओर से अपना मुह फेर लिया । हेड बाबू ! जब तक आपको यह मालूम हो कि छोटा मेरा ही बच्चा है तब तक भगवत उसे उठा ले गया । हेड-बाबू ! छोटा

मेरा ही लड़का है। मेरी बात सच है हैड बाबू! आप इस अखबार-बाबू से पूछ लीजिए, वो सच बतायेंगे। हैड-बाबू! आपके पैरा पड़ू, वो रुपये जो दिलाने हैं, मुझ-बाप को दिला दीजिए, आपको बड़ा पुन मिलेगा।

बिजली (दुख और दद से भरी आवाज में) अखबार-बाबू! अब आप लिखिए कहानी! अपनी बेटी के मर जाने पर, पराये बेटे को अपने हाथ की लकड़ी बनाने वाले, इस बूढ़े अंधे सूरदास की कहानी लिखिए। मोटर पर सवार होने के सपन देख-देखकर, मोटर के ही नीचे आने वाले इस छोटे की, खून से लथ-पथ पडी हुई इस लाश की कहानी लिखिए। अपने बेटे की मौत का भी दुख न जानने वाले की, अपने बेटे की लाश पर फेंके जाने वाले रुपयो के लालच मे अपनी जीभ का ओठा पर फेर लेने वाले इस मेर बेदिल मर्द की कहानी लिखिए। और और अखबार-बाबू!

अपनी कोख के जने बच्चे का, लगडा या लूला न होकर कहीं-न-कही जीने के लिए, कही भी जिन्दा रखने के लिए, दिल को पत्थर बना कर, अपने बच्चे को रास्ते पर छोड देने वाली इस मा की कहानी लिखिए। लेकिन आखिर, अखबार-बाबू! मेरी एक सुन लीजिए। मेरी कहानी कहा जा कर खत्म होगी? आप ही बताइए बाबू! सुनहले सपने देख-देखकर हमेशा के लिए आख मूदने वाले अपने बच्चे के पास जाऊ? या बेजान ठूठ की तरह, इस बेदर्द, बेशम मर्द के साथ गिरिस्ती चलाऊ? कहिए अखबार-बाबू! मेरी कहानी कहा खत्म होगी? मेरी अधूरी कहानी को कहा पार लगाइगा बाबू जी! बताइए अखबार-बाबू! बताइएगा!

(फफक-फफक कर रोती है)। □

मूल तेलुगु टी० पतजलि शास्त्री
एव
वी० एस० कामेश्वर राव
रूपांतरकार आर० नरसिंह मूर्ति

शामियाने के नीचे

उदघोषक यह आकाशवाणी है। नाटकों के अखिल भारतीय कार्यक्रम में आज प्रस्तुत है मलयालम भाषा के प्रसिद्ध लेखक श्री सदानन्द पुतियारा द्वारा लिखे रेडियो नाटक कूनराधिन्नु कीशिल का यह हिन्दी रूपान्तर—शामियाने के नीचे।

(फेड अप सरकस का संगीत। होल्ड। फेड अण्डर।)

दामु जनाब, साहेबान, हुजूरे आजमात

उदघोषक अरे वो जाकर के बच्चे! यह हुजूरे आजमात क्या होता है?

दामु हुजूरे आजमात? वाह यह जबान मुर्गमुसल्लम है। जैसे कायदे आजम वैसे हुजूरे आजम। और हुजूरे आजम से बहुवचन हुजूरे आजमात जैसे कागज से कागजात

उदघोषक अबे जा बे जोकरजात

दामु ए मिस्टर मैं वेट लिफ्टर भी हूँ—साढ़े अठारह पाउण्ड का रेकार्ड तोड़ा हुआ है। एल० पी० रेकार्ड तो पचीसों तोड़ सकता हूँ समझे

उदघोषक ठीक है, ठीक है एनाउन्समेन्ट करने दे

दामु मैं करूंगा एनाउन्समेन्ट। भाइयो माताओ, दादियो, नानियो, साहबो, जटिलमैनो अब आपके सामने इस सरकस की शान फ्लाइंग मेल—अरे बाप रे फ्लाइंग क्वीन बेबी सुजाता झूले पर उड़ने का करतब दिखायेंगी! बेबी सुजाता (लोगों की हंसी) ऐं आप लोग हंसने क्यों लगे? अरे, मगर बेबी सुजाता कहां है

उदघोषक अबे ओ कद्दू

दामु	यह नही दामु—मगर सुजाता के बजाय यह क्या आ गया
उद्घोषक	लेडीज एण्ड जैंटिलमैन—हमारे इस ग्रैट क्लाउन (जोकर) की बातो पर ध्यान न दीजिए। देखिए आपके सामने पेश है अफ्रीका के जगलात से लाया गया वनमानुष चित्र-विच जो साइकिल चला रहा है और साइकिल चलाते हुए ही सिगरेट सुलगाकर पीता है। (तालियां) मिस्टर क्लाउन अपने पिताजी को माचिस दो जरा !
दामु	माचिस ला अपने उद्घोषक के दादा जी ! (हसी फिर तालियां)
उद्घोषक	नक्स्ट आइटेम, लेडीज एण्ड जैंटिलमन (हसी, फिर तालियां) इज अवर फ्लाइग क्वीन—बेबी सुजाता आन ट्रपीज (बैंड पर नई धुन। तालियां)
उद्घोषक	अबे जोकर तू कहा चला—सीढी पर क्यो चढ़ रहा है ?
दामु	(थोडी दूर से) अगर वो फ्लाइग क्वीन है तो मैं हू फ्लाइग किग—मै भी उडकर दिखाता हू—अरे मर गया रे बचाओ—(लोगों की हसी)
उद्घोषक	बेबी सुजाता के साथ जाकर मिया का यह था फ्लाइग डाउन। गिर गये—उठ जाओ उठ जाओ बहादुर बच्चे चोट तो नही आई (दामु दूर से रोता है) अरे रे चुप हो जाओ देखो चीटी मर गई (लोगों की हसी। तालियां)
दामु	रोते रोन भाइयो, बहनो, दादाओ, दादियो— (लोगों की हसी। तालियां। सगीत अप। आउट। क्रासफेड। दामु की अकेली आवाज।)
दामु	दादाओ, भाइयो, बच्चो बच्चियो—आप हसते है—ठीक है। हस लीजिए। (लगभग स्वगत) मेरी यह फूली हुई लाल नाक यह ढीली ढाली मजाकिया पोशाक—ठीक है—हस लीजिए

(हाथी की चिंघाड़) कौन अरे ! तू अकबर, हाथी होकर तू हंस रहा है ? तू भी हंस रहा है ? सरकस के तम्बू के नीचे लोग मुझ पर हंसते हैं और यहां तू हंस रहा है

देवकी (फेड इन) दामु–दामु, क्या हुआ तुम्हें ?

दामु क्यो ? ओह ! देवकी बहन, आओ

देवकी क्या हुआ है तुम्हें, हाथी से बातें कर रहे हो ? (हंसती है, हाथी चिंघाड़ता है) ओहो ! लगता है तुम्हारी बात का जवाब दे रहा है।

दामु जवाब ? हां ! पता नहीं क्यो लगता है, हम दोनो एक दूसरे को समझते है। यह हाथी, अकबर, मेरा सही साथी है शायद।

देवकी दामु आज बहुत उदास लग रहे हो ? आखें जैसे भर-भर आ रही हैं।

दामु अ ? हां ! यह हाथी जैसे मेरी याद है—(हाथी चिंघाड़ता है। देवकी हंसती है)

देवकी तुम्हारी याद काफी मोटी लगती है।

दामु हंसने की बात नही है देवकी ! सच कह रहा हूं। इस हाथी के चेहरे पर सफेद दाग देख रही हो ? इन सफेद दागो को देखकर न जाने क्या क्या याद आ जाता है ?

देवकी एक बात पूछूं ?

दामु पूछो !

देवकी यह वही दामु भैया है, जिसके रिंग में उतरते ही लोगों का हंसते हंसते बुरा हाल हो जाता है। तुमको देखकर उस दिन मैं ट्रैपीज से गिरते गिरते बची थी।

दामु मैं भी गिरने से बचने की कोशिश कर रहा हूं देवकी ! मगर पता नहीं कब तक यह मुमकिन होगा।

देवकी तुम अब शादी कर लो। नेपाल में जो लड़की मिली थी न, उससे कहो तो बात करूं।

दामु मेरी हंसी उडाना चाहती हो ? मेरे कद की हंसी ? मेरे बौनेपन की हंसी ? यह कह कर कि मैं मुश्किल से उस औरत के घुटने तक ऊंचा हूं। (हाथी की चिंघाड़)।

देवकी दामु, तुमने मुझे गलत समझा। मैं तो तुम्हें हंसाने के लिए

दामु कोई बात नहीं देवकी ! इसीलिए म अपने दर्द का अकेला साथी इस हाथी को देखता हूं। (दर्द भरी हंसी) कैसा मजाक है—मुझ बौने के दर्द का गवाह यह विशाल हाथी (दर्द भरी हंसी)

देवकी मुझे माफ नहीं करोगे दामु ? भैया तुम क्या समझते हो, मैं बड़ी खुश हूं ?

दामु तुम ? तुम्हें क्या कष्ट है ?

देवकी मुझे ? एक औरत को क्या चाहिए दामु ? (वक्फा) तुम नहीं जानते दामु, मुझे अब शायद कभी भी वह प्यार नसीब न हो, जो एक औरत की जिन्दगी है। जहां यह *शामियाना मेरा हौसला है, वहां यह* मेरे अरमानों का एक मकबरा भी है।

दामु ऐसा मत कहो देवकी

देवकी शायद तुम नहीं जानते, एक औरत की जिन्दगी बिना पुरुष के अधूरी होती है। लेकिन पुरुष—इसी शामियाने की जिन्दगी ने मुझे पुरुष जाति से एक नफ़रत दी है— समूची पुरुष जाति से एक भयानक नफ़रत

दामु क्या कह रही हो ?

देवकी सच कह रही हूं। अभी ज्यादा दिन तो नहीं हुए हमें इस शहर में आये हुए, मगर लगता है जैसे एक पहाड़ जैसी जिन्दगी ढो डाला है, इन्हीं चन्द दिनों में।

और जिंदगी ढाकर जहां पहुंची हूं, वह है नफरत का एक अंधेरा कुआं—उस वी०आई०पी० को जानते हो जो सरकस के इनाग्युलर फंक्शन में गवर्नर के साथ बैठा था ? सुना है वह यहां का लखपति है। जाने कैसे उसे देखकर जिंदगी में मैं पहली बार अपने साथी की तस्वीर देखने लगी थी

दामू (सीटी बजाकर) ओहो—ये घपला हुआ है ! यानी लव-प्रेम

देवकी उस शब्द को अपमानित न करो दामु। अभी परसों मैंने उसे दुबारा देखा दर्शकों के बीच। उस रात जाने क्या हुआ देर तक नींद नहीं आयी। सच कहती हूं दामु, जाने कितने सपने बुन डाले और तब जाने कब नींद आ गयी। नींद में मैं अचानक चौंकी—मेरे तंबू में बिल्कुल अंधेरा था, लेकिन एक साया सा दिखाई पड़ रहा था

(फ़्लैश बैक। फेड अप। रात की ध्वनियां)

देवकी क—कौन है—चौकीदार—? (सहसा मुंह दबाए जाने का स्वर)

वी०आई०पी० खबरदार चीखना नहीं, मैं हूं

देवकी ओह, तुम—चौकी—(मुंह दबाया जाता है)

वी०आई०पी० कह रहा हूं खबरदार चीखना नहीं वरना यह चाकू मार दूंगा ! मुझे अफसोस है कि तुम्हारे लिए इस तरह आना पड़ा। चीखने का फायदा नहीं है, क्योंकि सरकस के संचालक वगैरह सब शराब में बेहोश पड़े हैं। अरे ! उधर पीछे क्यों हट रही हो ? इधर बैठो मेरे पास। आओ—

देवकी आप—आप चले जाइए—प्लीज

वी०आई०पी० ऐसे मत कहो डियर, उस दिन गवर्नर साहब के साथ आया, तो तुम्हें देखकर मैंने निर्णय कर लिया था कि तुम्हारे बिना अब नहीं रह सकता।

देवकी दिन के वक्त क्या नहीं मिले ?

वी०आई०पी० क्योंकि, जो मैं चाहता हूँ वह रात में ही पा सकता था। डर क्या रही हो ? तुम तो शेर के पिंजड़े में भी निडर हो कर चली जाती हो ? इधर आओ न, देखो मैं इस शहर का सबसे अमीर आदमी हूँ चाहो तो सोने से तुलवा दूंगा तुम्हें—आओ, बैठो

देवकी आप कल शो में आये थे न ?

वी०आई०पी० हां ! हां ! आया था। तुमने देखा था ?

देवकी देखा था। इनाग्यूरेशन में दिन भी देखा था।

वी०आई०पी० ओह ! तो तुम,—सुनो इधर आओ

देवकी लेकिन—पहरेदार अगर देख लेगा

वी०आई०पी० ओह ! उसकी चिन्ता मत करो। वह बोतल लेकर कहीं पड़ा होगा। इधर आओ न

देवकी सुनिए, आपमें जरा-सा भी धीरज नहीं है !

वी०आई०पी० (भावाविष्ट) देवकी

देवकी ठहरिए न एक मिनट ! बदन पसीना-पसीना हो रहा है। मैं जरा गाऊन बदल लूं

वी०आई०पी० देवकी—तुम—बस तुम इधर आ जाओ न

देवकी आप एक मिनट इन्तजार नहीं कर सकते ?

वी०आई०पी० आह ! एक मिनट क्या सारी उम्र इन्तजार कर सकता हूं—मगर तुम इधर आओ ! गाउन भूल जाओ !

देवकी ठीक है भूल जाऊंगी मगर दो घूंट व्हिस्की

वी०आई०पी० ओह देवकी ! मैं—मैं—सुनो दरअसल मुझे मालूम नहीं था

देवकी नहीं ! मेरे पास एक शीशी है अटैची में। ठहरिए निकालती हूं

(फेड आउट। फेड इन) हां, मिस्टर वी० आई० पी० नाऊ गेट अप

वी०आई०पी० ऐं

देवकी ऐं नहीं गेट अप—उठो और कुत्ते की तरह बाहर चले जाओ वरना देखते हो यह क्या है ? गेट अप

वी०आई०पी० देवकी—ये—ब दूक—देवकी

देवकी गेट अप—वरना मैं गोली चलाती हू—उठ रहे हो या भेजा चौथडा कर दू

वी०आई०पी० देवकी आज गोली चला ही दो—गोली खाकर मर जाऊ तो (गोली की आवाज) देवकी जाता हू—जाता हू—मार देख लूगा तुम्हें, तुम्हें देख लूगा (फेड आउट)

उदघोषक (फेड इन) देवकी, देवकी—चार्ज दार—क्या हुआ वहा—देवकी—(पास आकर) अरे देवकी यह ब दूक—तुमने गोली चलाई ?

(देवकी की सिसकिया । सगीत । फ्लश बक समाप्त । क्रास फेड । सिसकिया)

दामु देवकी मुझे नहीं मालूम था

देवकी हा दामु ! किसी को नहीं मालूम । सिर्फ मुझे मालूम है, या हमारे एनाउन्सर को या फिर सचालक साहब को-चलो छोडो ! आओ चाय पिए (हाथी की चिघाड)

दामु फिर वही आवाज । देवकी ध्यान दो—इसकी आवाज पर ध्यान दो ! इस हाथी की आवाज म भी दद नहीं है ?—(पॉज) पता नहीं क्यो अक्बर के माथे पे ये सफेद दाग देखता हू, तो मुझे अपने बाप की याद आ जाती है

देवकी क्या उन्हें

दामु हा देवकी ! उनके शरीर पर भी दाग थे । ऐसे ही । तब शायद मैं पाच छ बरस का था, जब मेरे बाप के चेहरे पर ऐसे दाग दिखाई दिये थे । थोडे दिना बाद वे फूटने लगे थे और लोगो ने अचानक, उन्हें छूना तक बन्द कर दिया था—वह घाव सारे शरीर म फैल गये । घरवाले

ने उन्हें एक कोठरी मे बन्द कर दिया था। भार-तो और मेरी मा भी उनके करीब नही जाती थी। उस अंधेरी कोठरी मे मैंने उन्हें तडपते देखा था। जितना बन पडा था, उतनी मैं अपने नन्हें हाथो, उनकी देखभाल करता था। एक दिन—वही, उसी अंधेरे मे, उन्होंने दम तोड दिया था और जब मैं उस अंधेरी कोठरी से आखिरी बार बाहर आया तो छ बरस का बुजुर्ग हो चुका था। उसके बाद मैं कभी बढा नही। उतना-का-उतना ही रह गया। **(हाथी की चिंघाड)** लोगो ने समझा कि बाप की छूत मुझे भी लग गई होगी इसलिए, उन्होंने मुझे भी निकाल दिया। आज इस हाथी को देखता हू, तो लगता है, इसे जरूर कुछ-न-कुछ हो गया है।

देवकी आज डॉक्टर नही आया जाच करने ?

दामू डॉक्टर उसका शरीर देख सकता है, उसकी आत्मा तो नही देख सकता।

देवकी सही है दामू ! अच्छा ! चलू। प्रेक्टिस करनी होगी अभी वरना मास्टर दादा नाराज होगे—जाकर डॉक्टर को भी भेजूगी

(फेड आउट)

दामू (स्वगत) हा प्रैक्टिस—रोते हुए भी दूसरो को हसाने की प्रैक्टिस—मरते हुए भी दूसरे की जिन्दगी ढोने की प्रैक्टिस—सरकस के इस तबू के नीचे अपने आपको भूल कर जीने की हर पल प्रैक्टिस

(अतराल सगीत)

सचालक क्यो, तुम लोग सब चुप क्यो हो ? देखो आज पाच रोज हो गये हैं हमे इस शहर मे आये और अभी हम इस बात का अदाजा भी नही हो सका है कि हमारी आमदनी ठीक हो पायेगी या नही।

इस्माइल होगी क्यो नही ? एक तो शहर सरकस का शौकीन लगता है और दूसरे हमारे कई आइटेम बेहतरीन हैं

संचालक   आइटेम तो अच्छे हैं मगर

रिंग मास्टर   आइटेम बेहतरीन क्या बेजोड़ हैं। इस्माइल जितना वजन उठा लेता है वह आज तक कम ही लोगों ने देखा होगा। खुद गवर्नर साहब तक इस्माइल की वेट लिफ्टिंग की तारीफ कर रहे थे।

संचालक   आओ भई आओ दामू! बड़ी देर कर दी—अरे हां सुनो! तुम गिर कैसे गये थे? शो में पहले तो कभी ऐसा हुआ नहीं।

रिंग मास्टर   तुम मजाक कर रहे थे क्या दामू?

दामू   ओहो अर्ज, मजाक वजाक क्या करता! अभी तक रिंग में जाने से पहले दो एक घूंट दारू शारू हो जाती थी, तो बदन जरा चुस्त रहता है

संचालक   दामू! दारू का नाम मत लेना अब

दामू   जी बिल्कुल नहीं लूंगा! तोबा कर ली! मगर जनाब अचानक यह तोबा क्या कर ली गई? आप तो जनाब वगैर इस लाल परी के एक मिनट नहीं रह सकते थे।

संचालक   हां। यह सच है (मगर तोबा कर ली), देखोगे मेरी यह अलमारी, लो देख लो।—इसके हर खाने में दुनिया की बेहतरीन शराबें रहा करती थीं, याद है?

दामू   जी हां—मगर क्या एकदम सारी पी गये आप?

संचालक   तोड़ दी। सारी बोतलें तोड़ दीं। आज बताता हूं तुम लोगों को। तुमने एक आदमी को देखा था, जो इनाग्यूरल फंक्शन में गवर्नर के पास बैठा था? परसों रात उसने मुझे अपनी कोठी पर बुलाया था

(फ्लैश बैक)

बी०आई०पी० (हंसते हुए) खूब बहुत खूब! आप बहुत इंटरेस्टिंग बातें करते हैं। लीजिए एक पेग और—इसे टेस्ट करिए बढ़िया चीज है—।

सचालक अभी क्या बढिया ! मेरे पास दुनिया की बेहतरीन शराबो का भडार है

बी०आई०पी० जरूर होगा। जरूर होगा।

सचालक नही। होगा नही है। कहिए है।

बी०आई०पी० है। जनाब है। लीजिए एक पेग और—अच्छी तो नही है, मगर यह तेज है।

सचालक तेज। गुड ! वो शराब क्या जो तेज न हो। वैसे जनाब दो पैग के बाद हर शराब, शराब हो जाती है

बी०आई०पी० बिल्कुल ठीक।

सचालक जब मैं रगून मे था (बीच में ही) नही अब नहीं पिऊगा

बी०आई०पी० मेरे लिए प्लीज, देखिए निराश मत कीजिए-प्लीज-इन्कार करेगे तो दिल टूट जायेगा !

सचालक नही, नही, नही। दिल नही टूटना-ऐ-दिल नही टूटना। लाओ। तुम भी क्या कहोगे। भर दो। भर दो गिलास- (घडी में दो बजते हैं) अरे दो बज गये ?

बी०आई०पी० दिन के। अभी दिन के दो बजे है।

सचालक झूठ। तुम झूठ बोल रहे हो। नही अब नहीं पिऊगा— बहुत रात हो गई।

बी०आई०पी० फिर वही दिल तोडने वाली बात।

सचालक दिल ? ओहो ! चला दिल नही तोडूगा। दो। ओह ! खासी तेज है। तो जनाब दो बज गये अब मैं चलूगा—

बी०आई०पी० अरे रे ! कहा जायेंगे ?-अभी तो बोतल भी खाली नही हुई है।

सचालक बोतल ? -हा-नही-हा-खाली ? हा-भई मुझे नीद आ रही है, मुझ-मैं-यही सोता हू-आह- ! (बी०आई०पी० की हसी !) (फ्लैश बैक समाप्त)

संचालक जिन्दगी मे पहली बार मुझे उस हसी का मतलब तो समझ म आया, लेकिन मै कुछ भी कर पाने की स्थिति मे नही था। दूसरे दिन—हमारे इसी प्रोग्राम-एनाउन्सर ने आकर मुझे एक घटना बताई और उस घटना के बाद —उसी के बाद मैंने एक-एक करके अपनी बोतलें तोड दी। मैं–मैं इस सरकस का संचालक, इस विशाल परिवार का सबसे जिम्मेदार सदस्य–मैं अपनी जिम्मेदारी खुद नही निभा पाया। इसीलिए कहा। वैसे दामु, मुझे अच्छा नही लगा कि झूले से गिर पडने की अपनी कमजोरी तुमने शराब से जोड दी। (हाथी की चिंघाड़)

दामु मैं मजाक कर रहा था सर! सच यह है कि दुनिया भर को हसाने वाला मै पता नही कैसे उस वक्त एक मिनट के लिए उदास हो गया था—रिंग के पीछे खडे ?–अरे हाँ साहब! म अकबर के बारे मे कुछ कहना चाहता था–मुझे लगता है

संचालक ठीक है। पहले मेरी बात सुन लो। शराब के बारे में मेरे नए कायदे के बारे मे कई लोगो न एतराज उठाये हैं। मगर मै अपना फसला बदलूगा नही। यह सरकस कपनी एक परिवार है। मैं आप सबका बडा हू। लकिन याद रखिए यह परिवार वैसे ही चलेगा जैसे मैं कहता हू!–टूटे या रहे जो कहूगा वही होगा

(फेड आउट)

रिंग मास्टर (अनन्त) चले गये? (वॉइस/हसी)।

दामु क्या, आप हस क्यो रहे है?

अनन्त टूटे या रहे (हसी) यह परिवार (हसी) यह परिवार वैसे चलेगा जैसे मैं कहता हू (हसी) टूटे या रहे–दामु जानते हो, आज इन थोडे से लफ्जो न अचानक मुझे उठाया और बचपन की पथरीली जमीन पर ले जाकर निममता से पटक दिया टूटे या रहे

(फ्लैश बैक)

अनन्त — यही कि दुनिया भर का उधार खाते हैं और जाने किन किन औरतों के पास जाते हैं

मा — अरे मैं मर क्यों नहीं गई

पिता — तेरी इतनी मजाल। (पीटता है) निकल जा मेरे घर से!

(मा की चीख)

अनन्त — निकल जाऊंगा। आपके कहे बगैर निकल जाऊंगा।

पिता — मैं तेरी अंतड़िया निकाल दूंगा। तूने समझा क्या है? निकल जा यहां से, अभी निकल जा!

अनन्त — देख ले री मा—यही है मेरा बाप! फिर मत कहना। घर छोड़ने को कहता है। समझता है भूखा मरूंगा। अरे इससे अच्छा कमा के दिखाऊंगा!

पिता — हा, हा तो अब जाता है कि नहीं

मा — अरे तू ही मान जा रे अनन्त! मैं क्या करूं ?

अनन्त — (दूर) जा रहा हू। अब लौट के नहीं आऊंगा।

मा — अरे अनन्त—अनन्त

पिता — जाने दे—।

अनन्त — (दूर से) मा

मा — अनन्त—मेरे बेटे

(फ्लश बैक समाप्त)

अनन्त — वही अनन्त हू न मैं—आज बरसों के बाद फिर वही शब्द सुने—टूट या रहे (हंसी शेरों की आवाज)

इस्माइल — बीते हुए को भूल जाओ मास्टर, आने वाले दिन को देखो! किस फिक्र में पड़े हो।

रि०मा०अनन्त — पता नहीं लगता है जब तक जिऊंगा तब तक यह दर्द चलता रहेगा। मा की याद नहीं भूलती।

इस्माइल — न भूलने में भी क्या फायदा दोस्त। (शेरों की आवाज)

अनन्त हा, हो सकता है। जानते हो इस्माइल कांगो के जंगलों से लाये गये खूखार शेरो को इन्ही हाथो के इशारे पर नचाया है, लेकिन लगता है मेरी जिन्दगी भी कोई ऐसा ही एक जानवर है, जिसे कोई नचा रहा है एक कोड़ा दिखाता है और कहता है नाचो। मै नाचता हूँ। दर्द से छटपटाकर नाचता हूं। पिछले सात बरस से इस सरकस के शामियाने के नीचे मैं—रिंग मास्टर अनन्त—खुद किसी जानवर की तरह जी रहा हूं—रिंग मास्टर अनन्त

(संगीत अन्तराल। मिक्स सरकस का भरा हुआ संगीत। सुपरइम्पोज।)

उद्घोषक ब्यूटी क्वीन देवकी—वी नाउ प्रेजेन्ट शी हू राइड्स ए टाइगर ब्यूटी क्वीन देवकी—(शेर की आवाज तालियां–मिक्स)

उद्घोषक कुमारी देवकी इस कम्पनी का चमकता सितारा है—खतरनाक अफ्रीकी शेर की पीठ पर सवार इस वनदेवी के करिश्मे आपको चकाचौंध कर देंगे

(शेर की आवाज। तालियां। संगीत अप। होल्ड। आउट।)

उद्घोषक (अपने आप से धीरे धीरे) कुमारी देवकी—वी नाउ प्रेजेन्ट शी हू राइड्स ए टाइगर

देवकी (फेड इन) अरे रघु—रघु

उद्घोषक ओह देवकी!

देवकी क्या हुआ अपने एनाउंसमेन्टस की प्रैक्टिस कर रहे थे?

उद्घोषक अं? हां! बैठो देवकी! प्रैक्टिस नही बल्कि—खैर छोड़ो।

देवकी सुनो रघु आज तुमने अपने एनाउंसमेंट मे कमाल कर दिया।

उद्घोषक तुम्हें अच्छा लगा?

देवकी अच्छा? बाप रे! इस तरह बढ़ा-चढ़ाकर मेरे बारे मे एनाउंसमेंट करोगे तो बाकी लड़कियां मुझे जिन्दा खा जायेंगी।

उद्घोषक मैंने कुछ गलत कहा था ? मैंने कहा था—शी इ राइड्स ए टाइगर—। मतलब जानती हो न ? इसके दो मतलब हुए एक तो वह लड़की जो शेर पर सवार होती है और दूसरा यह कि वह लड़की जो प्राणान्तक संकट से जूझती है। कहावत है जो शेर की सवारी करता है वह उस पर से उतर नहीं सकता।

देवकी (हंसती है) मगर म तो उतर आई। क्यों ? मगर सुनो आज तुम यह प्रोफेसरी जैसी भाषा क्यों बोल रहे हो ?

उद्घोषक म सिर्फ सच बोल रहा हू।

देवकी चलो मान लिया। मगर आगे से ऐसी एनाउन्समेंट मत करना भाई !

उद्घोषक क्यों ?

देवकी बस, कह दिया।

उद्घोषक देवकी ! बहुत दिनों से कुछ कहना चाहता था। काश कह पाता !

देवकी रघु !

उद्घोषक सच कह रहा हू देवकी। और जो कभी नहीं कह सका वह शायद अपनी एनाउन्समेंट में कहने की कोशिश करता हू—

देवकी रघु मुझे तुमसे ऐसी आशा नहीं थी ! (पॉज) मैं तुम्हारे इन शब्दों का मतलब नहीं समझती। इतनी मूर्ख नहीं हू।

उद्घोषक मुझे गलत मत समझो देवकी—मैं न जाने कब से मन में यह साध जुटाए था कि कभी तुम्हारे सामने मन को खोल सकू।

देवकी रघु तुम्हारा दिमाग खराब हो गया लगता है ?

उदघोषक हा ! जब जब तुम्हें देखा है, लगा है दिमाग खराब हो रहा है। मैं कैसा छटपटा रहा हू, तुम्हें नहीं मालूम। तुम्हारी ये आखें, यह चेहरा ये बाल

देवकी रघु होश म आओ ! अगर यही बात किसी दूसर न कही होती तो शायद मैंन थप्पड मार दिया होता।

उदघोषक देवकी !

देवकी मेरा नाम अब अपने मुह से मत लेना कभी।
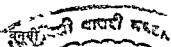
उदघोषक देवकी मुझे इतना गलत मत समझो। तुम नही जानती देवकी—पता नही जैस तुम्हें देखता हू, तो मरे बचपन का वह दिन याद आता है, जिस दिन मेरी बहन ने नहर म कूद कर आत्महत्या कर ली थी। बिल्कुल यही चेहरा, यही माथा, यही बाल, यही आखें—

देवकी ये क्या कह रहे हो रघु

उदघोषक सीता नाम था उसका। जिस दिन इस सरकस कम्पनी म भरती हुआ था, उसी दिन तुम से कहना चाहता था, लेकिन जान क्या कभी कह नही पाया। बिना मा-बाप के हम दानो जान कैसे जीवन बिताते थे एक छोटी सी झापडी मे। एक दिन अचानक रात को कुछ गुडे आ घुसे। वे सीता को उठा ले जाना चाहते थे। मै छोटा था—असहाय था, मगर सीता इतनी कायर नही थी। जाने कसे वह झोपडी से निकल भागी। अगले रोज उसकी लाश नहर मे मिली। उसने आत्महत्या कर ली थी। काश देवकी !—देवकी तुम वही सीता होती

देवकी रघु मुझे माफ कर दोगे !

उद्घोषक नही देवकी इसमे माफी की क्या बात ? हा अगर कही मै तुममे अपनी खोई सीता देख पाता, तो शायद जीवन का सब कुछ पा जाता

देवकी रघु—रघु मेरी ओर देखो—मैं सीता बनूगी—तुम्हारी बहन

उद्घोषक दवकी

देवकी नहीं सीता वही रघु

उदघोषक सीता—मरी सीता

(अतराल सगीत)

रि०मा०अनत अरे इस्माइल, इस्माइल

इस्माइल आया रिग—मास्टर (फेड इन) गुड मार्निंग रिग मास्टर !

अनत गुड मार्निंग ! सुनो कल शो के वक्त मैंने महसूस किया था कि तुम्हें वेटलिफ्टिग म कुछ तकलीफ हो रही है। तबीयत तो ठीक है न ?

इस्माइल बिल्कुल ठीक है।

अनत फिर बात क्या थी ?

इस्माइल बस अब क्या बताऊ—कुछ हो ही गया था।

अनत छुपा रहे हो कुछ ?

इस्माइल बात ये है कि मन ठीक नही था।

अनत तभी। मैं जान गया था कि कोई न कोई बात जरूर है। क्या था ? कोई पैसे की तगी ?

इस्माइल नही रिंग मास्टर पैसे की तगी का सवाल ही नही उठता।

अनत फिर ?

इस्माइल एक खत।

अनत खत ? वाह मियां फस गये न चक्कर म। किस परी ने लिखा था खत ?

इस्माइल नही वैसी कोई बात नही है। लो पढ लो मास्टर ! खुद ही पढ लो।

(कागज की खडक । पॉज)

अनत ओह, तो इसमें परेशान होने की क्या बात ?

इस्माइल है।

अनन्त — समझ में नहीं आता। खत में तो किसी की तबियत के बारे में भी कोई ऐसी-वैसी बात नहीं है।

इस्माइल — आखिरी अल्फाज पढ़े

अनन्त — ओह, वो ? अमा वो तो खुशी की बात है । एक बच्चे के बाप बनने वाले हो इसमें गमगीन होने की क्या बात है ?

इस्माइल — है। मास्टर है!

अनन्त — क्या मतलब ? क्या तुम बीवी के चरित्र पर कोई सन्देह—?

इस्माइल — या खुदा, बिल्कुल नही, कतई नही!

अनन्त — फिर ?

इस्माइल — यह खुशकिस्मती नही बदकिस्मती है कि मै एक और बच्चे का बाप बन रहा हू।

अनन्त — क्या ?

इस्माइल — रिंग-मास्टर। उसने तीसरे बच्चे को जन्म दिया तो डॉक्टर ने मुझसे कहा था कि उसकी जान बचाना मुश्किल हो जायेगा।

अनन्त — डाक्टर की सलाह क्या नही लेते ?

इस्माइल — हमारे घरवाले इसकी इजाजत नही देते । बीवी के घर के लोग इस मामले मे बडे पुराने ख्यालात के है। उसे तो वे लोग डाक्टर के पास भी लें जाने नही देते थे। पिछली बार जब वह मारे दर्द के तडपने लगी तब कहीं जाकर डाक्टर बुला लाने की हामी भरी थी।

अनन्त — तुम ठहरे देश-विदेश घूमने वाले शख्स। तुम पहले से ही इस मुसीबत को टालने का कदम उठा सकते थे। इसका तो अब तरीका भी सभी को पता है।

इस्माइल — मैंने इस पर गौर नही किया भाई! तबू के तले बस एक ही ख्याल मेरे सर पर सवार रहता था—वजन और वजन और वजन—ज्यादा से ज्यादा वजन

अनन्त — घबराओ नहीं इस्माइल !

इस्माइल — इस मुसीबत को मैं टालना चाहता था और इसीलिए छुट्टी मिलने पर भी मैं घर नहीं जाता था । आखिर चार महीने पहले उसका एक खत आया । उसने लिखा था—जरूर तुम्हारी कोई रखैल भी होगी वहां । तभी तो तुम इस ओर आने का नाम तक नहीं लेते वरना तुमको यहां आये चार साल गुजर गये इस शिकायत के बाद उसी वक्त मैं छुट्टी लेकर घर गया । उससे दूर-दूर रहने की कोशिश की । रात को बाहर सोने लगा । बीवी रूठ गयी—बोली—अगर मुझसे नफरत हो गयी है तो फिर यहां आये ही क्या ? वापस क्या नहीं चले जाते ?—मेरा पैर फिसल गया भाई ! मैं उसके दिल को दुखाना नहीं चाहता था ।

अनन्त — फिक्र न करो भाई ! हम सोचेंगे ।

देवकी — अनन्त ! अनन्त भैया ! (हांफते हुए) उसके बच्चा हुआ है ।

इस्माइल — क्या ? किसके ?

देवकी — अपनी नीलपरी घोड़ी के बच्चा हुआ है ।

अनन्त — सच ? मैं संचालक साहब को बताता हूं । (फेड आउट)

इस्माइल — मादा खैरियत से तो ?

देवकी — सब खैरियत है ।

इस्माइल — या अल्लाह !

(अन्तराल संगीत)

संचालक — अच्छा हुआ अनन्त, मुझे नीलपरी के बारे में थोड़ी चिन्ता थी । अभी देखूंगा चलकर । बैठो !

अनन्त — मगर आप ये पुरानी डायरियां खोल कर क्यों बैठे हैं ?

संचालक — पुरानी डायरियां ? ये मेरी बीती जिन्दगी है । एक नजर पीछे घूम कर देख रहा था । जानते हो शायद बहुत कम लोगों को मालूम होगा । एक दुअन्नी लेकर निकला

था मैं घर से । दादाजी ने मुझे दुअन्नी दी थी सिगरट लाने के लिए—वही लेकर भाग निकला था मैं ।

अनन्त लगता है आप बहुत परेशान है ?

सचालक : परेशान ? शायद ! परेशानी मे ही आदमी अपने अतीत मे झाकता है । मैं शायद बिना टिकट यात्रा करता पकड लिया जाता, अगर किसी ने मेरी मदद न की होती । जानते हो मदद करने वाला कौन था ? सरकस के एक बहुत बडे आचार्य का प्रिय शिष्य । वह मुझे अपनी सरकस कम्पनी ले गया । बीस बरस लगातार मेहनत करने के बाद आज मैं अपने ही एक शामियाने मे पाच-सौ खिलाडी कलकारो और दो सौ जानवरो के इस विशाल परिवार का सचालक हू ।

अनन्त इस पर हम भी अभिमान है सर !

सचालक आज हमारे यहा जितने कलाकार है उनको निरन्तर लम्बे अभ्यास के बाद मैंने तैयार किया था । इसमे तुम्हारा भी अपना हिस्सा है अनत ! उत्तर केरल के यहा जितने भी खिलाडी हैं, उनसे से ज्यादातर जवान सरकस-कला के प्रति लगन से प्रेरित होकर आये हुए है । मगर कुछ ऐसे भी हैं, जो अपने जीवन-यापन के लिए या अपने घर-ससार की सहायता के लिए सरकस मे भर्ती हुए है ।

अनन्त मैं तो ऐसी किसी भी श्रेणी मे नही आता ।

सचालक मैंने ऐसा कहा भी कब था ?

अनन्त परिस्थिति ने मुझे इसके लिए मजबूर किया था ।

सचालक परिस्थितिया ही तो मानव को बनाती है ।

(सिंह की दहाड)

सचालक क्या मिस्टर अनन्त ! शेर के पिंजडे मे दो दिनो स कुछ अशान्ति-सी .

अनन्त यह अशाति सिफ जानवरो के पिंजडे मे ही नही है ।

सचालक — मैं भी यह जानता हू । इस शामियान के भीतर का अनुशासन अगर उसमें ढिलाई आ गयी तो मुझे अपनी बन्दूक उठानी पडेगी । मैं कुछ भी सहन कर सकता हू हा, अनुशासन म ढिलाई मैं कभी बर्दाश्त नहीं कर सकूगा । सरकस कम्पनी मेरे सुपुर्द करते हुए मेरे आचाय न यही सलाह दी थी । सरकस कम्पनी की सफलता उसके सदस्यो की ईमानदारी और अनुशासन पर निभर है । जब उसमे आच आने लगे तो उस कम्पनी को तोड दो । किसी कमजोर व्यक्ति के लिए इस शामियान म जगह नही ।

अनन्त — वैसे सर जहा तक मैं समझता हू सरकस का कोई भी खिलाडी लम्बे अर्से तक करतब नही दिखा सकता ।

सचालक — इसीलिए मैं नयी पीढी को प्रशिक्षण दे रहा हू ।

अनन्त — नयी पीढी गढ लेने के साथ क्या हम कमजोर हो रही पुरानी पीढी को समुचित न्याय देने की ओर ध्यान देते हैं ? बार प्लेयर मणि जब बेहोश हो गिर पडा था, तो उसके लिए हमने क्या किया था ? उसे घर वापस भेज दिया गया । बस !

सचालक — उसे हमने कम्पनसेशन दिया था ।

अनन्त — क्या उस धन से वह अपने टूटे हाथ पैर ठीक करवा सकता था ? उससे अपना गुजारा कर सकता था ?

सचालक — अनन्त ! और किया क्या जा सकता था ? तुम इस सरकस के बारे में सब कुछ जानते हो । हर दिन पांच हजार से ज्यादा रुपये का खर्चा होता है । हर रोज औसतन इतनी रकम हमें न मिली तो क्या हाल होगा ? जरा सोचो तो ! तुम्हारी ही तरह मैं भी सोचा करता था, जब मैं किसी दूसरे के अधीन काम करता था ।

अनन्त — मैं आप का दोष नहीं निकाल रहा हू । सरकस के कलाकारो की तरफ लोगो की जो नीयत है, उसकी ओर इशारा करना चाहता हू ।

संचालक — जमाना बदलने लगा है अनन्त ! सरकस को एक उत्तम कला का दर्जा मिल रहा है। सरकस कलाकारों के बीमे और बुढ़ापे की पेंशन की व्यवस्था चालू होने वाली है। तुम लोगों को एक अच्छे रिंग में खड़ा करने के बाद ही मैं इस शामियाने से विदा लूंगा। ये यकीन दिलाता हूं !

दामु — (फेड इन) साहब !

संचालक — क्यों क्या हुआ दामु ?

दामु — हाथी बिल्कुल अस्वस्थ है

संचालक — कौन-सा हाथी ?

दामु — अकबर।

संचालक — क्या हो गया है अकबर को ?

अनन्त — उस दिन नगर समिति के जुलूस में उसे भेजने के बाद यह हाल हो गया है। वैसे कल के दूसरे प्रदर्शन में भी उसने कुछ बाहर प्रकट होने नहीं दिया था।

दामु — अनन्त को देखते ही वह सब दर्द सहते हुए हर हुक्म की तामील करता है।

संचालक — जरा डॉक्टर को बुलाकर मुआयना कराओ। अनन्त, तुम भी जरा इस ओर विशेष ध्यान देना। अकबर हमारे शामियाने का दीपक है। मेरे आचार्य उसके दर्शन करने के बाद ही दैनिक कार्यक्रम शुरू करते थे।

(हाथी का चिंघाड़ना-चिल्लाना। दूर से बाजे की आवाज)

अनन्त — मैं रिंग की ओर जा रहा हूं। वहां ललिता एक्रोबैटिक का अभ्यास कर रही है।

संचालक — उस लड़की का बैंडिंग ठीक नहीं हो रहा है। उसे जरा और ठीक करना होगा। देख लेना ! कल क्यों न सब जानवरों को लेके एक बार नगर में घूम आए ? पब्लिसिटी अच्छी होगी।

अनन्त — अच्छी बात है ! मैं रिंग की तरफ जा रहा हूं। (फेड आउट)

इस्माइल (फेड इन) साहब ! (स्वर मे घबराहट)

सचालक कौन इस्माइल ! क्या है ?

इस्माइल मोटर-कूद के खिलाडी प्रमोद साहब बोरिया-बिस्तर बाध रहे हैं ।

सचालक क्या कहा ?

इस्माइल हा साहब उसके तम्बू से आ रहा हू । दो दिन से एक मूछ वाला उसके पास आता रहा है ।

सचालक यह बात है ! अब समझा । सरकस के खिलाडियो को लुभा ललचाकर भडका ले जाने वाले ब्रोकर इस शामियाने म भी आने लगे । इस्माइल सहाब ! अधिक सुख-सुविधाओ का वादा करके वह तुम लोगा को बहलायेगा । मैंने ऐसे कितने ही लोगो को देखा है । प्रमोद मोटर कूद का साहसी खिलाडी है । उसके चले जाने पर उसके स्थान की पूर्ति असम्भव है । देखता हू यहा सचमुच टूटना शुरू हो गया है ।

इस्माइल सर ! प्रमोद ने और भी कई लोगो को लालच दिखाकर फसा लिया है । जोन्सन, जादूगर साली, सब उसके साथ हैं ।

सचालक हा, अब तक तो शामियाना एक साथ जिया था । उसमे अब टूटन जन्म लेने लगी है । इसका मतलब और कुछ नही । मगर मैं विचलित होने वाला नही हू । इस्माइल ! हाथ काट डालने की नौबत आने के पहले उगली काटना मैं बेहतर समझता हू । तुम लोग एक बात समझ लो तो अच्छा रहेगा । मैं इस तम्बू म आया था । यह पैंट और यह सोने का चश्मा क्या इस तम्बू ने मुझे दिया था ? नही ! तुम सब लोगो ने मिलकर दिया था । इसलिए यह सब तुम लोगो के सामने फेंक कर भाग जाने का मेरा इरादा नही । मैं शामियाना किसी दूसरे के सुपुर्द भी नही करना चाहता । मगर यह बरबाद होने वाला हो तो बस, एक ही रात मे बरबाद हो जाए । जो बाहर जाना चाहे जा सकते हैं । हा मैं हार मानने वाला नही । जब तक यह बन्दूक मेरे साथ है मैं हार नही मानूगा ।

(अन्तराल सगीत)

देवकी — जीवन दुभर हो गया था मेरा। घर वाले आखिरकार मुझे सरकस वालो के सुपुद कर गये थे ।

उदघोषक — देवकी, मैं यहा जीने की आशा लेकर नही आया था। आधी मे उडते सूखे पत्ते की तरह चक्कर काटता हुआ यहा आ गिरा था ।

देवकी — मेरे पडौस की सुदरी उन दिना सरकस मे काम करती थी। जब कभी वह घर पर आती, सरकस की सुख-सुविधाओ और वहा से मिलने वाले रुपया के बारे मे हम लोगो का बताती थी। गरीबी से लाचार मेरी मा ने मुझे भी सात साल की उम्र मे सुदरी के साथ सरकस भेजा उसके बाद घर जाने का मौका मुझे कभी नही मिला ।

उदघोषक — आजकल कहा है वह सुदरी ?

देवकी — सिगापुर का कायक्रम समाप्त कर हमारी कम्पनी वहा से वापस आने लगी, ता वह हमार साथ नही आयी। उसन सरकस छोड दिया था ।

उदघोषक — कुछ अर्से के बाद हम लोग भी इसी तरह कही चले जायेंगे। या कहो कि जाने पर मजबूर हो जायेंगे ।

देवकी — मगर भैया, मै तब तक प्रतीक्षा नही कर सकती। जब से यहा आयी हू, सदा मा व घर की याद सताया करती है। तुमने मुझे और ज्यादा झझोर दिया है ।

उद्घोषक — तुम्हारा घर कहा है, देवकी ?

देवकी — तलइवेरी शहर के पास है ।

उदघोषक — *मा या दूसरा कोई जिदा है या नहीं—इसका कुछ पता है ?*

देवकी — तेरह साल से मैंने सिफ इस शामियाने के भीतर की आवाज सुनी है। बाकी कुछ भी नही जानती भैया !

उदघोषक — कल मिस्टर और मिसेज चाउ कह रहे थे कि वे अपने मुल्क सिंहापुर वापस जा रहे है। अपने यहा जाकर खेती बाडी करने मे वे इससे अधिक सुखी रहेंगे ।

देवकी — यहा जितने लोग हैं, सभी कुछ दिनो से यहा से भाग जाने की इच्छा प्रकट करने मे लगे हैं ।

उद्घोषक — प्रमोद एक दूसरी कम्पनी मे चले जाने वाला था । मगर बॉस के एक सवाल ने उसे रोक दिया । बॉस ने पूछा—प्रमोद, अगर तुम्हारा यह चला जाना तुम्हारी अधिक तरक्की का कारण बनता, तो मैं कभी तुमको नही रोकता । खुशी-खुशी तुम्हें विदा कर देता । मगर औरो के थोथे वायदो पर यकीन करके अगर तुमने यह फैसला किया हो, तो मैं तुमको इस शामियाने का दरवाजा खोलने नही दूगा । और जाना ही चाहो तो उस दरवाजे पर लिखे वाक्यो को भी जरा एक बार पढ लो, "इस सरकस का यश मैं अपनी जान की तरह पाल रखूगा । यहा मैं नही, सिर्फ हम हैं ।"

देवकी — बस, यही मेरे परो को भी रोक देता है ।

उद्घोषक — वैसे ताज्जुब है कि तुम्हारा मन भी ऐसे उखड गया ।

देवकी — रघु भैया । तुम स्त्री का मन नही जानते । चाह कर भी रिश्ते इतनी आसानी से मैं नही तोड सकती । न इस तम्बू के रिश्ते न इसके बाहर के ।

उद्घोषक — देवकी, निराशा शोभा नही देती ।

देवकी — उपदेश देना बडा आसान है । याद है साइकिल रानी राजी इसी खाट पर पडी मर गयी थी । उसका पति इसी कम्पनी का मोटर साइक्लिस्ट था । मरते समय वह गर्भिणी थी । उसने कहा था, "देवकी कभी शादी करने का तुम्हारा इरादा हो तो इस तम्बू से बाहर जाकर ही करना ।"

उद्घोषक — मुझे पहले मालूम नही था कि इस सुन्दर शामियाने के भीतर इस तरह की घुटन भरी है ।

देवकी — और भी बहुत कुछ है, जिससे हमारा वास्ता अभी नही पडा है ।

दामु — (फेड इन) देवकी, जरा जल्दी आना ।

देवकी अरे तुम्हारी कमीज पर यह खून कैसा ?

दामु रिंग-मास्टर नए चीते को सिखा रहे थे कि चीते ने उसके चेहरे को नाच डाला।

देवकी अय !

उदघोषक कहा है वह ?

दामु याइ आँख बाहर निकल आयी है। डॉक्टर बुलाया है।

देवकी ओह—चलो दामू— !
(अन्तराल संगीत। क्रास फेड। हाथी का चिंघाड़ना।)

संचालक हे भगवान ! यह क्या हो रहा है सब ? अभी उस दिन अनन्त घायल हो गया और आज अकबर की यह हालत हो गयी। यह तड़पन मुझसे देखी नहीं जाती।

देवकी दवा पिलाने से कुछ नहीं हो सकता क्या ?

संचालक अकबर, तुम्हें साथी बनाकर मेरे गुरुदेव ने यह सरकस कम्पनी मेरे हवाले की थी। उस शामियाने की मैं कल्पना तक नहीं कर सकता, जिसमें तू न हो। मगर गुरुदेव की सलाह मैं मूल्यवान समझता हू कि किसी कमजोर का इस शामियान में जगह नहीं।

देवकी बॉस, गोली मत मारिए ! अकबर को वहीं पड़ा रहने दीजिए !

संचालक असम्भव ! तुम हट जाओ ! अकबर का या तड़पता मैं देख नहीं सकता।

दामु अकबर को गोली मत मारिए सर ! आप मुझे मार दीजिए

संचालक दामु, हट जाओ तुम !

दामु मेरी छाती को पार करके ही गोली अकबर को लगेगी। सर

संचालक दामु !

अनन्त दामु और अकबर के प्यार को समझिए सर

संचालक — और मेरा प्यार क्या उससे कुछ कम है? अकबर के बिना मैं इस शामियाने की कल्पना भी नहीं कर सकता।

अनन्त — परे हट जाओ न दामू!

देवकी — अनन्त, तुम उठकर क्यों चले आये? तुम्हारे जख्म अभी ठीक नहीं हुए।

दामू — वह सफेद दाग अगर मैं न देख पाया, तो शायद मैं जिन्दा न रह सकूँगा देवकी!

संचालक — इसी दाग ने उसे हम लोगों से छीन लिया। डॉक्टर ने बताया है, उसे कैन्सर है।

दामू — अगर वह निशान कैन्सर का हो तो लीजिए, मेरी छाती पर भी है ऐसा दाग। किसी कमजोर प्राणी की जरूरत इस तम्बू में नहीं है, तो मुझे भी समाप्त कर दीजिए।

संचालक — दामू, क्या तुम चाहते हो कि यह हाथी तड़प-तड़प कर मरे? कोई भी सरकस वाला ऐसा नहीं कर सकता।

अनन्त — दामू, यही एक रास्ता बचा है!

दामू — इस हाथी के साथ मुझे भी इस शामियाने से निजात दे दीजिए।

अनन्त — शान्त हो जाओ दामू! मेरी एक आँख चली गयी। फिर भी यहाँ से भागना नहीं, यहीं डटा रहना चाहता हूँ।

(बन्दूक की आवाज। हाथी की चिंघाड़। लोगों की सिसकियाँ)

संचालक — अनन्त! —अब मैं भी थक गया हूँ। थके हुए आदमी का इस शामियाने में कोई जगह नहीं।

अनन्त — क्या कह रहे हैं आप?

संचालक — इस शामियाने के साथ सब कुछ मैं तुम को सौंप रहा हूँ अनन्त।

अनन्त — सर!

संचालक — देवकी! सोचा था तुम सब को बुलाकर बाद में बातें करूँगा। यह सरकस आज से इसके कार्यकर्ताओं ~ है। भारत भर में सबसे पहली एक जन्म ले रही है। अनन्त, इ; है।

अनन्त सर, ! मै अब यह जिम्मेदारी सम्भाल नही सकता ।

सचालक किसी एक की जिम्मेदारी नही रहेगी, सबकी होगी। उस दरवाजे पर लिखा आदश वाक्य मैंने बदल दिया है। नया लिखवाया है, "इस सरकस का यश हम कभी फीका पडने नही देंगे।" अब तक तुम लोगो ने उदारता की रोशनी देखी, अधिकार की आवाज सुनी। आगे से यह कुछ भी न होगा।
कल यहा का कैम्प समाप्त होगा। यही से मै तुम लोगो से विदा लेना चाहता हू ।

देवकी मै भी विदा लेना चाहती हू सर !

सचालक अपनी मा को छोड जाना चाहती हो ? यह सरकस तुम्हारी मा है। अनन्त जरा इसे समझाओ तो !

(जानवरो की आवाज)

अनन्त ये जानवर ही खुद समझा रहे हैं। देवकी ! जगलो, झरनो के कूलो मे विचरने वाले ये जानवर हमारे पिंजडो मे बन्द हैं। हम पिंजडो मे नही हैं। मगर हमारे भी बधन है। क्या तुम यह कर्तव्य का बधन अनावश्यक समझ रही हो देवकी !

देवकी मेरे लिए यह असह्य हो गया है अब । मुझ से रहा नही जाता, सहा नही जाता ।

सचालक आओ दामु, आओ ! इस वक्त तो कोई शो नही चल रहा है। फिर भी तुम चेहरे पर रग क्या लगा रहे हो ?

दामु अब मै यह रग कभी भी पोछूगा नही। मौत तक मै सरकस का 'क्लाउन'—मसखरा हू। सबको हसाने वाला विदूषक। खालिस विदूषक। (फूट फूट कर रोना)

सचालक इस शामियाने के नीचे तुम लोग सतुष्ट रहो, आपस मे। मिल कर रहो, प्यार बढाओ, घरेलू वातावरण पैदा करो। देवकी, तुम मा की पुकार सुनने के लिए बाहर क्या जाना चाहती हो ? यही तुम कह-सुन सकती हो, अगर चेष्टा करो। यह शामियाना नही, ससार है, पूरा ससार ।

इसकी सुरक्षा का भार तुम लोगों के हाथ में अर्पित कर मैं खुशी खुशी, यहां से निकल कर जा रहा हूं।

मैं यहां से कुछ भी अपने साथ नहीं ले जा रहा। सिवा इस बंदूक के। थकते दम तक मैं चलता चला जाऊंगा। मेरी कोई मंजिल नहीं। मैं अकेला आया था, अकेला ही जा रहा हूं। इस वापसी में अगर मैं किसी गली में थक कर गिर पड़ूं तो अपने बचाव के लिए यह बंदूक तो है ही। जैसे इसने अक्बर को बचाया वैसे ही मुझे भी बचायेगी। अलविदा दोस्तो--अलविदा (समापन संगीत)

मूल मलयालम सदानंद पुतियारा
रूपांतरकार के० रवि वर्मा

ययाति

देवयानी अरे मेरे वस्त्र कहा गये ? (विराम) क्या तुमने पहन लिये शर्मिष्ठा ?

शर्मिष्ठा हा देवयानी !

देवयानी पर क्यों ?

शर्मिष्ठा ऐसा हुआ देवयानी कि सरोवर मे स्नान करने के बाद जब मैं बाहर निकल रही थी तब अचानक शिव-पार्वती को यहा से जाते हुए देखा। घबराहट और जल्दबाजी म तुम्हारे कपडे पहन लिये।

देवयानी जल्दबाजी और घबराहट होने पर भी क्या ऐसी भूल की जाती है ? झूठा बहाना न बनाओ ! सच तो यह है कि तुम मेरा अपमान करना चाहती हो। असुर-राजकन्या ब्राह्मण-कन्या के वस्त्र पहन ही कैसे सकती है ?

शर्मिष्ठा तुम्हारा अपमान करने का कोई प्रश्न ही नही देवयानी !

देवयानी तुम्हें यह मालूम होना चाहिए कि मैं असुर गुरु शुक्राचार्य की बेटी हू !

शर्मिष्ठा हम दोनो की बातचीत के बीच बुजुर्गों को लाने की जरूरत नही है।

देवयानी पिता शुक्राचार्य का उल्लेख क्या न करू ? उनकी विद्या के प्रताप से ही तो तेरे पिता वृषपर्वा निर्भय होकर शासन कर रहे है।

शर्मिष्ठा शासन चलाने के लिए केवल विद्या ही जरूरी नही है शक्ति भी चाहिए।

देवयानी यह शक्ति दी किसने ? मेरे पिता ने, तेरे पिता के गुरु शुक्राचार्य ने।

शर्मिष्ठा पिता की विद्या का अहम पुत्री को शोभा नही देता ! मेरे पिता की सुरक्षित राजसत्ता की छत्रछाया मे तेरे पिता की विद्या का विकास हुआ है, यह मत भूलना।

देवयानी विद्या को किसी राजसत्ता का बन्धन नहीं होता। निम्न कुल में जन्म लेने वाली तुम मुझे उपदेश देने की धृष्टता न करो!

शर्मिष्ठा भूलो मत देवयानी! मैं राजा की, यानी दान देने वाले की बेटी हूं और तुम दान लेने वाले याचक की पुत्री हो।

देवयानी मैं तुम्हारे इस अपमान का बदला लेकर ही रहूंगी शर्मिष्ठा! मैं तुम्हारे पिता के राज्य का त्याग करने के लिए अपने पिता शुक्राचार्य से प्रार्थना करूंगी। याद रहे, दैत्यों के राजा शत्रुओं से भयभीत हैं। मेरे पिता की विद्या का लाभ अब तुम्हारे पिता के शत्रुओं को मिलेगा।

शर्मिष्ठा तब तो तुम यह बात कहने के लिए घर तक पहुंचने से पहले मृत्यु का आलिंगन करो! पाताल तक पहुंचने वाला यह अंधा कुआं तुम्हारे लिए ही है।

देवयानी छोड़ दो मुझे! मुझे हाथ मत लगाना!

शर्मिष्ठा ओह! अब भी अभिमान नहीं गया?

देवयानी : (माइक से दूर) बचाओ, बचाओ .

शर्मिष्ठा यहां तुम्हें बचाने वाला कोई नहीं है। यहां मेरे पिता वृषपर्वा का शासन चलता है शुक्राचार्य का नहीं। जा, इस कुएं में सुख की नींद सो!

(धक्के मारकर कुएं में धकेल देती है। देवयानी भयभीत होकर चीखती है)

(अंतराल)

ययाति शिकार खेलते-खेलते मैं कितनी दूर आ पहुंचा। मेरी सेना भी तो पीछे छूट गई। प्यास भी लगी है। (विराम) अरे! वह सामने सरोवर जैसा क्या दिखायी दे रहा है? वहीं चलकर प्यास बुझाऊं!

(देवयानी के रोने की आवाज)

यहां निर्जन में कौन रो रहा है? (विराम) अरे! यह तो कुएं में पड़ी कोई स्त्री है। शायद किसी आधार को पकड़ कर डूबने

रो मच गयी हू। उपवस्त्र डालकर इसे बाहर निकालू।

(कुए मे से निकाले जाने की ध्वनि)

तुम कौन हो देवी ?

देवयानी मैं असुरो के गुरु शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी हू। और आप ?

ययाति मैं नहुष वश का राजा ययाति हू। तुम्हें कुए मे किसने डाल दिया था ?

देवयानी ये सब बातें बाद मे कहूगी ! लेकिन यह तो कहिए कि आप यहा कहा ?

ययाति शिकार खेलने निकला हू। शिकार की खोज मे यहा तक आ पहुचा। अब तो तुम निर्भय हो न। आज्ञा हो तो मैं जाऊ। मेरी सेना मुझे ढूढ रही होगी। (विराम) तुम कुछ बोलती क्यो नही हो, मैं जाऊ न !

देवयानी कहा ?

ययाति वही जहा से आया हू। तुम भी जाओ !

देवयानी कहा ?

ययाति पिता शुक्राचार्य के यहा !

देवयानी : अकेली ?

ययाति अविनय के लिए क्षमा करें ! तुम्हें आश्रम तक पहुचाने के लिए मैं प्रस्तुत हू !

देवयानी फिर ?

ययाति फिर मैं अपने स्थान पर चला जाऊगा

देवयानी मुझे अकेला छोडकर ?

ययाति मैं समझा नही !

देवयानी मैं अब अकेली कैसे जाऊ ? अकेली किस तरह घर मे रह सकूगी ? मेरा हाथ पकड़ कर आपने मुझे बाहर निकाला। अब मेरा हाथ ग्रहण कीजिए। अब कोई अन्य पुरुष इस हाथ को ग्रहण नही कर सकता।

ययाति . देवयानी ! असंभव बात करने से क्या लाभ है ?

देवयानी . यह बात आप को असंभव लगती होगी, मुझे नहीं लगती ।

ययाति एक क्षत्रिय राजा ब्राह्मण कन्या के साथ किस तरह विवाह कर सकता है ? यह अधम पाप मैं कैसे कर सकता हूं ?

देवयानी मेरी प्रार्थना अधम नहीं है । यह विधि का संकेत है ।

ययाति कैसे ?

देवयानी : मैं शापित हूं ।

ययाति : तुम शापित हो ? असुरों के गुरु, मृतसंजीवनी विद्या के ज्ञाता शुक्राचार्य की पुत्री शापित ? कैसा शाप ? किसका शाप ? किस अपराध के लिए शाप ?

देवयानी सुनिए

(फ्लैश बैक आरम्भ)

कच . विद्या ग्रहण करने का कार्य पूरा हुआ अब मैं तुम से विदा चाहता हूं देवयानी ?

देवयानी : कच, क्या तुम ने पिता शुक्राचार्य से आज्ञा प्राप्त कर ली है ?

कच : हां, मैं गुरुदेव से मिलकर ही आ रहा हूं । उन्होंने मुझे विदा दे दी है । अब तुम मुझे विदा दो ।

देवयानी : कच, मेरे पिता जितना प्रेम मुझ पर रखते थे, उतना ही तुम पर भी रखते थे न ?

कच : हां देवयानी तुम्हारे पिता ने मुझे पुत्र के समान माना । इस कृतज्ञता को मैं कभी भूल नहीं सकता ।

देवयानी तुम वन में आश्रम की गायें चराने जाते थे और जब लौटने में विलम्ब हो जाता था तब मेरे पिता बेचैन हो उठते थे मैं आश्रम के बाहर खड़ी अपलक दृष्टि से तुम्हारी बाट जोहती रहती थी । क्या यह सब तुम्हें याद है ?

कच . याद क्या नहीं है देवयानी ! तुम्हारी प्रीति भी मुझ पर कोई कम नहीं थी ।

देवयानी — अब भी कम नहीं है। (विराम) ये फूल देख रहे हो? पूजा के लिए हम साथ-साथ इन फूलों को चुनते थे—तब कितना आनन्द आता था।

कच — देवयानी, उस विगत जीवन की पुण्य स्मृति को मैं सदा अपने हृदय में सहेज कर रखूंगा।

देवयानी — अरे! क्या तुम्हें यह भी याद है कि तुम मेरे पिता के साथ जब विद्या प्राप्त कर रहे थे, तब असुरों ने तुम्हारे साथ कितना छल किया था? तीन-तीन बार उन्होंने तुम पर आक्रमण किया और तीनों बार पिता से प्रार्थना करके मैंने तुम्हें जीवित कराया।

कच — देवयानी! मेरे प्रति तुम्हारी ऐसी शुभ भावना और मंगल कामना न होती तो कच इस स्थिति तक नहीं पहुंचता।

देवयानी — और पिता के हृदय में स्थान दिलाकर आखिर तुम्हें मृत-संजीवनी विद्या प्रदान करने का मार्ग मैंने ही पिता को सुझाया था। तुम्हारी भक्ति, पात्रता, तथा निष्ठा देखकर पिता ने तुम्हें मृत-संजीवनी विद्या का दान दिया।

कच — तुम्हारी इतनी प्रीति प्राप्त कर सका इसके लिए मैं अपने अस्तित्व को धन्य समझता हूं, (विराम) देवयानी। समय व्यतीत हो रहा है। तुम्हारी विशुद्ध स्मृति को लेकर मैं विदा चाहता हूं।

देवयानी — मात्र स्मृति ही साथ ले जाओगे?

कच — देवयानी!

देवयानी — और तुम किससे विदा मांग रहे हो कच? मैंने तुम से स्वतन्त्र अस्तित्व की कभी कल्पना तक नहीं की?

कच — गुरु शुक्राचार्य की विदुषी तथा तपस्विनी पुत्री को संयम से काम लेना चाहिए।

देवयानी — विदुषी और तपस्विनी होते हुए भी मैं एक नारी हूं। संयम के कारण ही तो अभी तक मैं चुप थी। तप-साधना ने तुम्हें इतना जड़ बना दिया है?

कच — तप-साधना ने मुझे विशुद्ध दृष्टि प्रदान की है।

देवयानी — मृत-सजीवनी विद्या प्राप्त होते ही तुम इतने स्वार्थी बन गये ?

कच — मृत-सजीवनी विद्या ने मुझे जीवन की निरर्थकता समझा दी है।

देवयानी — मैंने तुम्हें बार-बार मृत्यु के मुख से क्या इस घडी को देखने के लिए बचाया था ?

कच — क्या कह रही हो देवयानी ? तुम्हारा प्रियजन, जीवन के एक आदर्श को सीखकर, अधूरी जीवन यात्रा का फिर से आरम्भ करे और दूसरे आदर्शों को सिद्ध करने के लिए तुम से विदा मांगे, क्या यह घडी मंगलमय नहीं है ?

देवयानी — किसके लिए मंगल ? जब तुम ही नहीं रहोगे तो मंगल कैसा ?

कच — किन्तु मैं तुमसे अलग कहा हू, देवयानी ! मैं तो सदा ही तुम्हें

देवयानी — नहीं नहीं ! आप जाने के पहले मेरा पाणिग्रहण कीजिए !

कच — पाणिग्रहण ? देवयानी, जिस गुरु के पास मैंने विद्या प्राप्त की उसी गुरु की पुत्री का पाणिग्रहण। ऐसे गुरु की पुत्री के मुह से ये शब्द शोभा नहीं देते।

देवयानी — क्यो ? सजीवनी विद्या प्राप्त हुई और तुम्हारा स्वार्थ पूरा हो गया इसलिए ?

कच — देवयानी, यह स्वार्थ नहीं है ! विवेक, बुद्धि से विचार कर देखो। गुरु कन्या के साथ विवाह किस तरह हो सकता है ? और फिर तुम्हारे पिता के पेट मे रहकर विद्या प्राप्त की, इस दृष्टि से भी तुम मेरी बहिन हुई।

देवयानी — मुझे तुम्हारे उपदेश की आवश्यकता नहीं है। तुम मृत-सजीवनी विद्या प्राप्त करने के लिए आये थे। वह विद्या तुम्हें प्राप्त हो गई है। अब तुम्हें यहा किस लिए रहना चाहिए ? अब तुम्हें किसी की क्या आवश्यकता है ? तुम जा सकते हो ! पर इतना याद रखना कि जिस विद्या ने तुम्हें स्वार्थी बनाया है, जिस विद्या के अहकार में डूबकर तुम मेरा अपमान कर रहे हो, जिस विद्या के बल पर तुम अपने भविष्य का निर्माण करना चाहते हो, वही विद्या अवसर आने पर निरर्थक सिद्ध होगी। यह मेरा शाप है ! असुरो के गुरु शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी का शाप !

कच देवयानी, सम्मोह से तुम्हारा चित्त भ्रमित हो गया है। सार-असार की तुम्हारी विवेक-दृष्टि नष्ट हो गई है। तुम्हारा यह शाप निरर्थक है। अपराध के बिना ही तुमने मुझे शाप दिया है। बदले म मैं भी तुम्हें शाप देता हू कि ब्राह्मण कन्या होने पर भी तुम्हें ब्राह्मण पति प्राप्त नहीं होगा! कोई ब्राह्मण-पुत्र तुम्हारा पाणि-ग्रहण नहीं करेगा!

(फ्लैश बक समाप्त)

देवयानी सुन ली आपने मेरी व्यथा-कथा। अब आप मेरा पाणिग्रहण कीजिए, महाराज!

ययाति विधि के सामने मनुष्य असहाय है। मैं तुम्हें स्वीकार करता हू, देवयानी!

(अन्तराल—सिसकियां उभरती ह)

शुक्राचार्य बेटी, देवयानी! रोती क्यो हो? असुरो के राजा वृषपर्वा जिसकी चरण-सेवा करते हैं, ऐसे असुरो के गुरु शुक्राचाय की तुम पुत्री हो। तुम्हें किस बात का दुख ह?

देवयानी राजा वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा द्वारा किये गये मेरे प्रति अपमान और अन्याय की सारी कहानी सुनकर भी आप पूछ रहे हैं कि तुम्हें किस बात का दुख है? पिताजी! क्या आप मेरा अपमान सहन कर लेंगे?

शुक्राचार्य बेटी शान्त हो! वह सब सुनकर ही मैं कहता हूं कि इस प्रकार की सामान्य बातो के लिए क्रोध करना उचित नहीं है।

देवयानी यह सामान्य बात है? आप मुझे शान्त रहने की सलाह दे रहे हैं? शर्मिष्ठा के शब्द बाण की तरह मेरे हृदय मे प्रवेश कर गये हैं। उसने कहा था, "मैं राजा की यानी दान देने वाले की कन्या हू और तुम दान लेने वाले एक याचक की कन्या हो।"

शुक्राचाय हू! अपनी जाति का इतना अभिमान। पिता की सत्ता का इतना अधिक उन्माद।

देवयानी — पिताजी, शर्मिष्ठा को सत्ता का इतना अहकार है, तो उसके पिता का कितना होगा ?

शुक्राचार्य — वृषपर्वा ऐसा अविचारी नहीं है । मेरी सजीवनी विद्या का प्रताप यह जानता है ।

देवयानी — इस विद्या के प्रताप के रहते भी आप क्या उसकी छत्र छाया मे अपमानित जीवन बिताना चाहते है ? आपके दुख मे दुखी और आप के सुख मे सुखी रहने वाली अपनी पुत्री के गौरव-खण्डन को क्या आप सहष स्वीकार करना चाहते है ?

शुक्राचार्य — बेटी ! तुम पर मेरा असीम प्रेम है। तुम्हारे तप मे मैं तन्मय रहा हू ! तुम्हारी विद्या-प्रियता मे मैंने अपने सस्कारा की विजय के दशन किये है, बेटी ! तुम्हारा अपमान मेरा अपमान है।

देवयानी — तब फिर अपने अपमान को याद कर दिन-रात आसू बहाने वाली अपनी बेटी को देखकर क्या आप यहीं रहेंगे। क्या आप रह सकेंगे ? इस प्रसग को जानने के बाद वृषपर्वा आप की इस क्षमावृत्ति को दुबलता समझकर आप को हसी का पात्र नहीं बनायेगा। चलिए पिताजी, उसकी भूमि का त्याग कर हम शीघ्र ही यहा से चलें ! उस मूख पुत्री की धृष्टता का दण्ड उसके पिता को मिलना ही चाहिए !

शुक्राचाय — तुम सच कहती हो बेटी ! जिस भमि मे ब्राह्मण के लिए आदर नहीं ब्राह्मण की तप-साधना के लिए पूज्य-भाव नहीं, ऐसी अधर्म भूमि म अपना स्थान नहीं है। चलो, इस पाप भूमि का शीघ्र त्याग करे !

वृषपर्वा — (आते हुए) नहीं, नहीं, गुरुदेव, त्याग न कीजिए !

शुक्राचाय — कौन वृषपर्वा ?

वृषपर्वा — हां गुरुदेव ! शर्मिष्ठा ने मुझे सब कुछ बता दिया है। सब कुछ सुनने के बाद ही मैं यहा जल्दी से आ पहुचा हू। एक अज्ञान और अविचारी बच्ची के कहने का बुरा न मानिए !

देवयानी — अज्ञान और अविचारी बच्ची ? अच्छा ! पिताजी आप यह कैसे सुन सकते हैं ?

वृषपर्वा गुरुदेव, देवयानी भी बच्ची है। उसकी बात सुनकर कोई गम्भीर निर्णय न लें। दोनों बाल-सखियाँ हैं। लड़-झगड़ भी सकती हैं।

शुक्राचार्य वृषपर्वा, तुम्हारी बेटी शर्मिष्ठा ने जात्याभिमान के बल पर मेरी पुत्री देवयानी का घोर अपमान किया है? मैं इस अपमान को सह नहीं सकता हूं। तुम्हारी भूमि का त्याग करने के सिवा मेरे पास कोई दूसरा मार्ग नहीं है।

वृषपर्वा परन्तु गुरुदेव, शर्मिष्ठा के अपराध के लिए मैं आपसे क्षमा मांगता हूं!

शुक्राचार्य मुझ से क्षमा मांगने का कोई अर्थ नहीं है! देवयानी से क्षमा मांगिए!

देवयानी शर्मिष्ठा को ही अपने अपराध के लिए क्षमा मांगनी चाहिए। आप के क्षमा मांगने से परिस्थिति बदल नहीं सकती।

शुक्राचार्य देवयानी ठीक ही कह रही है।

देवयानी मेरा अपमान हुआ है, इससे भी अधिक अपमान शर्मिष्ठा का होना चाहिए।

वृषपर्वा गुरुदेव, इसका निराकरण आप ही कीजिए!

शुक्राचार्य देवयानी पर मेरा अगाध प्रेम है। यदि उसे प्रसन्न कर सकें तो मैं यहां रहूंगा और यदि वह क्षमा न करे, तो उसकी इच्छानुसार मैं तुम्हारे राज्य का त्याग कर चला जाऊंगा। इसलिए इस परिस्थिति का निराकरण तो तुम्हें ही करना है, मुझे नहीं।

वृषपर्वा गुरुदेव! मेरी मति कुंठित हो गयी है। देवयानी पर आप का जितना प्रेम है उतना ही मेरा शर्मिष्ठा पर है।

शुक्राचार्य तब फिर हमें चला जाना चाहिए?

वृषपर्वा गुरुदेव! असुरों पर शत्रु घात लगाए बैठा है। आप चले जायेंगे, आप की संजीवनी विद्या चली जायेगी तो मेरी क्या दशा होगी? आप की विद्या के बल पर तो मैं इतना विजय प्राप्त करता रहा हूं। आप नहीं जायेंगे नहीं, जायेंगे गुरुदेव! आप जैसा कहेंगे, मैं वैसा ही करूंगा।

शुक्राचार्य आप वैसा ही कीजिए, जिससे देवयानी प्रसन्न रहे।

वृषपर्वा देवयानि, कहो! तुम जो कहोगी वही दण्ड मैं शर्मिष्ठा को दूंगा!

देवयानी मेरे पिता जहां मेरा कन्यादान करें और मैं जहां जाऊं वहां सखियों के साथ शर्मिष्ठा मेरी दासी बन कर आये।

वृषपर्वा आह! देवयानी!

(अन्तराल के लिए त्वरित गति वाला वाद्य संगीत जो धीरे-धीरे हास्य से समाप्त होता है)

देवयानी शुक्राचार्य की पुत्री का गौरव खण्डन करने का फल तुमने देखा, शर्मिष्ठा? (हंसती है) तुम्हारे पिता ने तुम्हें विनिमय की एक वस्तु मान लिया। राजसत्ता सुरक्षित रहे इसके लिए पिता ने पुत्री को दासी बनाया।

शर्मिष्ठा नहीं, नहीं! शत्रु के आक्रमण से अपने पिता का राज्य बचाने के लिए यह मैंने एक त्याग किया है! यह सब, तुम जैसी एक ब्राह्मण कन्या नहीं समझ सकती!

देवयानी भले ही मैं ब्राह्मण-पुत्री हूं, लेकिन किसी की दासी तो नहीं हूं?

शर्मिष्ठा किसी का भी अहंकार सदैव टिका नहीं रहता!

देवयानी तुम्हारा अहंकार तो अब नहीं रहा न?

शर्मिष्ठा तुम्हारा भी नहीं रहेगा?

देवयानी मैं ययाति की महारानी हूं। तुम्हें राज-कन्या होने का गर्व था। महारानी की दासी बनते ही तुम्हारा यह गर्व समाप्त हो गया।

शर्मिष्ठा तुम्हारी दासी बनने से मेरा राज-कन्या के रूप में अस्तित्व नहीं रहा, ऐसी बात नहीं है। तुम्हारी सखियां जितना सम्मान तुम्हारा करती हैं, उतना ही सम्मान मेरा भी करती हैं। महाराजा ययाति जितना तुम्हारा आदर करते हैं, उतना ही मेरा भी करते हैं?

देवयानी (जोर से हंसती है) महाराज तुम्हारा आदर करते हैं? (तिरस्कार पूर्ण हंसी) विगत गौरव को टिकाये रखने के लिए तुम्हारे इस भ्रम के प्रति मेरा कोई विरोध नहीं है (विराम), मैं उपवन में हूं। महाराजा के आने पर मुझे सूचना देना।

शर्मिष्ठा विधि की लीला बडी विचित्र है। अनेक सखियां, जिस के शब्दों को झेल लेती थीं, उसी को आज दासी बनना पड़ा। पिता को स्वप्न म भी कल्पना नहीं होगी कि उनकी बेटी की इस अवस्था पर देवयानी प्रतिक्षण तिरस्कार से देख रही होगी।

(ययाति आगमन)

ययाति कौन ? शर्मिष्ठा ! आज अस्वस्थ क्या लग रही हो ? आखें भीगी हुई और चिंता भरी क्या हैं ?

शर्मिष्ठा कोई बात नहीं है, महाराज !

ययाति यहा की सुख-समृद्धि मे कोई कमी दिखाई दी ?

शर्मिष्ठा दासी के लिए सुख कैसा ? स्वामी की सेवा ही उसका सुख, उनकी कृपा ही उसकी समृद्धि ह।

ययाति दानवराज वृषपर्वा की राजपुत्री का मन दासी नहीं माना है।

शर्मिष्ठा यह आप के वश की महत्ता ह।

ययाति शर्मिष्ठा, तुम मे और देवयानी मैंने कोई भेदभाव नहीं रखा।

शर्मिष्ठा यह आप के हृदय की विशालता है।

ययाति देवयानी जितनी ही तुम भी सुदर हो

शर्मिष्ठा दासी इस प्रकार की प्रशसा की अधिकारिणी नहीं है महाराज !

ययाति और इतना होने पर भी जो तुम में ह वह देवयानी म नहीं है।

शर्मिष्ठा महाराज !

ययाति शुक्राचार्य की तपोमय और सात्विक भूमि मे जिसका पालन-पोषण हुआ ह, ऐसी देवयानी का मानस मैं कई बार समझ नहीं सका हू।

शर्मिष्ठा आप अपनी पत्नी का मानस न समझ सकें ऐसा कैसे हो सकता है ?

ययाति उसकी आखो मे झलकते हुए गहन भाव कई बार मेरे लिए अगम्य बन जाते ह।

शर्मिष्ठा ऐसी पत्नी प्राप्त करने के लिए आपको गौरवान्वित होना चाहिए !

ययाति उसके बुद्धि-वैभव का ताप मुझसे नहीं सहा जाता ।

शर्मिष्ठा पत्नी का बुद्धि-वैभव पति के लिए आनन्द का विषय होना चाहिए।

ययाति उसके पिता मृत-सजीवनी-विद्या जानते हैं, इस ज्ञान का गर्व वह क्षण भर के लिए भी छोड नहीं सकती है ।

शर्मिष्ठा महाराज, मैं तो यह समझती थी कि असुरों के गुरु शुक्राचार्य की विदुषी पुत्री को प्राप्त कर आप अपने जीवन को धन्य मानते होंगे ।

ययाति शर्मिष्ठा ! जीवन की धन्यता का आधार मात्र विदुषी होने या प्रज्ञावान होने पर नहीं है ।

शर्मिष्ठा देवयानी मे आपको कौन-सी कमी दिखाई दी ?

ययाति तुम मे दिखायी देने वाले सहज राजसी भाव का अभाव है उसमे । वृषपर्वा के वैभव विलास मे पलने वाली तुम कहा और शुक्राचार्य के शुष्क आश्रम मे बड़ी होने वाली देवयानी कहा ?

शर्मिष्ठा जीवन मे तप का भी स्थान है ।

ययाति है ! किन्तु यौवन के अमर्यादित उन्माद को सात्विक भावो मे बदल देने की देवयानी की अद्भुत शक्ति मुझे कुठित कर देती है ।

शर्मिष्ठा यह अद्भुत शक्ति ही आत्मा को उन्नत करती है ।

ययाति दैहिक भोग भोगने के बाद आत्मा की उन्नति करूंगा । मुझे अकाल वृद्ध नहीं होना है । वह भयकर डरावनी जरावस्था मुझे अभी नहीं चाहिए । मैं जीवन चाहता हू । जीवन का आनन्द चाहता हू और ऐसे आनन्द के साधन चाहता हू ।

शर्मिष्ठा किससे ?

ययाति तुमसे शर्मिष्ठा !

शर्मिष्ठा देवयानी नहीं दे सकती ?

ययाति मेरे और देवयानी के बीच बहुत अतर पड गया है । मैं जो चाहता हू वह तुम क्या जानोगी शर्मिष्ठा ? उमड़ते अन्तर मे अनुराग, प्रतिक्षण परिवर्तन प्राप्त करती यौवन की अभिलाषाए और रोम-रोम को

भर देने वाले ऋतुराज वसंत का अदम्य उल्लास। यह सब तुम दोगी न शर्मिष्ठा ?

शर्मिष्ठा महाराज, मेरे अन्तर मे अनुराग का सागर घुमड रहा है !

ययाति मैं सुनूगा !

शर्मिष्ठा आखो मे अभिलाषाओ मे इन्द्रधनुष खिलते है, पर कोई देखता नहीं !]

ययाति मैं देखूगा, शर्मिष्ठा !

शर्मिष्ठा रोम रोम मे उल्लास उछल रहा है, पर कोई सभालता नहीं !

ययाति यौवन का सत्कार यौवन करेगा !

शर्मिष्ठा देह के उपवन मे मधुमक्ष्प महक रहा है, महाराज !

ययाति ऋतुराज अवश्य पधारेगे, शर्मिष्ठा !

(उल्लासपूर्ण सगीत)

देवयानी (आश्चर्य से) कौन ? महाराज ! दासी शर्मिष्ठा, तुम ? यह मैं क्या देख रही हू ? महाराज के बाहुपाश मे मेरी एक दासी। (क्रोध) इस अधम आचरण से कलुषित बने हुए राज महल मे एक क्षण के लिए भी रहना असभव है।

ययाति देवयानी, शान्त हो !

देवयानी शर्मिष्ठा के साथ अधर्मी और पापी जीवन व्यतीत करने वाले व्यभिचारी के घर मे पत्नी बनकर रहने वाली को अब शान्ति कैसी ? दुष्ट, पापी शर्मिष्ठा ?

ययाति शर्मिष्ठा दोषी नहीं है ! यदि दोष है तो वह मेरा है, मेरी वासना का है।

देवयानी शर्मिष्ठा ने मुझ से बदला लिया है !

ययाति शर्मिष्ठा ऐसी हीन नहीं है।

देवयानी अपना पति ही अपना नहीं है। हाय रे, भाग्य की विडम्बना !

ययाति तुम दोनो बाल सखियां हो। दोनो साथ रह सकती हो।

देवयानी मेरी दासी, मरे जैसा ही समान अधिकार भोगे ? एक क्षण के लिए भी ऐसी अधम अवस्था भोगकर मैं नहीं रहूगी, मै नहीं रहूगी, मै जाऊगी, विलास के इस रग भवन को छोडकर जाऊगी, तप की सात्विक भूमि मे जाऊगी, अपने पिता शुक्राचार्य के पास जाऊगी ।

ययाति मै वहा तुम्हें लेने आऊगा ।

देवयानी वहा पैर न रखना । वहा आकर मेरी तपस्या और साधना को कलकित मत करना । आश्रम के पवित्र वातावरण को कलुषित न करना । (जाती है)

(अन्तराल)

शर्मिष्ठा महाराज ! कोई अपराध हुआ हो तो क्षमा कीजिए ।

ययाति ऐसा क्या कहती हो, शर्मिष्ठा ?

शर्मिष्ठा आप आज उदास दिखायी दे रहे है ।

ययाति हा !

शर्मिष्ठा मेरी सेवा मे कोई कमी दिखाई दी ?

ययाति नहीं ! देवयानी को गये वर्षों बीत गये । आज देवयानी की याद आ गयी !

शर्मिष्ठा देवयानी स्वय ही चली गयी है। आपने उसका त्याग नहीं किया है ।

ययाति ठीक है ! परतु असतोष मेरे जीवन की एक कुरूपता है ।

शर्मिष्ठा असतोष म ही उन्नति है ।

ययाति हा ! पर उस असतोष और इस असतोष मे वहुत अतर है । यह तो देह का असतोष है, वासना का असतोष है ।

शर्मिष्ठा क्या मैं अब प्रिय नहीं रही, महाराज ?

ययाति नहीं शर्मिष्ठा ! यह तो मै अपने स्वभाव की बात कह रहा हू । म विषयासक्त जीव हू और वासना के गहरे अधकूप मे फसने के लिए ही जन्मा हू ।

शर्मिष्ठा महाराज ! इसका कारण मैं तो नहीं हू न ?

ययाति नहीं, नहीं, शर्मिष्ठा ! यह सब मेरी चचल प्रकृति का ही दोष ह। आज देवयानी नहीं है तो मेरा मन देवयानी को निकट देखने के लिए आतुर हो रहा है ।

शर्मिष्ठा इसमे कुछ भी अस्वाभाविक नहीं है, महाराज ! देवयानी भी आप की पत्नी है ।

ययाति देवयानी मे ऐसा क्या है जो मुझे उसकी ओर खींच रहा ह ?

शर्मिष्ठा इस प्रश्न का मैं क्या उत्तर दू ? मैंने देवयानी को एक नारी की दृष्टि से ही देखा है, पुरुष की दृष्टि से नहीं ।

ययाति क्या तुम्हें देवयानी अच्छी लगी है, शर्मिष्ठा ?

शर्मिष्ठा हा !

ययाति तुम उससे द्वेष तो नहीं करती न ?

शर्मिष्ठा द्वेष किस लिए ?

ययाति इसलिए कि मैं उसकी प्रशसा कर रहा हू ।

शर्मिष्ठा देवयानी की प्रशसा करने का आप को अधिकार है ।

ययाति आज मै कुछ भी बोल रहा हू न ? असबद्ध बातें कर रहा हू न ?

शर्मिष्ठा असबद्ध होने पर भी मुझे आप की बातें अच्छी लगती है ।

ययाति मेरा मन आज अस्वस्थ है । राज काज म मन नही लगता । परिवार से घिरा हुआ होने पर भी ससार की मधुरता का अनुभव नही कर सकता ।

शर्मिष्ठा आज आप को यह क्या हुआ है ?

ययाति : मैं मनुष्य नही रहा, शर्मिष्ठा ! वासना का कीडा हू । विधि न मेरे भाग्य मे ऐसी कौन सी रेखा खीच दी है कि जिसके कारण मैं क्षण-भर के लिए भी शात नहीं, सतुष्ट नही । वासना की यह भूख मुझे कहा ले जायेगी ?

शर्मिष्ठा एक दिन वासना भी विशुद्ध होगी ।

ययाति नही, नही ! मैं वासना मुक्त नही हो सकता ! मै सौन्दय का भूखा

हू। यौवन का भूखा हू। देवयानी मे क्या नही था, जो मै तुम्हारी ओर आकर्षित हुआ, और अब तुम मे क्या नही है कि मेरा मन देवयानी के लिए बेचैन हो रहा है ?

शर्मिष्ठा • (समभाव से) स्मृति मे से देवयानी हटती नही है, महाराज ?

ययाति • नही ! मुझे क्षमा करो, शर्मिष्ठा ! मै देवयानी को भूल नही सका।

शर्मिष्ठा • आपने उसके प्रति अन्याय किया है, ऐसा आप मानते है, और इसी लिए आप उसे भूल नही पाये है। क्या इसी से आप उससे क्षमा मागना चाहते है ?

ययाति मैने उसके प्रति अन्याय किया है और मै उससे क्षमा मागने के लिए तत्पर हू। परन्तु मै अपने आपको अच्छी तरह से जानता हू। इस क्षमा के पीछे मेरे हृदय की विशालता नही है, मेरा स्वार्थ है।

शर्मिष्ठा स्वार्थ ?

ययाति हा, स्वार्थ ! उसे मनाकर यहा वापस ले आने का स्वार्थ। मेरी अपनी वासना पूर्ति करने का स्वार्थ। मै पशु हू, जानवर हू। मै मनुष्य नही हू मनुष्य नही हू।

शर्मिष्ठा आप मनुष्य है, इसीलिए ऐसा व्यवहार कर रहे है।

ययाति क्या सचमुच मै मनुष्य नही हू ? क्या तुम जानती हो कि अब भी मुझ मे मानवता है ? (भयकर हास्य) मै मनुष्य नही हू ? क्षणिक भोग-विलास मे जीवन की धन्यता अनुभव करने वाला मनुष्य ! (पुन हसता है)

शर्मिष्ठा महाराज !

ययाति देवयानी के बिना मुझे शाति नही मिलेगी। मै देवयानी के पास जाऊगा, मै उससे प्रार्थना करूगा, उसके पिता शुक्राचार्य से प्रार्थना करूगा और देवयानी को लेकर वापस आऊगा। शर्मिष्ठा तुम उदास हो ! मुझे अनुमति दो। मै जाऊ न ? तुम्हें, तुम्हे कोई आपत्ति तो नही है न ?

शर्मिष्ठा किसी का विरोध सहन न करने की अवस्था से आप काफी आगे निकल चुके है।

(अन्तराल–तपोवन का वातावरण उभरता है)

ययाति — कितना पवित्र वातावरण है। चित्त आल्हाद और शांति का अनुभव कर रहा है। सामने ही तो देवयानी दिखाई दे रही है। उसके चेहरे पर सात्विक तेज प्रकट है। उसे देखते ही पापवृत्ति पिघल जाती है, वासना के बादल बिखर जाते हैं। (विराम) देवयानी!

देवयानी — कौन? महाराज! (विराम) यहां किसलिए आये हैं?

ययाति — तुम्हें वापस ले जाने के लिए।

देवयानी — यह व्यर्थ कष्ट किस लिए किया?

ययाति — इसलिए कि मैं तुम्हें भूल नहीं सका।

देवयानी — स्मृति में रहने वाली वस्तु हमेशा साथ नहीं होती।

ययाति — इसका आधार संवेदना की सच्चाई पर है।

देवयानी — किसकी संवेदना? आत्मा की या शरीर की?

ययाति — मैं इसका निर्णय नहीं कर सका हूं।

देवयानी — पहले निर्णय कर लीजिए, तब आइए।

ययाति — देवयानी! मेरा जीवन मानव सुलभ दुर्बलताओं से पूर्ण है। इसका मुझे दुःख है। मैं जानता हूं कि मुझे इनसे दूर रहना चाहिए। परन्तु इसके लिए मुझ में शक्ति नहीं है।

देवयानी — जब शक्ति प्राप्त हो जाये तब आइए।

ययाति — देवयानी। दुर्बलताओं के प्रति सहानुभूति होती है, तिरस्कार नहीं। चलो, मेरे साथ। बीते हुए समय को भूल जाओ।

देवयानी — देवयानी कुछ भी भूलती नहीं है। आप उसे अब भी पहचान नहीं सके? मेरे निर्णय को कोई बदल नहीं सकता है। क्या आप को इसका अनुभव नहीं हुआ? मुझे अस्वीकार करने पर कच को मिला हुआ शाप, कुएं में से आप का हाथ पकड़ कर मैं बाहर आई और इस हाथ को कभी न छोड़ने का मेरा निर्णय, मेरा अपमान करने पर शर्मिष्ठा को मिला हुआ दण्ड और आप के

अधम जीवन की छाया भी न लेने का किया गया संकल्प यह सब जानने के बाद भी देवयानी को वापस ले जाने के लिए आये हैं ? मुझे खेद है कि मैं नहीं जा सकूंगी।

ययाति क्या यह अन्तिम निर्णय है ?

देवयानी हां, अन्तिम निर्णय। (खड़ाऊ की आवाज) पिता आ रहे हैं !

शुक्राचार्य (ययाति को देखकर क्रोध से) कौन ययाति ? नराधम !

ययाति असुरों के गुरु को प्रणाम करता हूं।

शुक्राचार्य मेरे चरणों का स्पर्श कर मुझे अपवित्र न करना। चले जाओ ! मेरी आंखों के सामने से हट जाओ ! मेरे आश्रम को छोड़कर चले जाओ ! मेरी प्रिय पुत्री देवयानी के सौभाग्य-गृह ! तुम्हारे लिए यहां कोई स्थान नहीं है।

ययाति क्षमा कीजिए ! मैंने अपनी दुर्बलता को देवयानी के समक्ष स्वीकार कर लिया है। मैं देवयानी को लेने के लिए आया हूं। आज्ञा दीजिए।

देवयानी मैंने न जाने का अन्तिम निर्णय कर लिया है।

शुक्राचार्य तो मेरा भी अन्तिम निर्णय सुनो ! अपनी वासनापूर्ति करने के लिए तुम वासनान्ध बने और देवयानी के साथ द्रोह किया। वासना को पालने, उन्मत्त बनाने तथा कुमार्ग पर ले जाने वाला तुम्हारा यह यौवन आज से नष्ट हो जाये और आंखों का प्रकाश हरने वाला, हाथ-पांव की शक्ति छीन लेने वाला, भीषण बुढ़ापा तुम्हारे शरीर में प्रविष्ट हो जाये ! असुरों के गुरु और देवयानी के पिता शुक्राचार्य का यही शाप है।

ययाति (कांपते हुए) ऐसा घोर शाप न दीजिए। यौवन-सुलभ सुखभोग की अभी तृप्ति नहीं हुई है। हे तपस्वी ! मुझे यह डरावना भयानक बुढ़ापा नहीं चाहिए। मुझे मृत्यु दीजिए। मैं मृत्यु का आनन्दपूर्वक स्वागत करूंगा। यौवनविहीन ययाति एक क्षण भी जीवित रहना नहीं चाहता। (रोता हुआ) मुझे मृत्यु दीजिए। मुझे ऐसा शाप दीजिए कि मैं यहीं जलकर खाक हो जाऊं।

शुक्राचार्य यौवन भोगा, अब बुढ़ापा भी भोगो।

ययाति क्षमा कीजिए, क्षमा कीजिए ! यौवन की तृप्ति अभी नहीं हुई है।

शुक्राचार्य मानवकुल की रक्षा के लिए प्राप्त यौवन के साथ तुमने व्यभिचार किया है। अब इसके लिए बुढ़ापे को भी भोगो।

ययाति देवयानी, मेरी इस अवस्था को देखकर तुम्हें भी दया नहीं आती?

शुक्राचार्य देवयानी से द्रोह करने वाले विषयासक्त जीव को बुढ़ापा घेर ले।

ययाति (रोता है) पूर्ण यौवन में बुढ़ापा। यह मैं किस कर्म का फल भोग रहा हूँ? दानव गुरु शुक्राचार्य दया कीजिए। इस अधम मनुष्य पर दया कीजिए। मुझे यौवन दीजिए या मृत्यु दीजिए।

शुक्राचार्य मृत्यु के कराल हाथ में दिन रात कंपित बुढ़ापा तुम्हारी देह को जीर्ण और सत्वहीन बना दे।

ययाति आह! ओह!! देवयानी! मेरी धर्म पत्नी! सहधर्मचारिणी! क्या इस शाप का कोई निवारण नहीं है?

देवयानी पिताजी! शक्तिशाली को क्षमा शोभा देती है। संभव हो तो शाप का निवारण कीजिए।

शुक्राचार्य मेरा शाप कभी निष्फल नहीं जा सकता। फिर भी यदि तुम्हारी इच्छा है, तो इसका निवारण बतलाता हूँ। ययाति! यदि कोई अपना यौवन देकर तुम्हारा बुढ़ापा ले ले, तो ही यह संभव हो सकता है। जाओ, शीघ्र ही आश्रम का त्याग करो।

(अंतराल)

ययाति कर्म गति विचित्र। यौवन अकाल ही में अस्त हो गया। बुढ़ापे का विष रोम-रोम में फैल गया। जिनके आघात से पृथ्वी काँप जाती थी, वे ही चरण आज शक्ति हीन होकर काँप रहे हैं। जिन भुजाओं के बल से युद्ध में पराजित होकर शत्रु क्षोभ से हीनता का अनुभव करते थे, वे ही भुजाएं आज वीर्य हीन बनी काँप रही हैं। हायरे! दुर्दिन के लिए न उषा होती है न संध्या होती है, सदैव प्रखर मध्याह्न होता है। (विराम) आखिर आ ही पहुँचा। यह रहा सामने ही अस्पष्ट-सा दीखता राजमहल, जहाँ मैंने देवयानी के साथ यौवन बिताया था। (विराम) यह सामने कौन है? किसी स्त्री की आकृति दिखायी देती है। (विराम) शर्मिष्ठा

ही लगती है। जिसके यौवन के लिए मैंने देवयानी के यौवन की अवहेलना की। किन्तु शर्मिष्ठा मेरे स्वागत के लिए भी उपस्थित नहीं। मेरे आगमन की इसे कोई उमंग नहीं है। (विराम) शर्मिष्ठा! मैं ययाति हूं।

शर्मिष्ठा (अविश्वासपूर्वक) ययाति! नहुष वंश के ययाति ऐसे नहीं हो सकते? तुम कौन हो, वृद्ध पुरुष?

ययाति (विश्वास से) वृद्ध पुरुष। (उत्तेजना में) नहीं, नहीं! (निराश) हां। मैं वृद्ध पुरुष हूं। मुझे अब कोई ययाति न कहे। ययाति की मृत्यु हो चुकी है।

शर्मिष्ठा आप ययाति नहीं ही हैं। परन्तु आप ऐसा न कहिए। वृद्ध पुरुष! महाराजा ययाति तो असुरों के गुरु शुक्राचार्य के पास गये हैं।

ययाति शर्मिष्ठा! असुरों के गुरु शुक्राचार्य से मिल कर ही आया हूं।

शर्मिष्ठा इस तरह महाराज अकेले कभी नहीं आयेंगे। मुझे इनकी शक्ति में विश्वास है। वे तो देवयानी के साथ ही आयेंगे।

ययाति देवयानी नहीं आई। अकेला ही लौट आया हूं।

शर्मिष्ठा मैं यह बात मानने के लिए तैयार नहीं हूं।

ययाति शर्मिष्ठा! न मानने का कोई कारण नहीं है। मेरे पास आओ!

शर्मिष्ठा पर आप हैं कौन? वृद्ध होकर आप मेरे साथ इस तरह क्या बोलते हैं?

ययाति मैं ययाति हूं शर्मिष्ठा, मैं ययाति!

शर्मिष्ठा नहीं, नहीं! यौवन की मूर्तिवत अवतार ययाति ऐसे नहीं हो सकते। आप तो बुढ़ापे के अवतार लगते हैं।

ययाति बूढ़ा होते हुए भी मैं ही ययाति हूं! युवावस्था बीत गयी और बुढ़ापा आ गया।

शर्मिष्ठा ऐसे कैसे हो सकता है? आप झूठ बोलते हैं। आप महाराजा ययाति नहीं हैं। इस प्रकार सहसा अवस्थाभेद प्रकृति के विरुद्ध है।

ययाति मेरा जीवन ही प्रकृति विरुद्ध है। शर्मिष्ठा, मुझे स्वीकार करो। मैं ययाति, देवयानी का और तुम्हारा स्वामी हूं।

शर्मिष्ठा आप मेरे स्वामी किस तरह हो सकते हैं ?

ययाति हाय दा! मुझे अपने स्वजन भी पहचान नहीं सकते। यह कैसा बुढ़ापा ? यह कैसी विधि की निष्ठुरता ?

शर्मिष्ठा वृद्धजन। आप ही ययाति हैं, यह मैं किस तरह मान लूं ? विगत की कोई बात हो तो कहिये ?

ययाति जिसकी कभी कल्पना तक नहीं की थी ऐसी आकस्मिक वृद्धावस्था के प्रचण्ड आघात से मेरे स्मृति-तन्तु शिथिल हो गये हैं। इस आघात के दूर होते ही मैं तुम्हें सब कहूंगा। अतीत की सभी बातें करूंगा।

शर्मिष्ठा मुझे आपकी बातों में कोई भेद दिखाई देता है। असुरों के गुरु शुक्राचार्य की अनन्त विद्याएं साध्य हैं। लगता है मुझसे वैर साधने के लिए, देवयानी ने आप को यहां भेजा है। इसमें मुझे कोई प्रपंच लग रहा है।

ययाति यह प्रपंच नहीं है शर्मिष्ठा। साक्षात् ययाति तुम्हारे सामने खड़ा है।

शर्मिष्ठा मुझे इस देह का परिचय नहीं है। मैं देवयानी को पहचानती हूं। वह कुछ भी भूलती नहीं है। भूल से उस के वस्त्र पहन लेने के कारण उसने मुझे दासी बनाया।

ययाति (स्मृति की जागृति) तुम्हें दासी बनाया। हां, हां! तुम्हें दासी बनाकर वह यहां ले आयी।

शर्मिष्ठा वह किसी को क्षमा नहीं करती। मैं उसके अहंकार को जानती हूं। आप को देवयानी ने ही भेजा है। महाराजा ययाति ने मुझे पत्नी का स्थान प्रदान किया, इसका बदला लेने के लिए उसी ने आपको यहां भेजा है। जाइए, इसी क्षण यहां से चले जाइए।

ययाति अब कहां चला जाऊं ? देवयानी ने मेरा त्याग किया। अब तुम मेरा त्याग कर रही हो। अब मैं कहां जाऊं ? शर्मिष्ठा, भूला नहीं, तुम मेरी पत्नी हो।

शर्मिष्ठा — मैं तुम्हारी पत्नी ? यौवन के मनोरम झूले पर झूलने वाले महाराज ययाति वह ? और मृत्यु के मुख में प्रतिक्षण प्रविष्ट होने वाला जीर्ण शरीर वाला पुरुष यहाँ ? यहाँ से शीघ्र ही चले जाइए। महाराजा ययाति के राजमहल में प्रवेश करने का आप को अधिकार नहीं है।

ययाति — मुझे जाने दो ! मुझे अपने राजमहल में जाने का मार्ग दो !

शर्मिष्ठा — असंभव ! परिचारक को बुलाकर मुझे आप को बाहर निकलवाना पड़ेगा।

ययाति — मेरे अपने महल में प्रवेश करते समय मुझे कोई रोक नहीं सकता, किसी की शक्ति नहीं है !

शर्मिष्ठा — अरे कोई है ? अनु पुरु, कोई नहीं है ?

ययाति — (स्मृति की जागृति) अनु, पुरु (विराम) पुरु हमारा बेटा और यदु तुर्वसु हाँ, हाँ, लगता है मुझे कुछ याद आ रहा है ! अपना बेटा यदु (विराम) क्या पुत्र पिता का कल्याण नहीं करेंगे ? शर्मिष्ठा उन सब को बुलाओ ! शुक्राचार्य का शाप

शर्मिष्ठा — शुक्राचार्य का शाप ?

ययाति — शुक्राचार्य ने मुझे शाप दिया है। इस शाप के परिणाम स्वरूप ही मैं वृद्ध हो गया हूँ। शर्मिष्ठा, मैं ययाति ही हूँ !

शर्मिष्ठा — (शंकित) आप ही ययाति हैं ?

ययाति — संदेह न करो शर्मिष्ठा ! यौवन के उन्माद में मैंने देवयानी का त्याग किया। इसी से उसके पिता ने मुझे शाप देकर मेरा यौवन नष्ट कर दिया। और यह अनहोना बुढ़ापा दे डाला। लगता है अब मुझे सब कुछ याद आ रहा है। क्या तुम्हें याद है ? मैं तुम्हारी अनुमति लेकर ही देवयानी के पास गया था ?

शर्मिष्ठा — मुझे क्षमा कीजिए महाराज ! मैं आप को पहचान नहीं सकी। महाराज क्या इस शाप का कोई निवारण नहीं है ?

ययाति — है ! शुक्राचार्य से मैंने बहुत प्रार्थना की तब उन्होंने कहा कि, यदि कोई मेरी जरावस्था लेकर अपना यौवन मुझे दे दे तो मैं इस वृद्धावस्था से मुक्त हो जाऊँ।

शर्मिष्ठा ऐसी डरावनी वृद्धावस्था लेने के लिए कौन तैयार होगा? कैसे ऐसा होगा, जो अपने खिलते हुए यौवन का अकाल स्वेच्छा से समर्पित करेगा? अब क्या होगा?

ययाति पुत्र का कर्तव्य है कि पिता को दुःख से बचाये, उसकी आज्ञा का पालन कर उस की वृद्धावस्था की मनोकामनाओं को संतोष प्रदान करे। (विराम) यह सामने से कौन आ रहा है?

शर्मिष्ठा देवयानी का पुत्र यदु है, महाराज।

ययाति (आनन्द से) यदु! ठीक है। तुर्वसु तो उद्धत है अपनी माँ की तरह। यदु ज्ञानी है। मेरा यदु पर कितना प्रेम है। यह भी मुझ पर कितना प्रेम रखता है। वह मेरा वचन कभी नहीं टालेगा। (विराम) बेटा यदु।

यदु आप कौन हैं?

शर्मिष्ठा ये तुम्हारे पिता हैं यदु, प्रणाम करो।

यदु मेरे पिता, जिसके शरीर में हड्डियों के सिवा कुछ भी नहीं है, ऐसे जर्जर वृद्ध मेरे पिता?

शर्मिष्ठा शंका करने की आवश्यकता नहीं है यदु। ये तुम्हारे पिता ही हैं।

ययाति यदु पिता की सेवा करना पुत्र का धर्म है। पिता की इच्छाओं को पूर्ण करना भी पुत्र का कर्तव्य है।

यदु लेकिन आपने माँ देवयानी का त्याग किया, हमें भी उन के साथ जाने नहीं दिया। यह कैसे भूला जा सकता है?

ययाति मैंने देवयानी का त्याग नहीं किया, बेटा! उसे जब आना हो तब वह यहाँ आ सकती है। तुम्हें यदि वहाँ जाना है तो स्वेच्छापूर्वक जा सकते हो।

यदु लेकिन, पिताजी, आप को किसलिए शाप दिया गया है?

ययाति यह तुम मुझसे अभी मत पूछो। मैंने शर्मिष्ठा को सभी बातें बता दी हैं। तुम मेरे पुत्र हो। मैं तुम्हें जो आज्ञा दूँ, तुम्हें उसका पालन करना चाहिए।

यदु क्या आज्ञा है आप की?

ययाति — सुनो, मन का निवारण एक ही रीति न हो सकता है। तुम अपना यौवन मुझे देकर यह वृद्धावस्था ले लो। बोलो! क्या तुम मेरा जरावस्था लोगे? (विराम) क्या, कुछ बोलते नहीं हो? क्या तुम्हें अपने पिता के प्रति कोई स्नेह नहीं है?

यदु — स्नेह तो है पिता जी! पर आपको क्या नहीं मिला है, जिसके लिए आप ऐसा कर रहे हैं।

ययाति — (क्रोध से) यदु, यह विषय चर्चा का नहीं है। मेरे प्रति तुम्हें प्रेम हो, स्नेह हो तो तुम अपना यौवन मुझे दे दो।

यदु — क्या आप अपने जीवन के अतिरिक्त किसी दूसरे के जीवन का विचार ही नहीं कर सकते?

ययाति — बेटा, मैं स्वार्थ में डूबा हुआ अंधा मनुष्य हूं। प्रतिक्षण जीवन का उल्लास मुझे निमंत्रण दे रहा है, जगत का सौंदर्य मुझे बुला रहा है। सुनो! सुदूर आम्रवृक्षों में मंजरी में मस्त से कुहुकती मदनदूती कोकिला को सुनो! यह सामने उपवन है, उसे देखो! वसंत का वैभव क्या मेरे लिए व्यर्थ है? तुम मेरे पुत्र हो। क्या तुम मेरी इतनी मनोकामना पूर्ण नहीं करोगे? क्या तुम अपने वृद्ध पिता की इतनी याचना स्वीकार नहीं करोगे?

यदु — मुझे क्षमा कीजिए पिताजी! मात्र विषयासक्त इन्द्रियों का संतोष प्रदान करने का साधन यौवन नहीं है। ऐसी अविचारी तथा अविवेकी मनोकामना पूर्ण करने का मैं साधन बनूं तो मैं स्वयं अपने प्रति द्रोह करूंगा और यह माता देवयानी द्वारा पोषित संस्कारों के प्रति द्रोह कहलायेगा। मैं पिताजी, आप की इस आज्ञा का पालन नहीं कर सकता, इसके लिए क्षमा चाहता हूं!

ययाति — तो मुझे भी तुम्हारी आवश्यकता नहीं है। मेरी आज्ञा का उल्लंघन करने वाला पुत्र मेरे पास हो या न हो, दोनों समान हैं। तुम यहां से चले जाओ! (यदु जाता है।)

ययाति — पुरु कहां है शर्मिष्ठा?

शर्मिष्ठा — पुरु, द्रुह्यु और अनु पिता वृषपर्वा के यहां ननिहाल गये हैं।

ययाति — पुरु को बुला लो! देवयानी के पुत्र ने मेरी आज्ञा का उल्लंघन किया, देखें, तुम्हारा पुत्र क्या करता है? (विराम) पर नहीं, अभी न

बुलाओ । भले उसे अभी यहीं रहने दो । मुझे शांति चाहिए एकांत चाहिए । शर्मिष्ठा मेरा हाथ पकड़ो, बहुत थक गया हूं । महल के भीतर ले चलो ।

शर्मिष्ठा (जाते हुए) देखिए, संभालिए, सावधानी से पांव रखिए । अरे अरे !

ययाति दीप दब ।

(मेघ गर्जना और बिजली की कड़कड़ाहट)

ययाति यह दरवाजा बन्द कर दो, शर्मिष्ठा ! बिजली की यह तेज जगमगाहट मेरी आंखों में अधिक अंधेरा भर रही है । मेरे अन्तर को विदीर्ण कर रही है । मेघों की यह प्रमत्त गर्जना मुझे अपने उन्मत्त यौवन की याद दिला जाती है । (द्वार बन्द होते ही नेपथ्य में गर्जना) प्रकृति रुद्र होते हुए भी रमणीय लगती है । प्रकृति का ताण्डव मुझे अपने साथ खेलने के लिए निमंत्रण दे रहा है । प्रकृति का यह भीषण संहारक तत्व मेरे जीवन तत्व को आह्वान दे रहा है । मैं आ रहा हूं, मैं आ रहा हूं ! ओ संहार देवी प्रकृति ! मेरा संहार करो, मेरी वृद्धावस्था को अस्त कर मुझे मृत्यु प्रदान करो ।

शर्मिष्ठा ऐसा न कहिए महाराज ।

ययाति अब मैं जीवित नहीं रह सकता, अब जीवित रहने की इच्छा भी नहीं है । जीवन के मोह में यौवन हार बैठा । देवयानी गई, देवयानी के पुत्र गये । न पत्नी मेरी हुई और न पुत्र मेरे हुए ।

शर्मिष्ठा परन्तु शर्मिष्ठा आज भी है । शर्मिष्ठा के पुत्र भी हैं । पुरु को मैंने बुला भेजा है । वह आने ही वाला है ।

ययाति पुरु को शीघ्र बुलाओ !

शर्मिष्ठा लीजिए, यह पुरु आ गया ।

पुरु पिताजी ! प्रणाम करता हूं ।

ययाति आओ पुरु, मेरी अन्तिम आज्ञा पूर्ण करो ।

पुरु आज्ञा दीजिए पिताजी ?

ययाति बेटा पुरु मुझे शाप मुक्त करोगे ?

पुरु जरूर बनूगा पिताजी !
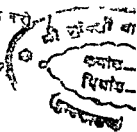
ययाति क्या तुम मेरी यह कुरूप और दुर्बल वृद्धावस्था लोगे ?

पुरु अवश्य लूगा पिताजी !

ययाति क्या तुम अपना उन्नत यौवन मुझे दोगे ?

पुरु दूगा, पिताजी!

ययाति तब तो मेरी यह वृद्धावस्था अपने आप म प्रविष्ठ करो और अपना यौवन मुझे दो ! **(शर्मिष्ठा की हिचकियां)** तुम्हारे यौवन का यथेष्ट उपयोग करने के बाद मे तुम्हारा यौवन लौटा दूगा !

शर्मिष्ठा **(करुण स्वर मे)** पुरु, बेटा, पुरु ओह ! आह ! यह मेरा पुत्र ! बेटा, बेटा यौवन मे वृद्धावस्था । **(हिचकियां लेकर रोती है, ययाति का हर्षोन्माद पूर्ण हास्य)**

ययाति आओ वसत, आओ वर्षा, मेरे यौवन का अभिषेक करो ! शर्मिष्ठा, आओ मेरे पास आओ, मेरे यौवन को देखो, यौवन की काति को देखो ! इस काति मे विहार करने वाले कामदेव को देखो !

शर्मिष्ठा क्षमा कीजिए महाराज !

ययाति शर्मिष्ठा, भयकर वृद्धावस्था, असहायता, निर्बलता चली गई । देखो , मेरे सामने देखो मेरे रोम राम म उल्लसित उन्माद को देखो !

शर्मिष्ठा हे प्रभु ! मैं आपके उन्माद को देखू या पुरु की वृद्धावस्था को ?

ययाति शर्मिष्ठा !

शर्मिष्ठा मुझे नहीं देखना ह ! **(विराम)** मुझे जाने दीजिए !

ययाति कहा शर्मिष्ठा ? प्राप्त अवसर को पीछे न धकेलो । विधि के दिये हुए यौवन का उपभोग करो ।

शर्मिष्ठा उपभोग । इस यौवन का उपभोग । नहीं, नहीं महाराज ! मुझे क्षमा कीजिए ! मैं उस विचारमात्र से काप उठती हू ।

ययाति **(व्यग्य)** पति से अधिक पुत्र प्रिय लगता है क्या ?

शर्मिष्ठा ऐसा न कहिए महाराज, मुझे समझने की कोशिश कीजिए !

ययाति — क्या तुम पुत्र को मिली हुई वृद्धावस्था को बदल लेना चाहती हो ?

शर्मिष्ठा — नहीं, नहीं महाराज । ऐसी बात नहीं है । और अधिक न पूछिए मुझे जाने दीजिए, मुझे भूल जाइए, महाराज ।

ययाति — प्राप्त हुए अवसर को ययाति जाने नहीं देता है । संसार के सुख भोगने के लिए ही मैंने पुनः यौवन प्राप्त किया है । तुम भी इस यौवन की समभागी हो ।

शर्मिष्ठा — ऐसा न कहिए महाराज । मैं इस यौवन की समभागी नहीं हो सकती । मैं इस यौवन का भोग नहीं कर सकती ।

ययाति — (क्रोध में) शर्मिष्ठा ।

शर्मिष्ठा — नहीं महाराज । आप का यह यौवन, पुरु का यौवन है । मेरे पुत्र का यौवन है । मैं पुत्र के यौवन का उपभोग नहीं कर सकती । क्षमा कीजिए क्षमा कीजिए महाराज ।

ययाति — कहाँ चली शर्मिष्ठा ? देवयानी गयी । तुम भी जा रही हो ?

शर्मिष्ठा — मैं आप की ही हूँ महाराज । मेरे लिए आप का त्याग संभव नहीं है । मेरा जीवन तो आप के जीवन की प्रतिच्छवि मात्र है महाराज । मैं आपके चरणों में ही रहूँगी । आपके मुँह से निकले शब्द झेलती हुई पुरु की भीषण वृद्धावस्था को सरल बनाऊँगी ।

ययाति — शर्मिष्ठा, तुम महान हो । मुझे अब पता चला कि संसार का सुख भोगने के लिए मात्र यौवन की ही आवश्यकता नहीं होती । मैं जिस सत्य को समस्त जीवन में नहीं समझ सका उसे तुमने एक क्षण में समझा दिया । तुमने मुझे आज जीवन दृष्टि प्रदान की है ।

शर्मिष्ठा — महाराज, मैं आपको जीवन दृष्टि प्रदान करने वाली महान नहीं हूँ । मैं तो मात्र एक नारी हूँ ।

ययाति — मात्र नारी ? नहीं, नारी तो मानवता के सिर पर शोभित मुकुट है । नहीं नहीं मानवता ही नारी का दूसरा नाम है (विराम) शर्मिष्ठा, मैं कितना अधम हूँ । मानव धर्म भूला पिता धर्म भूला प्रेम का मंगल स्वरूप भूला । बेटा, पुरु । तुम अपना यौवन वापस ले लो । अपनी वृद्धावस्था मुझ में प्रविष्ट करो । तुम्हारा कल्याण हो, बेटा ।

रात

(सुनसान रात का वातावरण । दूर घण्टा घर की घडी ग्यारह बजाती है । फिर झींगुर की आवाज उभरती है । कहीं दूर पर मोटर का हार्न बजता है । आवाज वातावरण मे फलती है और शन शनै लुप्त हो जाती है । थोडी दूर से सडक पर किसी पुरुष के जूतो की आवाज पास आती हुई सुनाई देती है। जूतो की आवाज के साथ ही सुनाई देता है मुह से सीटी बजाने की किंचित बेसुरा स्वर ।)

स्त्री स्वर बाबू जी ।

(जूतो की ध्वनि रुकती है और क्षण भर बाद पुन शुरू होती है ।)

स्त्री स्वर बाबू जी ।

(जूतो की ध्वनि फिर रुकती है—चलने वाला आदमी पीछे घूमता है देखता है उतनी ही स्तब्धता ।)

पुरुष स्वर कौन है ?

स्त्री स्वर : (कोई जवाब नहीं ।) (फेड आउट)

पुरुष कौन है वहां ? (फेड इन)

(स्तब्धता—चूडियो का धीरे से खनकना)

पुरुष : (किंचित तीव्र आवाज मे) ओह ! क्या चाहिए ?

(नजदीक)

(जूतो की आहट । फिर पुरुष के चलने की ध्वनि । चलने में तेजी है ।)

स्त्री स्वर बाबू जी ! (पुरुष के चलने की ध्वनि रुकती नहीं)

स्त्री स्वर बाबू जी ! (चलने की ध्वनि जारी रहती है)

स्त्री (स्त्री का थका हुआ, परन्तु निश्चित स्वर) आपको रुकना ही होगा।

पुरुष (स्वर में किंचित तिरस्कार) क्या ?

स्त्री (स्वर दबा हुआ) इन्सानियत के लिए।

पुरुष (अवरोध) कैसी इन्सानियत ?

स्त्री (जल्दी से) मैं एक स्त्री हूं। बेसहारा ! आपसे विनती करती हूं मेरी बात सुन लीजिए !

पुरुष (निर्विकार निर्लिप्त भाव से) हूं बेसहारा स्त्रियां इस तरह विनती करती हैं ?

स्त्री (अधिक जल्दी से) मैं सिर्फ बेसहारा नहीं हूं मेरी आबरू खतरे में है !

पुरुष (थोड़ी देर रुककर) बरसों पहले जिस खतरे में तेरा परिचय हो चुका होगा उसके लिए आज तमाशा क्या ? (तीक्ष्ण स्वर में) कोठे वाली की कीमत ज्यादा से ज्यादा चार रुपये।

(जूतों की दो-चार कदम चलने की तेज ध्वनि)

स्त्री (एकदम) रुकिए ! कहां जाते हैं ?

(जूतों की आवाज रुकती है फेड इन—)

पुरुष अपने रास्ते। मैं एक शरीफ आदमी हूं !

स्त्री सभ्य आदमी ऐसी गलियों में घूमते हैं ?

पुरुष और इज्जत खतरे में है जिनकी वे बेसहारा अबलाएं क्या ऐसे घने अंधकार में छिपकर बैठती हैं ?

स्त्री समय की बात है।

पुरुष लेकिन वह यह समय नहीं।

(फिर जूतों के चलने की आवाज)

स्त्री (निश्चित स्वर में) नहीं, नहीं जाने दूंगी मैं आपको।

पुरुष (रुक कर अत्यन्त धीमे स्वर मे) क्या करोगी ? (फेड इन)

स्त्री (असहाय स्वर मे) क्या कर सकती हू ? क्या कर सकती हू मैं आपका ?

पुरुष तो फिर धमकी क्या रही हो ?

स्त्री (गिडगिड़ाकर) आप चले जायेंगे, इस डर से । मुझे यू छोडकर मत जाइए ।

पुरुष तू है कौन ?

स्त्री (गड़बड़ो से) मैं कोई नहीं एक स्त्री आपकी बहिन जैसी आपकी ।

पुरुष (डांटकर) चुप । पवित्र रिश्ता को बदनाम मत करो ।

स्त्री मैं भी तो पवित्र हू ।

पुरुष हां ! तो फिर यह गली भी पवित्र है ।

स्त्री क्या न हो ? इसने किसका क्या बिगाडा है ? कभी-कभी यहां पर भी गन्दे घिनौने काम

पुरुष काफी जानती हो इस गली के बारे मे ।

स्त्री हा, इसीलिए यहा से जाना चाहती हू जल्दी भी ।

पुरुष इस गली के दोनो सिरे मेनरोड से मिलते हैं । चली जा ।

स्त्री कहां जाऊ ? कहा जाऊ मैं ? (जरा रुक कर) आप इतने कठोर कैसे हो सकते है ? क्या एक असहाय अबला को ऐसी बस्ती मे छोडकर आप जा सकते है ?

पुरुष बडी आसानी से ।

स्त्री आप भी और मर्दों जैसे ही हैं पत्थर दिल, निदयी

पुरुष कितने मर्द देखे है आज तक ?

स्त्री बहुत । सभी निर्दय और क्रूर पशु ।

पुरुष पशु ?

स्त्री हा, हा पशु ! सभी एक जसे । मेरा बाप शराब के नशे म हर

रात मेरी माँ को पीटता था मैं ! देखा है बचपन में। मेरा खून जम जाता था। माँ चिल्लाती रहती, वह मारता रहता ।

पुरुष बाप ! कितने बाप हैं तेरे ?

स्त्री (बिगड़कर) शरम नहीं आती ऐसा कहते हुए ? तुम आप मुझे उन औरतों जैसी समझ रहे हैं ? क्या ?

(जूतों की आवाज, जैसे पुरुष फिर चल पड़ता है)

स्त्री (रुआसी आवाज में) सुनिए ! मैं सच कहती हूँ, मैं एक सम्भ्रात घर की लड़की हूँ ! शरणपुर मे रहती हूँ। सुजाता है मेरा नाम, सुजाता गेवालिया ।]

पुरुष झूठ ! गाँव से भागी हो शायद ? किसी ने फँसाया होगा या खुद फँस गयी होगी ?

स्त्री झूठ, झूठ है यह सब !

पुरुष फिर यहाँ कैसे आयी ?

स्त्री तकदीर ले आयी !

पुरुष हूँ अ ? क्या मतलब है तुम्हारा ?

स्त्री (रुआसी आवाज में) क्या-क्यों बार-बार मुझे ताने दे रहे हो ? क्या-क्या बिगाड़ा है मैंने आपका ? और कितनी गंदी बातें। कितने भद्दे आरोप ।

पुरुष (विश्वास से) काफ़ी अच्छा अभिनय करती हो ?

(स्त्री रोती है)

पुरुष (उपेक्षापूर्वक) बहुत देर हो गयी है। यह ले पैसे ले, दो रुपये हैं ।

पुरुष और एक ले तीन हुए ।

स्त्री तुम मुझे ऐसी औरत समझते हो ? तुम्हारे शरीर में कीड़े पड़ेंगे ।

पुरुष हूँ, ऐसी गलियों में कोई किसी को यूँ ही रुपया नहीं देता ! बदले में कुछ खैर ठीक है ! (एक निश्वास छोड़कर) तो फिर मैं जाऊँ

स्त्री लेकिन !

पुरुष अगर काफ़ी पैसे बमावर न ले गयी तो क्या तेरे लोग तुझे घर में नहीं घुसने देंगे ? मारेंगे ? या खाना न देंगे ? अ !

स्त्री (विनय के स्वर में) देखिए, मैं सच कहती हू, मैं अच्छे घर की लड़की हू ! आज तक किसी पुरुष के सामने इतनी ढीठ नहीं हुई थी आपके सामने हुई हू। असहाय हू न ! देखिए, कहिए क्या म आपको वेश्या लगती हू ? काठे वाली क्या मैं ! उन औरतों जैसी हू ?

पुरुष (रुक कर) हां, मेरा अदाजा गलत था। दो-तीन नहीं, सात-आठ रुपये कमाई भी देगा तेरे लिए।

स्त्री (अत्यन्त निराश कटु स्वर में) अभी भी तुम्हें विश्वास नहीं होता ?

पुरुष कैसे होगा ? यह अधियारी आधी रात यह बदनाम मोहल्ला और अकेली तू

(दूर से गश्त लगाने वाले सिपाही की जागते रहो की आवाज और डडे के साथ भारी भरकम बूटों की पदचाप गूजती है)

स्त्री (यकायक अत्यन्त भयग्रस्त हो) वह आ रहा है वह वह सिपाही !

पुरुष आने दो।

स्त्री नहीं, नहीं वह मुझे पकडेगा, थाने पर ले जायेगा।

पुरुष कुलीन स्त्री को ?

(गश्त लगाने वाले सिपाही के जूतों और डडा पटकने की ध्वनि करीब आती है।)

स्त्री (जल्दी से) छुपाइए मुझे कहीं छुपाइए !

पुरुष मैं कहा छुपाऊ ?

स्त्री फिर मैं कहा जाऊ ? क्या करू ? वह आ रहा है देखिए !

पुरुष एक कुलीन स्त्री का भय कैसा ?

स्त्री नहीं, नहीं वह वह मुझे !

पुरुष जानता है ?

स्त्री वह मुझे वेश्या समझता है। अभी मिला था। मुझे थाने ले जायेगा।

पुरुष नहीं।

स्त्री ले जायेगा। छुपिए न यहीं पर।

पुरुष मैं ?

स्त्री हाँ, आप पर भी वार होगा उसे। छुपिए।

पुरुष हूँ मुझे उसका कोई भय नहीं। छोड़ मेरा हाथ।

स्त्री मेरे लिए। मेरे लिए छुप जाओ न। आइए उधर अँधेरा है।

(जसे स्त्री उसे खींचकर ले जाती है। तभी सिपाही के बूटों और डंडा पटकने की ध्वनि पास से सुनाई देती है और सुनाई देता है उसका कर्कश स्वर। वह रुककर बेसुरा-सा कोई गीत गुनगुनाता है। फिर गीत रुकता है—सिर्फ एक दो बार डंडा पटकने की ध्वनि—बाद में फिर धीरे-धीरे गुनगुनाता हुआ डंडा पटकता हुआ सिपाही चला जाता है।)

स्त्री (धीरे से) गया।

पुरुष तुम्हारे साथ कोई नहीं आया गाँव से ?

स्त्री (चौंक कर) ज कौन आता साथ में ? बाप पागल है। बड़ा भाई भी चल बसा। माँ बीमार है। जान न्योछावर करने वाला दूसरा कोई नहीं।

पुरुष लेकिन आई क्यों ?

स्त्री नौकरी के लिए। सारे घर का भार मुझ पर ही तो है।

पुरुष शरणपुर में नौकरी नहीं मिलती।

स्त्री मिलती तो यहाँ क्या आती ?

पुरुष रहती कहाँ हो ?

स्त्री किसी दूर के रिश्तेदार के यहाँ।

पुरुष (किंचित कुत्सित स्वर में) शायद वे भी इसी गली में रहते हैं।

स्त्री यहाँ रहते तो इस तरह रास्ते पर खड़ी न मिलती।

पुरुष हाँ, यह भी ठीक है। कहाँ रहते हैं फिर ?

स्त्री उस्मानपुरा में।

पुरुष अच्छा! (तत्परता से) चल पता ... पहुँचा देता हूँ। 12 बज चुके हैं ... टैक्सी ... ले पता क्या है ? (क्षण

(फिर खमोशी) क्यों पते के नाम पर चुप क्यों हो गई ? झूठ बोल रही थी न ?

स्त्री नहीं, नहीं, यह बात नहीं ! पता याद नहीं आ रहा ।

पुरुष वाह ! कितना सच बोलती हो । (तीक्ष्ण स्वर में) अधूरा पता याद करके ही इतने बड़े शहर में आयी हो ... अ ?

स्त्री नहीं, नहीं, लिखा हुआ था ! सामान के साथ वह भी बैग में ही, शायद !

पुरुष (सव्यंग्य) था शायद !

स्त्री हां !

पुरुष (जोर से) अब तो बैग में नहीं रखी थी?

स्त्री (विह्वलता से) क्या तंग करते हो मुझे ? मैं रो पड़ूंगी ।

पुरुष जरूर रोओ । आंसू पोंछने कोई नहीं आयेगा । न मुझ पर कोई असर होगा । समझीं ?

स्त्री दुष्ट !

पुरुष (सधे स्वर में) शायद मूर्ख भी (जरा रुक कर) अच्छा, कौन-सी नौकरी के लिए आयी थी ?

स्त्री मुझे क्या पता यहां कौन-सी नौकरी मिलती है ? कोई न कोई कर ली होगी इसलिए आयी । (दुखी स्वर में) घर में मां बीमार है, इलाज के लिए पास में एक कौड़ी तक नहीं । जिनके यहां ठहरना था उनका पूरा पता मालूम नहीं । पास न पैसे, न सामान । ऐसी हालत में शाम से दर-दर भटक रही हूं । रात होने लगी, तो आने जाने वाला हर कोई आंखें फाड़ कर देखता, धक्का देकर जाता, इशारे करता, पीछा करने लगता । घबरा गयी ! एक-एक से किनारा करती हुई यहां तक आयी । आगे क्या करूं ? सोच नहीं सकती । दिन भर की भाग दौड़ से, भूख से, दिमाग थक चुका था । डर के मारे दिल की हालत बुरी थी । घर की और खुद की चिन्ता से कलेजा मुंह को आने लगा और आप मिल गये (आह भर कर) पिताजी की लाडली थी मैं । वे कहते, रामू की अपेक्षा बिटिया ही घर का नाम रौशन करेगी ।

पुरुष राम् ?

स्त्री राम् मेरा बडा भाई था। (कातर स्वर में) अभी मरा न्यूमोनिया से। मुझे याद है, खटिया पर पडा हुआ अंतिम सांसें गिन रहा था। बहुत कष्ट था उसे। और वह डाक्टर कहता था, काफी बिल बाकी है तुम लोगों का नये इंजेक्शन के पैसे नगद दोगे तो अभी लगा देता हूं, शायद बच जायेगा वह।

पुरुष फिर ?

स्त्री (उदास जड स्वर में) फिर क्या ? राम् मर गया, इंजेक्शन नहीं लगवा सके। कहा से लाते इतने पैसे। (दीर्घ निश्वास छोडकर) गरीबों की जीत कभी भी हुई नहीं होती इस दुनिया में।

(स्तब्धता। झींगरों की झकार। दूर पर कुत्तों के भौंकने की ध्वनि)

स्त्री आप कुछ कहते क्यों नहीं ?

पुरुष अ (रुक कर) तेरे स्वर्गवासी, काल्पनिक भाई की स्मृति में एक मिनट मौन धारण कर रहा हूं।

स्त्री (बिगड कर) जाओ यहां से, जाओ ! जो होगा मेरा, मैं देख लूंगी।

पुरुष फिर वापस तो नहीं बुलाओगी ?

स्त्री नहीं, बिल्कुल नहीं। तुम्हारा आश्रय मागने की अपेक्षा दूसरा कोई भी भयंकर खतरा उठाना अच्छा है। (चिढ़कर) नीच ! आदमी की मृत्यु भी तुम्हारे लिए मजाक है !

पुरुष . मेरे लिए आदमी अपने आप में मजाक है।

स्त्री फिर आप कौन हैं ?

पुरुष यह सोचना मेरा काम नहीं, यह तू तय कर या औरों को तय करने दे। सभी के विचार में अगर मैं इंसान ठहरा, तो मुझे शरम लगेगी। आश्चर्य भी होगा। (रुक कर) नहीं, मैं इंसान नहीं हो सकता। अपने अंदर का इंसान मारने के लिए मुझे काफी कोशिशें करनी पडी हैं।

स्त्री . मतलब ?

पुरुष मतलब ? कुछ नहीं कुछ नहीं, बेमतलब बकने की आदत है मुझे। (रुककर) मुझे रात का नशा चढ़ता है ।

स्त्री : कितना भयंकर बोलते हो तुम

पुरुष बर्ताव भी वैसा ही करता हू। मेरे पीछे आने से कोई फायदा नहीं समझ गयी होगी। धधे के लिए किसी और को देखो ।

स्त्री दुष्ट ! तुम से बुरा और कौन मिलेगा मुझे ? इस भयकर रात्रि मे तुमसे अधिक घिनौना कौन हो सकता है ?

पुरुष तूने मेरी जो ये प्रशसा की है, उसे मैं याद रखूगा। (कुछ देर बाद स्वर बदलता हुआ) अच्छा, सुनो ! इतनी निंदा करने के बावजूद मुझ से डर नहीं लगता तुझे ? प्रतिशोधवश मैंने कुछ किया तो ?

स्त्री : (व्याकुल–उतरता हुआ स्वर) करोगे। यह भी करोगे ।

(दूर से कव्वाली या मुजरे का स्वर उभर कर मद्धिम पड जाता है)

पुरुष (तनिक घृणा से) इतनी कुलीन हो तुम ?

स्त्री खबरदार, कुछ कहा तो ! मैंने तुमसे जाने को कहा है। जाओ तुम !

पुरुष वाह ! बोल तो ऐसे रही हो, जैसे इस गली की मालकिन हो ।]

स्त्री कम-से-कम अपनी मालकिन तो जरूर हू। बिना कारण किसी के अशिष्ट और झूठे आरोप सुनने की कोई जरूरत नहीं मुझे। यदि तुम्हें इस बात पर विश्वास नहीं है कि मैं निष्कलंक हू, अच्छे आचरण की हू तो दूर हो जाओ मेरी आंखा के सामने से ! जाओ !

(दूर से किसी स्त्री की भयावह चीखें सुनाई देती है और दो चार पुरुषो की धमकी भरी आवाजें। एक साथ स्त्री का स्वर घुटता है, टूटता है। फिर झींगरों की झनकार के साथ निस्तब्धता छा जाती है)

स्त्री . (डरकर) ओह !

पुरुष घबरा गयीं ?

स्त्री : (अस्पष्ट) हाँ न .नहीं !

पुरुष (सहजता से) चल मेरे साथ !

स्त्री अ वहा ?

पुरुष मेरे घर, और कहा ? (जैसे समझाते हुए) मेरा एक घर भी है ।

स्त्री लेकिन ?

पुरुष क्या फिर गालियां देनी हैं ?

स्त्री नहीं लेकिन मैं मुझे ।

पुरुष सोच मत । मै सब कुछ सोच सकता हू, सोचा भी है । विश्वास रख मुझ पर । (जरा रुक कर) लेकिन सिर्फ एक रात के लिए आसरा दूगा । आज की ही रात । समझी ! यहां रास्ते मे, घर पर, कहीं भी, मुझसे बेमतलब सवाल मत पूछना । मुझे क्रोध आता है प्रश्नो पर । जितना समझ सको, समझ लो । उसके परे जाकर और कुछ जानने की चेष्टा की तो महगी पडेगी । आधी रात मे ही उठाकर घर से बाहर फेंक दूगा ।

स्त्री ठीक है ! नहीं बालूगी !

पुरुष चल ला हाथ ।

स्त्री अ

पुरुष ठीक है ! (जसे चलते हुए)) तुम औरते पुरुष का हाथ पकडने के बजाय उसके पैर पकडने की ज्यादा आदी होती हो ।

(घिनौनी बस्ती का वातावरण, गाने की और कुत्तो के भौंकने की आवाज उभरकर फेड आउट अतराल के बाद ताला खोलकर दरवाजा खोलने का आभास ।)

पुरुष ठहर ! बत्ती जलाता हू । (स्विच आन करने की आवाज) ह यह ह मेरा घर ! यहीं पर रहता हू । कभी-कभी मैं इसे बांबी कहता हू । बाबी जानती हो न, किसे कहते हैं ? साप का घर । तू भी इसे बाबी कह सकती है । देखा कितना एकांत और शात ह मेरा घर । बाहर की हवा इसे छूती तक नहीं । वैसे बाहरी दुनिया मे रखा क्या है ? अरे यू दरवाजे पर क्यो खडी है ? आ अन्दर आ ! इसी बाबी मे तुझे रात गुजारनी है (रूखी आवाज में) मेरे साथ । (फेड आउट फेड इन) यह रहा दूसरा कमरा । तुम

आज यहां सोओगी इस खाट पर। मैं हमेशा यहीं सोता हूं। आज बाहर सोऊंगा। और उधर वह रसोई है। यहां कभी खाना नहीं बनता, सिर्फ कॉफी बनती है। इसलिए मैं उसे कॉफी हाउस कहता हूं। (रुककर) कॉफी पीती हो या नहीं ?

स्त्री : हां।

पुरुष भूख लगी है ?

स्त्री हां।

पुरुष उधर चारपाई के नीचे टिन में दो एक डबल रोटी के स्लाइस पड़े होंगे, निकाल कर खा लें, मैं कॉफी बनाता हूं, **(फेड आउट)**

(स्टोव के जलने की आवाज उभरती है)

स्त्री **(फेड इन)** तुम यहां अकेले रहते हो ?

पुरुष आदमियों से ऊब गया हूं, इसलिए अकेला रहता हूं। सुखी हूं। आई एम हैप्पी।

स्त्री मुझे विश्वास नहीं होता।

पुरुष (कड़ाई से) तू मूर्ख है। मैंने पहले भी कहा था। अक्ल कितनी है तेरी ? क्या कीमत है उसकी। मैं सचमुच सुखी हूं। तेरे आने से आज मेरे इस एकांत सुख में भी गड़बड़ी पैदा हो गयी। मुझे जूते उतारने पड़े। कपड़े बदलने पड़े। कॉफी तैयार करनी पड़ी।

स्त्री तो फिर मैं जाती हूं।

पुरुष क्या मतलब ?

स्त्री तुम्हारे सुख में दखल देने की इच्छा नहीं मेरी।

पुरुष ढोंग करना खूब जानती हो ?

स्त्री क्या ढोंग किया मैंने ?

पुरुष जाने की बात जो कर रही हो।

स्त्री क्या रहूं यहां पर ? मेरे आने से तुम्हारे सुख में कमी जो आ रही है।

पुरुष डैम इट। कौन कहता है, मेरा हर शब्द कुछ अलग अर्थ रखता है ? इसीलिए मैं कम बोलता हूं। किस के साथ कैसा बर्ताव करना

चाहिए, यह भी मेरी समझ में नहीं आता (प्याले की आवाज़) ले कॉफी ले ! ले मूर्ख लड़की !

स्त्री बार बार मुझे मूर्ख क्या कहते हो ?

पुरुष तो फिर क्या हो तुम ? (विराम) ठीक है, नहीं कहूगा ! इस वक्त सियानी मालूम होती हो। रात में सभी औरतें समझदार बन जाती हैं शायद ! (जरा रुककर) कैसी है कॉफी ?

स्त्री अच्छी है ! किस से सीखा है कॉफी बनाना ?

पुरुष (कड़ाई से) फिर सवाल पूछा ? मैंने क्या कहा था ?

स्त्री अब नहीं पूछूगी ?

पुरुष ठीक है ! मुझे सवाल पसन्द नहीं।

(फेड आउट फेड इन)

स्त्री जगह अच्छी सजायी है !

पुरुष थैंक्स ! बकवास बन्द कर और सो जा ! डेढ़ बज रहा है !

स्त्री नींद नहीं आती

पुरुष कैसे आयेगी ? बिजिनेस का यही समय होता है न ? (जरा रुककर) कुछ कहती क्या नहीं ?

स्त्री (निर्लिप्त भाव से) क्या फायदा है कहने का ? अंधे विश्वास के आगे कौन कितनी देर तक सिर फोड़े। लो, मुझे नींद आ रही है ! सुबह उठ कर चली जाऊगी।

पुरुष (जरा पिघल कर) ऊब गयी हो मुझ से ?

स्त्री तुमसे नहीं, तुम्हारी जबान से। लगता है, विधाता ने जबान की जगह तुम्हारे मुह में पैनी छुरी रख दी है ! दूसरे की भावनाओं की जरा भी परवाह किये बिना बोलते ही जा रहे हो—मशीन की तरह ! (जरा रुककर) सच है न ?

पुरुष अ ! (जसे सचेत होकर) फिर सवाल ?

स्त्री गलती हुई। माफ कीजिए !

पुरुष (जरा नर्मी से) यह सवाल क्या पूछा तूने ?

स्त्री — यूं ही !

पुरुष — यूं ही ! और... और कुछ नहीं था मन में ?

स्त्री — नहीं... यूं तो... !

पुरुष — नहीं... (जरा रुक कर) मैं रहस्यमय लगता हूं न ?

स्त्री — हां, लगते तो हो !

पुरुष — मेरा रहस्य जानना नहीं चाहती ? (जरा गर्मी से) चल, सो जा (एकदम चिल्लाकर) बैठ, बैठ यहां पर, सुन, मैं क्या चाहता हूं ? तू... तू सुनने के लायक तो नहीं, लेकिन कहना होगा—मन की शांति के लिए कहना होगा। तुझे सुनाना है, इसलिए नहीं, बल्कि मुझे कहना है, इसलिए कहूंगा। (जरा रुक कर) आदमी बुरा क्यों बनता है ? मैंने उसे जितना प्यार किया था, उतना ही उसने भी किया। शायद न भी किया हो... एक दिन उसने कहा, "हम शादी करेंगे।" मैं भी चाहता था। लेकिन जिन्दगी डांवाडोल थी, स्थिरता नहीं थी। जब तक स्थिरता प्राप्त न हो, मैं शादी करना नहीं चाहता था। मेरे अरमान, मेरी महत्वाकांक्षाएं, सारी अधूरी रह जातीं। मैं कुछ बनना चाहता था। वह इन बातों को न समझ सकी। मैंने काफी समझाया... मैं विदेश जाऊंगा, वहां से लौटकर हम विवाह करेंगे। तब तक मैं कुछ कमा लूंगा। वह मानती नहीं थी। अनिश्चित अवस्था में ही शादी करना चाहती थी। मैंने बार-बार सोचा क्या करूं। दुनियादारी की और बातों से उसकी इच्छा अधिक महत्वपूर्ण है। पर मेरे मन को उसकी बात जंची नहीं। खैर, इंग्लैण्ड जाने के पहले मैंने उसे लिखा था...

स्त्री — क्या लिखा था ?

पुरुष — लिखा था—मेरा प्यार सच्चा और एकनिष्ठ है। मैं जरूर वापस आऊंगा। लिखा था, अपने भावी संसार के हित के लिए ही मैं अभी शादी करना नहीं चाहता। मैं वापस आऊंगा... अकेला, केवल तुम्हारा बनकर। बदलूंगा नहीं ! मेरे लिए रुकना।

तुम मेरे जिस रूप से प्यार करती हो, उसी रूप को लेकर आऊंगा। और भी बहुत कुछ लिखा था।

स्त्री लेकिन क्या वह नहीं रुकी ?

पुरुष (प्रयास से) हाँ, नहीं रुकी ! मैं वापस आया, तब मैं वैसा ही था पहले जैसा। और उसका विवाह हो चुका था। सिर्फ विवाह ही नहीं हुआ था उसका, वह सुखी भी थी—सुखी थी—बहुत-बहुत खुश थी। बच्चे की मां बनने वाली थी। शायद मुझसे बदला लेना था, इसलिए मुझे रिसीव करने आई थी। (एकाएक बात अधूरी छोड़कर) बस ! जाओ, जा तू ! जा !

स्त्री लेकिन आप ?

पुरुष (चिल्ला कर) मैंने तुम्हें जाने के लिए कहा न ? जा यहां से ! कृपा के वर्ना ! जाओ जा

(बिजली के स्विच की आवाज़। दरवाजा धीरे बन्द होने की आवाज़। संगीत द्वारा रात के बीतने का आभास। फिर कहीं दूर पर घण्टाघर की घण्टी छह बजाती है। पक्षियों का अस्पष्ट कलरव। किसी की धीमी धीमी आहट दरवाजा खोलने की अस्पष्ट-सी ध्वनि।)

पुरुष (चौंककर) अ कौन ? (जरा रुक कर) ओह तुम ?

स्त्री हां ! अब मैं जा रही हूं।

पुरुष क्या बगैर चाय कॉफी पिये ही जाओगी ? अतिथि सत्कार का इस तरह का अन्त शोभा नहीं देता। चल, कॉफी बना देता हूं। मेहमान के बारे में अत्यन्त दक्ष आदमी हूं मैं।

स्त्री (निर्णायक स्वर में) नहीं !

पुरुष मतलब ? मैं क्या कह रहा हूं ? मुझे-मुझे अपमानित कर रही हो ?

स्त्री सचमुच मुझे कॉफी नहीं चाहिए ! मुझे देर हो रही है।

पुरुष अभी तो सिर्फ छह बजे हैं।

स्त्री (शांत स्वर में) हाँ, लेकिन मुझे वापस जाना है—चकले में ?

पुरुष (तिलमिलाकर) ओह ! मेरी ही बातें मुझे सुना रही हो ? क्यों याद दिलाती हो वह भयंकर गंदी घिनौनी बातें ?

स्त्री (वैसे ही शांत स्वर में) मैं सच कहती हूं, मुझे काठे पर जाना ही होगा ! बहुत देर हो गयी। वे मारेंगे, मुझे पीटेंगे।

पुरुष (तिलमिलाता हुआ स्वर) आई थिंक, आई मस्ट अपालोजाइज फार द ! मैंने गलत समझा तुम्हें। मेरी आंखों पर असभ्यता का, अनैतिकता का पर्दा चढ़ा हुआ था कल !

स्त्री क्या किया मैंने ?

पुरुष सुजाता। तुम एक कुलीन सुशील और सभ्रांत घर की लड़की हो ? समझदार हो ! बहुत उदार अंतःकरण है तुम्हारा। अपार सहानुभूति से भरा हुआ। तुम्हारा पवित्र ।

स्त्री मैं अपवित्र हूं वेश्या हूं मैं

पुरुष (चिल्लाकर) सुजाता, फिर इस शब्द का उच्चारण मत करना।

स्त्री विश्वास नहीं होता है ? तो जाने दीजिए [illegible]

पुरुष (जरा रुककर) नींद कैसी आई ? [illegible]

स्त्री अच्छी !

पुरुष घर जैसी ?

स्त्री घर पर नींद कहां, बिजिनेस के समय [illegible]

पुरुष (उछल कर) नहीं नहीं दूंगा तुझे कॉफी ! जा यहां से तू, फौरन चली जा यहां से। नोच-नोच कर मेरे टुकड़े करना चाहती है ? बार-बार डंक मार रही है। रहा नहीं जाता मुझसे ? मेरे अपराध को क्षमा कर देने वाला दिल नहीं तुम्हारे पास। बार-बार कल-रात की याद दिला रही हो, मैं पागल हो जाता हूं रात में रात में पागल हो जाता हूं। जो जबान पर आता है, बोल जाता हूं। लेकिन दिन में ठीक रहता हूं मैं, इंसान जैसा ।

स्त्री (विनय से) म सच कहती हूं, मैंने आपको भाई मेरे लिए कितनी तकलीफ उठा रहे हैं आप। दुःख होता है मुझे। मेरी इतनी हैसियत नहीं कि आप जैसे ओहदेदार, अमीर और खानदानी

आदमी को कष्ट दूं ! इतना मेरा अधिकार भी नहीं। मेरा सम्बन्ध बहुत निचले दर्जे के लोगों के साथ है। गलती से आपसे मुलाकात हो गयी। आपका साथ मिला थोड़ी देर के लिए। इस मकान में रात भर आसरा दिया मुझे। आपके उपकार, अनन्त उपकार, कभी नहीं भूलूंगी, कभी नहीं। (रुक कर) जाती हूं। मुझे जाना ही होगा। देखिए, खुद को दुखी मत करिए ! आप एकदम से जैसी मुझे समझने लग गये, वैसी कुलीन निष्पाप मैं नहीं हूं। सौगन्ध खाती हूं। आप मुझे जैसी कुलीन निष्कलंक समझ रहे हैं, मैं वैसी नहीं हूं। नहीं हूं। सामान्य वेश्या हूं, नहीं—नहीं धंधे-वाली वेश्या। कल रात आपको फसाने का प्रयत्न कर रही थी। हमारे धंधे का ही एक अंग है यह। करना ही पड़ता है। सौगन्ध शरीर के नस-नस में रहती है हमारे। तुम्हें कल रात विश्वास नहीं हो रहा था। सच कहती हूं वहुत अच्छा लग रहा था ! सच कहती हूं, बहुत अच्छा। (जरा रुककर) भूल जाओ मुझे, भूल जाओ। तो जाऊं मैं ?

पुरुष (भर्राई हुई आवाज में) तुम्हारी मर्जी।

स्त्री कॉफी नहीं पिलाओगे ?

पुरुष नहीं, अब कुछ करने की इच्छा नहीं मरी।

स्त्री तो फिर जाती हूं।

पुरुष (जरा देर बाद) जाते जाते रुक क्या गयी ?

स्त्री तुम्हारी आंखों में आंसू ?

पुरुष नहीं, नहीं, आंख में कुछ गिर गया है शायद।

स्त्री हां, मेरे पांव भी नहीं उठते !

पुरुष (जरा रुक कर) चली जा तू।

स्त्री (निर्जीव यांत्रिक स्वर) जाती हूं।

पुरुष जा, वापस मत आना। आने को जी चाहे, तो भी मत आना। हमेशा के लिए चली जा। भला मुझे तुम्हें रोकने का क्या हक है ? मैं बुरा हूं, स्वार्थी, पापी, नीच, असभ्य हूं। और तुम

सभी औरतें क्रूर हो, क्रूर (स्वर बदल कर) सुजाता क्या, फिर कभी ?

स्त्री (संयत स्वर मे) फिर कभी नहीं मिलेंगे हम । भेंट होगी तो दूसरे वातावरण में। मै तब तुम्हें पहचानूगी भी नहीं ।

पुरुष (आवेग से) तो फिर रात भर यहां रही क्या ? मुझे मिली क्या ? यहां रही क्यों ? क्या ?

स्त्री गलती हुई। थोडा बहुत विजिनस होगा, ऐसी आशा थी

पुरुष (आवेग से) सुजाता !

स्त्री मुझे नाम से बार-बार मत पुकारिए। जख्म हरे हो जाते हैं ! खून तो सारा-का-सारा कब का बह चुका है सिर्फ क्षण रहा है उसे वैसा ही रहने दीजिए। (जरा रुक कर) अच्छा, नमस्कार ! (सिसकियां)

मूल मराठी विजय तेंडुलकर
रूपांतरकार : अमन शिंदे

प्रेम (देखकर) ओहो, यह तो बहुत बुरी बात हुई ! अच्छा सुन, नौकर को जाकर कह, चाय की एक प्याली मुझे दे जाए ।

विमला अच्छा भैया ! (जाती है)

प्रेम (आवाज देते हुए) मोहिनी !

मोहिनी (दूर से आती हुई) जी आपने बुलाया था ?

प्रेम हां ! देखो, तुम्हारे स्वेटर को कीड़े खा गये ! यह तुम क्या बनाती रहीं हो ? मोहिनी, तुम कितना प्यारा गाया करती थीं ? तुम्हें तो सब कुछ भूल गया । स्वेटर बनाने में बेकार हो अपना समय नष्ट करती रहीं ।

मोहिनी जो कुछ बनाया था, उसे तो कीड़े खा गये ।

प्रेम तू कितनी पगली है ! यह स्वेटर ?

मोहिनी मैंने सोचा था, माता जी को दे दूंगी ।

प्रेम हां, नयी बेबी के काम आ जाता !

मोहिनी जिस वक्त यह बड़ी खुशी हुई थी, उसी वक्त मैंने यह स्वेटर बनाया था ।

प्रेम (छेड़ते हुए) और फिर तुम्हें यह स्वेटर इतना अच्छा लगा कि तुमने चुपके से इसे अन्दर रख लिया । अपने मुन्ने ?

मोहिनी प्रेम !

प्रेम इसमें शर्म की कौन सी बात है, हर चिड़िया बच्चे के लिए अपने घोसले को ऐसा सवारती है, बनाती है कि उसमें से फूलों की सी खुशबू आनी शुरू हो जाये ।

मोहिनी और कोई चिड़िया ऐसी भी होती है कि जिसका घोसला तो बन जाता है लेकिन

प्रेम और उसको घोसले का सूनापन खाने को दौड़ता है । उसका जी चाहता है कपड़े फाड़ कर कहीं भाग जाये । और हां, आजकल तुम्हारे सिर दर्द का क्या हाल है ?

मोहिनी जिस दिन से माता जी अस्पताल गयीं हैं दौरा तो नहीं पड़ा ? हां कल खरगोश के बच्चों को देख कर चक्कर आने शुरू हो गये ।

प्रेम ' तो फिर मेरा अनुमान ठीक है। मा जी का पेट देखकर ही तुम्हे सिर दर्द हो जाता था ।

मोहिनी पेट तो आया का भी बढा हुआ है और हमेशा बढा ही रहता है ।

प्रेम उसकी और बात है । आया के बच्चा का शोर तो तुम्हें नहीं सुनना पडता और फिर आया बच्चा पैदा करने के लिए बच्चा थोडे ही जनती है । वह तो बच्चा जनती है, ताकि चार पैसे कमा सके ।

(दूर खाने के कमरे मे बच्चो का शोर ऊचा हो जाता है)

मोहिनी मै तो हैरान ही होती रहती हू, कैसे कोई मा अपने बच्चे के मुह से छीन कर अपना दूध किसी और को पिला सकती है ।

प्रेम आया के लिए यह रोजी का साधन है । हमारे घर मे यह पाचवा बच्चा होगा, जिसे वह दूध पिलायेगी ।

मोहिनी मै तो सोचती हू, पहले पति के मरने के बाद उसने जल्दी-जल्दी ब्याह भी इसीलिए किया था कि अगर कहीं उसका दूध न हुआ, तो उसकी नौकरी छट जायेगी ।

प्रेम यह तरीका अच्छा है । उधर माता जी को दूध की आवश्यकता होती है, इधर आया का दूध तैयार हो जाता है ।

मोहिनी इस बार जरा पिछड गयी है ।

प्रेम दूध के लिए ही तो इसका इतना ख्याल रखा जाता है। इसे अच्छे से-अच्छा खाने को दिया जाता है। दूध, बादाम और फल, धोबी के धुले हुए कपडे, नहाने के लिए गरम पानी ।

मोहिनी पर अपनी कोख के जाये को वह गोद मे नहीं ले सकती । अपने बच्चे को मा के होठों से चूम नहीं सकती ।

प्रेम : नौकरी आखिर नौकरी है। इसी की तो इसको तनख्वाह मिलती है ।

मोहिनी ओह खाने के कमरे म बच्चों का शोर कितना बढ गया है !

प्रेम -कौन इनसे माथापच्ची करे ।

मोहिनी — मैं सोचती हूं, हर साल, हर दूसरे साल बच्चे पैदा करते किसी का पेट नहीं फट जाता।

प्रेम — दरअसल माँ जी को मेरे बाद एक और बेटे की लालसा थी और इसी लालसा में आठ बेटियां आ गयीं। एक के बाद एक आती रहीं और हर बार, उन्हें जैसे पक्का विश्वास होता था, कि अगली बार अवश्य बेटा होगा।

मोहिनी — क्या एक बेटा काफ़ी नहीं ?

प्रेम — (व्यंग्य से) बाप की जायदाद को बरबाद करने के लिए बेटा आवश्यक समझा जाता है और जितने बेटे अधिक हों, बर्बादी उतनी जल्दी होती है। बेटियां तो अपने-अपने घर चली जाती हैं।

(बच्चों का शोर और बढ़ता जाता है)

मोहिनी — हाय! यह बच्चों का शोर, मेरा तो सिर फटने लगा है।

आया — (आते हुए) साहब, चाय! (प्याले की आवाज़)

प्रेम — लाओ आया, सुबह सवेरे यह बच्चों ने क्या हुल्लड़ मचा रक्खा है?

आया — खा रहे हैं, खेल रहे हैं, बातें कर रहे हैं, हँस रहे हैं

प्रेम — तुम उनको जा कर समझाओ, आया! बीबी का सिर दर्द हो रहा है।

आया — छोटे साहब, बीबी के सिर दर्द का तो कोई इलाज होना चाहिए! (चली जाती है)

प्रेम — अभी अभी तो तुम कह रही थीं कि दर्द नहीं है।

मोहिनी — बच्चों का इस तरह शोर सुन कर पहले मेरे मुंह का स्वाद फीका फीका होता है। फिर मेरा दिल कच्चा होने लगता है। फिर मुझे चक्कर आने शुरू होते हैं। चक्करों के साथ हल्का-हल्का दर्द शुरू हो जाता है। जैसे-जैसे शोर बढ़ता है, चक्कर तेज़ होते जाते हैं। चक्कर जैसे जैसे तेज होते-जाते हैं, सिर दर्द और ज्यादा बढ़ता जाता है। मुझे यों लगता है जैसे मेरे शरीर पर चींटियां चल रही हैं।

(बच्चा का शोर और बढ़ जाता है)

प्रेम (ऊंचे स्वर में) रजनी, माला, मुन्नी विमला, कमला, कान्ता, शान्ता, यह शोर बन्द होगा कि नहीं ?

(बच्चों का शोर एकदम बन्द हो जाता है)

मोहिनी और जब शोर इस तरह एकदम बन्द हो जाता है, तो मुझे लगता है जैसे मैं किसी कुए मे डूबती जा रही हू ।

प्रेम जब बच्चा का शोर होता है तुम्हें चक्कर आने लगते है । जब शोर नहीं होता, तो तुम्हारा दिल डूबने लगता है ।

मोहिनी यही तो मुसीबत है ।

विमला (तेज तेज आती है) भैया, भैया, माया को सख्त पेट दर्द हो रहा है ! वह तो रसोई में ही लेट गई है। शान्ता बहन ने कहा है "उसे अस्पताल ले जाना होगा ।"

प्रेम अच्छा मोहिनी, मै अभी जाता हू । (जाता है)

विमला भाभी, आपका क्या हुआ है ? आपको सिरदर्द है ?

मोहिनी हा विमला, मुझे सख्त सिरदर्द है ! मेरा सिर जैसे फटने लगा हो ।

विमला लाओ भाभी, मैं तुम्हारा सिर दबा दू ! तुम जरा कुर्सी पर बैठ जाओ

मोहिनी (कुछ देर बाद) धीरे धीरे विमला । हाय, कैसी टीसें उठ रही है !

(कार के स्टार्ट होने और जाने की आवाज)

विमला भैया शायद माया को मोटर मे डाल कर ले गये है । अच्छी भली वह टोस्ट सेंक रही थी । मैं स्वय रसोई म थी । खडे-खडे उसको दर्द हुआ । वह बैठ गयी और फिर वहीं-की-वहीं लेट गयी ।

मोहिनी हाय, मुझे चक्कर आ रहे है !

विमला भैया माया को छोड मा जी पिताजी तो कर्मी के गये हुए

मोहिनी ओह ! मुझे सख्त चर्द,

विमला भाभी, यह नई बच्ची जो आई है न, मैंने उसका नाम चुहिया रखा है! छोटा-सा सिर, तिनके जैसी टांगे, एक आंख इधर देखती है एक आंख उधर देखती है। बाकी बच्चे अस्पताल मे लाल-लाल, गोल-गोल, गोरे-गोरे, जैसे मक्खन के पेडे हो और यह हमारी बेबी जैसे काली जाम हो।

(दूर बच्चो का शोर फिर बढ़ जाता)

मोहिनी हाय राम, मुझे सख्त चक्कर आ रहे है!

विमला कितना शोर कर रहे है ये लोग। मैं जा कर इन्हें चुप कराती हू।

(जाती है। बच्चो का शोर सुनाई देता रहता है)

मोहिनी (पागलो की तरह प्रलाप करते हुए) मारे जा रहे है, मारे जा रहे है। नोच-नोच कर मेरा मांस खा रहे है। मेरा दम घुट रहा है। अरे मेरी छाती को क्या नोचते हो! हाय मैं कैसी दबी जा रही हू! मेरी टांगो को क्या जकड लिया है। मेरी बांहो को क्या पकड लिया है। मुझे प्यास लगी है और सब घडे खाली पडे हुए है। यह पानी कौन पी जाता है, जब देखो घडे खाली, जब देखो बरतन खाली। मुझे प्यास लगी है। (चिल्लाकर) पानी लाओ! मैं गीले उपले की तरह सुलग रही हू।

शाता (पकड कर सहमी हुई) भाभी, भाभी!

मोहिनी (अपने आप) ठण्डी चाय ठण्डी चाय! मेरी चाय ठण्डी हो गयी है। बादलो मे से एक बूद नहीं फटती। आखो मे से आसू बहते रहते है। आसू गरम है, चाय ठण्डी है। ठण्डी चाय, ठण्डी चाय, ले जाओ यह ठण्डी चाय!

(चाय के बरतनो के गिरने की आवाज)

(चीख कर)) तोड दो, सब कुछ तोड दो

(कहती हुई जाती है और फिर जोर से दरवाजा बन्द करने की आवाज आती है)

शाता भाभी, मोहिनी भाभी!

काता (आती हुई) क्या हुआ, शाता?

कमला (आती हुई) क्या हुआ, शांता बहन ?

पिता (आते हुए) क्या, क्या हुआ लड़किया !

विमला आप आ गये पिताजी ?

पिता वह कहां है ?

शांता मोहिनी भाभी पहले इस बरामदे में खड़ी थीं। आप से बातें करती रहीं। फिर उन्होंने चाय के बरतन उठा कर फर्श पर पटक दिये और फिर रोती-चिल्लाती हुई अपने कमरे में दौड़ गयीं और अन्दर से उन्होंने चिटखनी लगा ली।

पिता तुम्हारी मां का ना लेकर अभी डाक्टर आता है। शांता, तुम दौड़ कर डाक्टर को बुला लो। कहीं चले न जाएं ?

शांता अच्छा पिताजी ! (जाती है)

पिता विमला, तुम मां के पास जाओ ! मोहिनी अन्दर कमरे में क्या कर रही है ? शांता जरा देखो तो ! चलो मैं भी आता हूं !

(फेड आउट—फेड इन)

शांता अन्दर से रोने की आवाज आ रही है।

पिता (दरवाजा खटखटाते हुए), मोहिनी बेटी, दरवाजा खोल दो ! देखो तुम्हारी माताजी अस्पताल से समझदार होकर आ गयी हैं !

शांता भाभी, दरवाजा खोल दो !

डॉक्टर (आते हुए) क्या, क्या बात है ?

पिता अच्छा हुआ, डाक्टर साहब आप आ गये ! मोहिनी ने अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया है। रोती जा रही है, रोती जा रही है और दरवाजा नहीं खोलती।

शांता पहले उन्होंने यह बरतन तोड़े। उससे पहले अपने आप से बातें करती रहीं और फिर घबरा कर चिल्लाती हुई अन्दर अपने कमरे में दौड़ गयीं।

डॉक्टर शांता, तुम जाओ माताजी को तुम्हारी आवश्यकता है !

माता — अच्छा डाक्टर साहब ! (माता जाती है)

डॉक्टर — मैंने कई बार सोचा है आपको कहूं । इस लड़की की आंखों में मुझे एक अजीब-सी वीरानगी दिखायी देती रही है पिछले कुछ महीने से ।

पिता — इसका कारण ?

डॉक्टर — कारण तो शायद मैं इतनी जल्दी न बता सकूं, पर मैं सोचता हूं कि इस लड़की को अब बच्चा हो जाना चाहिए । इस तरह इसका दिल बहला रहेगा ।

पिता — अगर दिल ही बहलाना है तो घर में बच्चों की तो कमी नहीं । खैर आप जरा मोहिनी को देखिए ! शायद आपके कहने से दरवाजा खोल दे ।

डॉक्टर — मोहिनी, दरवाजा खोल दो !

(दरवाजा खटखटाता है)

पिता — (दरवाजा खटखटाते हुए) मोहिनी बेटी, दरवाजा खोल दो !

डॉक्टर — प्रेम कहां है ?

पिता — शायद कहीं बाहर गया है ?

डॉक्टर — (फिर दरवाजा खटखटाते हुए) मोहिनी, दरवाजा खोल दो !

पिता — दरवाजा खोल दो, मोहिनी बेटी !

माता — (आती हुई) क्या हुआ है मोहिनी को ?

पिता — अरी भाग[illegible] क्यों चली आई इस हालत में ?

माता — इच्छा मुझ [illegible] हो जाता ! चार कदम चली कि चक्कर आने शुरू हो गये ।

पिता — यहां कुर्सी पर बैठ जाओ !

डॉक्टर — मोहिनी, दरवाजा खोल दो !

पिता — दरवाजा खोल दे बेटी, डाक्टर साहब आये हैं !

माता — मोहिनी बेटी, दरवाजा क्यों तुमने बन्द कर लिया है ? देखो तो नमी बेबी घर आई है !

कमला (आती हुई) क्या हुआ, शांता बहन ?

पिता (आते हुए) क्या, अरी लड़कियो !

विमला आप आ गये पिताजी ?

पिता वह कहाँ है ?

कांता मोहिनी भाभी पहले इस बरामदे में खड़ी अपने आप से बातें करती रहीं। फिर उन्होंने चाय के बरतन उठा कर फर्श पर पटक दिये और फिर रोती-चिल्लाती हुई अपने कमरे में दौड़ गयीं और अन्दर से उन्होंने चिटखनी लगा ली।

पिता तुम्हारी माँ को लेकर अभी डाक्टर आता है। कांता, तुम दौड़ कर डाक्टर चाचा को रोको ! कहीं चले न जाएं ?

कांता अच्छा पिताजी ! (जाती है)

पिता विमला तुम माँ के पास जाओ ! मोहिनी अन्दर कमरे में क्या कर रही है ? शांता जरा देखो तो ! चलो मैं भी आता हूँ !

(फेड आउट—फेड इन)

शांता अन्दर से रोने की आवाज आ रही है।

पिता (दरवाजा खटखटाते हुए), मोहिनी बेटी, दरवाजा खोल दो ! देखो तुम्हारी माताजी अस्पताल से समझदार होकर आ गयी हैं।

शांता भाभी, दरवाजा खोल दो !

डॉक्टर (आते हुए) क्या, क्या बात है ?

पिता अच्छा हुआ, डाक्टर साहब आप आ गये ! मोहिनी ने अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया है। रोती जा रही है, रोती जा रही है और दरवाजा नहीं खोलती।

शांता पहले उन्होंने यह बरतन तोड़े। उससे पहले अपने आप से बातें करती रहीं और फिर घबरा कर चिल्लाती हुई अन्दर अपने कमरे में दौड़ गयीं।

डॉक्टर शांता, तुम जाओ माताजी को तुम्हारी आवश्यकता है !

शाता   अच्छा डाक्टर साहब ! (शाता जाती है)

डॉक्टर   मैंने कई बार सोचा है आपसे कहूं। इस लड़की की आंखों में मुझे एक अजीब-सी वीरानगी दिखायी देती रही है पिछले कुछ महीने से।

पिता   इसका कारण ?

डॉक्टर   कारण तो शायद मैं इतनी जल्दी न बता सकूं पर मैं सोचता हूं कि इस लड़की को अब बच्चा हो जाना चाहिए। इस तरह इसका दिल बहला रहेगा।

पिता   अगर दिल ही बहलाना है तो घर में बच्चों की तो कमी नहीं। खैर, अब ज़रा मोहिनी को देखिए! शायद आपके कहने से दरवाजा खोल दे।

डॉक्टर   मोहिनी, दरवाजा खोल दो!

(दरवाजा खटखटाता है)

पिता   (दरवाजा खटखटाते हुए) मोहिनी बेटी, दरवाजा खोल दो!

डॉक्टर   प्रेम कहां है ?

पिता   शायद कहीं बाहर गया है ?

डॉक्टर   (फिर दरवाजा खटखटाते हुए) मोहिनी, दरवाजा खोल दो!

पिता   दरवाज़ा खोल दो, मोहिनी बेटी!

माता   (आती हुई) क्या हुआ है मोहिनी को ?

पिता   अरी भाग... [illegible] चली आई इस हालत में ?

माता   हाय मुझे ... [illegible] चार कदम चली कि चक्कर आने शुरू हो गये।

पिता   यहां कुर्सी पर बैठ जाओ!

डॉक्टर   मोहिनी, दरवाजा खोल दो!

पिता   दरवाजा खोल दे बेटी, डाक्टर साहब आये हैं!

माता   मोहिनी बेटी, दरवाजा क्या तुमने बन्द कर लिया है ? देखो तो नयी बेबी घर आई है!

पिता — अब तो रोने की आवाज भी नहीं आ रही है।

डॉक्टर — और कोई रास्ता नहीं अन्दर जाने का?

पिता — नहीं।

डॉक्टर — मैं तो सोचता हूं दरवाजा तोड़ना पड़ेगा। लड़की की मानसिक स्थिति ठीक नहीं है। मुझे डर है वह कहीं कुछ कर न बैठे।

पिता — (जोर से दरवाजा खटखटाते हुए—घबराकर) मोहिनी बेटी अपने आप दरवाजा खोल दो वर्ना हम दरवाजा तोड़ देंगे, (एकाएक) वह दरवाजा खोल रही है।

(दरवाजा खोलने की आवाज)

पिता — शुक्र है बेटी तुमने दरवाजा खोल दिया!

डॉक्टर — आप बाहर ही ठहरें। मैं अन्दर जाकर एग्जामिन करता हूं। (जाता है)

माता — मैं तो सोचती हूं इस पर कोई साया पड़ गया है! कल सुबह से मिलने अच्छी-भली अस्पताल आई थी। कितनी देर मेरे साथ बातें करती रही।

पिता — डाक्टर का ख्याल है इस लड़की के अब बच्चा हो जाना चाहिए।

माता — होना तो चाहिए। मैं खुद सोचती हूं इसके बच्चा हो जाना चाहिए।

शाता — (आती हुई) माताजी, आपका पलंग बिछ गया है। आप चलकर लेटिए।

पिता — हां, तुम चल कर लेटो। यहां कहां आकर तुमने आसन जमा लिया है?

माता — मैंने सोचा बहू से मिल आऊं। अच्छा चलती हूं, (जाती है)

पिता — शाता, प्रेम कहां है?

शाता — भैया तो आया को लेकर अस्पताल गये हैं।

पिता — यह भी अच्छा हुआ। नयी बेबी के लिए दूध की बड़ी तकलीफ थी। तेरी मां के अन्दर कुछ नहीं रहा।

शाता — माताजी ने तो किसी भी बच्चे को अपना दूध नहीं पिलाया।

पिता पहले तो हमेशा दूध वाले आया घर होती थी ।

माता • डॉक्टर चाचा आ रहे है । मैं अन्दर भाभी के पास जाती हू ।

डॉक्टर (आते हुए) मेरी राय मे इस लडकी को सन्तान होनी चाहिए और सन्तान तब तक नहीं होगी जब तक यह इस घर म रहती है ।

पिता आपका मतलब ?

डॉक्टर मैंने इसका पहले भी कई बार निरीक्षण किया है । इसके खून की जाच भी की है । इस लडकी को कोई बीमारी नहीं । इस घर में बच्चो के शोर से यह घबराती है । शोर से घबराई हुई यह बच्चो से घबराने लगती है और उसको बच्चा नहीं होता ।

पिता मुझे तो कुछ समझ म नहीं आया । जब हमारे घर आई तो कैसी खुश रहा करती थी, कितना प्यारा गाया करती थी यह । सवेरे उठकर कई बार मैं इसे मीरा के भजन गाते सुना करता था ।

डॉक्टर यह सब कुछ ठीक है । इस लडकी की बीमारी मनोवैज्ञानिक है । जब तक इसकी सास के बच्चे पैदा होते रहेगे इस लडकी का बच्चा नहीं होगा । अगर अधिक समय तक इसे या ही प्रतीक्षा करनी पडी तो, फिर शायद इसका कभी बच्चा हो ही नहीं ।

पिता डॉक्टर साहब, मोहिनी के सिर म जो दर्द रहता है ।

डॉक्टर उसके सिर दर्द का कारण भी यही है । उसकी घबराहट का कारण भी यही है । उसके चेहरे पर जो वीरानगी छाई रहती है, उसका कारण भी यही है ।

प्रेम (आते हुए) क्या, क्या हाल है मोहिनी का ? माताजी कह रही है

पिता आ गये प्रेम !

डॉक्टर अब तो ठीक है । पर जैसा मैं अभी बता रहा था, इस लडकी का बडा ध्यान रखना होगा ।

प्रेम कुछ देर पहले सिरदर्द की शिकायत कर रही थी ।

विमला (दूर से) पिताजी, पिताजी ! आपको माताजी बुला रही हैं ।

पिता मैं अभी आया, डॉक्टर साहब ! (जाता है)

डॉक्टर मैं सोचता हूं प्रेम, तुम लोगों को अलग घर लेकर रहना चाहिए !

प्रेम अलग घर कहां मिलता है, डॉक्टर ! पर हां कुछ दिनों में पिताजी रिटायर होने वाले हैं। उसके बाद शायद वे गांव चले जाएं।

डॉक्टर मोहिनी एक फूल की तरह है। इस घर में बच्चों के शोर को सुन कर वह अपनी पंखुरियों को समेट लेती है। जैसे कोई किसी कमरे के तमाम झरोखे बन्द कर दे। इस तरह उसका दिल और उसका दिमाग जैसे मसले जाते हैं।

प्रेम जिस घर में से यह आई है वहां केवल यह थी और इसका एक छोटा भाई था बस।

डॉक्टर मेरी राय तो यह है कि किसी बहाने लड़की को यहां से निकाल लिया जाये। इसे किसी शान्त एकान्त स्थान पर रखना चाहिए। किसी पहाड़ की गोदी में, किसी झील के किनारे, जहां भीड़, शोर और दौड़ धूप बिल्कुल न हो।

प्रेम यह तो विचार करने की बात है।

डॉक्टर हां इस पर अवश्य विचार करो !

प्रेम बहुत अच्छा डॉक्टर !

डॉक्टर अच्छा अब मैं जाता हूं। कुछ देर बाद आकर इसे इन्जैक्शन लगाऊंगा। (जाता है)

प्रेम बहुत बहुत धन्यवाद डॉक्टर !

शान्ता (आती हुई) क्या डाक्टर साहब चले गये? खैर कोई बात नहीं ! भाभी सो गयी है। मैं बच्चों को जाकर समझाती हूं। कहीं शोर करते इधर न आ जाएं।

प्रेम हां, अब तो पड़ोसियों के बच्चे भी आ गये दिखायी देते हैं। शायद नयी बेबी को देखने आये हैं।

शान्ता (नाक चढ़ाते हुए) नयी बहू तो देखो जैसे आज हो। मैं तो नहीं सोचती यह बचेगी।

मोहिनी (पागलों की तरह आती है) कौन कहता है कि बेबी नही बचेगी, मेरी बेबी मर जायेगी ? हाय, मेरी बेबी मर जायेगी ! नही, नही। (रोने लगती है)

प्रेम मोहिनी, मोहिनी !

शाता मोहिनी भाभी !

मोहिनी ऊपर से फूल बरसते हैं। कोई उन्हें रास्ते मे ही लपक कर झपट लेता है। मेरा आचल खाली का खाली है।

शाता मोहिनी भाभी !

मोहिनी आओ शाता, मैं तुम्हें प्यार करू ! मेरी बच्ची ! (जसे चूमती है) यह प्यार एक मा का है अपने बच्चे के लिए। (फिर चूमती है) यह प्यार एक बहन का है अपनी बहन के लिए (फिर चूमती है) यह प्यार !

प्रेम मोहिनी !

मोहिनी (शाता को जैसे अपने आलिगन में लेते हुए) आ मेरी छाती से लग जा! मैं अब तुम्हें नही जाने दूगी। कभी नही जाने दूगी।

प्रम मोहिनी छोडो इसे ! शाता, तुम जाकर डॉक्टर को टेलीफान करो !

शाता अभी करती हू। (जाती है)

मोहिनी चली गयी। उसे जाना था। वह चली जायेगी और हम सब टुकर-टुकर देखते रह जायेंगे।

प्रेम मोहिनी, तुम कैसी बातें कर रही हो ?

मोहिनी सवेरे आज मैंने शीशे मे देखा। मैं तो इतनी बडी हो गयी हू जैसे कोई दो बच्चो की मा हू।

प्रेम मोहिनी !

मोहिनी बालो को कघी करते आज मुझे एक सफेद बाल नजर आया और मैंने उसे चोटी मे छिपा लिया। सफेद बालो को कोई कब तक छिपा सकता है ? आकाश मे चाद, गोद मे बच्चा और सफेद बाल इन्हें लाख छिपाओ, कभी नही छिप सकते।

प्रेम — मोहिनी, चलो अन्दर !

मोहिनी — अरे, अरे मुझे यों दबा-दबा कर क्यों रखते हो ? मुझे घुट घुट कर मरने को क्यों कहते हो ? मुझे मन की एक बात कहनी है। कोई मुझे मेरे मन की नहीं कहने देता। मैं एक लहर हूं। एक लहर जो ओस की एक बूंद के लिए प्यासी है। ओस की एक बूंद जो किनारे पर घास की पत्ती पर पड़ी है।

प्रेम — मोहिनी, मोहिनी, तुझे क्या हो रहा है ?

मोहिनी — फिर शोर ? चुप हो, मैं इस शोर से ऊब गयी हूं ! मोटरों का शोर, तांगों का शोर, साइकिलों का शोर, पैदल चलने वालों के जूतों का शोर भिखमंगे फकीरों का शोर, खोमचे वालों का शोर, मुंडेर पर बैठी चीलों का शोर, चिड़ियों का शोर, कौवों का शोर और शोर बच्चों का हंस रहे, खेल रहे, खा रहे, मांग रहे, रूठ रहे, रो रहे लड़ रहे। और फिर काली घटाएं छा जाती हैं। और छम छम पानी बरसने लगता है। मेरे आंसुओं की तरह अविरल बहता जाता है। (रोती है)

प्रेम — मोहिनी, तुझे यह क्या हो रहा है ? चलो अन्दर कमरे में चल कर आराम करो।

मोहिनी — रात हो, घुप्प अंधेरा हो, कुल दुनिया सो चुकी हो और कोई एक अकेला बच्चा रोने लग जाये।

प्रेम — मैं कहता हूं, मोहिनी, यह क्या बके जा रही हो ?

मोहिनी — पर मैं अपने दिल की बात किसी को नहीं बताऊंगी ! डॉक्टर लाख कहें मैं अपने दिल का भेद किसी को नहीं दूंगी ! किसी को नहीं। मुझे तो अब पता चला है कि एक मर्म सीने में रख कर कोई इस प्रकार मुक्त हो जाता है। हां, मैं मुक्त हूं, आजाद हूं

(कहती कहती दूर जाती है)

प्रेम — शुभ है, अपने आप कमरे में चली गई। डॉक्टर आ रहा है।

(दूर से मोहिनी का अलाप सुनाई देता है)

डॉक्टर — (आते हुए) मुझे माता ने टेलीफोन पर बताया है। मैं टीका लगा देता हूं शायद कुछ फर्क पड़ जाये।

प्रेम उसको तो अपने आप की बिल्कुल सुध नही, डॉक्टर !

माता (आती हुई) बहू को क्या हुआ है प्रेम ?

प्रेम देखता हू । (जाता है)

पिता (आते हुए) डॉक्टर साहब फिर आये है ? क्या, बहू की तबीयत तो ठीक है ?

माता डॉक्टर साहब बहू के कमरे मे है। पता नही क्या हुआ है बहू को ? सवेरे-से हुल्लड मचा हुआ है इस घर म। हाय, मुझे तो चक्कर आ रहा है !

पिता अरी भागवान, मैंने तुझे कहा न, जाकर आराम करो ! अभी दस दिन हुए नही, तुम तो ऐसे चलने फिरने लग गयी हो जैसे

माता हाय ! तो मुझे क्या हो गया है ? जैसे पहले कभी बच्चा नही हुआ अब तक। मुझे जरा सी यह कमजोरी है। दो चार दिन खाऊ-पिऊगी तो ठीक हो जाऊगी।

पिता यह स्वेटर किसका फटा हुआ है ?

माता लाओ जरा देखू तो !

माता अरे, यह तो बिल्कुल नयी है ! अन्दर पडे-पडे कट गया है। अभी कल मोहिनी जब अस्पताल से आई तो कह रही थी, नयी बेबी के लिए मेरे पास एक स्वेटर है।

पिता कीडे खा गये है इसे। यह शकुन अच्छा नही।

माता शकुन बुरा होगा तो मेरे लिए ? उसने तो स्वेटर मुझे देने का निश्चय किया था।

पिता तेरे लिए अब शकुन बुरा क्या और अच्छा क्या ?

माता क्या ? आप ऐसा क्या कहते हैं ? कभी एक और लडका हमारे यहा और हो जाता तो !

पिता एक और लडके की लालसा म आठ लडकिया तो आ चुकी।

माता कौन सी मा है, जो नही चाहती कि उसके आगन मे बेटा का जोडा हो ?

पिता — और बेटिया ?

माता — बेटी तो एक भी ज्यादा है ।

पिता — डॉक्टर साहब आ रहे हैं । क्या डॉक्टर साहब ?

डॉक्टर — (आते हुए) लडकी की हालत तो ठीक नहीं । मैंने टीका लगा कर उसे सुला दिया है । देखो, शायद शाम तक कोई फर्क पडे ।

माता — पर डॉक्टर साहब !

डॉक्टर — शोर यहा बिल्कुल नहीं होना चाहिए । रोगी को पूरे आराम की जरूरत है ।

पिता — आप शाम को फिर तो आयेंगे ?

डॉक्टर — हा मैं देखने अवश्य आऊगा । लडकी की हालत कोई अच्छी नही है मैंने प्रेम को सब समझा दिया है । अच्छा (जाता है)

माता — (बडबडाकर) लानत है, आजकल की लडकियो पर । अभी कोई बच्चा नही हुआ और चारपाई पकड के बैठ गई । जब माँ बनेगी तो क्या हाल होगा ? ऊह, लडकी बी० ए० पास है । बी० ए० पास का हमे कोई अचार डालना है । तीन साल शादी को हो गये । अभी तक कोख नही फूटी ।

प्रेम — (आते हुए) मा, यह क्या कह रही हो ?

माता — अरे बेटा, मैं ठीक ही कह रही हू !

पिता — भागवान, जरा चुप भी रहो ! हा, तो प्रेम, डॉक्टर साहब ने क्या बताया ?

प्रेम — पिताजी मोहिनी की हालत और भी बिगडने की आशका है । घर के शोर शराबे के कारण ।

माता — अरे, बेटा, घर मे कहा शोर-शराबा है ? मोहिनी को तो ।

पिता — तुम जरा चुप नही रहोगी ? हा तो प्रेम !

प्रेम — डॉक्टर ने कहा है कि मोहिनी को तुरन्त किसी एकात और शान्त पहाडी स्थान पर ले जाया जाये । मैंने सोचा है कि मोहिनी ज्यों ही चलने-फिरने लायक हो जाये, तो उसे कश्मीर ले जाऊ ?

पिता तुमने ठीक सोचा है। मोहिनी को चार-पांच महीने के लिए जरूर कश्मीर ले जाओ।

(अंतराल संगीत के बाद कश्मीर के बहुत ही सुंदर सुखद वातावरण में मोहिनी हसती खिलखिलाती हुई प्यार का कोई गीत गाती सुनाई देती है। गीत जैसे दसों दिशाओं में गूंजता है। उसी पर उल्लसित प्रेम कुमार का स्वगत-कथन उभरता है।)

प्रेम (जैसे गीत सुनते हुए, उल्लसित स्वर में स्वगत) आहा, मोहिनी का यह सुरीला-नशीला गीत! कमाल का है कश्मीर का जादू। तीन महीनों में ही मोहिनी की गम बीमारी काफूर हो गयी। जैसे काले बादलों को चीर कर चाँदनी का चाँद निकल आया हो। कश्मीर की हरी-भरी वादियों में मोहिनी परियों की रानी की तरह हसती-खेलती है, नाचती-गाती है, रूप और यौवन के नये नये जादू जगाती है।

(मोहिनी का गीत उभरता है)

मोहिनी के साथ तीन महीनों में मैंने भी पूरा कश्मीर देख डाला। गुलमर्ग गये, पहलगाम गये, शाही बागों में गये, हरी भरी चरागाहों में गये, ऊंची पहाड़ियों पर गये, मोहिनी कभी थकी नहीं। गिलहरी की तरह चढ़ती-उतरती रही, तितली की तरह उड़ती रही, फूलों की तरह हसती रही। और इसके संगीत का तो जैसे झरना ही फूट पड़ा है। हाउस बोट में गाती है, शिकारे में गाती है और चांदनी रात में डल के किनारे बैठ कर गाती है। दिल्ली पहुंचने पर जब मोहिनी इसी तरह गाती रहेगी। तो पिताजी कितने खुश होंगे।

(मोहिनी का गाना उभरकर फेड आउट। थोड़ी देर बाद दिल्ली की कोठी में बच्चों का शोर शराबा सुनाई देता है। शोर में कांता और विमला की आवाजें सबसे ज्यादा उजागर होती है।)

बच्चे भैया आ गये! भाभी आ गई! आहा, कितने सारे फल अखरोट लाये हैं!

पिता आ गये प्रेम!

मोहिनी प्रणाम पिताजी !

पिता जुग-जुग जिओ, बहू !

मोहिनी प्रणाम माताजी !

माता जिओ बहू दूधों नहाओ, पूतों फलो !

पिता मेरी नजर न लग जाय ! कश्मीर से तो वह एकदम स्वस्थ होकर लौटी है ।

माता गुलाब के फूल की तरह खिली हुई है मोहिनी । प्रेम बेटा, कश्मीर मे इतने रम गये कि घर की सुधबुध ही नहीं ली । पूरे चार महीने बाद -

पिता अरी भागवान, सफर से आये हैं ! जरा नहा धो ले तो बातें करेंगे । बहू, सामान लो ! अपने कमरे में जाओ ! कांता, विमला, तुम यह फलों की टोकरी अंदर ले जाओ ! जाओ बच्चा, तुम भी

(बच्चों का शोर । साथ भिखारी भिखारिन की अवाज सुनाई देती है ।)

भिखारी (दूर से) बच्चा वालो, भगवान आपका भला करे !

भिखारिन (दूर से) बच्चा वालो, मेरे छोटे छोटे मासूम बच्चे रात से भूखे हैं !

भिखारी बच्चो वालो, सुबह सुबह रोटी का सवाल है ?

पिता (पुकारकर) आया इन भिखारियों को कुछ दे दिला कर विदा करो ! आ जाते हैं रोज सुबह सुबह । और इन बच्चों को भी कहो कि शोर न मचायें ।

माता आओ बच्चो मेरे साथ ! आया ने नाश्ता लगा दिया होगा । प्रेम तुम भी नहा धो लो ! (कहती हुई जाती है ।)

प्रेम पिताजी, कहीं शांता नहीं दिखाई दे रही ?

पिता शांता (एकदम चुप हो जाता है)

प्रेम (आवाज देते हुए) शांता, अरी कहां छिपी बैठी हो ?

पिता (रुंधे गले से) शांता घर में नहीं बेटा !

प्रेम — तो कहां गयी ?

पिता — शांता तुम्हारे जाने के बाद दूसरे रोज ही कहीं चली गयी।

प्रेम — (हैरान) कहीं चली गई ?

पिता — (आह भर कर) हां, बेटा !

प्रेम — और अभी तक उसका पता नहीं लगा ?

पिता — नहीं बेटा ! अभी तक उसका पता नहीं लगा । (फूट फूट कर रोने लगता है)

प्रेम — आपने हमें सूचना क्या नहीं दी ?

पिता — क्या सूचना देता ? मेरा मुंह तो काला हो ही चुका था। कश्मीर में वह बीमार थी। हाय शांता, बर्बाद करके चली गयी ! रात को अच्छी भली सोई। कितनी देर मुझसे बातें करती रही—"पिताजी, आज मुझे मोहिनी भाभी याद आ रही है। पिताजी मुझे आज प्रेम भैया याद आ रहे हैं।" सुबह पलंग खाली था।

प्रेम — किसी ने उसे कुछ कहा होगा ?

पिता — कुछ नहीं, किसी ने उसे कुछ नहीं कहा। जब से वह बडी हुई, मैंने हमेशा उसका ख्याल रखा है। वैसे इतने बडे घर में आखिर कुछ कहा-सुनी तो हो ही जाती है। मुझे तो वह कहीं खडा होने लायक नहीं छोड गयी। हां अपनी मां को उसने कई बार कहा था।

प्रेम — क्या कहा था ?

पिता — वह किसी के साथ विवाह करना चाहती थी।

प्रेम — माताजी मानी नहीं होंगी ?

पिता — मुझे कुछ नहीं पता।

पिता — • निकल गयी, जैसे कोई टहनी टूट जाती है। हाथ से छूट कर मिट्टी में मिल गयी। स्वयं बर्बाद हो गयी, हमें बर्बाद कर गयी। जिस माला में से एक मोती गिर जाये, बाकी कैसे बंधे रह सकते हैं, खुद चली गयी, बाकी के लिए रास्ता खोल गयी।

किसी के रोके भी कभी कोई रुकता है ? किसी के मना करने से कहीं कोई हटता है । किसी के बांधन से भी कोई बंधता है । छत की एक कड़ी टूट जाये, सारा घर नीचे आ गिरता है । पीछे घर में सात लड़कियां बची हैं । मैं किस किस का ख्याल रखूंगा । मैं किस-किस को समझाऊंगा।

(अंतराल संगीत)

(छोटी बच्ची के रोने की आवाज उभरती है - दूर बच्चों का शोर भी सुनाई देता है)

आया (जैसे पुचकारते हुए) चुप हो जा ! सो जा बिट्टो ! सो जा ।

माता (आती हुई) आया, अभी यह सोई नहीं ?, इसको इधर बरामदे में ही जगा रखना । अंदर कमरे में बच्चों का शोर है । आज दोपहर को भी नहीं सोई । अभी सो जायेगी । मैं जरा ।

आया आप कहीं बाहर जा रही हैं, मालकिन ?

माता उधर पड़ोस में कथा हो रही है न । कई बार बुलावा आ चुका है ।

आया मेरा बच्चा आज जरा बीमार है । अगर मुझे छुट्टी मिल सकती ।

माता (चिढ़कर) मुझे जब कभी बाहर जाना होता है, तेरा कोई न कोई काम निकल आता है । क्या हुआ है तेरे बच्चे को ?

आया परसों से उसे बुखार आ रहा है ।

माता तो फिर क्या हुआ ? बच्चों को बुखार आ ही जाता है । कुनैन की एक गोली यहां से ले लेना और उसे रात को पीस कर पिला देना । ठीक हो जायेगा ।

आया हाय बीबी, कुनैन तो बड़ी कड़वी होती है ! बेचारा बच्चा । पहले ही बुखार से वह बहुत कमजोर हो गया है ।

माता (नाक चढ़ाती हुई) तो फिर लड्डू खिलाओ उसे । तूने आज नया बच्चा पैदा किया है न । अच्छा मैं अभी जाती हूं । अगर बिट्टो सो गयी, तो घड़ी दो घड़ी के लिए अपने घर

हो आना । लेकिन उसे जागती मत छोड जाना । यह बडा उधम मचाती है ।

आया मेरा बच्चा बहुत बीमार है, मालकिन ।

प्रेम (आते हुए) माताजी, आप कहाँ जा रही हैं ?

माता आ गया प्रेम । तुम्हारे पिताजी कहा है ?

प्रेम वे भी आ गये हैं, बाहर किसी से बात कर रहे हैं ?

माता मैं जरा पडोस में जा रही हू । अभी आई ।

प्रेम मोहिनी ।

माता अरे, शाम हो गई, तेरी वह घर वाली सिर दद का बहाना करके अपने कमरे में लेटी है । कहती है बच्चो के शोर से सिर दर्द होता है । क्या उसके लिए मैं अपने बच्चो को जहर दे द ? कश्मीर मे इतना पैसा बर्बाद करके भी ठीक नही हुई । सोचा था, अब उसकी कोख हरी होगी । लेकिन खैर, मै पडौस से हाकर अभी आई । तुम हालचाल पूछो अपनी घर वाली का

आया मालकिन, मेरे बच्चे की तबीयत ?

माता अरी कहा तो, बेबी को सुला कर तू घर हो आना । ज्यादा देर न लगाना । एक बच्चे को दूसरे बच्चे से बीमारी हो जाती है ।(फिर सोचते हुए) मैं तो कहती हू अभी एकाध रोज तू अपने घर मत जा । कही तेरे बच्चे को कोई छूत की बीमारी न हो ।

आया मालकिन !

माता हा आया, मैं सोचती हू, तुझे अपने घर जाना नही चाहिए । अगर तीन दिन से तेरे बच्चे का बुखार नही उतरा तो फिर जरूर कोई खराब बीमारी होगी । कहीं हमारी बच्चो को भी न लग जाये ?

आया मालकिन !

माता अच्छा मरे लौटने तक तू यहीं रहना ।

आया — सो जा, सो जा, बिट्टो! एँ, यह तो सो गई है।

पिता — (आते हुए) आया बेबी को बरामदे में लिये क्या खड़ी है? अगर सो गई है, तो इसे अंदर चारपाई पर लिटा दो।

आया — जी बहुत अच्छा साहब! मेरे बच्चे की तबीयत ठीक नहीं। मैं थोड़ी देर के लिए घर हो आऊं?

पिता — तेरी मालकिन आ जाय, तो हो आना।

आया — साहब मेरे बच्चे की तबीयत बहुत खराब है! मुझे घर से फिर कहलवा भेजा है। मेरा बच्चा मुझे याद कर रहा है।

पिता — कहा तो, पांच मिनट और देख लो! मालकिन अभी आ जायेगी।

आया — साहब, वह तो कहीं रात पड़े आयेंगी!

पिता — बेकार बातें न कर आया। जा बेबी को सुलाकर रसोई का काम कर।

आया — हाय, मेरे बच्चे की तबीयत खराब है! तीन दिन से वह छोटी सी जान तड़प रही है और किसी को तरस नहीं आता।

(इस प्रकार बोलती हुई आया चली जाती है)

मोहिनी — (आते हुए) पिता जी, आया को आप जाने देते, बच्ची को मैं देख लेती।

पिता — अरी बहू! इस आया के बेटे को तो हर समय कुछ न कुछ हुआ ही रहता है। बेकार ही उसके लिए परेशान रहती है।

मोहिनी — मां की ममता है।

पिता — बड़ी चालाक औरत है। यों ही बहाने बनाती है। (पुकारकर) प्रेम!

प्रेम — (दूर से) आया, पिताजी!

मोहिनी — आह बच्चों का यह शोर

प्रेम — कहां है बच्चों का शोर?

मोहिनी — क्या पिताजी, बच्चों का शोर नहीं है क्या?

पिता — नहीं बेटी, इस समय तो कोई शोर नहीं!

मोहिनी अच्छा तो फिर नही होगा ।

पिता . बहू तुम यहा बरामदे में बैठो ! मै अभी आया । प्रेम, जरा सुनना तो !

(दोनो जाते ह)

मोहिनी (कुछ देर बाद स्वगत) बच्चा का शोर नही है । फिर मुझे क्यो शोर सुनाई देता है ? क्या मेरा सिर दद से फटा जा रहा है ?

आया ' (आती हुई) बीबीजी, बीबीजी, अभी फिर खबर आई है मेरे बच्चे की तबीयत बहुत खराब है ! आप सुन रही है बीबीजी ! बीबीजी, मेरे बच्चे की तबीयत बहुत ज्यादा खराब हो गयी है ! अगर मेरे बच्चे को कुछ हो गया तो मै कही की नही रहूगी ।

मोहिनी (जैसे होश मे आते हुए) कहो, क्या बात है, आया ?

आया . (रोते हुए) बीबी, मेरे घर से बुलावा आया है मेर बच्चे की तबीयत बहुत खराब हो गयी है । अगर मेरे बच्चे को कुछ हो गया, तो म बरबाद हो जाऊगी ।

मोहिनी अच्छा आया, तुम चली जाओ !

आया बीबी भगवान आपका भला करे ! भगवान आपकी गोद हरी करे ! (कहती हुई जाती है)

मोहिनी (अपने आप से बातें करने लगती है) भगवान मेरी गोद हरी करे ! भगवान मुझे बच्च दे, एक दरजन डेढ़ दरजन ! एक को जन के मैं दूसरे का इतजार करने लग जाऊ । रहट की मटकी की तरह जो बार-बार भरी रहती है, बार-बार खाली होती है । बार-बार ऊपर आती ह बार-बार नीचे गिरती है । यह चक्कर चलता रहता ह, चलता रहता है, जब तक कि कुए का पेंदा दिखाई न दने लग जाये । पक्की हुई बेरी के नीचे आधी के बाद गिरे हुए बेरा की तरह मेरा आगन भरा रहे--लडकिया से, लडका से, नन्हें मुन्ना से बडा से।

एक को बुलाऊ तो दस चले आयें। बुलाना किसी को हो और नाम किसी का मुह से निकल जाये। किसी की नाक बह रही है, किसी की आख दुखने लगी है, किसी के पट मे दद है। कोई गिर कर रो रहा है, किसी को भूख लगी है, किसी को प्यास लगी है किसी का कुर्ता नही, किसी की चुनरी नहीं, किसी का जूता फटा है, किसी के बटन टूटे हैं। कोई साना चाहता है। किसी का खेलने को जी कर रहा है। कोई गाता है कोई हसता है, कोई रोता है। एक गाली सीखता है, सबके मुह पर चढ जाती है। एक बदतमीजी करता है, सारे बिगड जाते हैं। कोई मुडेर पर बैठा है, कोई पेड से जा लटकता है, कोई पलग के नीचे छुपा है, कोई रसोई में ऊधम मचा रहा है। बडे छोटो को मारते हैं, छोटे अपने से छोटो से बदला लेते है। प्यार का वातावरण, दुलार का वातावरण, हर्ष और खुशी का वातावरण

(प्यार–दुलार भरा स्वप्निल-सा सगीत स्वगत के पीछे से आकर उभरता है और एकाएक बेबी के रोने की तेज आवाज से टूटता है)

काता (सबसे छोटी बच्ची को उठाये आती है, बच्ची रोये जा रहा है) भाभी आया पता नही कहा चली गयी है और बिट्टो सो कर उठ गयी है।

मोहिनी काता, आया का अपना बच्चा बीमार है। वह घर गयी है उसे देखने।

काता ओह, कैसे गला फाड फाड कर रो रही है जैसे इसकी जान पर आ बनी हो।

मोहिनी (परेशान-सी) काता, बिट्टो को चुप कराओ। मुझे सिर दद हो रहा है।

काता भाभी, आपका यह सिर दद अभी तक नही गया?

मोहिनी कहा काता, हाय मेरी जान निकल रही है। काता इस बिट्टो को दूर ले जा।

कांता अच्छा भाभी

(बच्चों के रोने की आवाज़ दूर चली जाती है)

प्रेम (आते हुए) हे भगवान ! यह घर तो जैसे ऐं क्या हुआ मोहिनी ? बरामदे में बिना बत्ती जलाये क्या बैठी हो ? (स्विच की आवाज़)

मोहिनी बत्ती क्या जला दी ? मेरा सिर फटा जा रहा है । प्रेम !

प्रेम तुम्हें सिर दर्द फिर हो गया है ?

मोहिनी हां !

प्रेम इस घर में तो कोई पागल हो जाये ।

मोहिनी (पागलों की तरह रोकर) नहीं, नहीं मैं पागल नहीं हूं प्रेम ! मुझे क्यों पागल बनाया जा रहा है ?

प्रेम मोहिनी, मोहिनी यह तुम्हें क्या हो रहा है ?

मोहिनी (एकदम संभलते हुए) हाय, कितना शोर है !

प्रेम बस बिट्टो रो रही है और कोई तो शोर नहीं ।

मोहिनी अच्छा तो फिर नहीं होगा !

प्रेम चलो मोहिनी जरा बाहर टहल आएं !

मोहिनी कहां जायेंगे ?

प्रेम ! सिनेमा चलेंगे ।

मोहिनी बेकार शोर होगा । बच्चे शोरें जैसी चिपचिपी मोहब्बत का शोर ।

प्रेम तो फिर डॉक्टर के यहां हो आते ।

मोहिनी डॉक्टर ? बार बार मेरे पेट की ओर देखेगा, बार-बार मेरी आखों में देखेगा । बार बार इशारा से बहाना से आपसे पूछेगा और फिर कहेगा 'इसका बच्चा होना चाहिए' ।

प्रेम तुम्हें इसमें क्या आपत्ति है ?

मोहिनी मैं पूछती हू इतने सारे बच्चो को क्या करेगा यह देश ? एक बार एक बडे नेता ने कहा था "जिस गति से हम हिंदुस्तानी बच्चे पैदा कर रहे है, हमने तो पशुओ को भी मात दे दी है।"

माता (दूर से) आया।

प्रेम माताजी आ गई है।

माता (आते हुए) अरे तुम दोनो बरामदे में बैठे हो। आया कहा है ?

मोहिनी मैंने उसे छुट्टी दे दी थी, माताजी।

माता आया को छुट्टी दे दी ? मैं तो उसे कह गयी थी कि जब तक उसका बच्चा बीमार है, अपने घर न जाये।

मोहिनी पर उसका बच्चा सख्त बीमार है।

माता इसलिए तो मैं कह रही थी कि कही वह हमारी बच्ची को भी बीमारी न लगा दे।

मोहिनी पर माता जी, उसका अपना बच्चा !

माता मुझे कई दिनो से आया की चाले अच्छी नही लग रही है। इस बार तो घर में फसी हुई हू। जिस रोज बिट्टो ने दूध छोडा उसी रोज मैं इसको जवाब दे दूगी। शुक्र है इस बार सुना नही हुआ। मैं तो अपने मुन्ने को कभी ऐसी स्त्री का दूध न पिलाऊ (एकाएक) ऐं, बाहर से यह कौन आ रही है—गोदी में कोई बच्चा, बाल बिखरे हुए

मोहिनी ऐं, यह तो अपनी आया है। यह तो रो रही है।

प्रेम आया, क्या बात है ?

माता अरी, बोलती क्या नही ?

प्रेम आया तेरा बच्चा तो ठीक है ?

मोहिनी आया तेरे बच्चे को तो कुछ नही हो गया ?

माता क्या हुआ है तेरे बच्चे को ?

आया (रोकर) मर गया ।

माता , मर गया !

आया मा की छाती से एक बूद के लिए तरसता हुआ, बिलखता हुआ, तडपता हुआ मेरा बच्चा मर गया । इतजार करता रहा, इन्तजार करता रहा । मैं घर पहुची एक नजर उसने अपनी मा को देखा और फिर आखें बन्द कर ली —(पागल की तरह)—मेरे बच्चे, ले, मैं तेरा सब दूध तुझ पिलाती हू । पी पी

माता आया, यह तू क्या कर रही है ? मुर्दा बच्चे को अपना दूध पिला रही है ।

प्रेम आया !

माता : अरी मेरे घर अपने बच्चे की लाश लाई है !

मोहिनी आया !

आया क्यो, मैं अपने बच्चे को दूध न पिलाऊ ?

माता आया, तुम पागल हो गयी हो !

आया अपने बच्चे का हक मैं अपने बच्चे को दे रही हू । उससे दूध छीन कर मैं बेच दिया करती थी । मेरा लाल रुठ गया है । क्या मैं उसे मनाऊ भी नहीं ?

माता आया, तू पागल हो गयी है !

आया (भूखी शेरनी की तरह झपटती हुई) मैं पगली हो गयी हू ? सच्चे मोती जैसे अपने बेटे को तुम्हारी चुहिया जैसी बेटी पर कुर्बान कर दिया । और मैं पागल हो गयी हू ?

प्रेम ऐं, एकाएक बिजली चली गई !

माता घुप अधेरे में मुझे डर लगता है ।

मोहिनी आया, अपने बच्चे की लाश

प्रेम आया !

आया मैं पागल हो गयी हू ! नोच-नोंच कर अपने सीने का मास मैंने इनके कुनबे को खिला दिया और अब मैं पागल हो गयी हूँ, मुझे कभी छुट्टी नहीं मिली । अगर मुझे छुट्टी मिल जाती,

तो मैं अपने दिल के टुकडे को शायद बचा ही लेती। हाय! नन्ही-सी जान, पछी की तरह उड कर चली गयी है। मैंने अपने सोने को कौडियों के दाम गवा दिया। "मेरे बच्चे पीले अपनी मा का दूध! पीले मेरे लाल पीले!"

(रोती चिल्लाती हुई चली जाती है)

प्रेम आया। अपने बच्चे की लाश लेकर कहा चली गई?

मोहिनी (बिमारों की तरह) आया चली गई। हाय, मैं तो थक गयी हू!

माता कलमुही मेरे घर मे मुदा लेकर आई थी। अब मैं उसे घर में घुसने नही दूगी।

मोहिनी (परेशान सी) बिजली अभी तक नही आई। अधेरे म मेरा दम घुट रहा है। रात कितनी काली है।

प्रेम मैं अन्दर से मोमबत्ती जला कर लाता हू। (जाता है)

माता पता नही इस बिजली को क्या हो गया है?

मोहिनी हाय, म तो बहुत थक गयी हू!

(बेबी के रोने की आवाज)

माता उधर बेबी रो-रोकर निढाल हो गयी है। मुझे लगता था इस बार यह आया दगा देगी। इसकी हरकतो से ही मुझे मालूम था। बेटा क्या इसने जन लिया, इसका तो दिमाग ही खराब हो गया है। बेबी के लिए दूध का कोई प्रबध करू, नही तो रो-रोकर बेचारी की घिग्घी बध जायेगी। ओह अधेरे मे रास्ता भी तो नही सूझता! (दूर से) प्रेम, मोमबत्ती मिल गई? जरा मुझे रोशनी दिखाना!

(हवा का हल्का शोर उभरता है)

मोहिनी ऐ, हवा तेज हो गई! ओह आज रात कितनी काली है!

प्रेम (आते हुए) ओह, हवा से मोमबत्ती बुझ गई! पता नहीं, दियासलाई कहा छोड आया।

मोहिनी रहने दो ! आकाश पर काले स्याह बादल छाये हुए हैं ।

प्रेम मैं सोचता हू आया की रात कैसे कटेगी ?

मोहिनी सारी रात बच्चे की लाश को छाती से चिपकाये रहेगी, सारी रात बिलखती रहेगी, सारी रात तडपती रहेगी ।

प्रेम अभागिन! पता नहीं उसका क्या बनेगा । उसके पति की भी तो अभी कोई नौकरी नही रही । घर का आया ही पालती है।

मोहिनी यहीं लौट आयेगी । और कहा जायेगी । गरीबी जैसा और कोई पाप नही । सुबह को हो लेने दो । उसकी छाती का दूध ही उसे विवश करेगा कि उसे बेचने के लिए कही निकले ?

प्रेम मैं नहीं मानता कि वह अब अपना दूध किसी को पिला सके ।

मोहिनी इस बच्चे को आग के हवाले कर के जब वह घर आयेगी और सामने बाकी बच्चो का कुलबुल-कुलबुल करते देखेगी — भूखे, नगे, प्यासे और उसके अन्दर की मा अपने तन की बोटी-बोटी बेचने के लिए तैयार हो जायेगी । गरीबी बडा पाप है । मा होना उससे भी बडा पाप है ।

(बारिश का शोर)

प्रेम अरे हल्की हल्की बूदे बरसने लग गयी है ! मैं सोचता हूँ कि तुम अन्दर चल कर गरम कपडा ले लो । यहा बरामदे मे सर्दी है ।

मोहिनी हा मुझे शाल ले लेनी चाहिए ।

प्रेम तो आओ कमरे म यह मोमबत्ती भी जला लेंगे ।(दोनो जाते हैं)

(आधी पानी का शोर)

शाना (हाफती-हाफती सी) ओह, अपने ही घर मे मैं आज चार की तरह आई हू। अच्छा हुआ बिजली चली गई और बारिश होने लगी, वर्ना भैया-भाभी यहा बराम्दे मे ही बैठी रहती अब अपने पाप की निशानी को अपने ही घर वालो को सौप कर भागू यहा से (चूम कर) मेरी बच्ची यहा तुझे कोई

खतरा नहीं । अपनी अभागिन मां को माफ कर देना । ऍं, कोई आ रहा है ! (जाती है)

मोहिनी (आती हुई) ओह, कमरे में जैसे मेरा दम घुट रहा था !

प्रेम (दूर से) मैं मोमबत्ती ला रहा हूं (एकाएक खुशी से) लो, बिजली आ गई !

मोहिनी शुक्र है बिजली आ गई ! (चौंककर) ऍं, यह कुर्सी पर शाल में लिपटी क्या चीज पडी है ! (नवजात शिशु की चूं-चूं की आवाज) प्रेम, प्रेम !

प्रेम (आकर) क्या बात है, मोहिनी ?

मोहिनी यह देखो !

प्रेम (हैरान सा) अरे यह तो शाल में लिपटा हुआ कोई बच्चा है ।

मोहिनी कहीं आया तो अपना बच्चा ?

प्रेम नहीं, नहीं यह तो नवजात बच्चा है, पांच-सात दिन का होगा ।

मोहिनी ऍं यह तो लड़की है । हम एक पल के लिए अंदर कमरे में गये कि कोई आकर !

प्रेम अभी अभी कोई बगीचे की ओर से आकर रख गया है । देखो न बरामदे के फर्श पर जूते के गीले निशान पड़े हुए हैं ! मैं बाहर जाकर देखता हूं । (जाता है)

मोहिनी अरे, आप कहां जा रहे हैं ? आने वाला कुछ ले नहीं गया, दे गया है ।

प्रेम (दूर से) अभी आता हूं । देखूं तो यह कौन है ? जो अपनी बच्ची यहां छोड़ गई । (फेड आउट)

मोहिनी (स्वगत) हाय, कैसी प्यारी बच्ची है ! भोली भाली सी ! कैसे टुकर-टुकर देख रही है, जैसे मुझे पहचान रही हो ! बेटी, तुम यों मत देखो ! कोई सबब अवश्य होगा । बेटी,

तुम यों मत ढूढो किसी को मेरी आखों मे । कोई तार होगा जो कहीं टूट गया है । तुम तो आंखो से निकला हुआ एक आसू हो, जो कहीं मोती बन गया है । तुम तो कोई अधखिली कली हो, जिसको कोई तोडकर मेरी गोद मे फेंक गया है । तुम किसे पहचान रहीं हो मेरी आखो मे ? इस प्रकार अधेरा होता है और लोग इस अधेरे मे मोती लुटा देते है । कोई मोती खो देता है, और कोई मोती पा लेता है । तुम कैसे मुस्करा रहीं हो ? तुम्हारा नाम क्या है ? तुम्हें अपना नाम नहीं पता ? तुम्हारा नाम •• तुम्हारा नाम हम नीला रखेंगे । नीली-नीली आखो वाली मेरी नीला ।

प्रेम : (आते हुए) अरे, अभी जान-पहचान हुई और अभी से बातें शुरु हो गई ।

मोहिनी कुछ पता चला कौन रख गया था इस बच्ची को यहा बरामदे मे ?

प्रेम (टालते हुए) हा नही कोई दिखाई नही दिया ।

मोहिनी आप ऐसे घबराये हुए क्या है ?

प्रेम ओह, बच्चो ने फिर शोर मचाना शुरु कर दिया (**दूर कमरे में बच्चों का शोर उभरता है**) इस घर मे शोर बढता ही जाता है ।

मोहिनी शोर । नही, नही । यह तो संगीत का मधुर स्वर लहरी है । इसे शोर कौन कहता है ?

(बच्चे के प्यार दुलार का मधुर संगीत उभरकर अंतराल संगीत बन जाता है)

(नीला की पाचवीं वर्षगाठ की धमधाम । बच्चे, "हैप्पी बर्थ डे टू यू" गाते हुए सुनाई देते है । बच्चों की हसी खुशी में स्त्री-पुरुषों की आवाजें भी सुनाई देती है)

स्त्री मोहिनी, नीला की पाचवी वर्षगाठ की तुम्हें बहुत-बहुत बधाई ।

मोहिनी आपको भी बधाई बहन !

पुरुष — प्रेम, नीला की पांचवी साल गिरह की मुबारकबाद !

डॉक्टर — प्रेम, तुमने कहा था कि नीला की वर्षगांठ के उत्सव पर गांव से तुम्हारे पिताजी भी आयेंगे ।

प्रेम — डाक्टर चिट्ठी में तो उन्होंने लिखा था कि वे दोपहर तक पहुंच जायेंगे ।

डॉक्टर — लेकिन अब तो शाम हो गई । रिटायर होने के बाद तुम्हारे पिताजी बीबी बच्चों के साथ स्वयं गांव में जाकर ऐसे बसे कि वहीं के हो गये ।

मोहिनी — प्रेम दूर जाने वाले बच्चों को तो विदा कर दिया । बाकी मेहमान भी जा रहे हैं ।

डॉक्टर — अरे, हां याद आया ! मुझे भी एक मरीज को देखने जाना है । अच्छा तो प्रेम, नीला के बर्थडे की बहुत बहुत बधाई !

(धीरे धीरे बच्चों और मेहमानों की आवाजें फेड आऊट हो जाती है ।)

मोहिनी — पिताजी आते तो कितने खुश होते ?

प्रेम — न पिताजी आये और न ही शांता आई ।

नीला — (आते हुए) अम्मी, देखो शांता आंटी आई है !

प्रेम — शांता बड़ी देर कर दी ।

शांता — भैया, क्या बताऊं

नीला — अम्मी देखो, शांता आंटी मेरे लिए क्या लाई हैं !

मोहिनी — अरे वाह बहुत ही सुंदर और बढ़िया खिलौना है !

नीला — मम्मी, मैं उधर कमरे में जाकर खेलती हूं अपनी सहेलियों के साथ !

मोहिनी — अच्छा जा खेलो !

शांता — मोहिनी भाभी, नीला के जन्म दिन की आपको बहुत-बहुत बधाई हो !

मोहिनी — बधाई तुम्हें शांता !

प्रेम — शांता को बधाई ... का मतलब ?

मोहिनी — मेरा मतलब है घर की मुर्गी सबको मानी होती है । शांता कोई पराई थोड़े ही है !

शांता — (समझकर) भैया को तो मैं पराई लगती हूं । एक बार लड़की घर से चली जाये, फिर उसी घर में वह मेहमान हो जाती है । क्या ठीक है न भैया ?

प्रेम — (झेंपते हुए) नहीं शांता, बात यह है कि

शांता — भैया, बात मैं समझती हूं । अगर कोई औरत जग भी चूक जाये तो लाख पानियों से धुलकर भी वह मैली-की-मैली रहती है । मर्दों का यह समाज औरतों का एक गुनाह भी माफ नहीं कर सकता, चाहे उस जैसे दस गुनाह हर मर्द हर रोज करता हो । ।

मोहिनी — क्या बेबात की बातें शुरू कर दी तुमने आज आते ही । पहले कुछ खा पी लो ।

प्रेम — अरे, इतनी बड़ी फर्म की नये विचारों की अफसर को हमारे गरीब घर का खाना पसंद आयेगा ?

शांता — भैया, फिर तुमने

मोहिनी — अरे, यह तो अपनी छोटी बहन को छेड़ रहे हैं !

शांता — खैर, फर्म तो बड़ी है ही ! पहले एक हजार तनख्वाह मिलती थी, आज तरक्की देकर उन्होंने दो हजार कर दी है । शाम को जब मैं होस्टल लौटती हूं, तो मुझे कमरा जैसे खाने को दौड़ता है और फिर मैं आधी-आधी रात तक क्लब में जाकर बैठी रहती हूं ।

प्रेम — मैंने तुम्हें कई बार कहा है, तुम हमारे यहां आ जाओ । पिताजी और माताजी जब से गांव गये हैं, इतनी बड़ी कोठी खाली पड़ी है ।

शांता — अरे भैया ! मैं यहां आ जाऊं तो तुम्हारी नीला से कोई शादी नहीं करेगा । समाज की नजरों में मैं पतिता हूं न ?

मोहिनी हमारी बेटी का जब समय आयेगा तो देखा जायेगा । तुम उसकी चिन्ता मत करो शांता ।

प्रेम कौन जानता है नीला तुमसे भी चार कदम आगे निकले । तुम्हारे इन कटे बालों का फैशन उसे इतना पसंद है कि रोज जिक्र करती है कि

मोहिनी (बात को टालते हुए) यह बताओ शांता, तुमने इतना विलंब क्या कर दिया । हम तो चार बजे से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे थे ।

शांता दफ्तर से उठकर मैं हेयर ड्रेसर के यहां चली गई । बाहर निकली तो मेरी कार ने चलने से इन्कार कर दिया । उसे वर्कशाप छोडकर टैक्सी मे आई हू ।

प्रेम (छेडते हुए) आजकल नये जमाने की बेचारी लडकी के लिए मुसीबतें भी तो कितनी बढ गई हैं ।

नीला (बाहर से आवाज) अम्मी मेरी सहेलियां जा रही है ।

मोहिनी अच्छा बेटी, मैं आई ! (जाती है)

प्रेम (जरा रुक कर) शांता, तुम बाजार वाले मेट कराने गई थी या कहीं और बैठी रही ?

शांता क्या मतलब ?

प्रेम मेरा मतलब है तुम्हारे चेहरे पर एक विचित्र प्रकार की चमक है । तेरी आंखों मे एक प्रकार की मस्ती है । तेरे मुह से तेरे हर बाल के साथ एक विचित्र प्रकार की

शांता बू आ रही है । ओह ! (सिसकने लगती है)

प्रेम यह तुझे क्या हो गया, शांता ?

शांता लोगों को मेरे नाम से बू आती है । एक लडकी जो अपने माता पिता से बिना कहे घर से निकल गयी । लोगों को मेरे अंग अंग मे से बू आती है । एक लडकी जो एक प्रेमी का स्वांग रचने वाले मर्द की झूठी बातों को सच समझती रही । लोगों को मेरी हर हरकत में से बू आती है । एक लडकी जिसने समाज

की मर्यादा को तोड कर अपने आप को हमेशा हमेशा के लिए कलंकित कर लिया।

प्रेम शांता, तुम्हें मुझ से शिकायत नहीं होनी चाहिए, मैं तुम्हारे भेद को आज पाँच बरस हो गये हैं, छाती से लगाये फिर रहा हू। तुझे माताजी और पिताजी से शिकायत नहीं होनी चाहिए। उन्होंने तुम्हें तभी माफ़ कर दिया था। वे तुम्हें अपनाने को तैयार हैं। हमारे सारे-के-सारे परिवार में तेरी उस रात की हरकत का केवल मुझे पता है और किसी को इसकी खबर तक नहीं। मैंने अपनी पत्नी तक को यह भेद नहीं बताया। मुझे पता है कितना कठिन होता है एक पति के लिए अपनी अप्सरा जैसी पत्नी से कोई बात छिपा कर रखना।

शांता पर मैं अपने दिल के चोर का क्या करू? सब सजाओं से भारी सजा अपने मन की सजा होती है। मेरी ओर उठी हर नजर मुझे तीर की तरह लगती है। मुझी से हँस-हँस कर बातें कर रहा हर आदमी मुझे ऐसे लगता है जैसे मुझ पर तरस खा रहा हो और फिर मैं खीज कर, थक कर, हार कर अपने खोल में घुस कर बैठ जाती हू। छोटी छोटी कमजोरियों को मैंने अपने आपको घरौंदा बना लिया है।

प्रेम हिंदुस्तानी लडकी का बाल कटवाना छोटी कमजोरी है। हिंदुस्तानी लडकी का सिगरेट पीना भी शायद छोटी कमजोरी है। हिंदुस्तानी लडकी का अलग हॉस्टल में अकेले रहना भी छोटी कमजोरी है। लेकिन हिंदुस्तानी लडकी का आधी आधी रात तक क्लब में पडे रहना मेरी दृष्टि में छोटी कमजोरी नहीं।

शांता हा भैया! तुम यह कह सकते हो। जिसका प्यारा-सा अपना एक घर है। जिसकी परी जैसी सुंदर पत्नी है। जिसके घर जब बच्चा नहीं था, तो भगवान ने एक कुवारी लडकी को हमेशा हमेशा के लिए कलंकित करके उसके लिए बच्चा पैदा करवाया और उसके घर उसकी पत्नी की गोद में लाकर रख दिया।

(बाहर सड़क पर एक मोटर के हार्न की ध्वनि)

शाता यह पिताजी की मोटर का हार्न है शायद !

प्रेम उन्हें माताजी के साथ आज शाम को आना तो था, मगर यह हार्न उनकी मोटर का नहीं ।

शाता वे अब कब आयेंगे, रात होने लगी है ?

प्रेम नहीं, माताजी का कुछ पता नहीं । घड़ी दो घड़ी के लिए आती हैं और फिर गांव वापस चली जाती हैं ।

शाता गांव भी कौन सा दूर है । 20 किलोमीटर है यहां से । चाहे कोई दिन में दस चक्कर काट ले ।

प्रेम पिताजी कहते तो थे कि नीला के जन्म दिन पर जरूर आयेंगे ।

शाता नीला पराई लड़की है । अगर अपनी पोती होती, तो यह संभव था क्या कि चप्पा भर दूरी से दादा न आता, दादी न आती ? खून खून होता है और पानी पानी ।

प्रेम यह बात तो, शाता शायद तुम्हारी ठीक नहीं । खून अभी भी बेशक खून है । नीला अगर उनकी पोती न सही तो धेवती तो है ।

शाता (डाटकर) प्रेम !

प्रेम चिल्लाओ नहीं ! कई बार इन्सान दुनिया को छलते छलते अपने आप को छलना शुरू कर देता है ।

शाता दफ्तर की अपनी एक सहेली को मैंने कहा था मेरा विवाह एक फौजी कप्तान के साथ हुआ जो लड़ाई में मारा गया । और अब मैं हमेशा उसे इस तरह कोई कहानी गढ़ कर सुना देती हूं । और कई बार अकेली बैठे-बैठे मुझे यों लगता है कि जो कुछ मैं हूं सब गलत है और जो कुछ मैं अपनी सहेली को बताती हूं, वह सब कुछ ठीक है । मैं एक ,फौजी की पत्नी हूं और मेरा पति लड़ाई में मारा गया ।

प्रेम — शांता, तू वाकई कुछ पिये हुए है। जो कुछ तेरे मुंह में आता है बोले जा रही है, बोले जा रही है।

शांता — भैया, तुम्हें वहम है! मैं बिल्कुल होश में हूं। भाभी के इधर आने से पहले मैं आपको अपने मन की बात बताना चाहती हूं।

प्रेम — ऐसी कौन-सी बात है जो तुम्हें बतानी है?

शांता — (झिझक रही है)

प्रेम — हां बोल, तेरे मन में क्या है?

शांता — मैं अपनी बच्ची को लेने आई हूं।

प्रेम — क्या मतलब?

शांता — मैं नीला को अपने पास रखूंगी।

प्रेम — कुछ सोचो तुम यह क्या कह रही हो?

शांता — एक मां अपनी कोख की जाई को उसका स्थान उसे वापस देना चाहती है। इसमें गलत कौन-सी बात है?

प्रेम — तुझे पता है इसका परिणाम क्या होगा?

शांता — मुझे क्या नहीं पता? मुझे फौज में मेरे अपनी बच्ची के पिता का नाम बताना होगा, पता बताना होगा, सोच-सोच कर गढ़ गढ़ कर झूठ को एक ऐसा रूप देना होगा कि झूठ झूठ न दिखाई दे, सच लगने लग जाये।

प्रेम — ऐसी गैर-जिम्मेदारी का जीवन तुम कब तक व्यतीत करती रहोगी?

शांता — जिम्मेदारी तो मैं ढूंढती हूं। अपनी कोख की जाई बच्ची को जब कोई मां अपने पास रखना चाहती है, उसको स्वयं पालना चाहती है, तो यह मां जिम्मेदारी ही तो पहचान रही होती है। भैया, मुझे मेरी बच्ची वापस दे दो!

प्रेम — ऐसी मां का जो हाल हमारे समाज में होता है, उसका अनुमान भी तुझे है?

शांता : हां है !

प्रेम तुझे यह शहर छोड़ना पड़ेगा।

शांता : मैं उसके लिए तैयार हूं।

प्रेम : तुझे शायद नौकरी से भी जवाब मिल जाये।

शांता : मुझे पर्वाह नहीं।

प्रेम तुझे देखकर लोग हंसा करेंगे।

शांता अब मैं रोती हूं। फिर लोग हंसा करेंगे, क्या फर्क है ?

प्रेम : तुझे अपने माता, भाई-बहन किसी पर भी तरस नहीं आता ? तेरी मां अभी तक बेटियां पैदा कर रही है। और इन बेटियों के लिए उसे दस घर ढूंढने हैं।

शांता : हमारे इस सारे देश में दस आदमी भी ऐसे नहीं, जो किसी लड़की के इस पाप को माफ कर दें कि वह एक गैर-जिम्मेदार मर्द की बातों में आ गई।

प्रेम दो वर्ष हुए तेरी मां ने एक और बेटी पैदा की और जिस बच्चे की अब उसे आस लगी हुई है वह भी बेटी होगी। एक बेटे की खोज में हमारी मां एक दर्जन बेटियों की जिम्मेदारी से लद चुकी है।

शांता बच्चे मुसीबत भी हो सकते हैं, बच्चे खुशी की एक किरण भी हो सकते हैं। बच्चे शोर भी हो सकते हैं, बच्चे संगीत भी हो सकते हैं। आज मैं अपनी नीला को लेकर ही जाऊंगी।

प्रेम शांता, तुम बाकायदा शादी करके एक और बच्चे की भी मां बन सकती हो। तुम्हें अपनी भाभी का ख्याल होना चाहिए।

शांता भाभी कोई और बच्चा भी गोद ले सकती है। पर मैं अब किसी और मर्द के धोखे में नहीं आऊंगी।

प्रेम : तुमने इस बच्चे को केवल जन्म दिया है। मोहिनी ने इसे रात रात भर जाग कर पाला है। आज पांच साल हो गये हैं वह इस पर अपने सारे सुख, अपने सारे आराम निछावर कर रही है। जब नीला बीमार पड़ी, तो मोहिनी ने उसके लिए क्या

नहीं किया। रात-रो कर उसने भगवान से फरियादें की, हाथ जोड़ कर विनती की। दिन-रात प्रार्थना करके उसने बच्ची की सेहत मांगी। उस मोहिनी का इस बच्ची पर कोई अधिकार नहीं?

शांता — भाई भी तो बहना के लिए आसमान के तारे तोड़ कर ले आते हैं। भैया, मैं तुमसे अपनी बच्ची की भीख मांग रही हूं।

प्रेम — नहीं, नहीं, मोहिनी की दुनिया उजड़ जायेगी।

शांता — भैया, आपको मुझ पर तरस नहीं आता? रात-रात भर जाग कर मैं अपनी दुनिया के अंधेरे में किसी सहारे को ढूंढती रहती हूं। नीला मेरे पास अगर हो तो शायद इसके बाप को भूली डगर फिर याद आ जाये। जहां मेरी मुहब्बत बेकार टक्करें मार-मार कर थक गई है, वहां नीला का प्यार शायद कामयाब हो जाये। (सिसकने लगती है)

प्रेम — (जल्दी से) यह क्या? जल्दी से आंसू पोंछ डाल! नीला के साथ मोहिनी आ रही है!

शांता — (संभलकर) भाभी, तुम... तुम (हैरान-सी) ऐं, नीला को तुमने मेरी गोदी में क्यों बैठा दिया?

मोहिनी — शांता, मैंने सब कुछ सुन लिया है। मुझे तुमसे पूरी सहानुभूति है। किसी की लाश पर खड़ी होकर मैं सुरक्षित नहीं होना चाहती। यह रही तुम्हारी अमानत। संभालो इसे।

शांता — भाभी!

(तभी कार के आने की आवाज सुनाई देती है)

प्रेम — मेरा ख्याल है माताजी आ गई हैं।

मोहिनी — शांता, तुम नीला को लेकर पिछले गेट से फौरन निकल जाओ!

शांता — अच्छा भाभी!

नीला मम्मी!

मोहिनी नीला। तेरी मम्मी मैं नहीं, यह माता है। जा इनके साथ

माता आओ बेटा, हम चलें।

प्रेम (कुछ देर बाद) आज पांच वर्ष हुए, जिस रास्ते नीला को यह आ कर यहां छोड़ गई थी, उसी रास्ते आज उसको लेकर चली गई है। जीवन में चोर दरवाजे में लोग छावे भी चलते हैं, जीवन के चार दरवाजे से लाग आय भी छूटते हैं। ऐं, मोहिनी, तुम रो रही हो!

मोहिनी ओह, मैं बुरी तरह थक गई हूं! मुझे चक्कर-सा आ रहा है! मैं जाती हूं, अपने कमरे में। (जाती है)

माता (दूर से) प्रेम!

प्रेम बड़ी देर कर दी, माताजी!

माता (आती हुई) हमारी मोटर रास्ते में खराब हो गयी। तेरे पिताजी से अब कुछ नहीं होता। सिर मार-मार कर थक गये और उन्हें खराबी का पता नहीं चला। फिर रास्ता चलते एक ड्राइवर ने आकर हाथ लगाया कि मोटर चली।

(दूर बच्चों का शोर)

प्रेम सब बच्चे आये हैं?

माता हां, नीला के जन्मदिन की पार्टी का सब को चाव था न?

पिता (आते हुए) नीला, नीला! देख, मैं तेरे लिए क्या लाया हूं? (पास आकर) प्रेम, नीला कहां है। मोहिनी भी यहीं नजर नहीं आती।

प्रेम नीला को उसकी मां आकर ले गई है।

माता पिता (चौंककर) क्या कहा? उसकी मां!

प्रेम आज से पांच वर्ष पहले जो लड़का उसको आकर यहां बरामदे में छोड़ गई थी, आज शाम को आकर अपना बच्चा को ले गयी है।

माता	और पार्टी का सब सामान वैसे-का-वैसा धरा रह गया ?
प्रेम	नही, जन्मदिन की पार्टी तो हो चुकी थी । पार्टी के बाद नीला की मा आई और अपनी बच्ची की उगली पकडकर ले गई ।
पिता	आर बेचारी मोहिनी ?
माता	मोहिनी का क्या है ? अगर लडकी ही पालनी है, तो अपने घर मे थोडी लडकिया है ? बिटटो का इतना स्नेह है अपनी भाभी के साथ ।
पिता	मोहिनी अन्दर है ?
माता	मै देखती हू। (जाती है)
पिता	शाता नही आई इधर कभी ? उसका क्या हाल है ?
प्रेम	आई थी, अभी गई है।
पिता	वह उसी फर्म मे नौकरी कर रही है न ?

(बच्चों का शोर सुनाई देता है)

प्रेम	बच्चे कितना शोर मचा रहे है, और मोहिनी की तबीयत ठीक नही है ।
पिता	मेरा ख्याल है, मिठाई बट रही है ।
प्रेम	मिठाई की तो टोकरी भरी है, मिठाई के लिए क्यो लड रही है लडकिया । सप्ताह भर खाती रहे, तो इनसे मिठाई नही खत्म होगी ।
माता	(आते हुए) मोहिनी को फिर सिर दद का दौरा पड गया है। फौरन डाक्टर को बुलाना होगा ।
प्रेम	ओह ! आज इतने वर्षों बाद उसे यही दौरा पडा । मै अभी डाक्टर को बुलाता हू । हमारे पडोस मे ही रहने लगा है । (जाता है)
माता	बहू को और कोई दुख नही । दुख केवल सतान का है । आज नीला गई और आज ही उसे दौरा पड गया ।

पिता मैं सोचता हूं, हम बिट्टो को यहीं छोड जाए, मोहिनी का दिल लगा रहेगा।

माता बिल्कुल ठीक। मैं ने अभी।

पिता दो चार सप्ताह तक जब लडकी का दिल बहल गया, तो आ कर इसे ले जायेंगे।

माता यदि नीला को यह अपनी बेटी बना सकती है, तो बेशक बिट्टो को ही बना ले। इसमे हमें कोई आपत्ति नही।

पिता मैं प्रेम से बात करूंगा।

माता मैंने अभी मोहिनी से बात की थी।

पिता क्या कहा उसने ?

माता उसको क्या इन्कार हो सकता है ?

पिता तो ठीक है। उधर तुम बेटियां जनती रहती हो, इधर उन्हें ठिकाने लगाने के तरीके भी ढूढती रहती हो।

माता इस बार तो बेटा ही होगा, मुझे डाक्टर ने कहा है।

डॉक्टर : (आते हुए) क्या कहा है डॉक्टर ने, माताजी ?

पिता आ गये डॉक्टर। इसकी बातें छोडो जी। अन्दर बहू की तबीयत खराब है। पहले आप उसको देखें।

डॉक्टर बहुत अच्छा। (जाता है)

पिता : सुनो प्रेम !

प्रेम जी पिताजी !

पिता मोहिनी को नीला के जाने का गम है। उसी गम के कारण उसे फिर सिर दर्द का दौरा पडा है। तुम्हारी माता का विचार है हम बिट्टो को कुछ समय के लिए यहां छोड जाए। मोहिनी का दिल बहलाये रखेगी।

प्रेम आपने ठीक सोचा, पिताजी ! मोहिनी बिट्टो को सबसे प्यार करती है, जब यह पैदा हुई थी। अच्छा मैं अन्दर कमरे में जाकर देखूं कि मोहिनी का क्या हाल है ?

डॉक्टर : (आते हुए) आप यहीं रहिए, मि० प्रेम ! क्या आप एक शुभ समाचार सुनने के लिए तैयार हैं ?

माता : क्या बात है, डाक्टर साहब ? आपके मुंह में घी-शक्कर !

डॉक्टर : आपकी बहू के घर बच्चा होने वाला है ।

सब : (हर्ष विभोर) क्या, मोहिनी मां बनने वाली है ?

माता पिता : (दोनों) हे भगवान तेरा लाख-लाख शुक्र है !

डॉक्टर : मि० प्रेम, आपको बहुत बहुत बधाई !

प्रेम : धन्यवाद डॉक्टर ! (हर्ष विभोर) मोहिनी, मोहिनी

(हर्ष भरा संगीत उभरता है और फिर मोहिनी लोरी गाती सुनाई देती है)

प्रेम : (हर्ष विभोर-सा) मोहिनी, बेटे की मां बन गई ! इसका नारी-जीवन सफल हुआ । सफल मातृत्व की संगीत लहरी से हमारे जीवन की सूखी डाली फूलों से लद गई । बच्चा ही है जीवन का संगीत ... अमर संगीत ।

(मोहिनी की लोरी चारों ओर गूंजती हुई सुनाई देती है)

मूल पंजाबी : कर्तार सिंह दुग्गल

रूपांतरकार : कर्तार सिंह दुग्गल

अनार की झाड़ी

(नर्सी रिकार्ड प्लेयर पर प्रीति सागर का गाया हुआ गाना "माय हार्ट इज़ बीटिंग" सुन रही है और इसके साथ-साथ खुद भी गाती और तालियां बजाती रहती है।)

कमलावती (गुस्से में) नर्सी ! ओ नर्सी, सुन रही हो क्या ?

नर्सी हां, हां, सुन रही हूं, कहो क्या कहना है ? (साथ ही तालियां बजाती और गाती है)। "माय हार्ट इज़ बीटिंग !"

कमलावती आग लगे इस रिकार्ड में !

नर्सी माय हार्ट इज़ बीटिंग !

कमलावती (जल भुनकर) यह समय बीटिंग बीटिंग करने का नहीं है। मेरी पूजा का समय है। नर्सी, ज़रा खिड़की के बाहर तो देखो, अनार की झाड़ी पर धूप उतर आई है। मुझे पूजा करने दो।

नर्सी बहुत पूजा कर चुकीं अब तक ! अब आराम करो ! आज तुम नीचे आंगन में उतर कर अनार की झाड़ी के नीचे बैठकर जाप भी नहीं कर पाओगी।

कमलावती हम शिवाय, में शिवाय ! तुम लोग ही तो चाहते थे कि मेरा घुटना बेकार हो जाए। भगवान ने तुम्हारी सुन ली !

नर्सी किसकी सुन ली ? कैसी बातें करती हो मेम ? ऐसा झूठा इलज़ाम न धरा करो किसी पर !

कमलावती अच्छा भई, सुन लिया तुम्हारा मशवरा ! हां, ज़रा काशीराम को यहां आने को कह दो !

नर्सी काशीराम से क्या काम है ? दवा पानी है, बोलो ?

कमलावती हां, कयूम साहब को जाकर कह आता कि वह ज़रा मेरे घुटने को आकर देख लें !

नर्स क्यूम साहब हमारे नावर नहीं हैं । यह तो मरीजों को देखने का वक्त है डाक्टरों का । यह क्या बेमारों के ऐसे ही छोड़कर पहले तुम्हें देखने आयेंगे ?

कमलावती आता तो रहा है, जाने किस डाक्टर को बुला ले आए, मुझे आज दूसरा घुटना भी सूजा हुआ नज़र आ रहा है ?

नर्स (रिकार्ड की आवाज जरा कम करके) बात यह है कि तुमसे परहेज होता नहीं । नमक और तड़के के बगैर तुम से निवाला भी नहीं खाया जाता । सूजन नहीं होगी तो और क्या होगा ?

कमलावती तुमने भी आजकल बहू से जबान चलाना सीख लिया है । यह रिकार्ड बन्द कर दो अब !

नर्स मैंने यह रिकार्ड सिर्फ तुम्हारे लिए लगाया था । इसका म्यूज़िक सुनो ! सुनकर जी को कितनी शांति मिलती है । तुम कान धर कर सुनो ! रिकार्ड सुनते-सुनते तुम सो जाओगी । (फिर गाती है) माय हार्ट इज़ वेटिंग !

काशीराम (आकर) छोटी दीदी आपका टेलीफोन है !

कमलावती बेटी किसका फोन है सवेरे-सवेरे !

नर्स (खुश होकर) टेलीफोन है ! ओ वंडरफुल ! मैं इसी का इंतजार कर रही थी । (जाती है)

कमलावती काशीराम ! कौन है टेलीफोन पर ?

काशीराम जाने कौन है बीबी जी ? कुछ ही दिनों से टेलीफोन करता रहा है । कहता है, मेरा नाम अरविंद है !

कमलावती अरविंद ! यह कहां से नया ही नाम निकला है ? अरविंद ! क्या कश्मीरी है ?

काशीराम मेरे साथ तो कश्मीरी में ही बोल रहा था ।

कमलावती क्या पूछ रहा था तुमसे ?

काशीराम बोला, क्या नर्स जी टेलीफोन पर मिल सकती है ?

(नर्स गुनगुनाते हुए आती है—माय हार्ट इज बीटिंग)

कमलावती अच्छा चुप रहो, यह आ रही है !

काशीराम आप चाय पियेंगी ?

कमलावती हां, कोई पिलाये तो पी लूंगी !

नर्स माय हार्ट इज बीटिंग ।

कमलावती अंग्रेजी नहीं बोलेगी तो और क्या करेगी ? जानती है ना कि मां को दो शब्द भी अंग्रेजी के नहीं आते, इसलिए जो जी में आये सो बोल देती है ।

नर्स मैंने तुमसे क्या कहा ? मैं तो बस गा रही हूं । तुम न सुनना !

कमलावती तो क्या मैं कानों में उंगली दे कर बैठी रहूं । जबरदस्ती सुनना पड़े तो क्या करूंगी ? बाहर निकलने का आसरा नहीं । बाहर जाती, लेकिन मेरे घुटने ही जवाब दे चुके हैं ।

नर्स घबराती क्यों हो ? डाक्टर का इलाज जारी रखो ! कल तक ठीक हो जाओगी ।

कमलावती नहीं यह दर्द इस डाक्टर से ठीक नहीं होगा । जल्दी में तुम लोग जाने कैसे डाक्टर को ले आए ? अब कयूम साहब सुनेंगे कि किसी और डाक्टर ने मेरा इलाज किया तो कैसी शर्मिन्दगी होगी उनके सामने ।

नर्स इसके सिवा चारा भी नहीं था । कयूम साहब क्लीनिक पर थे नहीं, जब तुम बीमार हो गईं । भाई साहब ने क्या बुरा किया जो डाक्टर को ले आये । यह तो मामूली बीमारी है । अगर परहेज करोगी नहीं, तो यही मामूली बीमारी बड़ी खतरनाक बन सकती है ।

कमलावती हां, हां और कौन बात तुम्हारे मुंह से निकलेगी ! फैट •

नर्स मैंने ठीक ही कहा डाक्टर साहब कह रहे थे कि तुम्हारी मम्मी में फैट ज्यादा हो गई है ।

कमलावती परेशु [illegible] करने का जमाना भी नहीं रहा ! किसके [illegible] रहे हैं ? जरा अगर ऐसी बात कहूंगी तो उतार [illegible] सीधा

कर देती ! तू मेरी अपनी कोख से निकली है। तुझ से कुछ कहे बनता ही नहीं। लेकिन तुमने कैसे यह कहने की जुरत की कि मेरे चर्बी चढ़ गई है ? कहां चर्बी चढ़ गई है ? कौन सी मोटी हो गयी हूं मैं ?

नसी भाई साहब ठीक ही कहते हैं ! इस घर की दीवारों से भी लड़ाई टपकती रहती है। बात करना मुश्किल हो गया है यहां। उन्होंने अच्छा किया जो इस घर को छोड़ कर अलग हो गए।

कमलावती तुम्हें सुनाती, लेकिन नहीं सुना सकती। यह अनार की झाड़ी सुन लेगी ना ?

नसी झाड़ियों के कान नहीं हुआ करते ममी ! तुम्हारी अनार की झाड़ी क्या सुनेगी। तुम्हें जो भी कहना हो कहो, अन्दर दबाए मत रखो ! उसे बाहर निकालो !

कमलावती नहीं यह तुम्हारा दोष नहीं है। समय ही बिगड़ गया है।

नसी लो, अब समय बिगड़ गया ! यह मैं ही अच्छी हूं जो साफ़ साफ़ तुम्हें सुना दिया। डाक्टर साहब ने भाई साहब से कहा था अपनी ममी से कह दीजिए कि वह फैट जरा घटा दें, लेकिन वह तुमसे कहने से डर रहे थे।

कमलावती तभी तो तुमने वीरता दिखाई। यह डाक्टर निगोड़ा मुझे फिर कहीं मिला तो उसकी खबर लूंगी ! कयूम साहब नहीं कहते अगर मेरे फैट होती ? और इस डाक्टर को देखो, जैसे मां की कोख से नहीं पत्थर से पैदा हुआ है। जाने उसे मुझ में क्या नजर आया। (सवालिया अन्दाज में) कौन-सी चर्बी चढ़ी है मेरे ? कौन-से पुलाव खिला रहे हो मुझे। अभागा कहीं का ! मेरी बाहें देख लेना, उसने तो भरा फूला हुआ घुटना देख लिया और फैट फैट की रट लगा दी !

नसी अब तुम ख्वाहमखाह किन झगड़ों में डूब गईं !

कमलावती झगड़ा में पड़ें मेरे बैरी ! बेलबाटम और मैक्सी पहनने से ही बात नहीं बनती। जरा तमीज सीखो। माय हाट इज बीटिंग कहने के अलावा कुछ और भी आता है तुम्हें ?

नसी और क्या आना चाहिए, एम० ए० कर रही हूं, एम० ए० !

कमलावती (व्यंग्य से) बड़ा कमाल कर रही हो ! सलवार और कमीज प्रेस कर सकती हो ? पर म कोई मेहमान आये तो एक प्याली चाय बना सकती हो ?

नर्सी इतना सलाघा कुछ आप करना रहा हो नहीं मेरे लिए। तुम्हें तो प्रेस करना और चाय बनाना बड़ी बात नजर आती है।

कमलावती कल किसी पराये घर म जायेगी वह कहेंगे कि इस लड़की की मा ने कोई सलीका नहीं सिखाया।

नर्सी घबराओ नहीं, मैं ऐसे घर म जाऊगी ही नहीं, जो मॉडर्न न हो।

कमलावती यह सब मनुष्य के अपने बस की बात थोड़े ही है। भाग्य की रेखाए जिसे कहा पहुचा देंगी, यह कौन जानता है ?

नर्सी मैं जानती हू कि मुझे क्या करना है ? मुझे अपना फ्यूचर खुद ही बनाना है।

कमलावती हा, हा—तुम अपना फ्यूचर खुद बनाओगी !

नर्सी जहा मेरी मरजी होगी वही शादी करूगी !

कमलावती हा हा जानती हू। पिछले साल उस मुस्टण्डे के साथ लव करके घर भर को मुसीबत म डाल दिया था। भाइयों की इज्जत मिट्टी म मिला दी थी।

नर्सी वह सचमुच मेरी मिस्टेक थी—गलती थी। मैंने अपनी गलती आप ही मान ली।

कमलावती वह तो तुम्हारे भाग अच्छे थे, जो समय पर पता चल गया। तुम भी बड़ी मुश्किल से बच गइ और हम भी रुसवाई से बच गए।

नर्सी ऐसा होता रहता है ! अन्दर का राज कौन जाने ? वैसे बाहर से तो शरीफ आदमी नजर आ रहा था। कहते थे, बम्बई में कही दो हजार की तनख्वाह पर काम कर रहा है।

कमलावती आग लगे ऐसी तनख्वाह पे ! कोई उसे कह तो देता कि बम्बई म शादी करके अब क्या कश्मीर आकर मासूम लड़कियों को बरगला रहे हो ?

नसी — वह कौन था मुझे वरगलाने वाला ? मैं तो उस पर थूकती भी नहीं ! तुम ही ने तो कहा था कि वह पम्मी जी की ससुराल वालों का कोई दूर का रिश्तेदार है। मोटर कार है उसके पास। बम्बई में बंगला है, बड़ी पोस्ट है। नहीं सब कुछ में भी धोखा खा गई।

कमलावती — हाय, पल्ले पड़ा ! उसकी असलियत वक्त पर खुल गई, नहीं तो मुए ने हमें किसी को मुँह दिखाने लायक नहीं छोड़ा था।

नसी — चलो, मुझे एक नया तजुरबा मिला। इन्हीं बातों से इंसान सीखता है। (गाती है) माय हार्ट इज़ बीटिंग !

कमलावती — हाँ तुमने सब कुछ सीखा ! क्या कहने हैं तुम्हारे ! अब तो तुम्हारी इस मामले में एक भी नहीं चलेगी। अब तो तुम्हारे फरिश्तों को भी खबर न होगी ! मैंने छिब्बूलाल बिचौलिए से कहा है कि वह कोई अच्छा घर देख ले। घर मिला तो तुम भी देखोगी, मैं भी, किसी हालत में इस साल अक्तूबर में तुम्हारी शादी करना चाहती हूँ।

नसी — इस मामले में जबरदस्ती नहीं चलेगी। शादी मुझे करनी है।

कमलावती — तुम्हारे साथ तो जबरदस्ती ही करनी पड़ेगी। तुम तो अब हाथों से निकली जा रही हो। वह किस का टेलीफोन था ?

नसी — तुम तो यों ही अपना मूड खराब कर रही हो मम्मी ! मैं तुम्हें खुद ही बता दूँगी।

कमलावती — क्या बता देगी री मुझे ? अभी जाकर तेरे भाइयों से कह दूँगी। वह रोज-रोज कौन टेलीफोन करता है तुझे ?

नसी — ओह हो ! गुस्सा क्या करती हो। गुस्सा करना तुम्हारे लिए खतरनाक है। तुम अपने दिमाग और शरीर दोनों को शांति दो, आराम दो !

कमलावती — हाँ, हाँ, क्या कहने हैं ? बहुत आराम दे रहे हो तुम लोग। एक-एक से कहते-कहते थक गयी कि जरा अनार की झाड़ी में एक जग पानी दे आओ ! किसी ने नहीं सुना। मैं अगर चलने-फिरने लायक होती, तो किसी के आगे हाथ क्या जोड़ती ?

नंसी इस मामूली-सी बात के लिए तुम्हें किस के सामने हाथ जोड़ने पडे हैं ? मुझ से तो कहा नही !

कमलावती बहू जी से नही कहा था क्या? उल्टा उसने ऐसी-ऐसी सुनाइ कि मुझ से रहा न गया ।

नसी तो अनार की झाडी मे पानी न देने के लिए बहू जी से झगड बैठी तुम । तुम तो एक जन्म से इस बूढी सख्त जान झाडी को पानी पिलाती आ रही हो । इसका कुछ फायदा हुआ ?

कमलावती कौन बूढी हो गई है ?

नसी बूढी नही तो और क्या ? इसमे फूल आते हैं, न फल लगते हैं—बेकार झाड । आजकल अनार की झाडिया को देखो, फूलो मे लदी-फदी हैं ! और फिर हमारी झाडी को भी देखो । इसकी शाखें इतनी फैल गई हैं कि इस कमरे की रोशनी भी रोक दी है । खिडकी बन्द कर दी है । खिडकी से कोई बाहर को झाकता, मगर कैसे ! यह अनार की झाडी उसे बाहर झाकने देगी ? इसकी शाखे तो लिपट-लिपट जाती हैं इसान से !

कमलावती कितनी बार तुम लोगो से कहा है कि ऐसी बातें इस झाडी के सामने न किया करो यह सबकुछ समझ लेती है ।

नसी जी हा, जरूर समझ लेती होगी ! तुम तो भाई साहब की तरह कह दोगी कि दीवारें भी सुन लेती हैं ।

कमलावती यह कोई झूठ है क्या ? दीवारो के कान नही होते क्या ?

नसी (हसती है) हा-हा हा-हा

कमलावती यह देखो !

नसी : (चौंक कर) क्या देखू ?

कमलावती खिडकी की तरफ देखो । देखो झाडी कैसे पीछे की तरफ सरक-सी गई ! इसकी एक शाख शीशे की खिडकी के साथ मुह लगाए खडी थी । हमारी ही बातें सुन रही थी । अब देखो शीशे की खिडकी कहा और अनार की शाख कहा ?

नसी मेरी बातें सुन कर यह चिढ गई होगी हू ?

कमलावती — अगर इसकी जबान होती तो तुम्हें कुछ सुनाई भी

नसी — यह कहेगी क्या और मैं सुनूंगी क्या ? हवा की एक लहर इस शाख से आकर टकराई और यह पलट गई उस तरफ और तुमने कहा कि इसने हमारी बात सुन ली और नाराज हो गई ।

कमलावती — तुम क्या जानो तुम्हारे स्वर्गवासी पिता इस झाड़ी की कितनी कदर करते थे ।

नसी — यह तब की बात होगी जब इसमें फूल खिलते होंगे, फल लगते होंगे ।

कमलावती — इसका एक-एक अनार इतना बड़ा होता था । (हाथ से इशारा करती है ।) खाने में मीठा शहद जैसा, लेकिन अब तो इसे कोई पूछता भी नहीं ।

नसी — इस झाड़ी का समय निकल गया । इसे पानी पिलाना बेकार है और अगर तुम ठीक हो गई, तो खुद ही जी भर कर पानी पिलाना इसे ।

कमलावती — मैं तो बहू पर हैरान हो रही हूं । पानी के एक जग के लिए ही तो कहा था । कोई पहाड़ खोदने के लिए नहीं कहा था । इससे तो अच्छा होता अगर काशीराम से ही कहा होता ।

नसी — मम्मी तुम तो ऐसे कहती हो जैसे काशीराम के लिए कोई और काम रहा ही नहीं । यह बेचारा कहां-कहां सर खपाता फिरेगा । खाना बनाएगा, चाय बनाएगा ।

कमलावती — (बात काटकर) टेलीफोन सुनेगा या अनार की झाड़ी में पानी देगा ।

(टेलीफोन की घण्टी बजती है, नसी दौड़कर जाती है ।)

नसी — (जाते जाते) मम्मी तुम आराम करो और यही आराम तुम्हारे लिए सबसे बड़ी दवा है ।

(अन्तराल संगीत)

रामेश — क्या नींद आ रही है ? उठो अब बहुत सो चुकी ।

प्रेमा (गुस्से मे) रहने दो, मुझे हाथ न लगाओ !

राकेश भई अब उठो भ। ! तुम अगर ऐसे ही बिस्तर पर बैठ गइ तो बच्चो पर इसका क्या प्रभाव होगा ? देखो सूरज वह। तक चढ गया है ।

प्रेमा (रुधी सी आवाज में) जाने दो, मैं पलग से गिर जाऊँगी !

राकेश अरे तुमने करवट क्या बदल ली, चेहरा तक छुपाया मुझसे ?

प्रेमा (सिसकियों में) ओह मेरे गुदगुदा न करो ! मुझे बुरा लगता है !

राकेश तुम शायद रो रही हो ! क्या बात क्या है ?

प्रेमा क्या, अब रोने पर भी कोई रोक लगी है ? क्या मुझे इसकी भी इजाजत नहीं है ?

राकेश माई गॉड ! तुम यह क्या कह रही हो ? आखिर रोने की क्या बात है?

प्रेमा भगवान भी शायद मेरे भाग्य बनाते वक्त सो रहे थे !

राकेश लगता है आज मम्मी ने फिर कुछ कहा है तुमसे ?

प्रेमा कहती तो कोई बात नही थी, लेकिन बार-बार की बेइज्जती और अपमान मौत से भी बदतर है ! आखिर मैं भी तो कोई हू !

राकेश यह घर तुम्हारा है । हम भी तुम्हारे है । क्या आसू बहाने से अच्छा यह नहीं होगा कि तुम साफ-साफ बताओ कि सास बहू मे किस बात की तकरार हो गयी है ?

प्रेमा जानती हू तुम से कहना या न-कहना एक-ही बात है तुम तो मम्मी की मुट्ठी मे हो। मेरा उपाय कैसे करोगे ?

राकेश अरे भई कुछ कहोगी भी कि मम्मी ने किस बात पर तुम्हारा अपमान किया ?

प्रेमा अनार का गाछ। मे पानी देने को कहा था ।

राकेश तो तुमने गाछों मे पानी नहीं दिया क्या ?

प्रेमा भूल गई !

राकेश लगता है तुम मम्मी से बहुत नाराज हो ?

प्रेमा नाराज नही होऊ तो क्या करू ? उठते-बैठते कोई-न कोई मीन-मेख निकालती है। कोई दिन भी तो ऐसा नही जाता जब मुझसे उलझ नही पड़ती। झगडा करने के लिए बस बहाना ढूढती रहती है। आज भगवान ने घुटने बेकार कर दिए हैं और आज ही एक नयी समस्या खडी कर दी।

राकेश देखो प्रेमा, तुम मेरे ही सामने मेरी मा को कोस रही हो। यह मुझसे सहा नही जायेगा।

प्रेमा नही सहा जायेगा तो न सहो, मेरा कौन-सी जागीर छिन जायेगी ? मैं तुम्हारे बिना भी जिन्दा रह सकती हू। खैर है, मेरे मा-बाप खाते-पीते लोगो मे से हैं। मैं उन्हें बोझ नजर नही आऊगी। मैं मैके म आराम से रह सकती हू।

राकेश लेकिन तुम मैके जाओगी तो मुझे आराम कहा मिलेगा। मुझे तुम्हारी जरूरत है।

प्रेमा मुझसे ज्यादा तुम्हें मम्मी की जरूरत है।

राकेश हा उनकी भी जरूरत है और तुम्हारी भी जरूरत है।

प्रेमा हर वक्त मेरी जरूरत कहा है तुम्हें ? तुम सब लोग मतलबी हो। मैं तुम दोनो मा-बेटे को जानती हू। एक सेर हैं तो दूसरा सवा सेर।

राकेश (मजाक के अन्दाज मे) बस मेरा वजन सिर्फ सवा सेर है।

प्रेमा रोज ऐसे ही मजाक मे टालते रहते हो। सच तो यह है कि सारा दोष तुम्हारा है। तुमने ही मम्मा-मम्मा कह कर दिमाग खराब कर दिया है।

राकेश आखिर वह मा है। मा कहा मिलेगी दूसरी ? हमारे सिवा उसका और है ही कौन ? बडे भाई साहब तो पूरा कुनबा लेकर गाव मे बसने के लिए चले गए। उन्होंने यह भी ख्याल नही किया कि मा अब बूढी हो गई है, बूढो की अच्छी-बुरी हर बात बरदाश्त की जाती है। और फिर हमारी मा बुरी भी तो नही है।

प्रेमा हा, लेकिन तुम्हारी मा, मम्मी कहलाने के लायक भी नही है।

(काशीराम दरवाजे पर दस्तक देता है।)

काशीराम बहू जी ! बहू जी !

राकेश उठो भी अब, कोई पुकार रहा है ?

प्रेमा कोई नहीं काशीराम है !

राकेश कौन है भई अंदर आ जाओ !

काशीराम (अंदर आकर) मैं हूँ, काशीराम।

राकेश क्या काशीराम, मम्मी ठीक हैं न ?

काशोराम वह कह रही हैं कि अभी-अभी कयूम साहब को खिड़की से पुकार कर बुलाऊं !

राकेश मैं जानता हूं। इन्हें कयूम साहब के अलावा किसी दूसरे डाक्टर का इलाज रास नहीं आयेगा।

प्रेमा क्या नहीं आयेगा ? उन्हें तो आदत पड़ गई है कि पुकारो और डाक्टर हाजिर है। काशीराम, कयूम साहब को मत पुकारना !

काशीराम फिर क्या करूं बहू जी ?

प्रेमा तुम क्या बुद्धू हो ! इन मां-बेटा के लिए हर बात एक-सी है। जाने इस वक्त डाक्टर के पास कितने मरीज होंगे। तुम जाकर काकी से कह दो वही डाक्टर से कह देगी कि मम्मी बीमार है !

राकेश देखो किसी से कुछ नहीं कहना है। काकी को, न डाक्टर को। काशीराम मुझसे पूछे बिना किसी से कुछ नहीं कहना, समझे।

काशीराम ठीक है बाबू जी। आपके लिए नाश्ता ला दूं !

राकेश नहीं, मेरी भी तबीयत आज कुछ खाने की नहीं। बहूजी नहीं खायेंगी तो मैं भी नहीं खाऊंगा। जाओ तुम।

काशीराम जाता हूं बाबू जी।

प्रेमा आज बहू जी के लिए इतना प्यार क्यों उमड रहा है। बात क्या है ?

राकेश अब जाने भी दो सब कुछ आओ दोनों मम्मी के पास ही चाय पियेंगे !

प्रेमा तुम्ही जाओ। मैं तुम्हारी मम्मी से तंग आ चुकी हूँ!

राकेश हर बहू को सास बुरी ही नजर आती है। चलो अब उठो!

प्रेमा हा, हा, जो तन लागे सो तन जाने!

(अन्तराल संगीत)

राकेश बहू जी मम्मी कह रही थी कि तुमने दो दिनो से उनके कमरे में कदम भी नहीं धरा।

प्रेमा मुझे उस कमरे में अपनी कोई जरूरत दिखाई नहीं देती। और फिर तुम्हारी मम्मी को मुझ से ज्यादा अपनी अनार की झाडी अच्छी लगती है। और मैं अनार की उस झाडी से नफरत करती हूँ।

राकेश क्या, इस झाडी ने तुम्हारा क्या बिगाडा है?

प्रेमा इसी के कारण हमारे घर में झगडा होने लगा है।

राकेश झगडा किससे हुआ?

प्रेमा मेरे बस की बात होती तो जड से उखाड देती इसे। मैं रोज ही एक सपना देखती हूँ। लगता है वह सपना अब सच निकलने वाला है।

राकेश क्या सपना देखती हो?

प्रेमा देखती हूँ जैसे इस झाडी ने सारे मकान को अपनी शाखा में लपेट रखा है। अन्दर जैसे सारे कमरों में अंधेरा छा गया है। जैसे हवा भी कमरों में आनी बन्द हो गई है।

राकेश फिर!

प्रेमा फिर क्या? मेरा दम घुटता है। हम मकान से निकलने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन इससे निकल ही नहीं पाते। अनार की झाडी की शाखें सांपों की तरह लिपट लिपट कर खिडकियां और दरवाजों का रास्ता रोक लेती हैं।

राकेश और कौन-कौन इस घर से निकलने की कोशिश करता है?

प्रेमा तुम, मैं, नली दीदी, भाई साहब, बडी भाभी, उनके बच्चे, मेरे बच्चे, सब।

राकेश और मम्मी ?

प्रेमा मम्मी इस सपने में नज़र नहीं आतीं ।

राकेश (हँसकर) फिर इसके बाद इस झाड़ी की शाखें हम सबका गला घोंटती होंगी ! ह ह ह हा !

प्रेमा तुम तो हंस रहे हो मेरी हर बात को तुम मज़ाक में टालते हो ! तुम चाहे न मानो, पर मैं सपने में चिल्लाती रही हूं ।

राकेश अनार की झाड़ी का सपना देख कर तुम चिल्लाई हो, क्या न चिल्लातीं ? इसकी शाख बढ़ते-बढ़ते तुम्हारे गले तक पहुंच गई होगी ।

प्रेमा तुम्हारा क्या है, सब कुछ मुझे अकेले ही सहना पड़ता है । आज भी यही सपना आया ।

राकेश और इसीलिए तुमने अनार की जड़ें जलानी चाही थीं ।

प्रेमा यह झूठ है ! तुम से मम्मी ने कहा होगा । मैं तो आंगन का कूड़ा करकट जला रही थी । मम्मी ने कमरे में धुआं आते देखा । और काशीराम से इसका कारण पूछा । काशीराम ने जवाब में कहा कि बहू जी अनार की झाड़ी के पास कुछ जला रही हैं । फिर न पूछो मम्मी ने क्या क्या सुनाई हैं । परसों क्यारी में पानी न देने के कारण और आज झाड़ी के पास कूड़ा जलाने के कारण आड़े हाथों लिया है मुझे ।

राकेश आज तक तुमने कभी आंगन में पड़ी घास फूस जलाने की ज़रूरत महसूस नहीं की थी । फिर आज ही क्यों ? भाई साहब ठीक कहते हैं । उनकी बात सच है । वह कहते थे कि हर बहू बेटी के दिल में लड़कपन से ही सास के लिए एक अजीब सी नफरत पलती रहती है ।

प्रेमा तुम्हारी माता के लिए मेरे दिल में कोई नफरत नहीं ।

राकेश इसमें तुम्हारा दोष नहीं है प्रेमा ! मेरी मां बूढ़ी हो चली है और बुढ़ापा लोगों को शक्की बनाता है । उनकी एक एक बात छोटों को खटकती है ।

प्रेमा यह तुम सोचते हो ।

राकेश सोचता नहीं हू, यह सच है । यह केवल तुम्हारा ही दोष नहीं, छोटे बूढ़ों से नफरत करते ही हैं । भाई साहब कहते हैं कि छोटे बूढ़ो को देख कर नाक भौं चढ़ाते हैं । शायद इसलिए भी कि बूढ़े को देखकर उन्हें यह परेशानी घेर लेती है कि उन्हें भी एक दिन बूढा होना है । ऐसे ही कमर झुका कर चलना है । ऐसे ही सफेद बालों का दो-चार होना है । ऐसे ही झुर्रियों से उलझना है । अपनी प्यारी गोल-मटोल चिकनी चुपडी देह के एक दिन इसी तरह सूख कर काटा होने का भय उनके दिलों में घर कर लेता है ।

प्रेमा भाई साहब का यह फलसफा भाई साहब ही जानते हैं । मेरे ख्याल में बड़ी भाभी ने अच्छा ही किया । भाई साहब और बाल-बच्चों समेत गाव में आराम से बैठ गयीं ।

राकेश यह बात भी मम्मी से नफरत के आधार पर कह रही हो तुम, नहीं तो तुम भी अच्छी तरह जानती हो कि बड़ी भाभी गाव में किस तरह रह रही हैं । तुमसे ऐसे रहा न जायेगा । पिछले साल तो बड़े चाव से वहां गई थीं तुम । दूसरे ही दिन भाग आईं वहा से ।

प्रेमा मैं तो मुए मच्छरों के कारण रातभर एक पलक भी न झपका सकी वहा ।

राकेश इसलिए कि तुम्हें यहा पलग पर सोने की आदत पड़ी है ।—रात भर पखे के नीचे सोने की आदत । तुम्हारा कमरा सीमेंट-कंक्रीट का है और बड़ी भाभी का किराए का कमरा कच्ची मिट्टी का है । दोनों में बहुत फर्क है । अमीरी-अमीरी होती है और गरीबी गरीबी है ।

प्रेमा गरीबी बुरी नहीं, अगर इसमें इज्जत और आराम हो । वरना जिस अमीरी में झगड़े-फसाद हो उसमें तो आग ही लगनी चाहिए ।

राकेश इस वक्त तुम नाराज हो । इसीलिए अमीरी पर लानत भेज रही हो । वरना तुम जानती हो कि मोटर की सवारी में क्या

आनंद आता है ? घर में फ्रिज, टेलिविजन, ट्रांजिस्टर, टेप-रिकार्डर, रसोई में नौकर और दूसरी सारी सहूलियतों का क्या मतलब है, यह तुम अच्छी तरह जानती हो।

प्रेमा सब दिखावे का सुख है।

राकेश और अगर इस दिखावे के सुख में जरा सी हेर फेर हो जाए तो आसमान सर पर उठा लेती हो।

प्रेमा तुम अपना बड़प्पन अपने पास रखो मैं नौकरी कर सकती हूं, कमा सकती हूं, मैं एम० ए० पास हूं।

राकेश तुम कौन सी नौकरी कर सकती हो ?

प्रेमा क्या मास्टरनी भी नहीं बन सकती ?

राकेश क्या फायदा ? तुम्हारे मास्टरनी बनने से उलटा नुकसान होगा। तुमसे अगर घर नहीं चलाया जाता तो स्कूल कैसे चला पाओगी।

प्रेमा तुम तो मुझे कुछ भी करने नहीं दोगे। (जाते हुए) तुम मुझे मरने भी न दोगे।

राकेश कहां चल दी ? सुनो, सुनो तो !

(अन्तराल संगीत)

नसी मम्मी मैं कहती हूं अब आराम करो। चलते-चलते थक गई होगी ?

कमलावती तुम तो मेरा मुंह बंद करने पर तुले हो सब के सब। लड़की कहती है कि मां न बोले, बहू कहती है कि सास चलने के काबिल भी न रहे। तुम लोगों का मर मारना हज होता है।

नसी आहा ! तुम से बात करना भी पाप है। बात करो तो काटने को दौड़ती हो। असल में यह इस वजह से भी है कि तुम अब बहुत दिनों से एक ही जगह बैठी हो।

कमलावती यह तो मेरा भाग्य ही ऐसा बुरा था, इसमें किसी का क्या दोष। देखते-देखते मेरे घुटने सूज गए।

नसी यह कोई बड़ी बात नहीं मम्मी ! हां तुम्हारे जिस्म पर काफी चर्बी बढ़ गई है।

कमलावती हां भई, इस में क्या शक है! बहू इस तरह कहती तो यह सोच कर सब्र कर लेती कि पराई लडकी है। इस मरा क्या राम है। तुम तो मेरी अपनी कोख मे जन्मी हो। तुम से क्या कहूगी? यह ता मरा चेहरा थोडा उडा-सा है जा मन को लगता ह कि मरे घरवाली चढ़ी है।

नसी अच्छा बाबा माफ़ कर दो! तुम्हारे साथ बात करन के लिए लाहे का दिमाग होना चाहिए। मेरी ही तरफ देखो मम्मी, दो महीने पहले मैं क्या ऐसी ही थी?

कमलावती तुम तो डाईटिंग करती हो। मैं भला ऐसा क्या करू?

नसी नहीं मम्मी, मैं डाईटिंग नही करती। मैं खान-पीन की चीजा म परहेज करत रही हू। पिछले दो महीना म मैंन 7 पाण्ड वजन घटा लिया है।

कमलावती तभी तो हड्डी वाटी म अलग हो गयी ह। धागे के टुकडे-सी नजर आ रही हो। यह आज कपडे ही देखा! जैम भाई साहब की पतलून पहन रखी हो। इस ढीली पतलून म तुम्हारी टांगें ही गायब हो गयी है।

नसी (हसते हसते) यही ता फर्क ह तुम्हार और हमारे जमाने में। तुम्हारा जमाना तो एक और ही जमाना था। खडाऊ का जमाना, और मेरा जमाना है बैलबॉटम, स्कीवी और मैक्सी का जमाना। तुम्हारे जमान म बलबॉटम नही चल सकती थी। आज के जमान म तुम्हारे जमाने की चीजें नही चलेंगी।

कमलावती यही मन्त्र ता बहू जी का भी पढा दिया ह तुमन। किसी की खातिर नही करती। दिन म तीन चार पोशाक बदलती हैं।

नसी जमाना बदल गया ह मम्मी, तुम भी बदलो! अपने आप का बदल डालो।

कमलावती मैं क्या अपने आपको बदल डालू। जिन्हें बदलना था बदल चुके जो मैं बदलू अपने का? इस अनार की झाडी के लिए क्या नही किया गया था, लेकिन इस पर फिर भी फल न लगे।

(मोटर का हार्न बजता है)

नसी — ममी इन बातों के लिए कभी देर नहीं हुआ करती। अब भी वक्त है, जो बदलना चाहिए बदल सकते हैं। हर वक्त, हर समय।

(हार्न बजता है।)

राकेश — (अन्दर आकर) नसी, तुम्हें यूनिवर्सिटी जाना था न ?

नसी — हाँ भाई साहब, मैं गाड़ी का इंतजार कर रही थी। ओह, बड़ी देर हो गई मुझे! कल रात देर गए तक आप कहाँ थे भाई साहब? कितनी जगहों पर टेलिफोन करना पड़ा हमें।

राकेश — कल रात क्लब में ग्यारह बजे तक रह गया। टेलीफोन करता, लेकिन वह आउट आफ आर्डर था।

नसी — कोई इंटरस्टिंग प्रोग्राम था वहाँ ?

राकेश — नहीं कोई खास नहीं। नथिंग अनयूजुअल !

नसी — अच्छा मैं जाती हूँ, बाय-बाय !

कमलावती — शौक से जाओ, तुम्हारे भाई सलामत रहें !

राकेश — (माँ से) कैसी हो ममी ?

कमलावती — जिन्दा हूँ ! साँस आ-जा रही है अब तक।

राकेश — लगता है तुम्हारा मूड आज फिर खराब है ?

कमलावती — नहीं तो ! मूड तो ठीक ही है मेरा।

राकेश — कहाँ ठीक है, तुम्हारी बातों का अन्दाज कह रहा है कि तुम ठीक नहीं हो। बात क्या है ममी ?

कमलावती — बात क्या होगी बेटे ? रात भर तड़पती रही हूँ। दूसरे घुटने में भी सूजन आ गयी है।

राकेश — देखूँ तो हाँ, तुम्हारे दोनों घुटने फूल गए हैं ! दवा खाई थी क्या ?

कमलावती — हाँ खाई थी। नहीं खाती क्या ? कांशीराम ने खिलाई। यह बेचारा नौकर नहीं होता तो कोई मुझे पूछता भी नहीं। सुनो ! बड़े भाई को खत लिखो और कहो कि बड़ी भाभी को दो-तीन दिन के लिए यहाँ भेज दें।

राकेश — कैसी बातें करती हो मम्मी ? बीमारी तो आती-जाती रहती है। बड़ी भाभी को इतनी फुरसत कहाँ है ? बच्चे वाली हैं गाँव में उनका कौन देखेगा, तुमने मुझे पुकारा होता ?

कमलावती — कैसे पुकारती तुम्हें ? नहीं जानती तुम कितने बजे घर आते हो।

राकेश — बहू जी को पुकारा होता ?

कमलावती — बहू जी को कहाँ समय मिलता है ? कभी ड्राइंग रूम में होती हैं कभी बाथ रूम में, कभी टेलीफोन पर और कभी शापिंग के लिए। कितने दिनों से कहते-कहते थक गयी कि अनार की झाड़ी में एक जग पानी डाल दो। जब से मैं पैरों से बेकार बन कर बैठी हूँ तब से किसी ने झाड़ी में एक लोटा पानी भी नहीं दिया।

राकेश — तुमने भी तो ख्वाहमख्वाह इस सड़ी-गली झाड़ी को अपनी जिन्दगी का एक बड़ा मकसद बना लिया है।

कमलावती — अरे आहिस्ता बोल, वह सुन रही होगी।

राकेश — सुनती है तो सुनने दो। इसमें बात ही ऐसी क्या है ? फूल लगते हैं न फल। यहाँ से वहाँ तक शाखें फैला दी हैं। और तो और एक खिड़की पर पूरा कब्जा भी कर लिया है।

कमलावती — आज यह अनार की झाड़ी किसी काम की न रही। लेकिन वह भी समय था जब इसके फलों से टोकरियाँ भर जाया करती थीं। मैं दफ्तर बन्द होने के समय इस झाड़ी के नीचे तुम्हारे पिता का इंतजार किया करती थी। वह ज्यों ही आते अनार की झाड़ी बहुत खुश हुआ करती थी। हाथ लगाने से फूल ही फूल झड़ते थे। फूलों की वर्षा हुआ करती थी। मेरे कपड़ों पर, मेरे बालों पर तुम्हारे पिताजी पर ।

राकेश — आज वह जमाना नहीं है मम्मी ? किसे इतनी फुरसत है कि वह आज पेड़ की छाया में खड़ी पति का इंतजार करे। और आजकल ऐसा कौन-सा पति होगा जो दफ्तर से सीधे घर आता हो। कोई सीधे घर भी आए तो उसे घरवाले चिढ़ाते हैं कि उसका कोई सामाजिक नहीं ? कोई एंगेजमेंट नहीं ? आजकल हर बात

के मान निकाले जाते हैं। आजकल तो हर बात की कीमत देनी और लेनी पड़ती है। मेरा मतलब यह नहीं आता कि अगर यह झाड़ जो अब बिल्कुल बेफल और बेकार हो चुकी है, तुम्हारे लिए क्या इस कदर कशिश रखती है ?

कमलावती क्या इसमें अब कोई कशिश नहीं रही है? क्या यह सचमुच इतनी बूढ़ी और बेकार हो चुकी है? बोलो!

राकेश क्या, तुम्हें कोई शक है? ममी, मेरी मानो तो माली को कहकर इसे कटवा देंगे। एक तो थोड़ा-सा ईंधन मिल जायेगा और फिर जलाकर इसके कोयले बना लेंगे सर्दियों के लिए।

कमलावती क्या यहां ईंधन की कोई कमी है? भाई साहब तो मनों लकड़ी गांव से भेज देते हैं ?

राकेश नहीं, मेरा यह मतलब नहीं। हम तो किसी चीज के लिए मोहताज नहीं हैं। बेकार चीज है लेकिन जलाने के लिए काम तो आ सकती है फिर भी।

कमलावती यह झाड़ी तुम्हारी नजरों में बेकार होगी? मेरी नजरों में बेकार नहीं है। कयूम साहब से पूछो! उन्होंने इसके आस-पास गुड़ाई करा दी, खाद डाल दी और कहा है कि इसके फूल लगेंगे, फल निकलेंगे।

राकेश यह कयूम साहब भी तुम्हें अच्छे सेवक मिले हैं। बात करो तो हर वक्त वही कयूम साहब, इसीलिए तो मैंने उनसे तुम्हारे घुटनों के दर्द के बारे में कुछ नहीं कहा।

कमलावती तुमने नहीं कहा, अच्छा किया! लेकिन, मैंने उनको कहलवा भेजा है।

राकेश किसके हाथ?

कमलावती काशीराम के हाथ।

राकेश (गुस्से में चिल्लाकर) काशीराम! काशीराम!

काशी हां महाराज!

राकेश तुम कयूम साहब के यहां गये थे?

काशीराम महाराज! मम्मा जी ने डाक्टर साहब को बुलाने के लिए भेजा था।

राकेश : और मैंने तुम से क्या कहा था?

काशीराम आपने कहा था कि मेरा काम आप से पूछ कर करना चाहिये।

राकेश और तुमने मुझ से पूछा था?

कमलावती अरे जाओ! क्या इस बेचारे के पीछे पड गये हो, गलती मेरी ही है? मुझे क्या पता था कि तुमने इसे मना कर रखा है? ओह तो बात यहा तक बढ गई है! डाक्टर को बुलाने के लिए भी अब मुझे तुम्हारी इजाजत की जरूरत है?

राकेश तुम इन बातो को समझ नही पाओगी मा! डाक्टर साहब अपने आप मे नही सोचेंगे कि आये दिन कोई न कोई हमारे घर मे बीमार रहता है। अभी पिछले ही हफ्ते बहू जी को चक्कर आ गया। कयूम साहब को बुलाना पडा। तुम्हें भी जरा सी तकलीफ होती है तो बुलाते है, कयूम साहब को। उनके घर वाले नहीं सोचते होगे कि मुफ्त की बेगार ले रहे है डाक्टर से?

कमलावती ऐसी बातें सिर्फ तुम सोच सकते हो, क्योकि तुम दुकानदार हो, केवल व्यापारी! कयूम साहब डाक्टर हैं।

(काशीराम आता है।)

काशीराम डाक्टर साहब आये है।

कयूम मम्मा जी कैसी है? कहा दर्द है? राकेश जी क्या पट्टी पढा रहे थे?

राकेश डाक्टर साहब, सलाम! कुछ नही, मैं तो कह रहा था

कमलावती यह कह रहा था कि डाक्टर साहब को कितनी तकलीफ देंगे हम लोग? रोज-रोज ही बुलाना पडता है।

कयूम : मै सब जानता हू, राकेश जी क्या सोचते है? जब से भाई साहब तबादले पर गाव गये हैं मुझे यह घर बदला हुआ नजर आता है। यहा की दीवारें भी बदल गई हैं।

राकेश — नहीं डाक्टर साहब, आपने मुझे गलत समझा।

कयूम — काशीराम यह बैग पकड़ा दो मुझे।

काशीराम — यह लीजिये।

कयूम — ठीक है। ममी जी आप घुटना ऐसे ही रखिये

राकेश — क्या इंजेक्शन देना होगा ?

कयूम — आपको कोई ऐतराज है ? आंखे क्या बन्द करने लगी हैं, क्या आज तक कभी इंजेक्शन नहीं लगवाया है ?

कमलावती — तुम्हारे हाथों इंजेक्शन लगवाना मेरे लिए कोई नई बात है ?

कयूम — बस, बस ऐसे ही रहिए ठीक है।

कमलावती — आह हो

कयूम — घबराने की कोई बात नहीं। एक, एक गोली शाम को खाया कीजिए बाकी सारी दवाएं बन्द। यह बोतल, ये गोलियां और इंजेक्शन सब बन्द।

कमलावती — सुन रहे हो डाक्टर साहब। ये लोग जो डाक्टर लाये थे उसने उनमें कहा है कि मेरे पेट ज्यादा हो गयी है।

कयूम — डाक्टर को नजर आया होगा। हालांकि इनके पेट तो मेरी भी है लेकिन मैं ऐसी चीजें नहीं खाता जिनसे पेट बढ़ जाता है।

कमलावती — फिर क्या न मैं भी ऐसी सभी चीजें कम ही इस्तेमाल करूं।

कयूम — हां, हां उसमें क्या बुराई है। मैं काशीराम से कह दूंगा। वह जो चीज खाने को कहा वह खाया कीजिए, कोई चीज खाने को मन करता। खिड़की से मुझे पुकार कर पूछ लिया करें। पूछने में कोई हर्ज नहीं है। मैं घर में हूं तो मेरी बीवी से पूछ लीजिए।

कमलावती — भगवान। तुम्हें उम्र भी बढ़ कर पदवी दे। नर्गिस जी क्या मेरे लिए कम करती है ? उन्होंने दवाओं के कई सम्पुल दिए थे। अभी तो पिछला एक मास हमतन्दुरुस्त निकाला है।

क्यूम : हमारी चाची जी क्या आर आप क्या ? मैं तो वही क्यूम हूं जो आपकी नजरों के आगे बड़ा हुआ। अनार की यह झाड़ी भी बढ़ती गयी और हम भी बड़े हो गए। यह झाड़ी पंडित जी ने चुन्नीलाल जी के जन्मदिन पर लगायी थी, लेकिन इसे हुआ क्या है ?

कमला : जब से भाई साहब तब्दील हो कर गाव गये हैं इसमें एक भी फल नही लगा। एक फूल तक नहीं फूटा। तुम्हारी दवा से भी काम न बना।

कयूम : कहते हैं पेड़ भी कभी-कभार रूठा करते हैं। शायद यह झाड़ी भी रूठ गयी है।

कमलावती : यही तो मैं भी इनसे बार बार कहती हूं। चुन्नीलाल पर वारी जाऊं। वह कहता था कि यह अनार की झाड़ी जब तक फूलेगी-फलेगी नहीं, तब तक इस घर में झगड़े और टण्टे बन्द न होंगे। समझाते-समझाते थक गई, लेकिन कोई समझे जब ना, कोई मेरी सुने जब ना। इस पर सब कहते हैं कि यह तो अब बेकार की झाड़ी है।

क्यूम : बेकार क्या है भला! जब मैं अपने कमरे की खिड़की में इस झाड़ी की तरफ देखता हूं तो मुझे अपना बचपन याद आ जाता है जब चुन्नीलाल और मैं एकसाथ पढ़ा करते थे।

कमलावती : मैं क्या कुछ भूल गई हूं। यही कमरा है जिसमें तुम दोनों ने पढ़ाई करके मैट्रिक का इम्तहान पास किया था।

क्यूम : आप हम दोनों के साथ-साथ आप भी रात के दो-दो बजे तक जागा करती थीं। कहीं हमें चाय की जरूरत न पड़े। सुन रहे हैं, राकेश जी! हम समझा करते थे कि चाय पीने से नींद दूर हो जाती है। सच तो यह है कि अगर हम ने मैट्रिक में फर्स्ट डिवीजन ली थी तो उसका क्रेडिट भी मम्मी को ही जाता है।

कमलावती : लड़कपन की तरबियत बड़ी चीज होती है। अगर नींव अच्छी पड़े तो मकान भी अच्छा और मजबूत बनता है। और जिस मकान की नींव ही कमजोर हो उसका क्या होगा?

राकेश — डाक्टर साहब आप लोग बहुत खुशकिस्मत थे जो कि आप मम्मी जी जैसी मां के पीछे-पीछे चलते थे। हमारे बच्चों को कौन देखता है? नौकर स्कूल ले जाता है वही वापस ले आता है। नौकर ही खिलाता पिलाता है, सुलाता-जगाता है।

कुसुम — यह किस का कसूर है?

राकेश — हम कसूरवार हैं तो हमारी मां का भी इसमें कसूर है। मम्मी अब वैसी ही थोड़े रह गयी हैं जैसी पहले थीं। मेरी शादी के बाद मम्मी बहुत बदल गई हैं।

कुसुम — और भाई जान क्या तुम भी वैसे ही रहे हो जैसे कि शादी से पहले थे?

कमलावती — यह न कहो इनसे डाक्टर चाहे इसकी मां मिट्टी और धूल में रुलती रहे, इसकी बीवी को कोई तकलीफ नहीं होनी चाहिये।

राकेश — मम्मी तुम तो मुझे डाक्टर साहब के सामने रुसवा कर रही हो।

कुसुम — बहू जी कहां है? आज उन्हें देखा ही नहीं। ठीक है ना? तुम मम्मी की तरफ यूं घूर कर क्या देख रहे हो? मैं सब जानता हूं। इन बातों में तुम्हारी नज़र कम नहीं होता। मैंने तुमसे पूछा था कि बहू जी कहां हैं?

राकेश — वह किचन में आपके लिये चाय बना रही है। (पुकार कर) काशीराम! बहू जी से इधर आने को कह दो।

काशीराम — डाक्टर साहब! बहू जी आप के लिये चाय बना रही हैं।

कुसुम — यह चाय का मौका तो नहीं है लेकिन उनके हाथों की लेंगे। एक प्याली चाय पीने में क्या हर्ज है?

राकेश — काशीराम बहू जी से जाकर कह दो कि डाक्टर साहब को देर हो रही है! चाय ले आइये!

प्रेमा (आकर) डाक्टर साहब आप खड़े क्या है ? ऐसी क्या जल्दी है ? बैठ जाइये ना!

क़यूम आज बहुत दिनो के बाद देखा! मैं तो सिर्फ चाय की इस प्याली का इन्तजार कर रहा था। अब कैसी सेहत है आपकी ?

प्रेमा आपकी मेहरबानी है!

क़यूम आपकी बनाई हुई चाय बड़ी मजेदार होती है।

प्रेमा मेरे हाथो की बनी हुई चाय भाई साहब को और आपको पसन्द आती है। बाकी सब को मेरी चाय से तकलीफ होती है।

राकेश रुस्ट्रेन युवर सेल्फ!

कमलावती हां हां अंग्रेजी ही बोलोगे अब ? बड़े आदमी जो हुए!

क़यूम ममी, जी आप एक्साइटेड हो रही हैं!

राकेश इन्होंने इसी तरह अपने आप को और घर को भी खराब कर दिया।

कमलावती मैंने खराब किया घर को? शाबाश मेरे बेटे! यह फल दे रहे हो मुझे। कयूम मुझे तुमसे अच्छी तरह जानता है।

कयूम राकेश जी, मुझे बड़ा अफसोस है कभी यह हमदर्दी-देखा करता था। इसकी दीवारो से कहकहे फूटते थे। अब इस घर में आना भी अच्छा नहीं लगता। दरवाजे में कदम रखते ही आदमी सोचता है कि मैं इधर आया ही क्या था ?

कमलावती और नहीं तो क्या! यहां कोई दिन ऐसा गुजरता है, जब किसी न-किसी बात पर यहां चख चख न होती हो? इसी कारण तो मेरा बेटा और बहू बच्चा समेत यहां से भाग गये।

(मोटर का हार्न बजता है।)

कमलावती — बहू जी, देख रही हो इस कुंवारी लड़की का तरीका! एक-की-दो सुनाती है, हर सवाल का जवाब देती है।

नसो — जैसा सवाल हुआ वैसा ही जवाब भी देना चाहिए, क्या बहू जी? लेकिन तुमसे क्या, तुम क्या कहोगी। तुम भी कौन सी समझदार औरत हो? ममा के साथ साथ झगड़ते झगड़ते तुम्हारी बुद्धि भी मोटी हो गई है।

प्रेमा — नहीं तो मेरी अक्ल कब मोटी न थी?

नसो — पढ़ना लिखना आदमी भले ही भूल जाए, लेकिन पढ़ने-लिखने से जिन्दगी के बारे में जो एक एटिच्यूड बनता है उसे भुलाना नहीं चाहिए। लव के बारे में तुम्हारी क्या एप्रोच है? क्या तुम मुझे लव करने दोगी।

प्रेमा — मैं समझी नहीं!

नसो — फिर समझा दूंगी। मैं जरा जल्दी में हूं! मुझे इंगलिश मूवी देखनी है।

कमलावती — किसके साथ, उसी टेलीफोन वाले के साथ?

नसो — चलो उसी के साथ सही! अच्छा, बाई बाई।

कमलावती — देख रही हो बहू, अपने पति को समझाओ! वह मेरा नहीं सुनता। मैं कहती हूं यह बहुत आगे बढ़ रही है! इससे कोई और गलती होगी। फिर हाथ मलते रह जायेंगे सब-के-सब!

प्रेमा — इसमें हमारा ही कसूर है। घर में सबको खुली छूट दे रखी है।

कमलावती — नहीं, नहीं यह तो हद हो गई! घर से आजादी देना भी ठीक है, लेकिन इसकी भी कोई सीमा होनी चाहिए। पिछले महीने यह एक दिन के लिए पहलगाम गई और चार दिन बाद लौटी। अब हफ्ते भर से बराबर अंग्रेजी फिल्म देखने जा रही है। इतना कौन बरदाश्त कर सकता है?

प्रेमा — अब तक हम बहुत बरदाश्त करते आ रहे हैं। शायद यह बात भी बरदाश्त कर जायेंगे मां जी?

कमलावती — नहीं, ये बातें नहीं चलेंगी! यह कौन होती है लव करने वाली,

खुद ही अपना घर देखने और पसंद करने वाली ? शादी क्या कोई खेल-तमाशा होती है ?

प्रेमा आजकल नया जमाना है, लड़कियां नयी रोशनी की हैं ।

कमलावती हां, हां, तभी तो बुद्धि का नाश हो गया इतना ! तुम्हारे ही पति ने पिछले महीने मुझे बुद्धू बना दिया वरना क्या मैं इसे पहलगाम जाने देती ? और तुमने भी इससे कुछ नहीं कहा ।

प्रेमा बराबर की लड़की से ज्यादा झक-झक करना भी अच्छा नहीं रहता ।

(मोटर की आवाज)

कमलावती शायद भाई साहब आ गए । लेकिन आज यह जल्दी क्या ?

प्रेमा मैंने ही जल्दी आने को कहा था । आज मेरी छोटी बहन और उसका पति इधर खाने पर आ रहे हैं ।

कमलावती आह ! तो यह बात है ! मैं भी कहूं वह कभी इतनी जल्दी घर वापस नहीं आता । पर तुम भी कुछ कम नहीं हो ! चल दी? बहनाई और बहन को खाने पर बुलाया है । मुझसे वह कर मेरी भी इज्जत रखी होती ! अब अपने कमरे में ही ले जाना और वहीं से वापस लौटाना ! कहीं मुझ बुढ़िया की नजर न पड़े उन पर ? मैं सठिया गई हूं न ? बेफल हो गई हूं न, अनार की उस झाड़ी की तरह ?

(अन्तराल संगीत)

चुन्नीलाल क्या मम्मी, खैरियत तो है न ? मुझे किस लिए बुलाया था ?

कमलावती बैठो भी ! साल भर बाद मां का नाम जबान से लिया है, पूछा तक नहीं कि कैसी है, जिन्दा है या मर गई !

चुन्नीलाल ऐसे शब्द मुंह से क्या निकाल रही हो ? कौन सी सौ साल की बुढ़िया हो गई हो तुम ?

कमलावती हां, हां तुम तो फिर किसी की खबर भी नहीं लेते । एक दफा किराया देकर कमरे में आते और मां को मुंह दिखाकर चले जाते । क्या इतना घबराते हो वहां से ? क्या तुम मेरा मुंह भी नहीं देखना चाहते ?

चुन्नीलाल : मम्मी, यहा आने को जी ही नही चाहता। तुम विश्वास नही करोगी, लेकिन इस दरवाजे मे कदम रखते ही, जैसे कोई मुझे मारने को दौड़ता है।

कमलावती : आज पूरे छह महीने के बाद आये हो।

चुन्नीलाल : भाई साहब कहा है ? नसी और बहू जी कहा है ? सारा घर खाली-खाली नजर आ रहा है।

कमलावती : अभी तक शायद सो रहे है।

चुन्नीलाल : नसी कहा है ? वह तुम्हारे कमरे म नही सोती क्या ?

कमलावती : नही ! उसे मेरे कमरे म सोना अब अच्छा नही लगता।

चुन्नीलाल : क्या ?

कमलावती : यह अनार की झाड़ी उसे बुरी लगती है। कहती है इस शाखा ने खिड़कियां, दरो-दरवाजे बन्द कर दिए है। जब यह झाड़ी कटवाओगी, तभी मैं कमरे मे सोया करूंगी।

चुन्नीलाल : वह पागल हुई है शायद ! वह नही जानती कि इस झाड़ी की कीमत क्या है। यह हमारे पिता की निशानी है, हमारे बचपन की निशानी है।

कमलावती : यही बात अब जानता ही कौन है ? सब कहते है बेकार की झाड़ी है।

चुन्नीलाल : उनकी नजरो मे बेकार होगी, लेकिन तुम्हारी नजरो मे नही। इसके भी जबान है, कान है। यह भी सोचती है। पेड ही नही दीवारें भी देखती है। जब हम किसी बन्द कमरे मे कोई पाप करते है तो सोचते है कि हमे कोई नही देखता। लेकिन यह सिर्फ हमारा ख्याल है। दीवारें हम देखती है। हमारी बातें सुनती है, हमारे पाप और पुण्य का असर इन पर भी पड़ता है। इसी-लिए इसान अपने ही घर मे कभी-कभार डर जाता है। उसने ऐसे ही काम किए होते है। इस घर मे घर के लोगो के काम और बातें दीवारो पर नक्श होकर रह जाती है।

कमलावती सच है, जो शांति मुझे तुम्हारे पिता जी के ठाकुरद्वारे में मिलती थी वह इस पलंग पर भी नहीं मिलती।

चुन्नीलाल ठाकुरद्वारे में हमारे पिता ने पूजा की है। धूप और बत्ती जलायी है। इसीलिए इस कमरे में आकर एक अजीब किस्म की फरहत मिलती है। मन को शांति मिलती है।

कमलावती अब वहाँ, उन्होंने ठाकुर द्वार ही अब बदल दिया ? अब वहाँ बच्चे मास्टर जी से पढ़ते हैं।

चुन्नीलाल अच्छा हुआ, बुरा नहीं हुआ। अब ख्वाहमखाह कमरा बंद करने से क्या फायदा ?

कमलावती नहीं तो यहाँ कौन से कमरा की कमी है ? सारे मकान में कमरे ही कमरे हैं।

चुन्नीलाल इतने कमरे होने पर भी ऐसा लगता है, जैसे यहाँ का एक-एक वासी यहाँ आकर फंस गया है।

कमलावती नहीं तो, ऐसी क्या बात है ? इतने कमरे तो हैं।

चुन्नीलाल सभी यहाँ हर एक अपने बारे में सोचता है। इसी से इस घर में चारों ओर नफरत ही-नफरत फैल गयी है। शब्द में इतना असर नहीं जितना कि सोच में होता है, ख्याल में होता है। गलत सोचने से घर का माहौल मुनासिब हो चुका है।

कमलावती अच्छा तो मैं क्या गलत सोचती हूँ ?

चुन्नीलाल तुम जो सोचती हो उसका असर तुम्हारी बहू और बेटे पर पड़ता है। तुम्हारी बेटी पर पड़ता है। इसी तरह बहू जो कुछ सोचती है उसका असर भी उसके पति, बच्चा, सास, ननद सब पर पड़ता है। बहू जो हमारे सामने हमारी निंदा नहीं कर पाती, लेकिन मन-ही-मन वह सुलगती रहती है। सोचती है कि भाग जाऊँ यहाँ से। तुम भाग जाना चाहती हो, लड़की भाग जाना चाहती है, अब रहे भाई साहब, अगर उनसे पूछोगी तो वह भी यही बात कहेगा—मैं भी यहाँ नहीं रहता।

कमलावती लेकिन इस घर में कमी किस चीज की है ? सवारी के लिए मोटर है। खाना पकाने के लिए नौकर है। इतने अखबारात है। भगवान हमारे भाई साहब को जिन्दा रखे, कारोबार को और बढाए ! वह तो दसों आदमियों को खिलाता पिलाता है। फिर किस चीज की कमी है यहां ?

चुन्नीलाल इस घर में किस चीज की कमी है ? तुम्हारी समझ में नहीं आएगा भाभी ! आज जब मैं इस घर में दाखिल हुआ था मुझे अपना दम घुटता हुआ महसूस हुआ। ऐसा लगा जैसे कोई जबरदस्ती घसीटता हुआ मुझे ला रहा है। हालांकि यह मेरा अपना घर है, मैं यहां पैदा हुआ हूं, यहीं मैंने पढा है, इस घर की दीवारें तक मुझे जानती हैं लेकिन फिर भी मैं अपने आप को पराए घर में महसूस करता हूं और अब कोई पराया इस घर में आता हो तो वह दिन-ब-दिन में सोचता होगा कि कब वह इस बला से फौरन बाहर निकल सके !

कमलावती नहीं तो अब यहां आता ही कौन है ! तुम्हारी बहू जी की वजह से अब यहां कोई रिश्तेदार भी नहीं आता और फिर आये भी क्या ? वह क्या किसी के आगे हाथ फैलाते हैं।

चुन्नीलाल इसमें सिर्फ बहू जी का ही कसूर नहीं मैंने तुमसे कहा न कि इस घर में सिर्फ खुदगरजी और नफरत है। हर एक सिर्फ अपने बारे में सोचता है। दूसरों का ख्याल, दूसरों की भलाई और मुहब्बत क्या चीज होती है, किसी को इन बातों में सरोकार ही नहीं रह गया है।

कमलावती हां-हां, तुम तो यही बातें कहते रहते हो, मैं कहूं तो कपड़े फाड दोगे अपने।

चुन्नीलाल कौन सी बात ? बोलो न।

कमलावती तुमने तो कभी विचार किया है कि घर में भी है, कुंवारी बहन है जो जिन्दगी की एक ऐसी मंजिल पर आ गयी है, जो हर कुंवारी के लिए बहुत ही कठिन और खतरनाक मंजिल होती है।

चुन्नीलाल जानता हूं लेकिन तुम आज उस वक्त मुझ से ये बातें पूछ रही हो जब तुम्हारे तलवे के नीचे अंगारा आ गया है। मैं

हमेशा गाव म नही रहता था। लेकिन, याद करो मर्मी ! हमने जब भी नसी पर किसी अच्छी बात को सीखने के लिए जोर डाला तुम नाराज हुआ करती थी। तुमने हमेशा हम से उस के लिए टक्कर ली। उसने हमारे समझाने पर आंसू बहाये और तुमने मुझे ताने दिए। तुम्हें मैं अपनी बहन का दुश्मन नजर आया। तुमने कई बार कहा इसका बाप जिंदा नही ह और यह भाइयों के टुकडो पर पली लडकी है, इसकी निगरानी कौन करेगा ? ममी तुमने इस घर में कभी भी एक खुशकुन और साजवार माहौल पैदा करने की इजाजत नहीं दी, पहले पहल तुम मेरी बीवी से कुढ़ती थी, उसके साथ झगडा करती थी। जिंदा रहना मुश्किल हो गया था हमारे लिए। आजकल तुम्हे भाई साहब की बीवी से नफरत हो गयी है। आजकल उसके साथ लड रही हो। तुम भूल गयी हो कि अक्सर सासें भूल जाती हैं कि एक वक्त वे भी बहुए थी वे भी छोटी लडकियां थी। तुमने भी एक वक्त अपनी सास के हाथों तकलीफ उठाई है। उसका बदला आज तुम अपनी बहू, अपने बेटो-बेटियां से लेना चाहती हो। तुम यह बदला कैसे ले रही हो ? इसकी तुम्हें खुद भी खबर नही है।

कमलावती देखा मैंने तुम्हें इसलिए बुलाया नहीं भेजा था कि तुम मुझे यो बेइज्जत करो। तुम सब एक जैसे हो। एक तरफ बेटी बाप की इज्जत को मिट्टी में मिलाने पर तुली हुई है। दूसरी तरफ तुम सब मुझे ही दोषी ठहराते हो। इस जिन्दगी से मेरे लिए नरक में जाना ही अच्छा है।

चुन्नीलाल हमारे घर अगर नरक बन गए हैं, तो इसका दोष हमारी नासमझ माओं और अपट औरतों के सर जाता है।

कमलावती बड़ी निजी बहू बेटियां का कोई दोष नहीं ?

चुन्नीलाल हां, हां वे भी दोषी हैं। बहू बेटियां ही नहीं, मर्द भी सब के सब अच्छे नहीं है। हम कुछ मर्द तो औरतों के पीछे-पीछे चलने हैं और कुछ तो औरतें उनके पीछे-पीछे चलती हैं।

कमलावती तुम ऐसी ही बातें करके मुझे समझाओ। सारा जमाने की परेशानी मेरे माथे मढ़ते हो ?

चुन्नीलाल मुझे बहन को समझाने की क्या जरूरत है ?

कमलावती ऐसी बातें नहीं किया करो ! मुझ पर तो मौत से भी ज्यादा बुरी बीती है। तुम भी सुनोगे तो सह न पाओगे ।

चुन्नीलाल बात क्या है ?

कमलावती आप ही पूछ लो उससे, मैं उससे बात करते डरती हू। लडकी क्या है, मुसीबत है कुलकलंकिनी है ?

चुन्नीलाल लेकिन मेरी समझ मे कुछ भी नही आ रहा। नसी ने क्या किया है ? वह कहा है ?

कमलावती वह तो बाथरूम मे है। नहाने और बालो को सवारने मे तो घटा लगा देती है वह ।

चुन्नीलाल घर के बाकी लोग कहा है—भाई साहब, बहू जी ।

कमलावती भाई साहब शायद वकील के पास गया होगा। कल वह कह रहा था, कोई इनकम टैक्स का चक्कर है ।

चुन्नीलाल और बहू जी ।

कमलावती वह अभी तक सो रही होगी या अपने बच्चो को स्कूल के लिए तैयार कर रही होगी। सुनो, आज अपनी बहन के सामने दब कर मत रहना। उससे कह दो कि हड्डी-पसली एक कर दूगी। तुम्हारी भी और उस टेलीफोन वाले की भी ।

चुन्नीलाल जवान लडकियो का पीछा नही करते। उसे कोई समझता ही नही। हा यह टेलीफोन वाला कौन है ?

(मोटर की आवाज)

कमलावती मैं क्या जानू तुम खुद पूछ लो, लो तुम्हारा भाई भी आ गया ! दोनो मिल कर इसके बारे मे कोई फैसला करो ! अगर मेरे बस मे होता तो मैं गला घोट के रख देती कमबख्त का !

चुन्नीलाल मा तुम अपना दिमाग ठिकाने रखो ! किसी का गला या ही घोट देना आसान नही होता है। इस पर पकड कर ले जाते है। जेल भेजते है । फासी पर लटकाते है ।

कमलावती मैं तो पहले ही फारा। लटर रही हूं। फार्मो के तख्त पर उससे ज्यादा नरतीफ होगी। होगी, जिस में मुझे इस कुमारी ने डाल रखा है ?

चुन्नीलाल तार मन वगा मती साहू ता। दख्वास्त वरो !

(राकेश अन्दर आता है।)

राकेश नमस्कार कैसे हो भाई साहब, आप तो मुझसे पहले ही आ गए !

चुन्नीलाल जरा नसी को बुलाओ कह दो भाई साहब पूछ रहे हैं।

राकेश (पुकार कर) नसी नसी !

नसी (थोड़ी देर बाद आते हुए) आह, भाई साहब आए हैं !

चुन्नीलाल कैसी हो नसी ?

कमलावती नसी अपने बालों को पहले चेहरे से हटाओ। ऐसे कथा नहीं करते वाला में !

नसी मैं तो कमरे में कथा कर रही थी कि भाई साहब की आवाज कानों में पड़ी। इसलिए ऐसे ही दौड़ कर आ गई यहां।

कमलावती भाई साहब को मैं गांव से इसलिए ले आई हूं कि आज फैसला करना होगा।

नसी तुम आज फैसला करोगी और मैं पहले ही फैसला कर चुकी हूं।

चुन्नीलाल क्या फैसला किया है ?

कमलावती भाइयों के सामने ऐसी बातें करते हुए शर्म भी नहीं आती तुम्हें !

चुन्नीलाल नसी क्या फैसला किया है तुमने ?

नसी मैंने वह जी से कह दिया है मम्मी से भी कहा है, भाई साहब भी जानते हैं।

कमलावती क्या पता है तुम्हें ? यह कोई मामूली बात नहीं है सुन कर ही मेरा सर तो शर्म से झुका जाता है।

चुन्नीलाल कुछ नहीं हुआ ममी ! आसमान जमीन पर आकर नहीं रहा। मुझे इससे बात करने दो। (नसी से) अच्छा तुमने यह तो कहा

ही नहीं कि लडका कितना पढ़ा लिखा है ? कहा का है ? करता क्या है ? तुम से कहा मिला ?

कमलावती किसी बस अड्डे पर मिल गया होगा या सिनेमा हाल म, आजकल जगह की कौन-सी कमी है। मिलने के लिए कई जगहें, है। होटल हैं। है क्या ?

नसी इससे क्या मिला ? तुम्हारी बक-बक से बात नही बनेगी ममी। मैं कोई छोटी बच्ची नही हू। मैं अपन बुरे-भल को जानती हू।

चुन्नीलाल आखिर लडका है कौन ?

कमलावती यह क्या कहेगी कौन है ? मुझ से सुनो ! लम्बूदर तार वाले का लडका। अरविन्द नाम है उसका।

चुन्नीलाल करता क्या है ?

कमलावती सर अपना सडकें नापता रहता है !

बहूजी : अभी तक नौकरी पर नही लगे है ?

नसी काम पर लगे हुए हैं। सिविल आफिसर।

कमलावती क्या ?

नसी इजीनियर बनन वाले है।

राकेश बुरा नहीं है अगर इजीनियर बनने वाला है।

कमलावती मैं कहती हू तुम चुप रहो ! तुम इसे शह न दो। इजीनियर का नाम सुन कर अनाडी न बनो। आजकल इजीनियरों को कौन पूछता है ? वह दिन गए जब लोग इजीनियरो के पीछे-पीछे फिरा करते थे और लडकी वाले सोचा करते थे कि हमारे ही हाथ आ जाए।

राकेश ममी मेहरबानी करके तुम चुप रहो ! भाई साहब को गाव से यहा इसीलिए बुलाया था ? यह तुम्हारी बात नही सुनेगी।

कमलावती मेरी बात इसे कैसे पच सकती है ?

नसी भाई साहब आप मुझे समझाने आए है क्या ?

चुन्नीलाल नहीं, मैं खुद समझने आया हूं ।

नसी क्या ?

चुन्नीलाल यही कि इतना हगामा किस बात पर हो रहा है ?

नसी यह मम्मी से पूछ लीजिए ! मेरे ख्याल में हगामे की कोई बात तो है ही नही । हा पुराने जेहन मे नयी बातें समा नही सकती । इसका क्या किया जा सकता है ?

राकेश क्या मतलब ?

नसी शादी किसे करनी है, मुझे या किसी और को ? उम्र मुझे किस के साथ बितानी है ? उस इसान को पसद करना मेरा हक नही है ।

चुन्नीलाल हर एक का कोई हक होता है और जिम्मेदारी भी होती है ।

नसी जाने इन लोगो को मुहब्बत का शब्द इतना अनजाना क्या लगता है ?

चुन्नीलाल यह बात नही है । मुहब्बत का जज्बा किसी के लिए भी अनजाना या अजीब नही है । सब मुहब्बत करते हैं, लेकिन मुहब्बत के कई रग हैं ।

नसी यह सारा घर मेरे खिलाफ क्या हो रहा है, इतना बावला होकर ?

चुन्नीलाल यह लोग मुहब्बत की बात जबान पर देखकर आपे से बाहर हो रहे हैं । इसका अदाज देख कर पागल हुए जा रहे हैं, मुहब्बत किसी वक्त ऐसी जबान इस्तेमाल करती है जिसे सुनने की दूसरो मे ताकत नही होती ।

नसी दूसरे अल्फाज में गोया आप भी यही कहना चाहते हैं कि घमण्डी हो गई हू । या ढके छुप अदाज मे आप यह कह रहे हैं कि मैं आवारा हू ।

चुन्नी (गुस्से में) नसी !

नसी लो, आपको ही गुस्सा आ गया है ! बहुत नाज करते रहते हैं इस बात पर कि मैं ऊचे ख्यालात का एक इसान हू । यही है

आपके ऊंचे ख्याल ? क्या ये ख्याल सिर्फ दोस्तों पर रौब डालने के लिए होते हैं ?

चुन्नीलाल मैं आज भी वही हूं, जो पहले था। कोई फर्क नहीं आया है मुझ में। बात सिर्फ इतनी ही है कि तुमने अरविन्द जी को अपने लिए पसंद किया है ।

कमलावती जिस तरह पिछले साल अशोक जी को पसन्द किया था। बदनाम और रुसवा कर दिया था। किसी का मुंह दिखाने के काबिल न रखा था ।

चुन्नीलाल तुम लोग एक दूसरे को प्यार करते हो मुहब्बत करते हो ?

नसी : हां

चुन्नीलाल तुम अपनी मर्जी से उससे शादी करना चाहती हो ?

नसी : हां !

कमलावती किस ढिठाई से गर्दन हिला रही है। टूट पड़े यह गदन !

राकेश मम्मी, मम्मी प्लीज, (चुप रहने का इशारा करता है) नसी, भाई साहब क्या पूछ रहे हैं तुमसे ? तुम अरविन्द जी के साथ शादी करना चाहती हो ?

नसी जी हां !

चुन्नीलाल और वह भी तुमसे शादी करना चाहता है।

नसी जी हां !

चुन्नीलाल तब तो बधाई हो ! यह टेलीफोन उठाओ और अरविन्द का नम्बर मिलाओ !

नसी फिर !

चुन्नीलाल कह दो कि मैंने तुम्हारे साथ शादी करने का फैसला किया है ! हम आज ही बल्कि इसी वक्त शादी करेंगे !

नसी ऐसे ही, मम्मी ?

कमलावती राम राम, क्या कह रहे हो ?

चुन्नीलाल ठीक कह रहा हूं ! शादी अभी होगी ! कुछ ही घंटा में !

प्रेमा लेकिन यह इस तरह कैसे मुमकिन हो सकता है ?

चुन्नीलाल इस तरह क्या, अदालत में होगी शादी !

नसी — अदालत में ?

सुशीलाल — और क्या ? तुम तो लव मैरेज करना ही चाहती हो न ? लव मैरेज एक नया ख्याल है। नया कानसेप्ट। इसके साथ पुराना ढंग मेल नहीं खाता। यह नयी चीज है। इसके साथ पुरानी रीत, पुरानी रस्में और पुराने तरीके से शादी करना नहीं चलेगा। बारात का आना, लग्न का होना, अग्नि का जलना ये सारी चीजें पुरानी हैं। तुम्हें हमारी मर्जी के खिलाफ नये तरीके से शादी करनी है। कोर्ट के अन्दर। बहू जी तुम इसके साथ जाओ! अरविन्द जी को इससे टेलीफोन कराओ, बल्कि तुम भी उससे बात करो !

नसी — मगर भाभी जी, प्यारी भाभी, वह कैसे मानेंगे ?

सुशीलाल — मैं कह रहा हूं ! उन सब को मैं मनवा लूंगा !

कमलावती — अरे यह क्या कर रहे हो ? बदनामी होगी ! रुसवाई होगी ! तुम लोग जबरदस्ती कर रहे हो ! मैं पानी में छलांग लगाकर जान दे दूंगी !

राकेश — पानी में क्या कूदोगी मम्मी ?

सुशीलाल — उठो नसी टेलीफोन करो, बहू जी तुम इसके साथ जाओ !

(दोनों जाती हैं।)

कमलावती — (दुखी स्वर से) मैं क्या सोचती थी और हो क्या रहा है ?

सुशीलाल — अरे भाभी यह रोना किस लिए ? तुम्हें तो यह सुनकर खुश होना चाहिए कि तुम्हारी बेटी ने खुद ही अपने लिए वर पसन्द कर लिया।

कमलावती — इससे अच्छा है कि मुझे ज़हर देकर मार डालो !

राकेश — मम्मी भावुक मत बनो, भाई साहब [illegible] किया है यह ठीक है, समयानुसार है। [illegible] किया।

सुशीलाल — कहां गए जी [illegible]

प्रेमा — कर रही है मैं [illegible]

का वचन दें, बात पक्की करें, लेन-देन करें, बरात को बुलाए, दान-दहेज का चक्कर चलाए। पुरानी फरसूदा रस्म, पुरानी रीत

प्रेमा — इसका मतलब तो मेरी समझ में नहीं आया।

चुन्नीलाल — मैं समझ गया उसका मतलब। अगर यह सब कुछ करना ही है तो अरविंद कौन है? उसकी अहमियत ही क्या है? वह किस लिए नये विचारों की नुमायंदगी करता है फिर?

कमलावती — मासूम लड़की का दिल टूट जायेगा। तुम इसे एक बहाना बना रहे हो? जब उसकी मर्जी जान चुके हो तो यह सब करना भी जरूरी है, वाजिब है।

चुन्नीलाल — बिल्कुल नहीं है। वैसे वाजिब क्या है और क्या नहीं यह मैं जानता हूं? मैं सिर्फ अरविंद जी के जवाब का इंतजार कर रहा हूं।

नसी — (अंदर आकर सिसकियों में) उनका जवाब मिल गया।

कमलावती — क्या जवाब दिया, बोलो क्या कहा उसने?

प्रेमा — नसी तुम ठीक तो हो न? शायद रोयी हो?

चुन्नीलाल — नसी क्या जवाब दिया अरविंद जी ने? कुछ कहो तो।

नसी — उसे कोर्ट मैरेज मंजूर नहीं है।

राकेश — तुमने उसे समझाया नहीं नसी कि तुम नये रास्ते के नौजवान हो।

नसी — मैंने कहा था कोर्ट मैरेज तुम्हें मंजूर क्यों नहीं? तुम तो माडर्न ख्याल के हो।

चुन्नीलाल — उसने क्या जवाब दिया?

नसी — कहने लगा कि मैं बाप की इज्जत को मिट्टी में नहीं मिला सकता। मैं तो वैसी ही शादी करूंगा जैसी सब करते हैं। वह कहता है कि कोर्ट मैरेज करके मैं मां बाप की इज्जत को गिराना नहीं चाहता।

चुन्नीलाल — इसमें क्या बेइज्जती है? वह नासमझ है। उसे फिर समझाना।

नसी — अब उसे समझाने की कोई जरूरत नहीं। मैं तो उसका मुंह तक

नहीं देखना चाहता। मैंने उसे कह दिया है कि मैं सौदाबाजी के लिए तैयार नहीं हूं, वह भी तुम्हारी शर्तों पर।

नसी उसकी शर्तें क्या हैं ?

चुन्नीलाल जो सबकी होती हैं। वचन लेना, बात पक्की करना, बरात लाना, दान-दहेज लेना। अगर उसे मुझसे लव था तो इन सारी चीजों की क्या हकीकत थी ?

चुन्नीलाल : तुमने समझाया नहीं था उसे ?

नसी : अब उसे समझाने की कोई जरूरत नहीं। अब मुझे भी खुद कुछ और समझने की जरूरत नहीं है। मैं सब समझ गई।

चुन्नीलाल लेकिन जा कहां रही हो ? जो हुआ, सो हुआ, भूल जाओ सब कुछ !

(टेलीफोन की घंटी बजती है।)

चुन्नीलाल : काशीराम, ज़रा टेलीफोन देखना कौन है ?

राकेश मैं देखता हूं ! (बढ़कर) भाई साहब यह अरविन्द है टेलीफोन पर !

चुन्नीलाल किसे पूछता है ?

राकेश : नसी को। उसे टेलीफोन पर बुला रहा है।

चुन्नीलाल नसी, सुनो तो क्या कहना चाहता है ?

नसी : नहीं, मुझे टेलीफोन नहीं सुनना है ! अब मुझे टेलीफोन नहीं सुनना है ! मैं दुबारा इसका टेलीफोन सुनना नहीं चाहती। मैंने सब कुछ सुन लिया, जो वह कहना चाहता था। काशीराम, उससे कह दो कि कोई दूसरी लड़की देखे !

कमलावती नाश हो गया तेरी बुद्धि का ! दोष तेरा अपना है। आग लगे इस टेलीफोन में !

नसी : टेलीफोन का क्या कसूर है ? कसूर सारा नसी का है।

चुन्नीलाल इसे इतना कसूरवार मत ठहराओ ! हम सब दोषी हैं। यहां हर-सांस से नफ़रत टपकती है। यहां सब अपने लिए जी रहे हैं।

जिस घर में लोगों में मुस्कानी या जवानी न हो मुहब्बत हो, लिहाज मुलाहजा न हो, भाईचारा न हो, वहां शान्ति नहीं रहती। वह घर बेकाबू हो जाता है।

कमलावती आह! मैं तो भूल गई थी। सचमुच मैं तुम्हारे इस घर में टूट गई हूं। हमारा तमाशा देख कर अनार की झाड़ी भी बिखरी और टूटी हुई लग रही है।

चुन्नीलाल यह झाड़ी तुम से ज्यादा समझदार है मम्मी। यह हमारे घर की शोभा है। इस घर में हर इंसान नज़र अन्दाज हो गया है। इसका असर अनार की झाड़ी पर पड़ा है। बहू जी! राकेश!

प्रेमा जी।

राकेश हां भाई साहब।

चुन्नीलाल नसीम से कह दो कि आज हम सब बड़ी ममता और प्यार से अनार की झाड़ी को पानी देंगे।

राकेश उससे इसका क्या होगा?

चुन्नीलाल इसमें फिर से फूल निकलेंगे, फिर से फल लगेंगे, इसमें

(फेड आउट)

मूल कश्मीरी बंसी निर्दोष
रूपान्तरकार अली मोहम्मद लोन

सराय के बाहर

मिस्री . बीबी, कुछ खाने को दोगी, सुबह से भूखी हू ।

बीबी परे हट मुरदार। क्या बगला मे घुसी चली आती है ? जा किसी मुस्टण्डे की बगल मे बैठ और चैन से रह। आग लगे तेरी जवानी को ।

मिस्री [बीबी, क्या नाहक गाली देती हो ?

बीबी गाली, अरी दो टके की भिखारिन, तुझे भी गाली लगती है ! ए हे, मरी शर्म की मारी लजा री दिन भर दीदे मटकाती फिरती है और सराय के मुसाफिरो को ताकती फिरती है और अब रात के वक्त बडी मासूम, बडी शरीफ बडी पाक, उह चुडैल !

मिस्री बीबी

बीबी बीबी की बच्ची ,बीबी की बनो अरी अगर तुझे गाली देती हू, तो इसके बदले मै खाना भी तो देती हू, तुझे और तेरे बूढे भिखारी बाप और तेरी चुडैल, कुटनी मा को ! दो गालिया मे सौदा क्या महगा है। मुये देख, इस सराय मे सुबह से लेकर शाम तक जूठे बरतन मांजती हू, कुए से पानी निकालती हू, मालकिन और मालिक की सौ सौ खुशामदें करती हू, और अच्छा देख इस वक्त मुझे न सता, मुसाफिरखाने मे अन्दर इस वक्त बहुत से लोग जमा है। मुये कइयो की देखभाल करनी है। जब ये लोग खाना खा चुकेंगे, इस खिडकी की तरफ आइयो और जो कुछ तेरी किस्मत मे होगा ले जाइयो ! अरी देख, अब इन मोटे-मोटे दीदों मे आसू न छलका ! हाय राम, इन फकीरो ने तो नाक मे दम कर रखा है ! मैं मालकिन से कहती हू कि इन भिखमगो को कम अज कम सराय के बाहर ऐन दरवाजे पर तो जमा न होने दिया करे ।

(हर द श। ६.द क। १ १ हैं ग त ई।)

भिखारिन   मिन्नी !

मिन्नी   आई माँ !

भिखारिन   क्या हुआ मिन्नी ?

भिखारी   मिन्नी बिटिया, बड़ी भूख लगी है !

मिन्नी   तो मुझे खा लो बब्बा ! भूख लगी है भूख लगी है, जब सुनो भूख लगी है ! जाने यह पेट है क्या बला है कभी भरता ही नहीं ! उधर बीबी अलग गालियाँ देती है और इधर यह मेरी जान को खाए जाते हैं। भूख लगी है तो मैं रोटी कहाँ से लाऊँ ? बीबी कहती है कि जब खिड़की खुलेगी तब रोटी मिलेगी।

भिखारी   खिड़की कब खुलेगी ?

मिन्नी   जब मुसाफिर खाना खा चुकेंगे।

भिखारी   मुसाफिर कब खाना खत्म करेंगे ?

मिन्नी   जब खिड़की खुलेगी।

भिखारी   जब खिड़की खुलेगी कब खिड़की खुलेगी ? मैं कुछ हो जानता मैं कुछ नहीं जानता। मिन्नी तू क्या रो रही है जब से मेरी आँखों में रोशनी नहीं रही, मुझे कोई वक्त पर भीख की रोटी भी नहीं ला देता ? मिन्नी की अम्मा ! क्या तुम्हारे पास थोड़ी-सी रोटी भी नहीं है ? मैं अंधा हूँ बूढ़ा हूँ अपनी गुस्ताख बेटी का मोहताज हूँ। हाँ नहीं होगा।

भिखारिन   सब्र करो ! अब थोड़ी देर में बीबी खिड़की खोलेगी फिर तुम्हें पेट भरकर खाना मिलेगा। आज सराय में बहुत से मुसाफिर आए हैं। मैं तो हर रोज दुआ मांगती रहती हूँ कि सराय मुसाफिरों से भरी रहे ताकि उनकी प्लेटों से बहुत सा जूठा खाना हमारे लिए बच जाये।

मिन्नी   लेकिन आज मुसाफिर तो इतने पेटू होते हैं कि प्लेटें बिल्कुल साफ कर देते हैं और खाना तो जरा भी नहीं बचता। ऐसे मौके पर अगर बीबी सचमुच मेहरबान न हो तो

भिखारिन बुरी बातें मुह से न निकाल ! यह सब का दाता है । तौबा-तौबा ! आज कितनी सर्दी है, यह बर्फीली हवा जिस्म को चीरे जाती है । मिन्नी आग जरा तेज कर दे !

मिन्नी यह चीड की लकडिया धुआ ज्यादा देती है, आग कम ।

भिखारिन तू जगल से काव की लकडिया चुन लाया कर, मैंने तुझे कई बार समझाया है ।

मिन्नी मा, काव का जगल बहुत घना है । मुझे डर लगता है !

भिखारिन बावली हुई है ! डर काहे का ?

भिखारी मिन्नी ! देखो अभी खिडकी खुली कि नही ? ये कौन आ रहे हैं ?

मिन्नी मुसाफिर है ! सराय के अन्दर जा रहे है । अच्छा मैं जाकर खिडकी के पास खडी होती हू । अब्बा, उम्मीद है अब के कुछ न कुछ जरूर मिलेगा ।

(चली जाती है ।)

भिखारिन तुमने सुना, मिन्नी को काव के जगल मे लकडिया चुनने मे डर लगता है !

भिखारी हा, मिन्नी जवान हो गई है !

भिखारिन तुम उसका ब्याह क्यो नही कर देते ?

भिखारी इस बस्ते मे तो कोई ऐसा भिखमगा नही, सुना है शहरो मे भिखमगे बडे अमीर होते है । मुझे एक दफा सराय के एक मुसाफिर ने बताया था कि उसने अखबार मे पढा था कि एक शहर मे, मुझे उस शहर का नाम याद नही आ रहा भला-सा नाम था एक भिखमगा रहता था । जब वह मरा तो मिन्नी की मा ! साठ-सत्तर हजार रुपये छोडकर मरा । साठ सत्तर हजार रुपये कितने होते है, तुम्हें मालूम है ?

भिखारिन नही ! पर मैं सोचती हू कि मेरी मिन्नी को भी कोई ऐसा ही भिखमगा मिल जाए ।

भिखारी तुमने तब मेरी बात नही मानी । वह बनिया पाच सौ रुपये देता था । मिन्नी की जिन्दगी भी सुधर जाती और हमारी भी

भिखारिन तुम क्या करते उन पांच सौ रुपयों से ?

भिखारी उन पांच सौ रुपयों से मैं फिर जमीन का एक टुकड़ा खरीद लेता। गायें रखता भेड़ बकरियां रखता, मेरा एक छोटा-सा घर होता। कच्ची मिट्टी से बना हुआ। मिन्नी की मां ! तुझे मालूम है कि भिखारियों के टोले में दाखिल होने से पहले मैं एक किसान था।

भिखारिन मुझे मालूम है ! तुम ऐसी बातें मुझे कई बार बता चुके हो।

भिखारी तुम एक बूढ़े अंधे की बातों पर कहां विश्वास करोगी ! लेकिन मिन्नी की मां ! मैंने भी अच्छे दिन देखे हैं। जहां मैं रहता था, वहां चारों तरफ खूबसूरत खेत थे। खेतों से परे थे पहाड़ और एक उजली सी नदी धान के खेतों के पास से मीठे मीठे गीत गाती हुई बहती थी। उस नदी के साथ चलते-चलते मैं अपने भेड़ बकरियां के रेवड़ को ले जाया करता था। वहां हरी भरी घास थी, बनफशे के फूल थे और खट्टे अनारों के जंगल और

भिखारिन और फिर तुम्हारा बाप मर गया। और तुम्हारे बाप ने गांव के बनिये का बहुत सा रुपया कर्ज देना था और बनिये ने तुम्हारी जमीन कुर्क करा ली और तुम होते-होते एक भिखमंगे बन गए। और फिर तुम हमारे टोले में आ मिले। मैं यह सब बातें अच्छी तरह से जानती हूं। इन्हें बार बार सुनाने से तुम्हें क्या हासिल होता है ? मैं अच्छी तरह जानती हूं कि तुम हमेशा से एक भिखमंगे थे, हमेशा भिखमंगे रहोगे और एक भिखमंगे की मौत ही मरोगे। सिर्फ यह बात सच है, बाकी सब झूठ है। न तुम्हारा बाप किसान था न मेरी मां अमीरजादी थी। मुझे तो यह मालूम भी नहीं, मेरी मां कौन थी, एक धुंधली सी याद है, जो मेरे सारे पैसे, जो मैं बाजार में लोगों के पीछे भाग भाग कर इकट्ठे किया करती सब छीन लिया करती थी और अक्सर रातों को भी भूखा रखती थी, ताकि मैं कहीं मोटी न हो जाऊं।

(कदमों की आहट)

भिखारिन कौन है ?

भिखारी . कौन है ?

शायर और
जानी लगड़ा मुसाफिर है बाबा, जरा आग ताप लें !

भिखारी : मुसाफिर हो तो सराय में जाओ ! हम फकीरों के पास क्या काम है ?

लगड़ा : सराय के अन्दर जाने की ताक़ीत होती, तो तुमसे बात ही क्या करते ?

भिखारी तुम कौन हो ?

लगड़ा : मेरा नाम जानी लगड़ा है। पहले मैं नूरपुर में भीख मागता था। पर वहा पुलिस वालों ने बडा तग कर रखा है। बेचारे भिखारियों की हर रोज पेशी, हर रोज बुलावा। यह मेरी टाग लगडी है और कुछ इस पर पुराने दो चार गले-सडे नासूर भी है। मुझे बैठे-बिठाए भीख मिल जाती थी, लेकिन बुरा हो उन पुलिसवालों का !

भिखारी और तुम्हारे साथ यह दूसरा साथी कौन है ?

लगड़ा यह इसी से पूछ लो !

शायर : मैं मैं शायर हूं !

भिखारी शायर क्या होता है ? भई बडे बडे भिखमगे देखे, किसम किसम के भिखारी, लेकिन यह किसम आज ही सुनने में आई !

लगड़ा : अरे बाबा, यह शायर गीत बनाता है गीत और गाव-गाव सुना कर अपना पेट पालता है।

भिखारी : ओ हो, तो भाट कहो न ! कहो कि मैं भाट हूं। शायर ! अजीब नाम ढूढा है इसने भी !

लगड़ा : यह रास्ते में मुझे मिल गया था। मैंने कहा साथ हो तो रास्ता आसानी से कट जाता है। इसीलिए साथ लेता आया। बाबा तुम तो यहा बडे मजे में हो। यह बुढ़िया कौन है ?

भिखारी : यह मेरी बीवी है ! (कदमों की आहट) और यह मिन्नी आ रही है, मेरी लड़की। (मिन्नी आ जाती है।) और मिन्नी यह जानी लगडा है। यह शायर है। गीत बनाता है गीत। बीवी ने खिडकी खोली। हा तो जल्दी से खाना दे मुझे !

मिन्नी — लेकिन बीवी कहती है कि अभी खाना कुछ देर के बाद मिलेगा। आज सराय में मुसाफिरों की बहुत भीड़ है।

भिखारी — तो कुछ थोड़ा-सा ही उसने दे दिया होता। मैं तो भूख से मरा जा रहा हूँ।

शायर — यह एक भुट्टा है भाई, इसे आग पर भून कर खा लो।

भिखारी — किधर है... किधर है... किधर है... मिन्नी बिटिया जरा इसे आग पर भून डाल? उफ! कितनी सर्दी हो रही है आज, इस गर्म गुदड़ी में भी जान निकली जा रही है कान है। किसी अमीर आदमी की कार आ कर रुकी है मिन्नी, जा जरा भाग कर।

लगड़ा — मैं भी चलता हूँ तुम्हारे साथ। शायद एक दो छदाम मुझे भी मिल जाए। मिन्नी जरा मुझे सहारा देना।

(कदमों की आहट, कार के रुकने की आवाज)

शिकारी — उफ आज तो थक कर चूर हो गए।

शिकारी की बीवी — ये तो बड़ी जलील सराय मालूम होती है। जरा मुझे सहारा देना! थक यू।

शिकारी-2 की बीवी — अरे भई हम तो बहुत भूख लगी है। जान निकली जा रही है। और फिर यह बला की सर्दी। शुक्र करेंगे जब कल घर पहुँचेंगे।

शिकारी-2 — शिकार पर मर्दों के साथ आना भी तो कोई खेल नहीं।

शिकारी-2 की बीवी — शिकार पर मर्दों के साथ आना भी तो कोई हंसी खेल नहीं। देख लो, आज हमने भी तुम्हारी ग्लैरी! आई हाउ ब्रेव यू आर! वेरी करेजियस!

मिन्नी — साहब एक पैसा, मेम साहब की जोड़ी बनी रहे! एक पैसा मिल जाये।

लगड़ा — गरीब मोहताज लगड़े पर तरस खाओ रे बाबा!

शिकारी–3 ओ डैम ! ये कमबख्त हर जगह मौजूद हैं। अब किस ख्याल था कि इस आउट आफ दि वे सराय में भी यह मखलूक मगज चाटने के लिए मौजूद होगी !

भिखारी मेम साहबा की जोडी सलामत रहे ! साहब का इकबाल बुलन्द हो ! मेम साहब जी ! आपके घर एक खूबसूरत प्यारा बच्चा !

शिकारी–2 और शिकारी 1 की बीबी ओ हा, हाऊ इनडीसेन्ट ! हश हश, चलो जल्दी अन्दर चलें ! वरना ये भिखमगे तो हमारी जान खा जायेंगे !

(कदमो की आहटें)

शिकारी–1 हा, आप चलिए, हम जरा सामान उतरवा लें भई वह किधर है ?

शिकारी–3 कैरियर मे, फिक्र न करो ! उसे मैं कैसे भूल सकता हू ?

भिखारी कुछ मिल जाए हुजूर !

शिकारी–2 बैरा, इन्हें कुछ दो !

(कटोरे में सिक्का फेंकने की आवाज)

सराय मालिक आइए आइए हुजूर, अन्दर तशरीफ लाइए।

शिकारी–1 ओह, तुम सराय के मालिक हो ?

लगडा हुजूर, इकबाल बुलन्द हो, इस गरीब मोहताज लगडे को भी कुछ मिल जाए !

शिकारी–1 ओह, जरा जल्दी से लगडे बैगर को कुछ देकर टालो ! तुम इस सराय के मालिक हो और दरवाजे पर भिखमगो को बिठा रखा है।

शिकारी–2 मुसाफिरो को दोनो तरह से लूटता है, अन्दर से भी और बाहर से भी।

मालिक : हुजूर अन्दर तशरीफ लाइए ! सराय के बाहर की जमीन का मैं मालिक नही हू। अन्दर तशरीफ लाइए हुजूर !

भिखारी : साहब जी आप भी

शिकारी-3 भाई है पाल, यह भिखारिन लड़की तो मुझे अच्छी खासी मालूम होती है । भई तुम्हारा क्या ख्याल है इस बारे में ?

शिकारी-2 बड़े बेहूदा हो तुम ! बैरा सब सामान ठीक है ?

बैरा : जी हुजूर !

शिकारी चलो भई अन्दर चलें, यहां खड़े-खड़े तो लहू भी जम जायेगा !

मालिक : अन्दर तशरीफ ले चलिए हुजूर !

मिन्नी : साहब जी ... आप भी एक दुअन्नी ... !

(साहब सराय के दरवाजे के अन्दर चले जाते हैं ।)

बैरा : भागो, भागो यहां से ! किस वक्त से खड़ी चिल्ला रही है, मुस्टंडी कहीं की ?

(फेड आउट)

भिखारी कुछ मिला !

लंगड़ा : एक इकन्नी !

मिन्नी : और एक दुअन्नी मुझे भी !

लंगड़ा : जवान औरतों को लोग यूं भी ज्यादा खैरात दे देते हैं । और तुम्हारी लड़की तो

भिखारी हां एक बनिया इसके पांच सौ दे रहा था लेकिन मिन्नी की मां ने

लंगड़ा : मिन्नी की मां ने अक्लमन्दी से काम लिया । अगर तुम भी अक्लमन्दी से काम लो तो यह लड़की तुम्हारी सारी उम्र के लिए रोटियां मुहैया कर सकती है । क्यों शायर तुम्हारा क्या ख्याल है ? (वक्फा) शायर भाई !

शायर : हूँ ... क्या कहा, माफ करना, मैंने सुना नहीं ?

लंगड़ा : ही-ही-ही, अच्छा हुआ तुमने नहीं सुना ! अब यह बताओ तुम क्या कोई नया गीत बना रहे थे ?

शायर हां, एक नया गीत था ।

लंगड़ा : जरा सुनाओ और इस सारंगी को कंधे पर से तो उतारो !

(गाना)

शायर — तुम रो क्यों रहे हो बाबा ?

भिखारी — मुझे अपने सुख के दिन याद आ गए। वे धान के प्यारे-प्यारे खेत, वह बहती नदी का निर्मल श्फाफ पानी, वह जगह जहां मैं अपना रेवड चराया करता था। मेरी मां जो मुझे लोरियां सुनाया करती थी, मेरा बाप जो मुझे कन्धे पर बिठा के कसबे के बाजार में सैर कराने लाया करता था।

भिखारिन — झूठ है, बिलकुल झूठ है! मैंने इसी कसबे के बाजार में शुरू से इसे भीख मांगते हुए देखा है। इस किसान के बेटे को! सराय के बाहर बैठा भिखारी और ख्वाब देखे महलों के!

शायर — हां-हां तुम सच कहती हो! हम सराय के बाहर रहने वाले कुत्ते और भिखारी, जो मुसाफिरों का बचा-खुचा खाना खा कर अपना पेट भरते हैं और अक्सर अपना पेट तक नहीं भर पाते। हमें ऐसे सुनहरे ख्वाब नहीं देखने चाहिए, कभी नहीं देखने चाहिए!

लंगडा — मियां इन बातों के सोचने से क्या होता है? अपने को तो बस यह समझ आया है कि जिओ भिखारी और मरो भिखारी। और ईमान की बात है कि यह पेशा कोई इतना बुरा नहीं। बैठे बिठाए रोटी मिल जाती है। लोग दो-चार गालियां भी दे देते हैं, लेकिन ईमान की बात यह है कि गालियां किस पेशे में नहीं? हमने बड़े-बड़ों को देखा है कि गालियां खाते हैं और चूं नहीं करते। यार अपन ने तो बस यही पेशा पसन्द किया है!

मिन्नी — शायर, क्या तुम्हारे गीत सभी ऐसे ही होते हैं!

शायर — क्या मतलब है तुम्हारा मिन्नी ?

मिन्नी — तुम्हारा गीत बडा बुरा था। इसने बाबा को रुला दिया और मुझे भी।

शायर — तुम भी

मिन्नी — हां मेरी आंखों में भी आंसू आ गए।

शायर मिनी ! मेरे पास आँसुओं का एक खज़ाना है । इसे मैंने धरती के मुख्तलिफ कोनों में से चुन-चुन कर इकट्ठा किया है । इन आँसुओं में इंसान की कहानी है । क्या तुमने कभी इन गोल गोल आँसुओं के अंदर झाँक कर देखा है । उनमें मीलों तक सुर्ख-सुर्ख अंगारों के मैदान हैं और लाखों शोले अपनी खौफनाक ज़बानें फैलाए हुए आसमान की तरफ बढ़ रहे हैं । इनमें ज़ख्मियों की चीखो पुकार है और कमसिन बच्चों और बेवा औरतों के बैन, इन आँसुओं के उफक पर हमेशा काली घटा छाई रहती है जिसमें कभी कभी एक ऐसी खौफनाक बिजली कौंध जाती है कि बड़े बड़े जियालों के दिल दहल जाते हैं । लेकिन इन आँसुओं के पीछे कभी-कभी सात रंगों वाले धनक का नरमो-नाज़ुक झूला भी नज़र आ जाया करता है । बस एक ही लम्हे के लिए । फिर वह उसी काली घटा में गायब हो जाता है और लाखों शोलों की सुर्ख पतली ज़बानें आसमान से बातें करने लगती हैं ।

मिनी मैं आज तक कभी किसी झूले पर नहीं बैठी । शायर, क्या मैं उस सात रंगों वाले धनक पर बैठ सकती हूँ ? बस सिर्फ एक लम्हे के लिए ।

शायर तुम बड़ी भोली हो । मिनी ! अभी तक किसी इंसान ने इस धनक को नहीं छुआ । छूना तो क्या, बहुतों ने तो इसे देखा भी नहीं है ? मैंने भी तो कभी कभी इसे देखा है । यह धनक हरेक आदमी के आँसुओं में नहीं झिलमिलाता है । हाँ, जब मैं गीत गाता हूँ और जब मेरे गीत को सुनकर किसी मासूम बच्चे की आँखों में आँसू मचलने लगते हैं, उस वक्त मैं इस धनक को एक लम्हे के लिए देख लेता हूँ । अगर यह धनक हरेक आँसुओं में दिखाई दे तो यह आग के जहन्नुमी शोले हमेशा के लिए बुझ जाएँ ।

मिनी तो फिर क्या हुआ, शायर तुम बड़े ही अजीब आदमी हो ।

शायर फिर क्या होगा ? मिनी फिर वह होगा जो तुम्हारी आँखों ने अभी नहीं देखा । जिस खिड़की के खुलने की तमन्ना तुम हरदम करती हो, फिर वह खिड़की हमेशा के लिए खुल जाएगी ।

मिन्नी तो क्या तुम इसी वास्ते धरती के मुख्तलिफ कोनों से भांसू जमा करते रहते हो ?

शायर हाँ !

मिन्नी अच्छा अच्छा ! यह मुसाफिर कहता है कि मैं धरती के मुख्तलिफ कोनों से आंसू जमा करता रहता हूं, ताकि हमारी यह सराय वाली खिड़की हमेशा के लिए खुली रहे ।

(सगड़ा जानो, मिन्नी की मा और बाप खूब हंसते हैं ।)

सगड़ा ये गीत बनाने वाले सभी पागल होते हैं । (हवा का तेज झोंका, दूर जंगल में गीदड़ों के बोलने की आवाज) । उफ, यह हवा कितनी सर्द और बर्फीली है ! बेचारे इन्सानों पर तो आफत है ही, जंगल में गीदड़ तक सर्दी में ठिठुरते हुए चिल्ला रहे हैं ।

भिखारी क्या तुमने यह कहानी सुनी है, एक था राजा, उसने जब सर्दी के दिनों में गीदड़ों को यूं चिल्लाते हुए सुना तो अपने वजीर से पूछा कि क्या माजरा है ? वजीर ने बताया, महाराज इन गीदड़ों को सर्दी लगती है । महाराज ने हुक्म दिया, कि इसी वक्त उन गीदड़ों में कम्बल और लिहाफ मुफ्त तकसीम किए जाएं !

शायर (हंसता है ।)

भिखारी (खफा होकर) क्या हंसते हो शायर ?

शायर मैं पूछता हूं, क्या उस राजा के शहर में कोई भिखारी न था ? (हंसता है ।)

भिखारी भिखारी क्या न होंगे ? शायर यह कैसी बातें करता है ? भला जहां राजा होगा वहां भिखारी भी होंगे । लेकिन इस बात का मेरी कहानी से क्या ताल्लुक ? मैं कहानी सुना रहा हूं, और यह बीच में से टोक देता है ख्वाहमख्वाह ! यह कैसा आदमी है तुम्हारा दोस्त जानी ?

लगड़ा — माफ कर दो भाई इसे! तुम जानते ही हो यह गीत बनाने वाले इसी तरह के सिर-पैर की बातें किया करते हैं।

भिखारिन — गीदड़ वाली कहानी से मुझे भी एक बात याद आ गई। एक दफा मैं सड़क पर बैठी भीख माँग रही थी और कह रही थी—कोई रोटी, कोई पैसा, भिखारिन भूखी है! कोई रोटी, कोई पैसा, भिखारिन भूखी है! इतने में मेरे करीब से एक खूबसूरत औरत गुजरी। उसका लिबास रेशम का-सा था और सिर से पाँव तक जेवर में लदी-फदी थी। उसके साथ एक निहायत प्यारी नन्ही लड़की थी। मैंने उन्हें देखकर और भी मिस्कीन आवाज में कहा—कोई रोटी, कोई पैसा, भिखारिन भूखी है! इस पर वह ठिठक कर खड़ी हो गई और उसने अपने बटुवे से एक पैसा निकाल कर मेरी हथेली पर रखा। नन्ही लड़की फौरन बोल उठी। पूछने लगी माँ यह भूखी है? माँ ने कहा, हाँ बिटिया, यह भिखारिन है, गरीब है, भूखी है! नन्ही लड़की बोली, माँ यह भूखी है तो बिस्कुट क्यों नहीं खाती? बिस्कुट, सुना तुमने मिन्नी के कहना बिस्कुट! (खोखले अंदाज में हँसती है।) उसकी माँ ने उसे एक जोर का तमाचा लगाया और फिर अपनी रोती हुई लड़की को लेकर आगे निकल गई।

(खोखले अंदाज में हँसती है।)

भिखारी — अभी मेरी कहानी पूरी हुई नहीं कि तुम लोगों ने बीच में ही...

बीबी — (दूर से आवाज देती है) मिन्नी मिन्नी... मिन्नी बेटी!

भिखारी — खिड़की खुल गई, मिन्नी खिड़की खुल गई! बीबी तुझे बुला रही है, भाग कर जा!

बीबी — मिन्नी, मिन्नी...!

लगड़ा — बीबी खिड़की पर नहीं है। वह तो सराय के दरवाजे पर खड़ी आवाज लगा रही है।

भिखारिन — मिन्नी, जा भाग कर!

मिन्नी — आई बीबी जी!

(दौड़ती हुई जाती है।)

मिन्नी बीबी, अब खाना दोगी ?

बीबी हा, हा ! चुड़ैल तुझे खाना भी दूगी और बहुत-सी अच्छी-अच्छी चीजें भी दूगी ! चल सराय के अन्दर ! चल, सराय के मालिक तुझे बुला रहे है !

मिन्नी आ हा हा (ताली बजाकर) वहा है सराय के मालिक ?

(सराय का दरवाजा बन्द हो जाता है।)

भिखारिन मिन्नी सराय के अन्दर चली गई ।

लगड़ा बीबी, मिन्नी को लेकर सराय के अन्दर चली गई, सराय का दरवाजा बन्द हो गया है ।

भिखारी सराय के अन्दर चली गई । क्या कह रहे हो जानी ? मेरी मिन्नी तो आज तक सराय के अन्दर कभी नही गई थी । मिन्नी कैसे सराय के अन्दर चली गई ! सराय के अन्दर मिन्नी मिन्नी मिन्नी !

शायर आखिर एक-न एक दिन उसे सराय के अन्दर जाना ही था ।

भिखारी मिन्नी मेरी बिटिया !

शायर और आज सराय की दहलीज ने उसकी जिन्दगी के दो टुकड़े कर दिए । सराय के अन्दर और सराय के बाहर । और अब मिन्नी की रूह इसी सराय की दहलीज के महवर पर आवारा होकर भटका करेगी । जरा आग तेज कर दो जानी ! मेरे गीत इस बर्फीली रात मे सर्दी से ठिठुरे जा रहे है । वह उन आवारा गीदड़ो की तरह है, जिन्हे सर्दियो मे कोई कम्बल नही देता, और वह उन अन्धे भिखारियो की तरह है, जिनकी बासीदा और पुरानी गुदड़ी में हवा बर्फ की तरह चुभती है । मेरे गीत भूखे, नगे और प्यासे है । इन्हे कोई बिस्कुट नही देता । मेरे गीत कायनात के गले-सड़े नासूर है । इन रिसते जख्मो पर आज तक किसी ने फाहा नही रखा ।

(सारगी बजाने लगता है ।)

लगड़ा ही-ही-ही दिमाग फिर गया है, सर्दी से बिचारे का ।

(गीत)

(भिखारी अपनी गुदड़ी समेटने लगता है।)

भिखारिन कहां जा रहे हो मिन्नी के अब्बा ?

भिखारी मैं अपनी मिन्नी को वापस बुलाने जा रहा हूँ। मैं सराय का दरवाजा खटखटाऊंगा! शोरोगुल मचाऊंगा! चीखूंगा, चिल्लाऊंगा गालियां दूंगा समझा क्या है इन्होंने ? मैं भी कभी किसान था, मेरा भी घर था बैलों की जोड़ी थी, खूबसूरत खेत थे ! मेरी मिन्नी मेरी मिन्नी

लंगड़ा चलो चलो, मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं। आओ शायर मियां!

(आहिस्ता आहिस्ता जाते हैं।)

लंगड़ा दरवाजा खटखटाओ!

(दरवाजा खटखटाने की आवाज)

कोई नहीं बोलता ?

(फिर दरवाजा खटखटाने की आवाज)

सराय में खामोशी है!

(खटखटाने की आवाज)

सब सो रहे हैं।

(खटखटाने की आवाज)

शायर (तंज से) मिन्नी भी सो रही होगी।

भिखारी दरवाजा खोल दो, दरवाजा खोल दो। सराय के बदमाश कुत्तो, दरवाजा खोल दो। मेरी मिन्नी को मेरे हवाले कर दो! मैं मिन्नी का बाप हूं! दरवाजा खोल दो! दरवाजा खोल दो! (दरवाजा खटखटाने की आवाज) ओह ज़ालिम, शैतान के जहन्नमी बेटो! मेरी मासूम मिन्नी को मुझे वापस दे दो! उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? तुमने मुझ से मेरा घर छीना, मेरे सुनहरी खेत छीन लिए, मेरी खूबसूरत बैलों की जोड़ी, मेरी आँखें भी तुमने मुझ से छीन

ली। अब मैं अंधा हूं। तुम्हारे दरवाजे का भिखारी, आह यह दरवाजा खोल दो (खटखट) खोल दो जालिमो! एक गरीब अंधे भिखारी पर रहम करो! उसके बुढ़ापे का सहारा, उसकी आधी जिन्दगी की जोत उसे वापस दे दो! हा मुन्ने मरी मिनी वापस कर दो! मैं अब तुमसे कभी कुछ नही मागूगा! चुपचाप यहा से चला जाऊंगा और जगल मे जाकर बसेरा करूंगा! मैं चुपचाप चला जाऊंगा, चुपचाप!

(खटखट की आवाज हल्के हल्के—सिसकियां लेता है।)

शायर मैं जानता था यह सराय कभी न खुलेगी। उसका सीना पत्थर का होता है। ये पत्थर जो हर रोज तुम्हारे नगे पाव से टकराते हैं और उनमे जख्म पैदा कर देते हैं। ये पत्थर जिनसे इस सराय की दीवारें बनी हैं, सिर्फ दीवारें ही नही, इसका सीना भी पत्थर ही का है। इस सीने में धड़कन पैदा नही होती और जहा धड़कन न हो वहा आवाज भी नही होती। इसीलिए तो सराय खामोश है। लेकिन, घबराओ नही, इस बेआवाज सराय मे जिस ताकत ने मिनी को निगल लिया है वह वक्त आने पर खुदबखुद उसे उगली कर बाहर फेंक देगी! आओ अपने अलाव पर चलें!

लगड़ा हा-हा, आओ आओ अलाव पर चलें! बुढ़िया बेचारी अकेली रो रही होगी।

(आहिस्ता-आहिस्ता अलाव की तरफ बढ़ जाते है। कसबे का क्लाक एक बजाता है।)

शायर एक (वक्फा—क्लाक दो बजाता है।)

दो! (वक्फा—क्लाक तीन बजाता है।)

तीन! (खर्राटों की मध्यम आवाज।)

शायर सो गए, सब सो गए! अंधा लगड़ा, भिखारिन सब सो गए! अलाव के तपते हुए सुर्ख शोले भी जाग-जाग कर सो गए। अब काली बर्फीली रात है और हवाओं के तेज झोंके, लेकिन यह तेज झोंके सराय के मुजमिद सीने को नही चीर सकते। जिस फान का तू मुतजिर है, वह यहा कभी नही आयेगा। इस

लगड़े को अपने नासूरों से मुहब्बत है, इस भिखारी को अपनी भूख से और तू... तू अपनी इस बे-मसरफ सारंगी के बोझ को कांधे पर उठाए इस बुझते हुए अलाव के किनारे क्यों बैठा है? चल उठ, पगडंडी की पुरानी खाक तुझे बुला रही है। तू राही है, आशिक नहीं। तू मुसाफिर है, मुहब्बत करने वाला नहीं!

(कदमों की आहट)

शायर कौन है?

मिन्नी मैं हूं मिन्नी... मि... न्नी... मिन्नी सराय की मलिका है! उसने कहा था।

शायर किस ने कहा था, यह तेरे कदम क्यों लड़खड़ा रहे हैं? तेरे... तेरे मुंह से यह कैसी बू आ रही है?

मिन्नी बू आ रही है... ही-ही-ही... बू कि खुशबू! तुम शायर होकर बू और खुशबू में तमीज नहीं कर सकते? आ हा हा-हा हा।

लगड़ा (जागकर) कौन?

भिखारी यह मिन्नी की आवाज थी।

भिखारिन मिन्नी मेरी बिटिया, तू इतना अरसा कहां रही?

मिन्नी स... स... सराय के अन्दर, और अब सराय के बाहर हूं! आज मैं बहुत खुश हूं... आज मैंने अंगूर का रस पिया है। रेशम के कपड़े पहने हैं। लजीज और मीठा खाना खाया है। तुम्हारे लिए भी लाई हूं। लो... लो... इस रूमाल में सब कुछ बंधा है! और यह... यह... यह भी लो...!

भिखारिन यह क्या?

लगड़ा नोट! दस, बीस, तीस, चालीस! वाह मेरे यार, यह छोकरिया तो बड़ी होशियार है!

भिखारिन चालीस! वह बनिया तो पांच सौ देता था!

भिखारी (चिल्लाकर) मिन्नी... मिन्नी... जरा मेरे करीब आ, मेरी बेटी!

मिन्नी क्या बात है बाबा ?

भिखारी ओर गरीब मां ! मेरे ग़रीब माजा, मेरी बेटी !

(भिखारी मिन्नी का गला दबाने की कोशिश करता है। मिन्नी चीखती है, शायर और लंगड़ा उन दोनों को अलग कर देते हैं।)

मिन्नी क्या बात है अब्बा क्या बात है ? तुम तो मुझे (लम्बी लम्बी सांस लेकर) जान ही से मार डालने लगे थे ! मैंने क्या कोई बुरी बात की है ? मैं तुम्हारे लिए खाना लाई हूं और अपने लिए यह खबसूरत कपड़े। देखो शायर, ये मेरे बदन पर कैसे सजते हैं ? अच्छे लगते हैं न वह बहुत ही अच्छा आदमी है ! वह मुझ से बहुत मुहब्बत करता है। कहता था, जब मैंने तुम्हें सराय के बाहर रोते देखा था, उसी समय से मैं तुमसे मुहब्बत करने लग गया था। उसकी बातें बहुत ही रसीली थीं। उसने मुझे बहुत बहुत प्यार किया। शायर ! वह कहता है, वह कहता है, मैं तुमसे शादी कर लूंगा ! वह कल अपने घर जायेगा, फिर वहां से वह सराय के मालिक को खत लिखेगा, और फिर मेरे लिए एक खबसूरत चार घोड़ों वाली गाड़ी लायेगा और मैं उसमें बैठकर अपने खाविन्द के घर जाऊंगी। अम्मा तुम्हें याद है न, एक बार एक भिखारी ने मेरा हाथ देख कर तुमसे कहा था कि यह लड़की बड़ी होकर शहज़ादी बनेगी, भिखारिन की शहज़ादी। अम्मा वह बहुत ही अमीर है, मीलों तक उसके खेत फैले हुए हैं। उसके पास बैलों की अनगिनत जोड़ियां हैं। उसका घर सुर्ख ईंटों का बना हुआ है और उसके चारों तरफ़ बसी बाग़ है। मां वह बड़ा ही अच्छा आदमी है ! मैंने उससे कहा था कि मैं अपने अब्बा और अम्मा को भी साथ ले चलूंगी। वह कहने लगा यह तो बहुत अच्छी बात है। मैं उन दोनों के लिए एक मकान बनवा दूंगा। और तुम्हारे अब्बा के लिए खेत और बैलों की जोड़ी भी खरीद दूंगा। तुम मेरे साथ चलोगे न अब्बा ! अम्मा तुम भी ! अब हम भिखारी नहीं रहेंगे। दर-बदर भीख नहीं मांगेंगे। बीबी की गालियां नहीं सुनेंगे। सराय के बाहर सर्दी में ठिठुरते हुए अलाव की मध्यम आग नहीं तापेंगे, हां, जानी को भी साथ लेते चलेंगे। मैं उससे कह दूंगी, वह बड़ा अच्छा आदमी

है ! शायर तुम भी हमारे साथ चलना । तुम्हारे मीठे गीत सुन कर उसकी आंखों में आंसू आ जायेंगे ? क्यों ठीक है न, ठीक है न अब्बा ! (वक्फ़ा) अम्मी (वक्फ़ा) जानी (वक्फ़ा) तुम सब चुप क्यों हो ? शायर, क्या बात है ? तुम भी नहीं बोलते ! तुम भी नहीं बोलते

(मध्यम आवाज में सिसकियां लेते हुए)

तुम भी नहीं बोलते !

(सिसकियां लेती है ।)

शायर रो मत, मिश्री, आज तुम वाकई इस काली अंधियारी रात की शहजादी हो ! इस सराय की मलिका हो ! तुम्हारा लिबास रेशम का है। तुम्हारे बालों में गुलाब के फूल टंगे हुए हैं। लबों पर तुम्हारे महबूब के बोसे चमक रहे हैं। आज की रात तुमने सात रंगों वाली कैसी कज़ा देखी है। आज की रात वह तुम्हारा खाविन्द है, आज की रात, वह तुम्हें अपने घर चार घोडों वाली गाडी में बिठाकर अपनी ब्याहता बना कर अपने घर ले गया है। आज की रात उसने तुम्हें अपने सोने और जवाहरात के बने हुए महल की सैर कराई है। तुम्हारी कमर में हाथ डाले, अपने बसी बाग़ात में फिराया है। रो मत मिश्री ! इन खुशी के आंसुओं को संभाल कर रख ! इन आंसुओं को तू दोबारा न हासिल कर सकेगी ! आज की रात तूने क्या खोया है, क्या पाया है यह शायद तू इस वक्त नहीं जान सकती ! कल सुबह जब यह मुसाफिर अपनी चार घोडों वाली गाडी में सवार होकर अपने सात के महल में वापस चला जायेगा, उस वक्त तुझे मालूम होगा कि तू उस जालिम सराय की पथरीली दहलीज़ से ब्याही गई है कि जिसके अस्तबल की सफाई करते करते तेरा बाप अंधा हो चुका है। रो मत मिश्री, रोने के लिए सारी उम्र पड़ी है ! कल तुझे मालूम होगा कि वह कैसे कज़ा गायब हो चुकी है। वह सोने का महल राख कर ढेर हो गया है वह बसी बाग़ात और खेत बंजर और वीरान हो गए हैं। इनमें तपती हुई रेत के बगूले उड़ते हैं और गीले बयाबानी चीखें मारते हैं। और

तू अपने चीथडो मे लिपटी हुई हाथ फैलाये भीख मागती फिरती है—कोई रोटी, कोई पैसा, भिखारिन हू !

मिन्नी नही, नही शायर, यह कैसे खौफनाक अलफाज है ? ऐसा कभी नही हो सकता ! मैंने किसी का क्या बिगाडा है ?

शायर तेरी बदनसीबी ही है कि तूने अब्दी मुसर्रते हुस्न के चद लाजवाब लमहे अपनी पाको-साफ रूह की गहराइयो से निकाल कर एक ऐसे आदमी को बख्श दिए, जो उनकी कदरो-कीमत नही जानता। ऐसी कायनात के बेमाना तिलस्म मे कोई इसान इनकी कदरो-कीमत नही जानता। वह लमहात जिनके जवाब चाद और सूरज की दुनियाओ के पास भी नही है। लेकिन इसान सभी इसान नही हैं। वह हर उस चीज को पहचानता है, जो खूबसूरत है, मुकद्दस है और मासूम है और हर उस चीज से वाकिफ है जो उस पर जुल्म करती है, उसकी रूह को कुचल कर उसके नाजुक एहसासात के टुकडे-टुकडे कर डालती है ।

लमडा चच च बहक गया है बेचारा ! दिमाग चल गया है इसका, चाद और सूरज और शोले और कौसेकजा, भला इन बातो का चालीस रुपयो से क्या ताल्लुक ? जा भई जा, बहुत मगज चाट लिया तूने, अब अगर यू ही सीधी तरह न जायेगा तो जानी लगडा तुझे अपनी लगडी टाग से करतब दिखायेगा ! यह मेरी लगडी टाग ऐसे मौको पर खब चलती है, बडा आया है मिन्नी को समझाने वाला चल यहा से !

(शायर आहिस्ता-आहिस्ता पगडण्डी की तरफ कदम बढ़ाता है।)

मिन्नी शायर, ठहरो ! (रुककर) मुझे भी अपने साथ लेते चलो !

शायर नही, नही, अब मै नही ठहर सकता ! मैं तुम्हारे आसू अपने साथ लिए जा रहा हू मिन्नी मुहब्बत करना या जख्मी जिंदगियों पर फाहा रखना मेरा काम नही । मैं तो सिर्फ धरती के आसू जमा करता हू ।

(चला जाता है ।)

(खामोशी, फिर जंगल में गीदड़ों के बोलने की आवाज—
मिन्नो की सिसकियां)

मूल उर्दू कृशन चन्दर
रूपान्तरकार कृशन चन्दर

कृष्णप्रिया

(शख और घटे घडियाल के साथ बाके-बिहारी के मदिर में हो रही आरती का ध्वनि प्रभाव। भक्तो के समूह द्वारा बाके-बिहारी, राधा वल्लभ, श्रीकृष्ण कन्हया और जुगल जोड़ी का जय-जयकार। इन सब ध्वनि प्रभावो के ऊपर श्रीकृष्ण के गुणगान सबधी कोई पद नाच-नाच कर गाती हुई कृष्णप्रिया का स्वर सुनाई देता है।)

उद्घोषक बाके-बिहारी का यह मन्दिर हिमालय की शिवालिक पहाडिया की तलहटी मे स्थित लाल ढाग नामक एक छोटी-सी बस्ती मे गगा के ऊचे कगार पर बना हुआ है। उसी मदिर के परम निष्ठावान पुजारी पडित ज्ञानदत्त की अत्यन्त सुदर युवा पत्नी थी कृष्णप्रिया। तो लीजिए सुनिए उस कृष्णप्रिया की गाथा लाल ढाग बस्ती के अत्यन्त दबग और शक्तिशाली ठेकेदार ठाकुर कुबेर सिंह से

(आरती के समय मदिर का ध्वनि-प्रभाव कृष्णप्रिया के नृत्यगीत के साथ उभरकर पृष्ठभूमि में चला जाता है।)

कुबेर सिंह *मुझ याद नही, मैं कब से नियमित रूप से मन्दिर मे जाने लगा था।* शायद तब से, जब मन्दिर के पुजारी पडित ज्ञानदत्त अत्यन्त रूपवती कृष्णप्रिया को ब्याह कर लाये थे। नई-नवेली दुल्हन का असली नाम तो था रेवती, परन्तु बाके-बिहारी के प्रति उसकी भक्ति और समपण भाव को देखकर पुजारी ने उसे कृष्णप्रिया का नाम दिया था। सारी बस्ती म कृष्णप्रिया के रूप-यौवन की धूम मच गयी। हर कोई विधाता की लीला पर चकित था कि इन्द्रलोक की अप्सरा सी रूपवती बाला, किसी राजा की रानी बनने की बजाय, एक गरीब पुजारी की गृहणी बनी। यह तय है कि रात की आरती के साथ मन्दिर मे भक्ता की जो विशाल भीड जुडती थी, उनमें अधिक सख्या भगवान बाके-बिहारी की जगह कृष्णप्रिया के दशनार्थियो की होती थी।

मेरे सामने तो नहीं, हां, मेरी पीठ पीछे यह अफवाह फैल गयी थी कि मैं कृष्णप्रिया के रूप-यौवन के लोभ में ही मंदिर जाता हूं और मंदिर का खर्च उठाता हूं। मतलब यह कि बस्ती के लोग कृष्णप्रिया के चरित्र पर शक करने लगे थे। यह शक और भी बढ़ा, जब यह खबर फैली कि एक रात इलाके का दिलेर और खौफनाक डाकू मंदिर में पहुंचा था। एक खूंखार डाकू का मंदिर में आना साधारण बात नहीं थी। मैंने जब कृष्णप्रिया से इस बारे में पूछा, तो उसने बिना किसी झिझक के सहज भाव से बताया

कृष्णप्रिया हां सुल्ताना रात को मंदिर में आया था। शयन आरती हो चुकी थी। दर्शनों के लिए जो भक्त आये थे, वे सब जा चुके थे। मंदिर में बहुत मद्धिम प्रकाश था। मंडप के दीये कुछ तो बुझ चुके थे और कुछ टिमटिमा रहे थे। पंडितजी भगवान के शयन की व्यवस्था करके गर्भगृह से बाहर निकलने ही वाले थे। मैं गर्भगृह के कपाट बंद करने के लिए आगे बढ़ी ही थी कि देहरी पर टिका कोई मस्तक ऊपर उठा और फिर ढाटा बांधे मझोले कद का एक आदमी उठकर सीधा खड़ा हो गया। मैंने उसे पहचाना नहीं।

(फ्लैश बैक)

कृष्णप्रिया देर से आये, भक्त! भगवान अब शयन कर रहे हैं।

सुल्ताना (सख्त स्वर) भगवान भी सो जायेंगे तो बड़ा अंधेर हो जायेगा! उनके जागते जब इतना अंधेर है, तो सोते जो न हो, सो थोड़ा है!

ज्ञानदत्त (आते हुए) किस अंधेर की बात करते हो, भक्त?

सुल्ताना वही अंधेर जो तुम्हारे भगवान के राज में मचा है पुजारीजी! उंह, सुल्तान सिंह को पकड़ने के लिए पुलिस कप्तान गारद लेकर पीछे पड़ा है।

ज्ञानदत्त सुल्ताना डाकू जो है!

सुल्ताना (भड़क कर) किसे तू डाकू कहे है पुजारी महाराज? डाकू तो लाल ठाग का साहूकार छज्जूमल है, जो ब्याज लेने-देते उधार लेने वाले का खून ही चूस लेता है। डाकू तो ठेकेदार कुबेर सिंह है, जो अपने कारिंदों को सिर्फ दाल-नून की रोटी देकर दौलत का

अम्बार लगाना जाता हूँ। डाकू मैं नहीं, मैं तो अन्यायी को लूटता हूँ। गरीब का दाता हूँ।

ज्ञानदत्त (चौंककर, डरकर) ता, तो तुम सुल्ताना डाकू हो ! (डरकर) कृष्णप्रिया !

सुल्ताना डरो नहीं पुजारी महाराज ! मैं यहां लूटने नहीं भगवान का प्रसाद लेने आया हूं। प्रसाद क्या मिलेगा पुजारिन ? तुम मेरी बांह की ओर क्या देख रही हो ?

कृष्णप्रिया तुम्हारी बांह तो खून से सनी है। कैसे चोट लगी भाई ?

सुल्ताना (चकित सा) हैं तूने मुझे भाई कहा ?

कृष्णप्रिया चलो, हमारे घर चलो। तुम्हें मरहम-पट्टी की जरूरत है।

सुल्ताना नहीं भैना ! बस मुझे प्रसाद दे दो ! आज उस रण्डी ने कुछ ज्यादा ही पिला दी थी। इससे कुछ होश में न था। उस पुलिस कप्तान की गोली को बचा न सका। बांह को छीलती निकल गयी। मर भी तो सकता था।

कृष्णप्रिया तुम भगवान के प्रसाद से ही तो बचे हो भाई ! अब जल्दी से मरहम-पट्टी करा लो। आओ हमारे घर। ये वैद्यजी को बुला लायेंगे।

सुल्ताना (शक करते हुए) वैद्य को या पुलिस कप्तान को ?

कृष्णप्रिया (कोमल स्वर में) विश्वास भी खो बैठे भाई ! बहन तक का विश्वास नहीं रहा ! बड़े दुखी लगते हो ! क्या सोच रहे हो, भाई ?

सुल्ताना (तनिक रुंधे गले से) कुछ नहीं। मेरे लिए यह प्यार, यह ममता। सब कुछ अनजान-सा है। खैर, विश्वास तो यह सुल्तान सिंह रण्डी का भी कर लेवे है साथ के चोर-डाकुओं का भी करे है। आज एक पुजारिन का भी विश्वास करके देखूं ! चल भैना, जहां चाहे ले चल !

(फेड आउट—फेड इन, झींगुर की झकार)

ज्ञानदत्त सुल्तान सिंह, तुम निश्चिंत होकर यहां घर में बैठो ! मैं अभी वैद्यजी को बुला कर लाया ! (पुकार कर) कृष्णप्रिया अंदर से दरवाजा बन्द कर लेना !

कृष्णप्रिया (दूर से) अच्छा ।

सुल्ताना (स्वगत) यह अजीब पति है ! इस अंधेरी रात में अपनी सुंदर जवान बीवी को एक डाकू के पास अकेली छोड़ कर चला गया।

कृष्णप्रिया (आते हुए) लो भाई, थोडा सा दूध पी लो ! (हस कर) अरे तुम मुझे इस तरह क्या देख रहे हो ?

सुल्ताना तू बड़ी सुंदर है, पुजारिन !

कृष्णप्रिया (शांत भाव से) तुमने सुंदरता देखनी ही नहीं चाही, भाई ! सुंदरता तो भगवान की सृष्टि में इतनी भरी पड़ी है कि कोई भी उनके अभाव में अभागा नहीं रह सकता। लगता है, तुम आंखें बंद करके ही चलते रहे !

सुल्ताना तूने मुझे भाई क्यों कह दिया ? मुझे बुरा लगा री !

कृष्णप्रिया क्यों ?

सुल्ताना अब मैं तुझे उडा के भी तो नहीं ले जा सकूं हूं !

कृष्णप्रिया मुझे उडाने की जरूरत क्या, भाई ! बहन को जब बुलाओगे, तो वह आप ही आ जायेगी।

सुल्ताना (हसकर) तू तो निराली औरत है !

कृष्णप्रिया (भक्ति भाव से) निराले तो केवल बांके बिहारी हैं या उनकी प्रिय राधा। बाकी सब तो होने भर को है। तुम भी हो, मैं भी हूं। हम दोनों ही कितने तुच्छ हैं, कितने मामूली हैं।

सुल्ताना (भड़क कर) मैं मामूली नहीं हूं, औरत ! मेरी मेहरबानी से तुम सब चैन से रहो हो। मैं जानूं हूं कि तुम्हारे भगवान का सोने-चांदी और रत्नों का सिंगार कितना कीमती है। मैं बस यही नहीं जानूं था कि तू इतनी सुंदर है। जानता तो छोडता थोडे ही ! मन्दिर की चोरी मैंने कभी नहीं की। कभी करूंगा भी नहीं। तू डरियो मत ! तेरे भगवान खुले-खजाने सोवें, तो भी उनकी कोई चीज नहीं उठावेगा। पर यह सुल्तान सिंह तुझे जरूर उठा ले जाता। (हसता है।)

कृष्णप्रिया (हसकर) अच्छा !

(फ्लैश बैक समाप्त)

कृष्णप्रिया और ठेकेदार ! तभी मेरे पति वैद्य भूदेव शर्मा को लेकर आ गये। तुम जानते ही हो कि वैद्यजी इलाज के मामले में साधु और डाकू में भेद नहीं करते। वैसे भी वे सुल्ताना को पहले से जानते थे। उसकी मरहम-पट्टी करके वे जैसे चुपचाप आये थे, वैसे ही वापस चले गये। तब सुल्ताना भी चलने को उद्यत हुआ। मेरे पति को सबोधित करते हुए बोला

(फ्लश बैक)

सुल्ताना तो चलता हू, पुजारी जी महाराज ! तू भला आदमी है ! राम तेरा भला करे ! तू भाग्यवान भी है ! ऐसी औरत पाकर कौन भाग्यवान न होगा भला ! पर देख, इसे कभी दुख न देना ! दुख दिया, तो पछतायेगा ! कहता हू पछतायेगा रे ! और मैना मैं जीता रहा, तो अब राखी पर ही मिलूगा !

(फ्लैश बैक समाप्त)

कृष्णप्रिया आर ठेकेदार ! इस तरह डाकू सुल्ताना मुझे अपनी बहन बनाकर चला गया।

कुबेर सिंह ठीक ! लेकिन पडतानी, डाकू का मदिर में आना अच्छा नहीं ! उसे अब मत आने देना !

कृष्णप्रिया बड़े भोले हो, ठेकेदार! तब ही उसे किसने आने दिया था ? क्या मैं गयी थी उसे बुलाने ? वह डाकू ठहरा। वह अगर फिर आना चाहेगा तो कौन रोकेगा ?

कुबेर सिंह पर अब उससे तुम नहीं मिलोगी, पडतानी ! पुलिस को पता चल गया, ता !

कृष्णप्रिया मैं कौन होती हू, किसी से मिलने-न मिलने वाली ? मैं तो बाके-बिहारी की पुजारिन हू। जैसा मेरे बाके बिहारी चाहते हैं, मैं करती हू। मेरी दृष्टि में बाके बिहारी के अलावा कोई पुरुष पुरुष नहीं। मैं, मेरा प्यार, सब बाके बिहारी को ही समर्पित है। उन्हीं का प्यार लेकर मैं जीवन की अधियारी डगर में डोलती

हू। यहाँ कुछ अनजाना और पराया लगता ही नहीं—चाहे सुल्ताना डाकू हो या कुबेर सिंह ठेकेदार। सुल्ताना डाकू की तरह लोग तुम्हें भी क्रूर मानते हैं। शिकारी के रूप में आखिर तुम भी तो जीव-हत्या करते हो। इस पर भी मैं तुम्हें क्रूर नहीं मानती, तुम सिर्फ अज्ञानी हो। तुम मुझे, निरे शिशु लगते हो, ठेकेदार! तुम भी शिशु, सुल्ताना डाकू भी शिशु, तुम्हारे रेंजर राणा भी शिशु। (फेड आउट)

कुबेर सिंह डाकू सुल्ताना की घटना के बाद कृष्णप्रिया के प्रति मेरी भावना बदल गयी। मुझे लगा, यह साक्षात राधा है, सती-साध्वी है, देवी है। उसकी दिव्यता से, पवित्रता से मैं इतना आतंकित हुआ कि फिर जब कभी उससे भेंट हुई, मेरी आँखें ऊपर उठी ही नहीं। और जीवन की यह कैसी विडम्बना है कि जिस कृष्णप्रिया को मैं देवी की तरह पूजने लगा था, उसको मेरे ही कारण एक शक्तिशाली लम्पट की वासना का सामना करना पड़ा।

(मन्दिर का वातावरण उभरता है।)

ज्ञानदत्त (मुस्कराकर) कृष्णप्रिया सुना तुमने! ठेकेदार भी कल फिर शिकार पर जा रहे हैं।

कृष्णप्रिया (आते हुए) क्यों ठेकेदार, फिर जीव हत्या करने जा रहे हो? वन में शेर, भालू, चीते क्या बिगाड़ते हैं तुम्हारा?

कुबेर सिंह नहीं, नहीं, मैं शिकार पर नहीं जा रहा! शिकार करने वालों के साथ जा रहा हूँ।

ज्ञानदत्त कौन हैं ये शिकार करने वाले, ठेकेदार जी?

कुबेर सिंह यहाँ का रेंजर राणा और सदर से आया हुआ उसका बड़ा अफसर डिवीजनल फारेस्ट आफिसर डी० के० सिंह।

कृष्णप्रिया क्या कोई मजबूरी है कि तुम उनके साथ जंगल में जाओ?

कुबेर सिंह हाँ बहुत बड़ी मजबूरी है! सिंह साहब एक तरह से मेरे और राणा के अन्नदाता हैं। वे खुश हो जाएँ, तो मुझे जंगलात का और

बड़ा ठेका दिलाकर मालामाल कर सकते हैं। नाराज हो जाए, तो मेरी रोज़ी रोटी छीनकर मुझे भूखों मार सकते हैं।

ज्ञानदत्त, ठेकेदारजी, फिर तो आपको उनके साथ शिकार पर जाना ही चाहिए ! बांके-बिहारी आपको सकुशल वापस लौटा लायें !

कुबेर सिंह पंडतानी, जल्दी से भगवान का प्रसाद दो ! बहुत काम है। जंगल में सिंह साहब के आने-जाने का, खाने-पीने का, सोने-बैठने का, शिकार खेलने का सब इंतजाम मुझे ही करना है। अपने सब कारिंदे साथ ले जा रहा हूं।

(जंगल का वातावरण उभरता है। बनैले पशुओं का शोर, हाका लगाने वालों की आवाज। फिर कई बंदूकों के दागने का धमाका और चीते की चिंघाड़।)

कई स्वर बधाई हो, सिंह साहब, बधाई !

राणा कैसा शानदार निशाना बांधा आपने ! गोली सीधी चीते के माथे पर लगी और वह उछलकर ठण्डा हो गया।

सिंह मैं तो डर रहा था कि अगर निशाना चूक गया तो !

राणा हुजूर सच कहूं, मैंने बड़े-बड़े शिकारी देखे, लेकिन आप जैसा निशानेबाज !

कुबेर सिंह बड़ा मूज़ी था वह चीता। इसे देख कर बड़े बड़े हाथी भाग जाते थे।

सिंह सात-आठ फुट का लगता है। काश साथ में फोटोग्राफर होता तो !

राणा हुजूर यही भूल हुई ! लेकिन हुजूर, चलते वक्त मैं इसकी खाल को भरवा कर ऐसी ट्राफी पेश करूंगा कि आपके ड्राइंग रूम में !

कुबेर सिंह साहब, काफी रात हो गयी। अब डाक बंगले में चलकर आराम कीजिए

(जंगल का वातावरण फेड आउट। नटनी का नृत्य-गीत उभरता है।)

सिंह — ऐं, जंगल में यह नाच-गाना !

कुबेर सिंह — सिंह साहब, मैं जानता था कि आज के शिकार में आपकी शानदार विजय होगी। इसलिए मैंने पहले से ही !

सिंह — (हँसकर) अरे, ठेकेदार तुम आदमी होशियार हो ! यह नटनी काफी खूबसूरत जान पड़ती है ।

राणा — हुजूर, ठेकेदार को मैंने ही बताया था कि आप शिकारी ही नहीं, खूबसूरती के कद्रदान भी हैं !

सिंह — क्या नाम है इस नटनी का !

कुबेर सिंह — चम्पा !

राणा — (फुसफुसाकर) हुजूर के कमरे में यह पहुँच जायेगी। रूप की मदिरा से पहले जरा इस मदिरा का पान भी कीजिए !

(कुछ देर बाद नटनी का नाच-गाना रुक जाता है, लेकिन साज-संगीत चलता रहता है)

सिंह — (नशे में) चम्पा, तुम सचमुच चम्पा हो !

चम्पा — ऊई ! छोड़िए ! गुदगुदी होती है ?

(दोनों की हँसी साज संगीत के साथ फेड आउट)

राणा — सिंह साहब, आप शिकार से सकुशल लौटें, इस भावना से मैंने बाँके बिहारी के मन्दिर में मानता मानी थी !

सिंह — तुम इन सब बातों में विश्वास करते हो राणा ?

राणा — हुजूर, बड़े ही जागृत देवता हैं मन्दिर के ! प्रार्थना बेकार नहीं जाती बाँके बिहारी के मन्दिर में । (धीरे से) और हुजूर, मन्दिर की पुजारिन भी असाधारण है ! रूप में भी, गुण में भी। संगीत और नृत्य में सरस्वती का अवतार ।

सिंह — (हँसकर) बड़े पारखी हो ?

राणा — हुजूर, परख का सवाल तो वहाँ उठता है, जहाँ गुण उजागर न हो ! वह तो अँधेरे में दीए की लौ-सी चमकती है ।

सिंह — तो क्या वह पुजारिन सचमुच इतनी सुन्दर है ?

राणा हुजूर, अप्सरा है, अप्सरा !

सिंह (अर्थपूर्ण ढंग से) हूं ! फिर तो आज रात को पूजा करनी ही होगी। इसके लिए क्या करना होगा ?

राणा हुजूर को बस इशारा करना होगा ! बाकी सब ठेकेदार कर लेगा।

सिंह अरे वाह शिकार का सारा इंतजाम ठेकेदार ने किया ! अब पूजा का इंतजाम भी वही करेगा। राणा तुम्हारा यह ठेकेदार है कि अलादीन का चिराग !

राणा बात कुछ ऐसी है, सरकार, अलादीन के चिराग से दानव निकलता था। दानव के लिए कुछ असंभव न था। ठेकेदार के पास आप ही की कृपा से पैसा है। वह पैसे के जादू से सब कुछ कर लेता है।

सिंह तो राणा ठेकेदार से कह दो कि आज हम मन्दिर की पूजा भी देखेंगे और मन्दिर की पुजारिन भी !

(मन्दिर का वातावरण उभरता है। घंटे घड़ियालों की आवाज के ऊपर कृष्णप्रिया नाच-नाच कर कृष्ण-भक्ति का पद गाती सुनाई देती है।)

सिंह राणा, मैं सोच नहीं सकता था कि यह पुजारिन इतनी सुंदर होगी !

राणा हुजूर, बदकिस्मती की बात है कि इतनी सुंदर औरत एक कंगाल पुजारी से बंधी-बंधी बूढ़ी हो जाये !

सिंह हूं ! तुमने आते-आते बताया था कि यह पुजारिन ठेकेदार को बहुत मानती है।

राणा सिंह साहब ! मन्दिर का सारा खर्च ठेकेदार जो उठाता है।

सिंह ठीक ! डाक बंगले पर पहुंचते ही ठेकेदार को मेरे पास भेज देना !

राणा जो हुक्म !

(मन्दिर का नृत्य-गीत और वातावरण फेड आउट, अनिष्ट सूचक संगीत उभरता है।

कुबेर साहब ने मुझे याद फरमाया ?

सिंह — आओ ठेकेदार ! अरे भई, खड़े क्यों हो ? बैठो न ! उस मोढ़े को इधर ही खींच लाओ ! (कुछ देर बाद) मन्दिर की आरती में मन प्रसन्न हो गया ! मन्दिर बड़ा ही सुंदर है ! (वक्फा) ठेकेदार ! सुना है, उस मन्दिर का तुम विशेष ध्यान रखते हो और और यह भी सुना है कि लाल ढाग की इस बस्ती में तुम्हारा बड़ा दबदबा है !

कुबेर सिंह — जी, सीधे सादे लोग बसते हैं यहां ! बस, थोड़ा लिहाज करते हैं मेरा !

सिंह — तुम्हारी पुजारिन बड़ी रूप वाली है !

कुबेर सिंह — भगवान की पुजारिन है साहब ! जिसका दिया रूप है, उसी पर उस रूप को चढ़ाती रहती है।

सिंह — सुना है, तुम्हें भी बड़ा मानती है वह !

कुबेर सिंह — मुझे क्या मानेगी वह देवी, साहब ! मुझ में धरा ही क्या है ?

सिंह — (बात बदलकर) ठेकेदार ! तुमने मेरे लिए शिकार का जो बढ़िया इंतजाम किया, उससे मैं बहुत खुश हूं। मैं सोच रहा हूं कि उसके बदले में कुछ करूं तुम्हारे लिए ?

कुबेर सिंह — हुजूर की कृपा है सब ! हुजूर का बनाया ठेकेदार हूं ! सरकार की मेहरबानी से दो रोटी मिल जाती है ! बस हुजूर खुश रहें, यही मेरा इनाम है !

सिंह — आज की पूजा पर कितना खर्च हुआ होगा ?

कुबेर सिंह — पूजा तो रोज ही होती रहती है, हुजूर !

सिंह — खैर, आज की पूजा और भोग का सब खर्च मैं दूंगा ! मुझे आज बड़ी ही तृप्ति मिली है, मन्दिर में आकर। (जरा रुककर) क्या नाम है उस पुजारिन का ?

कुबेर सिंह — जी, कृष्णप्रिया !

सिंह — सुंदर नाम है। खुद भी तो बहुत सुंदर है। सुनो ठेकेदार ! मैं तुम्हारे लिए और उस पुजारिन के लिए कुछ करना चाहता हूं।

तुम्हें किसी नए जगल का ठेका चाहिए ,तो बताना। मैं मंदिर के लिए भी कुछ करनाचाहता हूं मेरा मतलब है पुजारिन से मालामाल कर दूगा। समझ गये न। (जरा रुककर) कृष्णप्रिया को यहा मेरे पास ला सकते हो ?

कुबेर सिंह (चौंककर, घबराकर) जी। यह आप देखिए साहब, पुजारिन किसी के यहा नही जाती !

सिंह (एकाएक भडक कर) मैं 'किसी' मे नही आता, ठेकेदार! बदतमीजो की तरह बैठे क्यो हो ? खडे होकर बात करो! और सुनो, हम चाहते हैं कि वह पुजारिन हमारे पास आये! समझे ? पुजारिन यही आयेगी और तुम ही उसे लाओगे। अब तुम जा सकते हो। आज की रात तुम हमारी बात पर विचार कर सकते हो पर कल की रात तुम उस पुजारिन का समझे ? हम ज्यादा बोलने के आदी नही। जाओ।

(परेशानी भरा सगीत उभर कर कुबेर सिंह की मानसिक स्थिति व्यक्त करता है और फिर मुर्गे की बाग सुनाई देती है।)

कुबेर सिंह नत्थामल। नत्थामल।

नत्थामल (आकर) जी सरकार।

कुबेर सिंह तू चम्पा नटनी का ठिकाना जानता है न ?

नत्थामल जी हा।

कुबेर सिंह अभी घोडा ले जा और यह चिट्ठी चम्पा को दे आ। उससे कहना कि यह चिट्ठी वह आज शाम से पहले-पहले सुल्ताना को जाकर दे दे। और हाँ, यह बात किसी को कानों-कान मालूम न हो।

नत्थामल जी, बहुत अच्छा।

(घोडे की टापें उभरकर फेड आउट—मंदिर का वातावरण उभरता है।)

कुबेर सिंह पडतानी।

कृष्णप्रिया (दूर से आते हुए) सवेरे-सवेरे कैसे आना हुआ ठेकेदार ?

(घबराकर) ऐं ! तुमने यह क्या शक्ल बना रखी है ? बाल बिखरे हुए, आँखें लाल, कपड़े अस्त व्यस्त। तबीयत तो ठीक है न ?

कुबेर सिंह सारी रात सो नहीं पाया।

कृष्णप्रिया (हसकर) मैं जानती हू। रात भर तुम अपने अप्सरा के मनो रजन में लगे रहे। कल रात आरती के समय मैंने तुम्हारे रेंजर राणा के साथ फारेस्ट आफिसर सिंह साहब को देखा था। बुरा मत मानना ! मुझे तो वह उन बनैले पशुओं जैसा ही लगा, जिनका वह शिकार करता है। सुना है उसने एक ऐसे चीते का मारा, जिसने एक हाथी को खदेड़ दिया था ! ऐं ! तुम तो एकदम गुमसुम हो। क्या सोच रहे हो ?

कुबेर सिंह पुजारिन, एक बात बताओ ! क्या आदमी को मतलब है कि बुरे आदमी को मारना पाप है ?

कृष्णप्रिया तुम किसे बुरा आदमी कहते हो, ठेकेदार ?

कुबेर सिंह जो मेरी औरत, मेरी बहन मेरी बेटी या मेरी मा पर बुरी नजर डाले।

कृष्णप्रिया तो अपनी चोट खाई हुई भावनाओं से तुम अच्छे-बुरे का निर्णय करते हो ?

कुबेर सिंह मैं जानता हू वह बुरा है।

कृष्णप्रिया अस्तित्व को मिटाना पाप है, ठेकेदार ! आदमी न अच्छा होता है, न बुरा। वह एक अस्तित्व भर है। तुम जिस चीज को अस्तित्व मे नहीं ला सकते, उसे मिटाने का तुम्हें क्या अधिकार है ? ईश्वर जीवन देता है और वही जीवन समेट सकता है।

कुबेर सिंह (परेशान सा) मेरी समझ मे कुछ नही आ रहा पुजारिन ! मेरे भीतर तूफान मचा है। ज्वालामुखी धधक रहा है।

कृष्णप्रिया नही ! अगर तुम भीतर बढ़ो तो तुम्हें वहा भी शीतल गगाजल मिलेगा।

कुबेर सिंह पुजारिन, मैं तुम्हारे जैसा ज्ञानी नही हू। मेरी बुद्धि, मेरे शरीर के वश मे है। मैं बात का जवाब जबान से नहीं हाथ से देना जानता

हू। मगर कल रात ऐसा कर न पाया। मैं इतना कायर कैसे हो गया ? मैंने तभी उस बदमाश के मुह पर अपना जूता क्यो नही दे मारा ? मैं रात भर जागता रहा, छटपटाता रहा और अब उपदेश सुनने चला आया।

कृष्णप्रिया इसलिए कि तुम्हारे भीतर सत्य का उदय हो रहा है। जिसे तुम मारना चाहते थे, वह तुमसे अलग जो नही है। और जिसके पास तुम उपदेश सुनने आये हो, वह भी तुम से अलग नही।

कुबेर सिंह मुझे बातो मे उलझाओ मत, पडतानी, मेरी सीधी-सादी बात का जवाब दो। क्या एक बुरे आदमी को मारना पाप है ?

कृष्णप्रिया पहले यह बताओ कि वह बुरा आदमी कौन है ?

कुबेर सिंह (गुस्से-से) वह बदमाश। फारेस्ट आफिसर डी० के० सिंह। उसकी नीयत खराब है। उसने आज रात तुम्हें अपने पास बुलाया है। (रुआसा-सा) वह तुम्हें भी चम्पा नटनी समझता है। मैं चम्पा नटनी को उस पापी के पास भेज सकता हू। लेकिन तुम्हें कैसे ?

कृष्णप्रिया तुमने चम्पा नटनी को भेजा था सिंह साहब के पास ?

कुबेर सिंह हा।

कृष्णप्रिया नटनी ने तुम्हारी बात मान ली थी ?

कुबेर सिंह कैसे न मानती ? मेरी रोटियो पर पलती है।

कृष्णप्रिया तो मुझे क्या नही भेज सकते तुम सिंह साहब के पास ? तुम बडे आदमी हो लाल ढाग के। मदिर की सेवा-पूजा तुम्हारी कृपा से—तुम्हारे पैसो से चलती है। मुझे भी अपने साहब के पास भेजो ठेकेदार।

कुबेर सिंह ऐसा न कहो, पुजारिन। मुझे इतना पापी न समझो। चम्पा नटनी है वह वह

कृष्णप्रिया नटनी भी तो औरत है। जब तुम किसी को एक औरत पेश कर सकते हो, तो दूसरी औरत को भी पेश कर सकते हो, चाहे वह नटनी हो या पुजारिन ?

कुबेर सिंह (तिलमिला कर) पुजारिन जी, मैं बहुत शर्मिन्दा हूं। मैं बुरा हूं।

कृष्णप्रिया ठहरो ठेकेदार! मैं आज रात को तुम्हारे साहब से मिलूंगी।

कुबेर सिंह नहीं नहीं!

कृष्णप्रिया मैंने निश्चय कर लिया है! अपने सिंह साहब से कह देना कि कृष्णप्रिया डाक बंगले में तो नहीं आयेगी। कृष्णप्रिया आज रात चन्द्रोदय के बाद मन्दिर के पिछवाड़े फूटे घाट पर उनकी प्रतीक्षा करेगी।

कुबेर सिंह (जैसे रोकर, तिलमिला कर) नहीं, कृष्णप्रिया, नहीं!

कृष्णप्रिया मेरा हाथ छोड़ो ठेकेदार! आज पहली बार तुमने मुझे मेरा नाम लेकर पुकारा है। लगता है आज पहली बार तुम्हारी आत्मा को चोट लगी है! है न? घबराओ नहीं! मैं चम्पा नटनी बनकर तुम्हारे साहब से नहीं मिलूंगी! मैं मिलूंगी कृष्णप्रिया के रूप में। आंसू पोंछो, ठेकेदार! हां! अपने सिंह साहब को चन्द्रोदय के बाद मंदिर के पिछवाड़े फूटे घाट पर भेजना न भूलना!

(परेशानी भरे संगीत के अन्तराल के बाद बांके बिहारी की आराधना के मन्त्र पढ़ते हुए पण्डित ज्ञानदत्त का स्वर सुनाई देता है।)

ज्ञानदत्त (मन्त्र जाप बन्द करके) अरे, यह क्या मेरे पांव छोड़ो कृष्णप्रिया! उठो! ऐं! तुम रो रही हो?

कृष्णप्रिया (सिसकते हुए) नाथ! क्या बताऊं? सांझ होते-होते मेरा आत्म बल डगमगाने लगा है।

ज्ञानदत्त कृष्णप्रिया के मुंह से, बांके बिहारी की प्रिया के मुंह से ऐसी बात सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ! पगली आज सवेरे जब तुमने ठेकेदार के साहब की बात सुनाई थी और मेरे सामने तन और मन की पवित्रता की समस्या रखी थी, तो याद करो मैंने क्या कहा था? कहा था—पवित्रता इतनी स्थूल नहीं होती, जो तन से लिपटी रहे। तन का सम्बन्ध स्वच्छता से है। यह मन ही है, जिसके संकल्प पवित्र और अपवित्र होते हैं।

कृष्णप्रिया आप मुझे पापिन तो नहीं समझेंगे ?

ज्ञानदत्त कदापि नहीं ! भाग्यवती कृष्णप्रिया, तुम गंगा सी पवित्र हो ! निश्चिंत होकर जाओ ! तुम्हारे पति का विश्वास तुम्हारे साथ है ! चन्द्रोदय हो गया ! मन्दिर के पिछवाड़े फूटे घाट पर पहुँचो । मैं यहां बांके-बिहारी के दरबार में प्रार्थना करता रहूँगा । इसलिए नहीं कि मेरी प्रार्थना तुम्हारी रक्षा करे, बल्कि इसलिए कि प्रार्थना मेरे विश्वास की रक्षा करे । अब बांके-बिहारी के चरण छूकर जाओ ।

(ज्ञानदत्त का मन्त्रोच्चार उभर कर फेड आउट होता है और फिर गंगा के प्रवाह का शोर उभरता है । उस शोर में कुछ डरावना संगीत भी मिला है ।)

सिंह (स्वगत) आह ! मन्दिर के पिछवाड़े का यह फूटा घाट कैसा सूना-सूना-सा है ? मैंने सोचा था, गंगा का यह घाट चांदनी रात में एकदम रूमानी होगा । लेकिन यह तो सूनेपन, गंगा के शोर और बड़े बड़े ऊबड़-खाबड़ पत्थरों के कारण मन में भय-सा उपजाता है । अगर यहां सुल्ताना डाकू पीछे से आकर ।

कृष्णप्रिया साहब !!

सिंह (चौंककर) कौन ? आह तुम !

कृष्णप्रिया (खिलखिलाकर हंसते हुए) साहब डर गये ? (हंसती है ।) मुझे डाकू समझकर डर गये ? साहब जरा मुझे ध्यान से देखो ! क्या डाकू ऐसे होते हैं ?

सिंह (मुग्ध सा) जितना सुना था, तुम उससे भी कहीं अधिक सुन्दर हो ! (कृष्णप्रिया खिलखिला कर हंसती हुई दूर चली जाती है । हंसी में प्रतिध्वनि का आभास ।) अरे ! पत्थरों पर कूदती हुई तुम उधर कहां चली गई पुजारिन ?

कृष्णप्रिया (प्रतिध्वनि के साथ दूर से हंसती हुई) मैं आज अभिसारिका बनी हुई हूं न ? घाट के उन ऊपर वाले खटोलों में एकांत है । आइए मेरे पीछे-पीछे ।

सिंह आ रहा हू, लेकिन मेरे जूते इन ऊबड-खाबड पत्थरो पर फिसलते है। (फिसल कर जैसे गिरता है) ओह

कृष्णप्रिया (दूर से हसते हुए) अरे, आप पत्थरो पर फिसल गये ! ऐ फिर फिसले ! साहब, ये जूते उतार दीजिए, मोजे भी उतार दीजिए ! आपने यह भारी भरकम ओवरकोट क्या पहन रखा है ? इसे भी उतार दीजिए न !

सिंह लो, सब कुछ उतार दिया ! लेकिन यहा तो बडी सर्दी है। (कृष्णप्रिया की हसी दूर से सुनाई देती है।) अरे, आगे कहा जा रही हो ? रुको ! मैं आ रहा हू। (जैसे आगे बढ़ता हुआ हाफता है।) यह कैसा मजाक है, औरत ?

कृष्णप्रिया (पास आते हुए झिडक कर) सभ्यता बरतो साहब ! मैं बाके-बिहारी की पुजारिन हू, किसी गाव की नटनी नही ?

सिंह (मुग्ध सा) तुम गुस्से मे भी सुदर लगती हो !

कृष्णप्रिया जरा देखू, तुम बिना सूट बूट के कैसे लगते हो ?

सिंह (सर्दी से कापकर) यहा काफी ठण्ड है ! तुम्हें ठण्ड नही लगती पुजारिन ?

कृष्णप्रिया साहब, यह तन गगा के जल से पोषित है ! इसे न गर्मी का भय है न ठण्ड का।

सिंह तुमने मुझे यहा घाट पर क्या बुलाया ?

कृष्णप्रिया मैं अपने पति की शैया के पास तक स्वय कभी नही गई। फिर तुम तो मेरे लिए कुछ भी नही। पर तुम मुझे पाना चाहते थे। तुम ठेकेदार पर अपनी अफसरी का रौब डालकर मुझसे खेलना चाहते थे। फिर भला मैं खुद तुम्हारे पास क्या आती ?

सिंह अच्छा, तो तुम्हारी जीत हुई ! मैं तुम्हारे पास आ गया। अब मेरे साथ डाक बगले चलो !

कृष्णप्रिया नही, पहले यह बताओ—मैं तुम्हें सुदर लगती हू न !

सिंह इस फूटे घाट पर ठण्ड से ठिठुरता हुआ तुमसे सुदरता की बात क्या करू ?

कृष्णप्रिया तो तुम सुन्दरता को कभी चाह नहीं सकते। हर चीज का एक मूल्य होता है। मेरा रूप भी अपना मूल्य रखता है। मैं तुमसे उसी का मूल्य चाहती हूं।

सिंह तो बताओ अपना मूल्य ? मैं ठेकेदार से कहकर वह भी दिला दूंगा।

कृष्णप्रिया (हंसकर) अच्छे ग्राहक हो साहब ? तुम्हारी तरफ से मूल्य भी दूसरा चुकायेगा ?

सिंह (सकपका कर) नहीं, नहीं, मेरा मतलब है !

कृष्णप्रिया (व्यंग्य से) मतलब मैं खूब समझती हूं, साहब ! तुम्हारे लिए हर औरत सिर्फ नटनी ही होती है ! (तेजस्विता के साथ) लो, मैं अपने आप को सौंपती हूं तुम्हें ! मेरी देह से जो भी पाना चाहो, पा लो ! लेकिन, देह के साथ मन न पाकर भी तुम तृप्त हो सकोगे ? हैं ! पीछे क्यों हट गये ? कैसे पुरुष हो तुम ? घबराओ नहीं ! (जैसे पुचकार कर) आओ मेरे पास आकर बैठो ! अब ठीक है। साहब तुम राधा की कथा जानते हो ? नहीं ! हां, जंगली पशुओं और औरतों का शिकारी भला राधा की कथा क्या जाने ? लो, सुनो राधा की कथा ! (धीरे धीरे बांसुरी का स्वर उभरता है।) वह भी एक औरत थी—कलियुग से बहुत पहले द्वापर युग की औरत। सुन्दरता में बेजोड़। वह राधा भी एक विवाहित स्त्री। उसका पति था परिवार था। पर वह सब उसका आधार न था। क्योंकि जब मन्द वन में बांसुरी बजाता, तो पति की सेज छोड़ बांसुरी की धुन पर वह हवा-सी उड़ी चली आती। न कुल की मर्यादा उसे रोक पाती, न लोक लाज। जानते हो क्यों ? क्योंकि वह स्वयं को जानती थी, वंशीवट के नीचे संगीत का सुरलोक रचने वाले वंशीधर को जानती थी। वंशी के स्वर उसके लिए गोलोक के सोपान थे, जिन पर चढ़कर वह गोलोक के स्वामी तक पहुंच जाती। गोलोक का अर्थ समझते हो ? इंद्रियों का लोक। इंद्रियों के स्वामी हैं परम संयमी योगिराज कृष्ण—एक मात्र पुरुष। इस लोक में, परलोक में। उसी गोपाल को वह मोह मुक्त होकर समर्पित होती। कौन समर्पित होती ?

सिंह (अभिभूत सा) राधा !!

कृष्णप्रिया मैं भी वही राधा हू। तुम्हारे बुलाने पर मैं गोपाल से मिलने आई थी, पर मिला मुझे ग्वाला—गो सेवक। इंद्रियो का दास। (जोश में आकर) सकोच न करो, सिंह साहब ! मेरी यह देह प्रस्तुत है ! लो तृप्त करो अपनी वासना ! मैं भी तो आज देखू कि वासना की उगलिया गोपाल की राधा का चीर-मोचन इस कलियुग में कर पाती है या नही ? ऐं ! तुम कुछ बोलते क्यो नही ? तुम पत्थर क्या हो गये ? लो, मैं अपने आपको खुद ही तुम्हारे सामने । (चौंककर) ऐं ! तुम्हारी आखो में आसू ?

सिंह (लज्जित सा रुंधे गले से) मुझे क्षमा कर दो, मुझ पापी को क्षमा कर दो राधा रानी, देवी, मा क्षमा कर दो ! मैं मैं

(सिसकने लगता है। तभी दूर से मंदिर की घण्टियों की आवाज शखध्वनि के साथ गूज उठती है और सारे वातावरण पर छा जाती है। और फिर ज्ञानदत्त का मंत्रोच्चार सुनाई देता है।)

कुबेरसिंह (हर्ष विह्वल होकर आते हुए) बांके बिहारी की जय पण्डित जी ! फूटे घाट पर चमत्कार हो गया। कृष्णप्रिया सचमुच देवी हैं, जगदम्बा है बांके-बिहारी की श्री राधा है। मैंने अपनी आखो से उ. क्रमाग सिंह साहब को कृष्णप्रिया के चरणो से लिपटकर रोते बिलखते हुए क्षमा याचना करते हुए देखा। मैंने खटोला की आड में छिपकर सब देखा सब सुना।

कृष्णप्रिया (जाते हुए) ठेकेदार तुमने मुझ पर विश्वास नही किया। तुम भर पीछे पीछे

कुबेरसिंह नही जी, मुझे उस दुष्ट पर शक था कि कही !

ज्ञानदत्त कृष्णप्रिया, तुम आ गई । मैं जानता था कि तुम कलुष का भी ज्योतिरूप करने की क्षमता रखती हो। ऐं ! मेरे पावो मे क्यो गिर गई। उठो, भाग्यवती ! तुमने आज सती धर्म का जो चमत्कार दिखाया !

कृष्णप्रिया (भाव विह्वल होकर) नाथ मैंने कुछ नहीं किया! करने वाला कोई और है। वही जो द्वापर युग का महानायक था और अब मेरे इस मंदिर में राधारानी सहित विराजता है। आपके चरणों के प्रताप से उन्हीं हो ने मेरी रक्षा की। हे बांके बिहारी, तुमने मेरी लाज रख ली! अगर कुछ हो जाता तो मैं गंगा की गोद में समा जाती!

ज्ञानदत्त कैसे समा जातीं। तुम्हारे रक्षक बांके बिहारी जो थे। हम भक्तों ने आज इन्हें बहुत कष्ट दिया। आओ, इनकी आरती उतारें! ठेकेदार, बजाओ शंख, बजाओ, घंटे-घड़ियाल!

(शंख और घंटे घड़ियाल के साथ आरती का ध्वनि प्रभाव उभरता है। कुछ देर बाद दूर से दो तीन बार गोली चलने की आवाज और फिर लोगों का शोर सुनाई देता है। आरती रुक जाती है।)

कुबेर सिंह (चौंककर) ऐं, यह गोली चलने की आवाज!

कृष्णप्रिया आवाज तो मैंने भी सुनी, उधर साहब बंगले की ओर से।

कुबेर सिंह जरूर किसी का खून हुआ है।

ज्ञानदत्त खून! ओह, तभी सारी बस्ती में शोर मच गया है।

(तभी पत्थरों पर किसी के कदमों की आवाज सुनाई पड़ती है।)

कृष्णप्रिया (डरकर) कोई इधर आ रहा है।

नत्थामल (जल्दी से आते हुए, घबराया हुआ) ठेकेदार जी, ठेकेदार जी!!

कुबेर सिंह क्या हुआ नत्थामल!

नत्थामल (हांफते हुए) सुल्ताना डाकू ने

कुबेर सिंह क्या किया सुल्ताना डाकू ने?

नत्थामल आपके साहब सिंह साहब को गोली से उड़ा दिया। उन्हें मार डाला।

कृष्णप्रिया ओह! लेकिन क्यों मार डाला?

ज्ञानदत्त एक मनुष्य की हत्या। सुल्ताना ने बहुत बुरा किया। सिंह साहब चाहे कितने बुरे थे सुल्ताना को उन्हें मारने का कोई अधिकार नहीं था।

कृष्णप्रिया (दुख से) ओह, जब सिंह साहब बुराई का रास्ता छोड़कर अच्छाई के रास्ते पर आ गये थे, तो उन्हें मार दिया गया। सुल्ताना, तुमने उसे क्यों मारा?

पीताम्बर (आते हुए) सुल्ताना ने नहीं, उस बदमाश को मैंने मारा है।

सब (चौंक कर) तुम !

पीताम्बर ठेकेदार तुम तो मुझे पहचानते हो। मैं सुल्ताना का नायब पीताम्बर हूँ पीताम्बर !

सब (डरकर) पीताम्बर !

नत्थामल (फुसफुसाकर) ठेकेदार जी, यह पीताम्बर ही है यह सुल्ताना से भी ज्यादा जालिम है ।

पीताम्बर खबरदार ! कोई यहाँ से भागने की कोशिश न करे ! किसी ने भी हरकत की तो इस बदूक की गोली से मैं उसे पुजारिन तुम तो बहुत सुन्दर हो !

कुबेर सिंह पीताम्बर, सुल्ताना कहाँ है ?

पीताम्बर ठेकेदार, जब चम्पा नटनी तुम्हारी चिट्ठी लेकर पहुँची, तो हमारा सरदार सुल्ताना अपनी घायल बाँह का इलाज करा रहा था। सो सरदार ने मुझे हुक्म दिया, "पीताम्बर ! फारेस्ट आफिसर सिंह ने मेरी भैना पर बुरी नजर डालने का जुर्म किया है। गिरोह के आदमी लेकर फौरन लाल डाग पहुँचो और उस बदमाश अफसर का ठिकाना लगा दो ! ' और मैंने एक गोली से उस बदमाश अफसर का ठिकाना लगा दिया। उस राणा रेंजर को भी घायल कर दिया ।

कृष्णप्रिया (दुख से) ठेकेदार तुमने यह सब क्या किया ? क्या तुम्हें विश्वास नहीं था कि मैं

(दूर से गोलियाँ चलने और लोगों के चीखने चिल्लाने का शोर सुनाई देता है।)

कुबेर सिंह पीताम्बर ! बस्ती में यह गोलियाँ क्या चल रही हैं ?

पीताम्बर (हँसकर) आज हमें इस लाल डाग बस्ती को भी लूटने का बहाना मिल गया। जिस बस्ती में हमारे सरदार की बहन पर बुरी नजर डाली गई है उस बस्ती को भी तो सजा मिलनी चाहिए। सो मैंने अपने आदमियों को हुक्म दिया, लूट लो इस बस्ती

को !" मैंने सुन रखा था कि इस मन्दिर में बहुत सोना चादी है। सो मैं अकेला यहा चला आया।

ज्ञानदत्त ठीक है। तुम अपना धर्म निभाओ भाई ! बाके बिहारी के दरबार से कोई खाली हाथ नही जाता।

कुबेर सिंह लेकिन पीताम्बर ! तुम्हें मालूम होना चाहिए कि तुम्हारे सरदार सुल्ताना ने इस मन्दिर को अभयदान दिया हुआ है। जब सुल्ताना पुलिस कप्तान की गोली से घायल हुआ था, तो इन पुजारी-पुजारिन ने ही यहा उसका इलाज कराया था। चलते समय सुल्ताना ने मंदिर की इस पुजारिन को अपनी धर्म-बहन बनाया था। इसी की लाज बचाने के लिए उसने तुम्हें आज

पीताम्बर (सोचते हुए) अच्छा ! लेकिन ठेकेदार, यह पुजारिन तो बहुत सुंदर है। (हसकर) लगता है, सरदार ने इसे उजाले में नहीं देखा ! नही तो बहन न बनाकर इसे कुछ और ही बनाता चम्पा नटनी की जगह ही

कुबेर सिंह (गुस्से से) बदमाश, अगर तुमने पुजारिन के लिए अब एक भी अपशब्द बोला, तो मैं इस चाकू से तेरा !

कृष्णप्रिया (डरकर) नही, नही, ठेकेदार, तुम !

पीताम्बर अरे हट ! मंदिर से पहले इस पुजारिन को ही लूटना होगा।

कुबेर सिंह (झपट कर) खबरदार जो तूने

पीताम्बर तो पहले तुझे ही

कृष्णप्रिया (जल्दी से) रुको

(गोली चलने की आवाज। कृष्णप्रिया कराहती हुई गिरती है।)

नत्थामल ऐं गोली पुजारिन के लगी !

कुबेर सिंह (रोकर) ओ पापी, तूने यह क्या किया ?

पीताम्बर (घबराकर) ठेकेदार यह तेजी से तुम्हारे सामने आ गई और !!

ज्ञानदत्त (रोकर) कृष्णप्रिया, मुझे छोडकर इस तरह जाना था !

कृष्णप्रिया ! (दम तोड़ते हुए) नाथ, मुझे क्षमा कर दो ! बांके-बिहारी मुझे बुला रहे है बुला रहे हैं ! (हिचकी के साथ मौत।)

ज्ञानदत्त (रोकर) प्रिया कृष्णप्रिया !

(तभी मन्दिर की सीढ़ियों पर घोड़े की टापों की आवाज सुनाई देती है। और घुड़सवार आकर रुकता है।)

मत्थामल (डरकर) सुल्ताना डाकू !

कुबेर सिंह सुल्ताना, तुम देर से आये ! देखो, इस पीताम्बर ने क्या कर डाला !

सुल्ताना ऐं, खून ! अरे मूरख, तूने मेरी ही बहन को मार डाला !

पीताम्बर (घबराकर) सरदार, मैंने तो !

सुल्ताना पीताम्बर, तुझे भेज कर मेरे मन मे बेचैनी सी पैदा हुई ! लगा कि कोई अनहोनी होने वाली है। सो मैं पीछे-पीछे लाल ढाग चला आया। यहा आकर देखता हू कि वही हुआ जिसका मुझे डर था।

पीताम्बर लेकिन, सरदार !

सुल्ताना (दुख मे) अच्छा बदला लिया तूने मुझसे, मेरे साथी ! ठीक ही किया मैंने भी तो बहुतेरो की बहनो के प्राण लिये हैं। आज मुझे अपने किये की सजा मिली। पीताम्बर, अब तुम यहा क्या खडे हो ? पुलिस की गारद किसी भी समय यहा पहुच सकती है। अपने साथियो को लेकर फौरन भाग जाओ। और हा, मेरा हुक्म है कि तुम लाल ढाग से एक पाई भी लूट कर अपने साथ नही ले जाओगे !

पीताम्बर जो हुक्म सरदार ! हम आपका इतजार करते हैं।

सुल्ताना मेरा इतजार करने की कोई जरूरत नही। पुलिस आ रही है ! साथियो को लेकर फौरन भाग जाओ यहा से ! जाओ ! मुझे अपनी भैना से दो बातें करनी हैं। (बकफा) भैना अगर तुम मेरी बात सुन सकती हो, तो इतना जरूर सुन लो कि मैं बेहद शर्मिन्दा हू ! मैं तेरी रक्षा न कर सका। उल्टे मेरा ही आदमी तेरा काल बना। भैना, अब मैं किस मुह से तुझसे माफी मागू ! फिर भी मैं यकीन दिलाता हू कि मैं प्रायश्चित करके अच्छा आदमी बनूगा ! तुझे मेरा डाकू का पेशा पसन्द नही था न ?

तुझे हिंसा भी पसद नही थी न ? भैना, तेरी कसम, आज से मैंने यह लूट-मार और हिंसा का पेशा छोड़ा !

(बहुत से घोड़ो की टाप की आवाज ।)

लगता है पुलिस ने मन्दिर को घेर लिया है। मैं खुद ही जाकर अपने आपको पुलिस के हवाले करता हू, भैना !

(करुण सगीत उभरता है ।)

कुबेर सिंह और जब सुल्ताना पुलिस को आत्म समर्पण कर रहा था तो मुझे, लगा जैसे कृष्णप्रिया उठकर अपने भाई को आशीर्वाद दे रही है। और फिर मुझे लगा जैसे वह बाके बिहारी के साथ राधारानी के रूप मे विराजमान हो गयी है जैसे वह नाचती-गाती हुई अपने बाके-बिहारी के पास गोलोक पहुच गई है।

(कृष्णप्रिया का गीत, शख और घटे घडियाल के साथ गूजता हुआ सारे वातावरण पर छा जाता है।)

मूल हिन्दी उपन्यास कृष्णचन्द्र शर्मा 'भिक्खु'
रूपान्तरकार चिरजीत

दादी मां

उद्घोषक यह आकाशवाणी है ! दादी मां !

(रहस्य-सूचक संगीत उभरता है।)
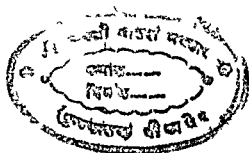
दादी अरे सुब्बा ! (कुछ देर बाद) यह चवन्नी आज मेले में तूने किसी औरत को दी थी क्या ? उसने लौटा दी थी न ? पर तूने यह चवन्नी उस औरत को दी ही क्या ? उसके हाथ की गर्मी अभी तक इस से निकल रही है। जरूर इस चवन्नी को नागी ने छुआ होगा। उस अभागिन के जीवन की धधकती-दहकती पीड़ा इसमें समाई हुई है।

(संगीत फेड आउट)

सुब्बाराव यह बात दादी मां ने मुझ से कोई बारह वर्ष पहले कही थी। तब मैं स्कूल में पढ़ता था और गांव के मन्दिर के मेले से बहुत ही उदास होकर लौटा था। वहां मैंने एक गरीब दुखिया औरत को भूख से बिलखते दो बच्चों के साथ देखा। मैंने तरस खाकर उसे चवन्नी दी थी। उसने यह कह कर कि मैं भिखारिन नहीं हूं बड़े स्वाभिमान से मेरी चवन्नी लौटा दी थी। मैं हैरान था कि हमेशा घर की कोठरी या घर के दरवाजे से लगे पीपल के चबूतर पर बैठी रहने वाली दादी मां का मेले की उस घटना और नागी के नाम का कैसे पता चल गया ?

(रहस्य-सूचक संगीत उभरता है।)

दादी अरे सुब्बा बाकी बातें फिर कभी होंगी ! अब घर के अन्दर जाओ ! कोई आया है।

सुब्बाराव कौन आया है, दादी मां ?

दादी अरे अन्दर आकर देखो न !

सुब्बाराव दादी मा, हम दोनो दरवाजे के सामने यहा इस पीपल के चबूतरे पर बैठे है। मैंने किसी को घर के अन्दर जाते देखा नही। आपको कैसे पता चला कि घर के अन्दर कोई आया है ?

दादी (खीझकर) कैसे भी पता चला। तुम जाकर देखो तो !

(सगीत फेड आउट)

सुब्बाराव घर के अन्दर जाकर जब मैंने देखा कि गाव का तेली रामण्णा तेल बेचने के लिए आया हुआ है, तो मैं दग रह गया। रामण्णा ने बताया कि वह बगीचे वाले पिछले दरवाजे से घर मे प्रविष्ट हुआ था। मैं हैरान हुआ कि मुख्य दरवाज़े के बाहर पीपल के चबूतरे पर बठी दादी मा को रामण्णा के आने की कैसे सही जानकारी मिली ? यह घटना कोई साल भर पहले की है।

(रहस्य सूचक सगीत उभरता है।)

विट्टू आज खीर खाकर मजा आ गया। मा रोज ही खीर बनाया करो न !

चन्द्रू हा मा, रोज बनाया करो !

सीता अरे रोज खीर खाओगे तो पट खराब हो जायेगा। और फिर हम कोई गाव के राजा महाराजा तो है नही कि घर मे रोज खीर बने।

दादी बहू बच्चो को डाटो नही ! अब घर में रोज ही खीर बना करेगी।

(सगीत फेड आउट)

सुब्बाराव आश्चर्य है कि उसी दिन दूर शहर मे रहने वाला मेरा छोटा भाई नारायण अपने मित्र अनन्त राव के साथ घर आया और उसकी शादी की बात पक्की हुई। मेहमानो का आना-जाना शुरू हो गया और घर मे रोज खीर बनने लगी। दादी मा ने भविष्य की वह बात कैसे पहले मे जान ली ? यह बात कोई नौ दस महीने पहले की है।

(रहस्य-सूचक सगीत उभरता है।)

दादी — बेटा सुब्बा !

सुब्बाराव — (आकर) क्या बात है दादी मा ?

दादी — बेटा, पता नही क्या आज मेरा मन अशांत सा है। तुम हिंडुगान गाव की मेरी सहेली तिपक्का को तो जानते ही हो। मेरा जी चाहता है कि मैं अभी जाकर उसे देख आऊ। मुझे ले चलोगे न ? दो मील पर तो उसका गाव है ।

सुब्बाराव — चलिए, मैं चलता हू !

सीता — कुछ खा पीकर जाइए !

दादी — नही बहू ! मैं अपनी सहेली को देखे बिना कुछ नही खाऊगी। आओ सुब्बा चलें !

(सगीत फेड आउट होता है ।)

सुब्बाराव — दादी मा के साथ हिंडुगान गाव पहुचकर मेरे अचरज का कोई ठिकाना न रहा जब मैंने देखा कि दादी मा की बचपन की सहेली तिपक्का, जीवन की अंतिम सासें गिन रही है। ज्योंही दादी मा ने उसका सिर अपनी गोद मे रखा उसने प्राण त्याग दिये। यह घटना हाल ही की है।

उद्घोषक — दादी मा। नाटकों के अखिल भारतीय कार्यक्रम में आज प्रस्तुत है कन्नड के सुविख्यात साहित्यकार डा० शिवराम कारत के उपन्यास 'मूकज्जिय कनसुगलु' का यह हिंदी रेडियो नाट्य रूपांतर। अतीन्द्रिय कथा की विशेषता वाले इस उपन्यास पर लेखक को सन् 1977 का ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला था। इसका रेडियो नाट्य रूपांतर श्री वसंत कवलि ने किया और संपादन श्री चिरंजीत ने। तो सुनिए यह नाटक—दादी मां !

(प्रारम्भिक देहाती-सगीत)

किटटू — (हसते हुए आकर) मा, ओ मा ! (हसना है) ।

सीता — अरे क्या हुआ है किटटू इस तरह हस क्यो रहा है ? और यह चद्र भी ?

चन्द्रू दादी मा बाहर पीपल के चबूतरे पर बैठी है न ?

सीता यह कोई नई बात है ? वह तो रोज ही, क्या दिन क्या रात, वही उस पीपल के चबूतरे पर अकेली बैठी रहती हैं। केवल खाना खाने और सोने के लिए ही घर के अन्दर आती हैं। मैं जब से इस घर मे आई हू, उन्हें मैंने ।

विट्टू मा, मेरी बात तो सुनो ! (अभी-अभी) मैं और चन्द्रू दादी मा के पास जाकर खडे हो गये ।

चन्द्रू उन्हें पता ही नहीं चला कि हम उनके पास खडे हैं। (हसी) लेकिन, मैंने तुम दोनो से कई बार कहा है कि उनके पास मत जाया करो !

विट्टू मा, पूरी बात तो सुनो ! इस उम्र मे भी दादी मा की नजर एकदम ठीक है, लेकिन फिर भी उन्होने हमे नही देखा। बस, दूर कही देखते हुए अपने आप कुछ बडबडाये जा रही थी, बडबडाये जा रही थी। मा, हमारे दोस्त ठीक कहते हैं कि दादी मा पागल है ! क्यो मा, दादी मा पागल है न ?

सीता हा बेटा ! लेकिन दादी मा घर की बडी बूढी हैं। जैसी भी हैं, हम छोड कैसे सकते हैं ? अस्सी भी पार कर ही चुकी हैं, अब और कितने दिन ।

(फेड आउट)

सुब्बाराव मैं जानता हू, मेरी पत्नी सीता और दोनों बच्चे दादी मा को सिडी-सनकी और पागल समझते हैं। मेरे बीवी बच्चे ही क्यो मेरे गाव के लोग मेरे मित्र, मेरे सगे सबधी सब उन्हें पागल समझते है ? कोई उनके पास आकर नही बैठता । लेकिन, मैं उनका पोता सुब्बाराव उन्हें पागल नही समझता । मेरा विश्वास है कि ईश्वर ने उन्हें कोई ऐसी अन्तर्दृष्टि, कोई ऐसी दिव्य-दृष्टि दी है कि वे दूसरे के मन की बात जान सकती हैं, भूत-भविष्य में झाक कर देख सकती हैं। अपने इस विश्वास की घोषणा करते हुए मैं यह बता देना चाहता हू कि मैं कोई अनपढ़ गवार नहीं। मैं इतिहास का विषय लेकर बी० ए० पास कर चुका हू।

अब किमानी करते हुए मैं गाव के आस पास के पुरावशेषो में दिलचस्पी लेता हू पुराने खडहरो में खुदाई करके खोजबीन करता हू। इस सिलसिले में एक बात बता दू। हमारा मुहूर गाव काफी प्राचीन है। इसके आस-पास वैदिक, बौद्ध, शैव और शाक्त सम्प्रदायो का इतिहास पत-दर-पत छिपा पडा है। दादी मा पढ़ी लिखी नहीं, लेकिन अपनी अन्तर्दृष्टि से वे इतिहास की उन पर्तों में झांकती रहती है और बताती रहती है। अपनी यह बात मैं तीन उदाहरणो से प्रमाणित करूगा। (जरा रुककर हमारे गाव से कुछ दूरी पर एक घना बीहड जगल है, जो नागन वालु घाटी तक फैला हुआ है। उस घाटी में प्राचीन काल की कई गुफाए हैं। एक दिन मैं घर में किसी को बताये बिना, अपने मित्र जनार्दन और गण्णुनायक के साथ वहा गया और एक गुफा में खुदाई की। खुदाई में मुझे एक सीग, हड्डी और पत्थर का टुकडा और कई चीजें मिली। वापस लौटकर जब मैं रात को पीपल के चबूतरे पर दादी मा के पास जा बैठा तो

(फ्लश बक सगीत)

दादी — अरे सुब्बा, दिखाओ तो उन पुरानी गुफाओ से क्या क्या खोज बीनकर लाये हो।

सुब्बाराव — यह सीग का टुकडा और।

दादी — सीग का टुकडा? देखू! अरे यह तो बारहसिंघे का सीग है। हू!

सुब्बाराव — (कुछ देर बाद) दादी मा सीग का टुकडा हाथ में लेकर क्या सोच रही हैं?

(रहस्य सूचक सगीत उभरता है।)

दादी — (बडबडाते हुए) ऐं यह मैं क्या देख रही हू! गुफा के मुह पर बाघ की खाल पहने एक लम्बा चौडा पहलवान सरीखा आदमी। उसी के हाथ में बारहसिंघे के सीग का यह हथियार है। अरे यह अकेला नही उसके पीछे उस जैसे ही नग धडग कई स्त्री-पुरुष हैं! ओह, अब समझी, यह बाघ कबीले का मुखिया है!

एँ मैं किसी लड़की की चीख-पुकार सुन रही हूँ! यह क्या, दो तीन वनमानुस जैसे पुरुष उसे केशों से पकड़कर घसीट कर ला रहे हैं।

(तभी किसी लड़की की चीख पुकार सुनाई देती है।)

लड़की (दूर से आते हुए) बचाओ, बचाओ!! ये लोग मेरे मा-बाप को मार कर मुझे जबरदस्ती उठा लाये हैं! बचाओ, बचाओ!!

मुखिया (राक्षस की तरह हसते हुए) मेरी दुल्हन को ले आये? शाबाश!

(इसके साथ पुराने ढंग के ढोल बजने शुरू हो जाते हैं और तरह तरह की आवाजें निकालकर स्त्री पुरुष नाचते हैं।)

दादी ओह! चालीस वर्ष का वह मुखिया और चौदह वर्ष की यह लड़की! लड़की को पकड़कर वह गुफा में ले गया और बाहर अश्लील सी हरकतें करते हुए नग धड़ग स्त्री पुरुष नाच रहे हैं। आह, कैसी वीभत्स है विवाह की यह रस्म!

(फ्लश समाप्त)

सुब्बाराव इस तरह दादी मां ने आदि काल के उस आदि मानव की हू-ब-हू झाँकी उतारी। जब वह गुफाओं में रहता था और शिकार से ही जीवन-यापन करता था। अब दादी मां की अन्तर्दृष्टि के कमाल का दूसरा उदाहरण लीजिए। एक दिन मैं और दादी मां उनकी सहेली तिपक्का से मिलकर और उसके गांव की देवी हिडुगानम्मा के दर्शन करके लौट रहे थे। आते-आते रात हो गयी। पता नहीं, कैसे हम राह भटक कर उस तरफ निकल गये जहां बड़े-बड़े शिला खंड और झाड़ झंखाड़ हैं।

(फ्लश बैक)

दादी सुब्बा, इस शिला खंड के पास जरा रुक जाओ।

सुब्बाराव क्या बात है, दादी मां?

(तभी पहले रहस्य सूचक संगीत और फिर यज्ञ करते हुए दो तीन पुरुषों द्वारा मंत्रोच्चार सुनाई देता है।)

कई स्वर — ओम् इन्द्राय स्वाहा ! इदमिन्द्राय, इदन्न मम ! [ओम वरुणाय स्वाहा ! इदम् वरुणाय, इदन्न मम

दादी — अरे सुनो, सुनो, यह मंत्रजाप ।

सुब्बाराव — दादी मां मुझे तो कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा है ।

दादी — (बड़बड़ाते हुए) मुझे अब साफ सुनाई दे रहा है, अब दिखाई भी दे रहा है ! उधर वहां सामने, यज्ञ किया जा रहा है। लम्बी-लम्बी दाढ़ियों वाले तीन-चार ब्राह्मण इन्द्र, वरुण, मित्र और अग्नि का मंत्रजाप करते हुए यज्ञ कुंड में घृत और समिधा डाल रहे हैं हवन-कुंड से धुआं उठ रहा है। और . और मैं देख रही हूं इन्द्र देवता को (चिढ़ा स्वर) मैं उससे साफ-साफ कहना चाहती हूं कहना चाहती हूं

(मंत्रोच्चार के साथ फ्लश बैक समाप्त)

सुब्बाराव — मुझे यह समझने में देर नहीं लगी कि दादी मां की अन्तर्दृष्टि के सामने पूरा वैदिक युग था, जब यज्ञ-याग द्वारा इन्द्र, वरुण, मित्र, अग्नि आदि देवताओं का आवाहन किया जाता था, अर्चन किया जाता था। अब दादी मां की परा शक्ति का तीसरा उदाहरण प्रस्तुत है। हमारे गांव के कपालेश्वर मन्दिर के आस-पास कई खण्डहर हैं। उन्हीं खण्डहरों से मुझे एक कांसे की मूर्ति मिली थी। खण्डहरों में एक टूटा फूटा पुराना अंधा कुआं भी है। मैंने अपने खेत के मजदूरों से उस कुएं की नींव तक खुदाई कराई। उसकी मिट्टी में से कई पुरानी चीजें मिलीं जिनमें से उल्लेखनीय हैं—एक खोपड़ी, एक सोने का हार और तांबे के टुकड़े। मैंने रात को पीपल के चबूतरे पर अकेली बैठी दादी मां के सामने वे चीजें रख दीं। उन्हें छूते ही

(रहस्य-सूचक संगीत उभरता है।)

दादी — (बड़बड़ाते हुए) ऐं, यह मैं क्या देख रही हूं ! भगवान शिव के भक्त कापालिक ? नहीं, नहीं कापालिक भक्त नहीं हैं ये । यह तो

(बहुत से बौद्ध भिक्षुओं का स्वर उभरता है।)

कई स्वर बुद्ध सरण गच्छामि, धम्म सरण गच्छामि, सघ सरण गच्छामि ।

दादी अरे हा, मैं देख रही हू सिर मुडाए हुए, गेरुए वस्त्र पहने हुए, भिक्षा-पात्र लिए हुए, मत्र पढते हुए भिक्षुग्रो का समूह ! और सुन रही हू बुद्ध सरण गच्छामि का मत्र-जाप और धम-चक्र की चर्चा । ऐं अब यह क्या ! मैं देख रही हू इनके आराध्य देव की मूर्ति ध्यान मुद्रा मे अवस्थित भगवान बुद्ध हा, बुद्धावतार । पर यह क्या, बौद्ध-भिक्षुओ मे युवा लोग भी शामिल हो रहे है ! ऐं यह मैं क्या देख रही हू ! एक लडकी बीस-इक्कीस साल की, अत्यन्त रूपवती लडकी रो रही है ! हा, विवाहिता है उसकी ओर से मुह मोडे एक युवक खडा है। शायद यह उसका पति है लेकिन इस युवक ने सिर क्यो मुडा रखा है ? गेरुए वस्त्र क्या पहन रखे है ? लडकी रो-रोकर यह कैसी विनती कर रही है ।

लडकी (रोते हुए) नाथ मुझे छोडकर न जाइए ! आपने यह क्या किया ? आपने सुख-आनन्दमय गृहस्थ-जीवन त्याग कर वैराग्य ले लिया बौद्ध भिक्षु बन गये ? नही, नही, आप मेरा प्यार ठुकरा कर नही जा सकते ! मैं आपको नही जाने दूगी, नही जाने दूगी ! मैं आपके पाव पडती हू ! मत जाइए, मत जाइए, अगर आप जायेंगे, तो मैं मैं

दादी ओह! बडा निष्ठुर है यह युवा भिक्षु ! बाह छुडाकर, अपनी रोती-बिलखती पत्नी को छोडकर चला गया। हाय, यह क्या! गहने-कपडे पहने वह लडकी कुए की ओर भागी । उसे रोको, रोको ।। वहा कोई नही रोकने वाला । लो, वह कुए मे कूद गई ! उसने आत्महत्या कर ली। (आह भरकर) कुए से निकली यह खोपडी शायद उसी लडकी की है। यह हार भी शायद उसी लडकी का है। आह, नारी जीवन की यह कैसी दुख-सताप भरी नियति है !

(फ्लश बैक समाप्त)

सुब्बाराव दादी मा की विलक्षण अन्तर्दृष्टि की परीक्षा लेने के लिए मेरे भीतर प्रबल इच्छा पैदा हुई कि मैं दादी मा के स्वय के जीवन मे झाक

कर दूं। मैं अपने माता-पिता से इतना ही जान पाया था कि दादी मां बचपन में ही विधवा हो गयी थीं। एक दिन मैं घाटी की गुफाओं में से प्राचीन काल के ऋषि-मुनियों की तपस्या के कुछ अवशेष चिह्न ढूंढकर लाया था। दादी मां से जब उनकी चर्चा की तो उनकी प्रतिक्रिया अजीब-सी हुई।

(फ्लैश बैक)

दादी — सुब्बा, मेरी समझ में नहीं आता कि ये ऋषि-मुनि घर से दूर जंगलों में जाकर क्यों तपस्या करते थे?

सुब्बाराव — दादी मां, घर में बाल बच्चों का शोर होता है, बीस तरह के टंटे होते हैं। जंगल की शांति में ध्यान लगाने की सुविधा होती है।

दादी — अरे बेटा, मैं यहां घर में बरसों से बच्चों और घर के टंटों के बीच ही तो रह रही हूं, मेरी तपस्या तो भंग नहीं हुई! जानते हो, घर में रहते हुए मैंने बरसों तक किसी से बात ही नहीं की थी। मैं बोलती ही नहीं थी। इसीलिए घर बाहर के लोग मुझे मूकबिका के नाम से पुकारने लगे। मूकबिका यानी कि गूंगी

सुब्बाराव — (झिझकते हुए) दादी मां, एक बात पूछूं?

दादी — अरे झिझकते क्या हो, सुब्बा जो पूछना है, पूछो न!

सुब्बाराव — दादी मां, सुना है कि आपकी शादी छोटी उम्र में ही हो गयी थी!

दादी — हां दस बरस की उम्र में नहीं, नहीं, दस नहीं उससे भी पहले जब मैं आठ ही बरस की थी, तो मेरी शादी कर दी गयी थी।

(विवाह सूचक शहनाई आदि मंगल वाद्य बज उठते हैं।)

मेरा पति भी मेरी तरह छोटी उम्र का था—कोई नौ-दस बरस का। तब न मैं जानती थी कि पति का मतलब क्या होता है और न ही वह जानता था कि पत्नी का मतलब क्या होता है। हां शादी के समय घर में जो उत्सव हुआ जो गाना बजाना खाना-पीना हुआ, उससे मैं बहुत खुश थी। फिर मैं ससुराल चली गई।

(विवाह के वाद्य-यन्त्र रुक जाते हैं।)

कुछ ही दिनों बाद मेरा पति बीमार पड़ गया, बेचारा बुखार में कई दिन कराहता रहा, उसका इलाज होता रहा। दस दिन बाद वह मर गया। मेरे माँ-बाप पर तो जैसे मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा। वे भागे-भागे आये, खूब रोये बिलखे और मुझे अपने साथ घर ले आये। उस दिन से मेरे लिए ससुराल का अन्न जल खत्म हो गया और मैं विधवा के रूप में अपने मैके में ही रहने लगी। लेकिन बचपन में मेरी समझ में नहीं आया कि विधवा होना नारी के लिए कितना बड़ा अभिशाप है। (आह भरकर) चार-साल बाद, जब मैं कोई तेरह चौदह वर्ष की हुई तो कुछ-कुछ समझ में आने लगा—जो बीत चुका था और जो आने वाला था। धीरे-धीरे पता चला गया कि और लड़कियों की तरह मेरे भाग्य में घर-गृहस्थी का सुख नहीं बदा है। मैं भविष्य की चिंता से बुरी तरह घबराने लगी। और फिर आई भरपूर जवानी। एक दिन दर्पण में मैंने अपना दिपदिपाता हुआ रूप देखा, उमड़ता हुआ यौवन देखा काले लम्बे बाल देखे और ... और

सुब्बाराव दादी माँ, कहते-कहते रुक क्यों गईं ?

दादी मेरे घने लम्बे बाल मूंड दिये गये और मुझे अपने अरमानों पर पत्थर की शिला रखने को कहा गया। मैं विधवा थी न, दुनिया को मेरे बारे में सोचने की कोई जरूरत नहीं थी, लेकिन मैं दिन रात सोचती थी ? वह सोच मेरे भीतर हाहाकार मचाने लगा। उसका नतीजा यह निकला कि मैं अकेली बैठी-बैठी अपने आप बोलने लगी, बड़बड़ाने लगी। मेरे पिता-स्वरूप भैया घबरा गये। लोगों ने कहा, मुझ पर किसी भूत का साया है

सुब्बाराव फिर क्या हुआ दादी माँ ?

दादी बेटा, उसके बाद मुझ पर जो बीती, उसे याद करके आज भी मन काँप काँप जाता है रोआँ रोआँ सिहर उठता है ! ओह कितना भयंकर था वह सब ! मुझे मारा गया, पीटा गया (परेशान-सी) नहीं नहीं, मैं वह सब नहीं बता सकूँगी, नहीं, नहीं बता सकूँगी।

(फ्लैश बैक समाप्त)

सुब्बाराव दादी मां से उनके वैधव्य का जो हाल सुना, उससे मैं मन-ही मन कराह उठा। सुनाते-सुनाते दादी मां भी विचलित हो उठी थीं। इसीलिए वे पूरा हाल न सुना सकीं। उनकी हालत देखकर मैंने भी उन्हें बताने का विवश नहीं किया। हां, एक बात बता दूं! दादी मां सही मानो में मेरी दादी नहीं। वह मेरे परदादा की बेटी और बाबा की बहन हैं। विधवा होने के बाद वह यहीं घर में ही रहीं और मेरी मां के देहांत के बाद उन्होंने ही मेरा और मेरे छोटे भाई का पालन पोषण किया, इसीलिए उन्हें हम दादी मां मानने लगे। जवानी में उन पर जो अत्याचार हुए, जो यातनाएं उन्होंने झेलीं, उनका पूरा हाल मुझे पास के हिंडुगान गांव में रहने वाली उनकी बचपन की सहेली तिपक्का से मालूम हुआ। एक बार मैं किसी निजी काम से हिंडुगान गांव गया। वहां मैं तिपक्का से मिला। उन्हें आदर से अज्जी कहकर पुकारा! वह बहुत खुश हुई! बातों-बातों में उन्होंने दादी मां की जवानी के कष्टों का हाल सुनाना शुरू किया

(फ्लैश बैक)

तिपक्का बेटा, मैं तब तुम्हारे गांव में ही थी, जब तुम्हारी दादी विधवा होकर घर लौटी। हम दोनों ने साथ-साथ जवानी में कदम रखा। और फिर वह दिन आया जब घर-बाहर के लोगों ने कहना शुरू किया कि तुम्हारी दादी पर भूत का साया है।

सुब्बाराव भूत का साया यानी कि

तिपक्का हां, पहले तो उन पर आवेश-सा चढ़ा करता था। उस समय उसके मुंह में झाग आता, बड़बड़ाया करती। किसी भी अपने-पराए को सामने पाकर अपने आप बोलने लगती कि तुम तो ऐसे हो वैसे हो। तुमने यह पाप किया है, किसी का यह बुरा किया है तुम चोर हो वगैरह-वगैरह। लोग तुम्हारी दादी को पागल कहने लगे। और फिर एक दिन इसी गांव के मंदिर में तुम्हारी दादी मां पर देवी प्रकट हुई।

(मंदिर में घंटे घड़ियाल और ढोल बजने की आवाज, लोगों द्वारा जय-जयकार।)

जवान दादी (चीख कर) हटो, हटो, भगवती मा मुझे बुला रही है, मुझसे कुछ कह रही है कह रही है—"मैं भगवती हू, तू मेरी बेटी है। मेरी देह पर कोई कपडा नहीं, तूने यह कपडे क्यों पहन रखे हैं?" भगवती म तुम्हारी आज्ञा का अभी पालन करती हू, अभी करती हू !

एक स्वर अरे, वह पागल लडकी अपने कपडे उतार रही है !

दूसरा स्वर उसने अपने सब कपडे उतार दिये।

तीसरा हाय, हाय, देवी मन्दिर मे ! छि-छि

(जवान दादी की पागलो जैसी हसी)

पहला स्वर अरे ! वह नाच भी रही है, पागलों की तरह हस रही है !

कई स्वर कौन है इसके घरवाले ? पकडो, पकडो इस निलज्ज को पकडो !

(घटे घडियाल रुक जाते है । लोगो का शोर, भगदड की आवाज।)

जवान दादी (चीखते चिल्लाते हुए) हटो, दूर हो जाओ पापियो! खबरदार जो मुझे हाथ लगाया ! मैं भगवती हू ! (पागलो की तरह गुर्राकर, दात किटकिटा कर) मैं तुम्हें नोच डालूगी ! मैं तुम्हें कच्चा चबा जाऊगी ! (चीख कर) छोडो ! मुझे छोडो !

कई स्वर लडकी पागल है ! लोगो को नाखूनों से नोच रही है। दातो से काट रही है।

(लोगो का शोर और जवान दादी की चीखें, धीरे धीरे फेड आउट।)

तिपवक्ता बेटा, बडी मुश्किल से तुम्हारे बाबा और गाव वालों ने तुम्हारी दादी को पकडा, काबू में किया, उस पर कपडे डाले और फिर बडी मुश्किल से बाधकर उसे वापस गाव ले आये ! अब भूत बाधा में कोई सन्देह नही रहा था। घर लाकर झाड फूक कराया। लेकिन कुछ फायदा न हुआ। तब एक दिन तान्त्रिक ओझा को बुलाया गया।

(थाली बजाने और लडकी को छडी से मारने की आवाज़ के साथ मन्त्र पढ़ने की आवाज़ उभरती है)

जवान दादी (रो रोकर) नहीं, नहीं, मैं कोई भूत पिशाच नहीं! मुझ मत मारो

ओझा (छड़ी से मारकर) हम जानते हैं कि तुम कौन हो, तुम मामूली पिशाच नहीं। लेकिन हमारे सामने तुम्हारी एक नहीं चलेगी यह देखो हमारे हाथ म क्या है? इसकी को छड़ी। (मारकर) बोलो, इस लड़की को छोड़कर जाओगे कि नहीं! (छड़ी मारने और लड़की के रोने की आवाज़)

जवान दादी (स्वगत) ओह, इस मार से कैसे बचा जाये! मैं इन्कार करूँगी तो यह मारता ही जायेगा। तो जो यह ओझा कहता है, वही मान लेती हू। (प्रकट) रुको, रुको! मैं मानता हू कि मैं ब्रह्म पिशाच हू!

ओझा (हसकर) हा अब आये तुम राह पर! अब अपना पूरा परिचय दो नहीं तो तुम्हारी आख मे हम कील ठोक देंगे!

जवान दादी नही नही, आख में कील मत ठोकना! मैं इस लड़की को छोड़कर चला जाऊगा।

ओझा (मारकर) जाओगे अच्छा, जाने से पहले बताते जाओ कि तुम कौन हो? (मारकर) बताओ बताओगे कि नही?

जवान दादी (स्वगत) आह इस मार से बचने के लिए क्या झूठ बोलू? क्यो न इसी से पूछू। (प्रकट) तुम बडे तांत्रिक बनते हो? तुम ही कहो कि मैं कौन हू?

ओझा तुम यज्ञ नारायण हो!

जवान दादी यज्ञ नारायण।

ओझा हा, वही यज्ञ नारायण जो उपनयन संस्कार स पहले मरा था। (मारकर) बोलो तुम वही ब्रह्म पिशाच हो न?

जवान दादी (रोते चिल्लाते) हाय हाय, हा मैं वही यज्ञ नारायण हू! हाय हाय (लगातार मार सुनाई पड़ती है) मैं इस लड़की को छोड़कर अभी जाता हू। अभी जाता हू!

(थाली बजने की आवाज के साथ फेड आउट)

तिपक्का ओह, उस मार पीट के बाद तुम्हारी दादी को कोठरी मे डाल दिया गया। कई दिन वह बेहोश रही। जब होश आया, तो उसने एकदम बोलना बन्द कर दिया—गूगी मूकबिका बन गई।

(फ्लश बक समाप्त)

सुब्बाराव दादी मा की सहेली से उन पर युवावस्था मे हुए अत्याचारो का यह भयकर वृतान्त सुनकर मेरा दिल दहल गया। साथ ही मेरे मन मे दादी मा के प्रति और भी श्रद्धा बढ गई। घर लौटकर मैंने दादी मा को वह सब बता दिया, जो मैंने उनकी सहेली से सुना था। दादी मा कुछ देर चुप रह कर बोली

(फ्लश बैक)

दादी बेटा, मैं जानती थी कि तिपक्का तुम्हें सब कुछ बता देगी।

सुब्बाराव दादी मा, क्या उस दुष्ट ओझा ने आपको बहुत-बुरी तरह पीटा था ?

दादी हा, बेटा! उस घटना से मेरे भीतर बहुत बडा परिवर्तन आया। मैंने दुनिया वालो से तो बातना बन्द कर ही दिया था, साथ ही देवी-देवताओ पर से मेरी आस्था भी उठ गई।

सुब्बाराव दादी मा, आज आपने अपने आप ऐसी बात छेडी है, जिसके बारे मे आप से पूछने की मेरे मन मे कई बार इच्छा हुई, लेकिन मैं साहस न कर पाया!

दादी अरे, पूछो न क्या बात है ?

सुब्बाराव गाव के लोग कहते हैं कि आप नास्तिक है। सीता भी यही समझती है।

दादी तुम क्या समझते हो ?

सुब्बाराव दादी मा, जब से मैंने होश सभाला है, मैंने आपको न कभी देवी-देवता के मन्दिर मे जाते देखा है, न कभी कोई मनौती मानते देखा है और न कभी पूजा-पाठ करते देखा है। हा, कभी-कभी आपको चबूतरे के इस पीपल की परिक्रमा करते जरूर देखा है। पर परिक्रमा करके भी न तो आप मस्तक नवाती है और न ही हाथ जोडती है।

थे, शायद उन्ही के कारण व नागी के दुख को अपना दुख समझती थी। जैसा कि मैं बता चुका हू, नागी के नाम । मेरा परिचय तब हुआ, जब मैं स्कूल मे पढता था। गाव के मदिर के मेले म उसे दा गेते-बिलखते बच्चो के साथ देखकर मैंने उसे चवन्नी दी थी ।

(फ्लश बक । मेले का वातावरण)

नागी — ऐ, यह क्या चवन्नी ! किसने मेरी ओर यह चवन्नी फेंकी ?

लडका सुब्बा — मैंने !

नागी — (बिगड कर) अरे बाबू, मैं तुम्हारी पालतू कुतिया नही ! बडे आये मुझ पर दया दिखाने वाले !

लडका सुब्बा — अरे नाराज क्या होती हो ! इन बच्चो को भूख से रात बिलखते देखकर मुझे तरस आया, तो तुम्हें चवन्नी दी ! नही चाहिए, तो । ल। ! अभी मेरे एक मित्र ने तुम्हारे दुख-दर्द की कहानी सुनाई थी। तुम तो हमारे इस गाव की रहने वाली हो । इसीलिए सोचा कि ।

नागी — (सिसकने लगती है।)

लडका सुब्बा — देखो मैं भी इसी गाव का हू ! मूकम्मा दादी का पोता !

नागी — (चौंक कर) अरे, तुम उस भगवान के सपूत के घर की दादी मा के पोते हो ?

लड़का — हा !

नागी — खैर, मैं ने जो जीवन मे जो पाप किया है, उस की सजा मैं ही भुगतूगी! मुझे किसी से पैसे वैसे की भीख नही चाहिए ।

लडका सुब्बा — मै यह पैसे तुम्हें नही, इन बच्चो के खाने के लिए दे रहा था ।

नागी — बच्चो के लिए भी मुझे किसी दूसरे का पैसा नहीं चाहिए, भीख नही चाहिए । मैं खुद मेहनत-मजूरी करती हूँ और इन बच्चो का पेट पालती हू । आओ, बच्चो चलें ! (पलट कर) बाबू बुरा न मानना ! तुम तो बडे घर के हो । तुम्हारी दादी को भगवान । म ।

रूप है। फिर भी मैं अपने ऊपर किसी के उपकार का कर्ज नहीं चाहती।

लड़का सुब्बा मैं तो हैरान हूँ तुम्हारी यह हिम्मत देखकर।

नागी बाबू, तुमने महाभारत के शिखण्डी की कथा सुनी है न? जैसे शिखण्डी ने भीष्म पितामह के सामने प्रतिज्ञा की थी न, वैसी ही मैंने की है। अपनी मेहनत से, अपना पेट काटकर, मैं इन बच्चों को बड़ा करूँगी और उस बाबू के सामने इन्हें खड़ा करूँगी और कहूँगी—लो इन्हें देखो और पहचानो। अगर कुछ लाज शर्म हो, तो चुल्लूभर पानी में डूब मरो।

लड़का सुब्बा नागी, तुम्हारी यह बात मेरी समझ में नहीं आई।

नागी अपने मामा से कहोगे, तो वह सब समझ जायेगा।

(फ्लश बैक समाप्त)

सुब्बा नागी से बात करने से पहले मैं अपने मित्र से उसका हाल सुन चुका था। वह जवानी में बहुत सुंदर थी। हमारे ही गाँव के गरीब तेली रामण्णा से उसकी शादी हुई थी। नागी के रूप यौवन पर रीझ कर शीनप्पा नामक एक धनी और अय्याश आदमी उसे भगाकर ले गया था और जेवरों-कपड़ों और सुख-आराम के लालच में वह उसकी रखैल बन गयी थी। बाद में नागी की जवानी ढल जाने पर शीनप्पा ने उसके जेवर कपड़े छीनकर दो अबोध बच्चों के साथ उसे घर से निकाल दिया था। फिर वह इस गाँव में दिखाई नहीं दी। नागी ने मुझ से बात करते हुए मेरे मामा का जिक्र किया था। लेकिन मेरा तो कोई मामा था ही नहीं। बात समझ में नहीं आई? तब मैं स्कूल में पढ़ने वाला लड़का ही तो था? मैंने दादी माँ को मेले में नागी से मिलने और उसे चवन्नी देने की सब बात सुनाई। दादी माँ ने चवन्नी को छूकर ही कहा था—

(फ्लश बैक)

दादी सुब्बा, तुमने यह चवन्नी उस औरत को दी ही क्या? उसके हाथ की गर्मी अभी तक इसमें से निकल रही है। जरूर इस चवन्नी का

नागी ने छुआ होगा ? उस अभागिन के जीवन की धधकती-दहकती पीडा इस मे समाई हुई है। उसका रूप ही उसका दुश्मन हो गया। तुम्हारे मामा ने ही उसकी यह दुदशा की है ।

लडका सुब्बा दादी मा, यही तो मैं जानना चाहता हू। मेरे कौन से मामा ने उसकी यह दुदशा की ?

दादी अरे, उस तोदू शीनप्पा ने !

लडका सुब्बा शीनप्पा ?

दादी अच्छा छोडो इस बात को ! शीनप्पा तुम्हारा असली मामा नही। तुम्हारे पिता की जो पहली पत्नी मर गयी थी न, शीनप्पा उसी का भाई है। नागी से छोटी उम्र मे भूल हुई, लेकिन अब वह समझदार हो गई है ।

लडका सुब्बा लेकिन दादी मा नागी ने मुझे बताया था कि उसने प्रतिज्ञा की है कि

दादी मैं जानती हू बेटा ! वह हठ की पक्की है। जैसा कहती है, वैसा ही करके दिखायेगी। सत्य उसके साथ है ।

लडका सुब्बा लेकिन उसके पति रामण्णा ने उसे वापस अपने घर बुलाया था, लेकिन वह नही मानी ।

दादी हा, नागी नही मानी थी ! उसने रामण्णा से कहा था—मेरी यह काया जूठी पत्तल बन चुकी है। इसे मत छुओ ! मुझे मेरे हाल पर ही छाड दा !

लडका सुब्बा क्या मतलब ?

दादी बेटा, अभी तुम बच्च हो। अभी तुम ये बातें समझ नही सकते !

(फ्लश बक समाप्त)

सुब्बाराव हा, अब जब मैं बडा हो गया हू, दो बच्चा का बाप बन गया हू, सब बातें कुछ-कुछ समझने लगा हू, लेकिन पूरी तरह नही। खैर, लडकपन मे सुनी हुई नागी की कहानी कुछ धुधली पड गई थी। कोई साल भर पहले वह कहानी फिर उजागर हो गई, जब नागी का पति रामण्णा हमार घर तेल बेचने आया।

(पनशा मैच)

रामण्णा मालिक, यह तेल तो रख लीजिए। आप नारियल की जो गरी देंगे उसका तेल भी मैं निकाल कर ले आऊंगा।

सुब्बाराव ठीक है, हम तुम्हारा यह तेल ले लेते हैं। सीता, यह रामण्णा इतनी दूर से तेल लेकर आया है, इसे कुछ नाश्ता तो कराओ।

रामण्णा नहीं मालिक, ऐसी कोई जरूरत नहीं।

सुब्बाराव अरे भई सकोच क्या कर रहे हो? इसे अपना ही घर समझो!

रामण्णा इस घर के लिए मैं नया थोड़े ही हूं मालिक, सकोच कैसा?

सीता (आते हुए) लो, रामण्णा, कॉफी पिओ। और यह गुड़-चिवडा भी खाओ!

रामण्णा मालकिन, यह सब आपने

सीता अरे यह खाओ! फिर पान-तमाखू दूगी!

रामण्णा पान तमाखू की जरूरत नहीं, मालकिन! मेरे इस पनडब्बे में सब है!

सीता अरे यह पनडब्बा तो बहुत सुदर है! घर का क्या हाल चाल है?

रामण्णा हाल क्या हो सकता है मालकिन घर तो घरवाली से होता है न? घर में एक कोल्हू है एक बैल और एक मैं हू। आख बद करके वह बैल कोल्हू के चारो ओर घूमता है उसके पीछे-पीछे मैं भी घूमता रहता हू? क्या घूमता हू, यह न मैं जानता हू, न मेरा बैल।

सीता रामण्णा, तुमने तो जस प्रण ही कर लिया है दूसरी शादी न करने का! अब तो उम्र भी काफी हो गई। लेकिन इतनी ज्यादा भी तो नहीं हुई है।

रामण्णा हा उम्र तो चालीस से ज्यादा हो गई! अब तो घर में काफी लोग हैं। छोटे छोटे बच्चे भी है। मेरे अपने बच्चे न सही तो क्या हुआ? मेरी बहन के छह बच्चे हैं। वह थोड़े दिन यहा रहती है, थोड़े दिन ससुराल में।

सीता अरे भानजे और भानजियों की बात अलग है और अपने बच्चों की बात अलग!

रामण्णा अपने-अपने नसीब की बात है, मालकिन ! विधाता ने उसके माथे पर लिख दिया था कि तुम लाज-शर्म गवाकर रास्ते की कुतिया बनो। विधाता की इच्छा के सामने किसका वश चलता है। फिर भी जब कभी उसकी याद आती है, तो उस पर गुस्सा भी आता है दुख भी होता है। लेकिन कसम खाकर कहता हू, मालकिन, किसी दूसरी औरत से शादी करने का बिल्कुल मन नही होता। अच्छा चलू।

(अतराल सगीत, बच्चों के लडने का आभास)

चन्द्रू नही, नही, पनडब्बा मेरा है !

किट्टू नही, नहीं, इस पनडब्बे को पहले मैंने देखा ! अब यह मेरा हो गया !

दादी (दूर से) अरे किट्टू, क्या भाई से लडता है ! यह पनडब्बा न तुम्हारा, न चन्द्रू का ! यह उस तली रामण्णा का है ! भूल से यहा छोड गया। ला, मुझे दे दे यह ! वह अभी वापस लेने आयेगा

किट्टू (मुह फुलाकर) यह ला पनडब्बा ! आओ चन्द्रू हम चलें। (जाते है)

(रहस्य सूचक सगीत)

दादी (स्वगत, बडबडाते हुए) हू, यह पनडब्बा ! अरे रामण्णा, तुम इस पनडब्बे को यहा कैसे भूल गये ? यह तो तुम्हें नागी ने बनाकर दिया था ! पगले, उसकी आखिरी निशानी यहा छोड गये !

सुब्बाराव (आते हुए, स्वगत) ऐं, दादी मा किससे बातें कर रही है ? रामण्णा से रामण्णा तो तेल देकर कब का चला गया ?

दादी (बडबडाते हुए) क्यो रामण्णा, यह पनडब्बा तुम्हें नागी ने ही बनाकर दिया था न ? इसे बुनने के लिए उसने कितनी मेहनत की थी, कष्ट उठाया था। जगल मे गयी, बेंत लायी, उसे छीलकर यह पनडब्बा बनाया और तुम्हें दिया, पान-सुपारी, तम्बाखू रखने के लिए। क्या तुम कह सकते हो कि उसे तुम से प्यार नही था, वह अच्छी नही थी ? बोलते क्यो नही ?

सुब्बाराव (स्वगत) ओह, दादी मा तो जैसे अपनी अतदृष्टि के सामने रामण्णा को खडा करके उससे बात कर रही है !

दादी हा, मैं कहती हू, बार-बार कहती हू, नागी बहुत अच्छी था। क्या बुराई थी उसमे ? अरे, वह दुल्हन बन कर बडे प्रेम से तेरे घर आई थी ! बडे प्रेम से उसने गृहस्थी बसाई थी। जब तक वह तेरे घर मे रही, तेरी एक भी बात का उसने कभी विरोध नही किया था। वह दूसरे मर्द के साथ भाग कर गई तो तेरी ही मूर्खता के कारण। तू ही पल पल उसे डाटता था, उस पर अपनी मर्दानगी का रोब जमाता था। याद है, तुमने उस सुकुमार नई दुल्हन से उस दिन डाटकर क्या कहा था ?

(फ्लश बक)

रामण्णा (बडे रोब से) बडी सुन्दर बनती है ! अरी, कान खोलकर सुन ले, यह नखरे मेरे घर मे नही चलेंगे ! तेरे इस रूप पर रीझकर मैं बावला होने वाला नही ! तू तेली के घर मे आई है, तो कोल्हू के बैल की तरह आठो पहर मेहनत-मजूरी करनी होगी ! यहा सेज पर बैठे-बैठे खाना नही मिलेगा ! अगर तूने काम करने से जरा भी आना-कानी की तो ऐसी पिटाई करूगा कि !

नागी लेकिन मैंने कब काम करने से आना-कानी की ? काम काज से मैं नही डरती।

(फ्लश बक समाप्त, फिर वही रहस्य-सूचक सगीत)

दादी (बडबडाते हुए) रामण्णा तुम ही बताओ उस नन्ही सी दुल्हन के साथ तुमने जो सलूक किया, वह क्या ठीक था ? शादी के बाद वह तीन बरस तक तुम्हारे घर मे रही। तुमने जेवर-गहने तो दूर उसे एक साडी तक ला कर नही दी। आखिर वह भी एक औरत थी। उसके भी खाने-पहनने के अरमान थे। फिर भी जब तक नागी तुम्हारे घर मे रही तुम्हें कोई शिकायत नहीं होने दी उसने। न जाने शीनप्पा की उस पर कब से बुरी नजर थी। सुन्दरता मे तो वह लाखो मे एक थी ही। और फिर गहने कपडे का लालच भी तो था। उसके भागने मे उसके मा बाप का भी हाथ था। क्या सोच रहे हो रामण्णा ? मैं तुम्हारी भी तारीफ करूगी। सब कुछ हो जाने के बाद भी तुमने उसे पुराने दिन से माफ कर दिया और निश्चय कर लिया कि गृहस्थी चलानी है,

तो नागी के साथ, किसी दूसरी औरत के साथ नहीं। ठीक है, तुम्हें इस जन्म में नागी जैसी अप्सरा नहीं मिल सकती! क्या दूसरे जन्म में उससे मिलने की आस लगाये बैठे हो तुम बुद्धू हो

सुब्बाराव दादी मा, दादी मा!

(रहस्य-सूचक संगीत रुक जाता है।)

दादी (जैसे होश में आकर) कौन? सुब्बा? अरे, बेटा, तुम कब आये?

सुब्बाराव दादी मा, मैं तो कब से यहीं खड़ा तुम्हारी बातें सुन रहा था! आपको मेरे यहां खड़े होने का पता तक नहीं चला।

दादी अरे, मैं उस रामण्णा से !

सुब्बाराव अब तक आप कल्पित रामण्णा से बातें कर रही थी। वह देखिए, वह असली रामण्णा इधर चला आ रहा है।

दादी वह आ गया! उसे आना ही था! सुब्बा, जाओ पूछो क्या चाहता है?

रामण्णा (आते हुए) मालिक

सुब्बाराव क्या बात है, रामण्णा? फिर वापस आ गए।

रामण्णा (झिझकते हुए) मालिक, मेरा वह पनडब्बा था न? शायद भूल से मैं यहीं छोड़ गया। कहीं बच्चों के हाथ न पड़ गया हो। वह मिल जाये तो

सुब्बाराव मैं पता करता हूं!

दादी (दूर से) बेटा, वह पनडब्बा यहां मेरे पास है! उसे दे दो। बेचारे के पास अब सिर्फ यही तो निशानी बची है उसकी।

सुब्बाराव दादी मा, आपको कहां मिला यह?

दादी अरे! तुम्हारे बेटे इसे लेकर लड़ रहे थे। उनसे मैंने ले लिया। कौतूहल से इसे छुआ तो आंखों के सामने यह रामण्णा ही आकर खड़ा हो गया। अच्छा अब वह पनडब्बा रामण्णा के हवाले करो।

सुब्बाराव लेकिन यह तो खाली है। इसमे पान-सुपारी आदि कुछ भी तो नही ।

दादी तुम्हारे बेटा ने यहीं कहीं सब गिराया होगा ? यहीं खेल रहे थे ।

रामण्णा कोई बात नही, मालकिन ! यह पनडब्बा मिल गया, मरे लिए यही गनीमत है ।

सुब्बाराव सुनो रामण्णा, डब्बे मे स पान-सुपारी, तमाखू वच्चो न यहीं कहीं गिराया होगा । अब तो अधेरा हो चुका है । सवेरे ढूढकर ले जाना । अब अगर कुछ चाहिए तो

रामण्णा मुझे अब और कुछ नही चाहिए ।

सुब्बाराव तो फिर

दादी (डाटकर दूर से) बेकार की बातें न कर बेटा ! वह पनडब्बा इसके हवाले कर दो ।

सुब्बाराव दे दिया दादी मा !

दादी (दूर से) अरे रामण्णा, सुनो ता !

रामण्णा (आकर) हुक्म दादी मा !

दादी पनडब्बा मिल गया न ?

रामण्णा (गदगद सा) हा किस्मत अच्छी थी जो मिल गया !

दादी नागी की कोई खोज खबर मिली ?

रामण्णा मालकिन, वह तो तभी गाव छोडकर चली गयी थी ! कई साल हो गये। पता नही कहा किस गाव में रह रही है ।

दादी उसके बेटे काफी बडे हो गये होंगे ?

रामण्णा पता नहीं ! अच्छा चलता हू ! (जाता है)

दादी (हसकर) इसके प्राण उसी म अटके हैं । पनडब्बे को देख देख कर यह उसी का इतजार कर रहा है ।

(जगल का वातावरण उभरता है ।)

सुब्बाराव (स्वागत) ओह, खोजते-खोजते शाम हो गई, लेकिन कुछ मिला

खण्ड के आस-पास कुछ भी नही मिला। दादी मा ने उस रात यहीं तो "इन्द्राय स्वाहा" का मत्रोच्चार सुना था। तो फिर यही कही ऋषि-मुनियो के हवन-कुडो के भग्नावशेष होने चाहिए।

(तभी दूर से स्त्री और दो लडकों की आवाजें सुनाई देती है।)

लडका   मा अभी कितना चलना है ?

नागी   बस थोडी दूर और

सुब्बाराव   (चौंककर) कोई आ रहा है। मुझे छिप जाना चाहिए।

नागी   सभलकर बेटा!

सुब्बाराव   अरे, यह तो बेंत और लकडी के बडे बडे गट्ठर उठाये हुए दो लडके और एक स्त्री है—शायद जगल से लकडी काट कर लाये है!

लडका   (आते हुए, हाफते हुए) मा, यह बोझ उठाकर अब तो चला नही जाता! सिर ही नही, पाव भी बुरी तरह दुख रहे है! जरा छुटकू की हालत भी तो देखो! कैसा हाफ रहा है यह!

नागी   बेटा, थक तो मैं भी गयी हू! हम मुडूरू गाव तक पहुच गये है। उसके आगे •

लडका   तो आज रात इसी गाव म गुजार ले न ?

नागी   नही बेटा, इस गाव मे

लडका   तो मा, क्या इस गाव म तुम्हारी जान-पहचान का कोई नही ?

नागी   (आह भरकर) बेटा, क्या बताऊ! इस गाव मे तो   थो ही इस गाव म ब्राह्मणों का एक घर है—पीपल के चबूतरे के पास! बुढिया मूकम्मा मुझे जानती है। (आह भर कर) बस, इस नागी को वही जानती है। चलो, आज रात वही पीपल के चबूतरे पर बितायेंगे!

सुब्बाराव   (आगे बढकर) तुम्हारा नाम नागी है न ?

नागी   (चौंककर) ऐं   तुम कौन हो ? तुमने मुझे कैसे पहचाना ?

सुब्बाराव — कई साल हुए तुम्हें मेले मे देखा था। तब ये दोनो लडके बहुत छोटे थे। चलो हमारे घर मे तुम्हें सोने को जगह भी मिलेगी और खान-पीने को भी ।

नागी — लेकिन तुम ?

सुब्बाराव — मैं उसी मूकम्मा दादी मा का पोता हू जिसका अभी तुम जिक्र कर रही थी। आओ ।

(अन्तराल संगीत)

नागी — आहा, हाथ-मुह धोकर मन हरा हो गया। मालिक, अब हम बाहर जाकर पीपल के चबूतरे पर सोयेंगे।

सुब्बाराव — पर तुमने यह गुड तो खाया नही ।

लडका — मा, मालिक का दिल रखने के लिए कुछ तो खालो ।

नागी — बस, पानी पियेंगे और ।

सीता — वाह, घर आये मेहमानो को हम भूखा कैसे सोने देंगे। अभी खाना बनाती हू ।

नागी — नही चाहिए, मालकिन। बेकार आप क्यो तकलीफ उठाती हैं ?

दादी — (दूर से आते हुए) कौन ? नागी आई है ? हमारे गाव की नागी ?

नागी — ओह, दादी मा, पाय लागू। आपके दर्शन करके जन्म सफल हो गया। (सिसक कर) विधाता ने तो इस गाव का अन्न जल कब का छीन लिया। (रोती है।)

दादी — (नजदीक आकर) तुम भी कुछ कम नही नागी, खूब हठ निभाया? शुक्र है, आज बरसो बाद तुम्हें हमारे घर का रास्ता दिखाई दिया। तुम पर हमारे कुए के पानी का ऋण था न ?

सुब्बाराव — सीता जल्दी से खाना बना डालो।

नागी — मालिक, हमें खाना-वाना कुछ नही चाहिए ।

दादी — (प्यार से डाटकर) नागी, अब रहने भी दो अपना घमण्ड। क्या दादी के घर मे पहले कभी खाना नही खाया ? अब एक बार और खालोगी तो तुम्हारा कुछ नही बिगडेगा ।

नागी जसी आपकी मर्जी !

दादी अब ठीक बोली ! पता नही क्यों उस छोटी उम्र मे ही तुम मेरे मन म बस गई थी ? अब मेरे लिए तुम एक अनाथ बछडे के समान हो। अच्छा किया जो आज तुम खुद चलकर आई। तुम से बहुत-सी बातें करनी है। खाना खाकर और इन लडको को यहा आगन मे सुलाकर बाहर चबूतरे पर मेरे पास आ जाना। अरी, तुम्हारे यह लडके तो काफी बडे हो गये है, एकदम गबरू जवान !

नागी बस इन्ही के कारण मैं अभी तक जिदा हू, मालकिन !

दादी मा का यही धर्म है ! बच्चा को भी मा का ख्याल करना चाहिए। खासकर तुम जैसी मा का, जिसने इनके लिए अपनी जान खपा दी।

नागी दादी मा दोना मुझे बहुत मानते है ! मुझ पर जान छिडकते है। अब तो यही साध है कि शादी-ब्याह करके अपनी गृहस्थी बसा लें। लेकिन सोचती हू कि

दादी अरे अब तुम्हें क्या सोचना ! जिसके इतने बडे बडे बेटे है, उसे क्या चिता ?

नागी (रुधे गले से) मालकिन, चिता तो यह है कि मेरी बदकिस्मती का मनहूस साया कही इनके शादी-ब्याह मे आडे न आये !

दादी अरी चिता न कर ! ऐसा कुछ नही होगा। (फुसफुसाकर) मैंने तुम लोगो के लिए, कुछ सोचा है। खाना खाकर मेरे पास बाहर चबूतरे पर आ जाना। सब बताऊगी।

(अतराल सगीत)

सीता (खीझकर) पता नही, दादी मा को नींद क्यो नही आती। इतनी रात हो गई, लेकिन वे अभी तक बाहर पीपल के चबूतरे पर बैठी है।

सुब्बाराव (जमाई लेते हुए) क्या कहा, दादी मा अभी तक बाहर बैठी है ?

सीता — म जान वहा किस किस से साथ क्या बातें करती रहती है। परसो रात उस नीच जात नागी को लिए बैठी थी और आज रामण्णा तली को बुला लिया।

सुब्बाराव — तो दादी मा आज रामण्णा से बातें कर रही है। लेकिन रात काफी हो गई है। मैं अभी उन्हें बुला कर लाता हू।

(फेड आउट, फेड इन)

दादी — रामण्णा, मेरी बात को समझने की कोशिश करो! कहते हैं, नल महाराज पर जब शनि की दशा आई तो, उन्हें ढेरो कष्ट सहने पडे थे। राजपाट के साथ पत्नी भी छूट गयी। सोचो, तुम्हारी भी वही हालत हुई! अब तुम्हारी बडी बहन तो मर चुकी। छोटी बहन अपनी ससुराल लौट गई। अब तुम्हें किस की चिंता। समझ लो कि भगवान ने तुम्हारा जो सुख छीन लिया था उसे वह लौटा रहा है।

रामण्णा — आप ठीक कह रही हैं, लेकिन लेकिन

दादी — घर जाकर सोच लो, रामण्णा!

(अन्तराल सगीत)

दादी — अरे, सुब्बा!

सुब्बाराव — (आते हुए) क्या बात है, दादी मा!

दादी — अगर भगवान की लीला देखना चाहते हो, तो भागकर जाओ बस के अड्डे पर!

सुब्बाराव — जैसी आपकी आज्ञा! लेकिन वहा अड्डे पर कसी लीला देखने को मिलेगी?

दादी — वह नागी है न? वह अपने दोनो बेटो को आज नदी पार के सुदूर इलाके में भेज रही है।

सुब्बाराव — क्यों? अब तो दोनो बेटे कमाने योग्य हो गये है। क्या वह उन्हें अपने साथ नहीं रखना चाहती?

दादी — कैसे रख सकती है? वह चाहती है कि उसके बेटे शादी-ब्याह करके घर गृहस्थी बसाए। इस इलाके म सब जानते है कि

नागी पति के घर से भागी हुई कुलटा है और लोग यह भी जानते हैं कि उसके दोनों बेटे किस की सन्तान हैं। यहा उन्हें कौन अपनी लडकी देगा ?

सुब्बाराव — ओह, अब समझा। अच्छा दादी मा, मैं अभी बस अड्डे पर जाता हू।

(अतराल सगीत, बस का भोपू सुनाई देता है और साथ ही नागी की सिसकिया।)

लडका — लो मा, घाट की बस आ गई ! अब रोना धोना बन्द करो ! अगर इस तरह रोती रहोगी, तो हमारी यह बस भी छूट जायेगी और हम आगे जाने के लिए घाट पर नही पहुच सकेंगे।

नागी — नही, बेटा, मैं अब नही रोऊगी ! मैं चाहती थी कि वहा के खर्च के लिए तुम्हें दस पद्रह रुपये और दे दू, लेकिन तुम्हारी इस गरीब मा के पास कुछ भी तो नही।

लडका — मा, अब हम कमाकर तुम्हें रुपये भेजेंगे। तुमने हमारे लिए कैसी महनत मजूरी की, कैसे-कैसे कष्ट उठाये हैं, वह सब हम जानते हैं।

नागी — बेटा इस छुटकू का ध्यान रखना !

लडका — लेकिन मा, एक बात मेरी समझ मे नही आई ! अपने से अलग करके तुम हम इतनी दूर क्यो भेज रही हो ?

नागी — अरे बेटा मैं कोई खुशी से भेज रही हू ? विदा करते हुए मेरा तो कलेजा फटा जा रहा है ! (रो पडती है।)

लडका — लगता है, उस बुढिया ने तुम्हें कोई पट्टी पढाई है ?

नागी — बेटा दादी मा के बारे मे ऐसा वैसा कुछ न कहो ? मेरे लिए तो वह साक्षात भगवान है, मूकाम्बिका देवी है ! उनकी सलाह पर चलने मे ही हमारी भलाई है। तुम अब सयाने हो, ऊच-नीच समझते हो। यहा तो हम एक तरह से जात से बाहर किये हुए हैं न ?

लडका — लेकिन मा, हम जहा भी जाकर रहेंगे, लोग हमारी जात के बारे मे जरूर पूछेंगे ?

नागी परसों दादी मा ने कहा था । भगवान ने दो ही जात बनायी हैं पुरुष और स्त्री की जात । बाकी सैकडा जातें तो हमी ने अपने स्वार्थ के लिए बनाई हैं ।

लडका सो तो ठीक है, लेकिन मा, अगर लोग हमारे बाप का नाम पूछेंगे तो हम क्या बतायें ?

रामण्णा (आते हुए) तेली रामण्णा बताना, बेटे !

नागी (चौंककर, हैरानी से) क्या ? तुम ?

लडका तेली रामण्णा ?

रामण्णा हां, यही तुम्हारे बाप का नाम होगा ! ठीक है न ? यह लो सौ रुपये ! रख लो ! परदेस में काम आयेंगे ! अरे यों मेरा मुह क्यों ताक रहे हो ? (बस का हार्न) बस छूटने ही वाली है ।

लडका हम अभी चलते हैं । अच्छा, मा हम चलते हैं ! छुटकू तू भी मा के पाव छू !

नागी पहले इनके चरण छुओ, बेटा !

लडका पाय लागू !

रामण्णा उठो उठो, भगवान तुम दोनो का भला करें !

लडका तो मा हम चलते हैं । (नागी और दोनों लड़के रो पड़ते हैं ।)

रामण्णा अरे, तुम मर्द होकर रो रहे हो ! परदेस में अच्छे काम करना, होशियार रहना, शराब और जुए की बुरी आदतों से बचना ! जाओ भाग कर बैठो बस में !

(बस के जाने की आवाज़)

रामण्णा नागी, अब रोना धोना छोडो !

नागी (रुधे गले से) तुम तुम तुम भगवान हो मुझ बदचलन की कोख से ये दोनों पैदा हुए तुम उनके बाप बने तुम्हारा दिल बडा है बहुत बडा है ! तुम आज मेरे लिए भगवान बनकर आये । तुम्हारा दिल सचमुच बहुत बडा है ।

रामण्णा नागी जब तुम मेरी हो, तो तुम्हारे बच्चे भी मेरे हुए। बिना बाप के नाम के इन लड़कों की परदेस में वही दुर्गत होती, जो यहाँ हो रही थी। यह सब सोच-समझ कर ही दादी माँ ने मुझे जो सलाह दी, वही मुझे ठीक लगी। आज से मैं ही उनका बाप हूँ!

नागी तो क्या दादी माँ ने तुम्हें भी बुलाकर समझाया था?

रामण्णा हाँ, मुझे बुलाकर घंटों बातें कीं—आगा पीछा सब समझाया। तुम्हारे बारे में भी दादी माँ ने अहल्या का दृष्टांत देकर समझाया।

नागी हाँ, दादी माँ ने मुझे भी अहल्या की कहानी सुनाई थी! मैंने पूछा, गौतम के शाप से वह पत्थर बन गयी थी न? दादी माँ ने जवाब दिया—पगली, पत्थर अहल्या नहीं, उसका दिल पत्थर बना था! अगर वह पत्थर बन जाती, तो गौतम खुश बन जाता। दादी माँ की बातों से मेरा भी पत्थर दिल पिघल गया। मैं फिर आरत बनी। सोचने लगी—तुम अगर मुझे अब एक बार फिर बुलाओगे, तो मैं इन्कार नहीं करूँगी।

रामण्णा दादी माँ ने ही मेरा उजड़ा घर बसाया है। मुझे तो लगता है, जैसे वे सारे जगत की दादी माँ हैं।

नागी मुझे भी यही लगता है।

रामण्णा उन्होंने मुझसे कहा, रामण्णा नल महाराज की तरह तुम पर भी शनि की दशा थी। समझ लो कि अब वह हट गयी। मैंने सोचा, अब अगर अपनी नागी मिलेगी, तो कोल्हू चलाने की जरूरत नहीं होगी।

नागी (हैरान-सी) कोल्हू चलाने की क्यों जरूरत नहीं होगी?

रामण्णा क्योंकि तुम्हें पाकर अब मैं सिर्फ हाथ से ही तेल निकाल सकता हूँ।

नागी (मुग्ध-सी) हाँ, हाँ, मैं जानती हूँ, इन बाँहों में वह ताकत है!

रामण्णा ताकत पहले नहीं थी, अब आयी।

रामण्णा दादी माँ को मैंने बताया था, इस जन्म में मैं जूठी पत्तल बनी। अब व्रत रख रही हूँ कि अगले जन्म में तुम्हें फिर पति के रूप में पाऊँ।

रामण्णा दादी मा न क्या जवाब दिया ?

नागी उन्होंने कहा, आपस मे प्रेम है, तो इसी जन्म मे खुशी से मिलकर रहो। कौन जाने पुनर्जन्म है कि नही ? और मान लो कि है और अगले जन्म मे अगर वह कौवा बना और तुम चिडिया, तो फिर कैसे मिलन होगा ?

रामण्णा (हसते हुए) ठीक ही तो कहा। हम इसी जन्म म एक हो गये, क्या ?

नागी (लजाकर) हा !

(रहस्य-सूचक सगीत उभरता है।)

बेटा, नागी और रामण्णा की कहानी आज की नही, युगो-युगो पहले की है। कहते हैं, यह जगत भगवान की माया है। जगत की रचना भगवान ने स्त्री और पुरुष के रूप मे की और साथ ही सुख और दुख की भी रचना की। सुख और दुख स जीवन मे सार्थकता आई। अगर स्त्री और पुरुष न होते तो यह जगत बस बजर भूमि होता। स्त्री और पुरुष का सयोग ही भगवान की सृष्टि का आधार है।

(सगीत उभरकर फेड-आउट)

मूल कन्नड डॉ० शिवराम कारत
रूपातरकार एच० एच० पार्वती

डॉक्टर सो रहा है

(बड़े हाल मे आयोजित मीटिंग का वातावरण उभरता है।)

डा० बालू (मंच पर से बोलते हुए) अध्यक्ष महोदय और उपस्थित आदरणीय डॉक्टर मित्रो! पिछले वक्ताओं से आपने डॉक्टर कमलपति की अपार योग्यता और सर्जरी के क्षेत्र मे उनकी अभूतपूर्व सफलताओं की तारीफ सुनी। यह सच है कि डॉ० कमलपति ने कई पेचीदा आपरेशनों मे सफलता का एक रिकाड कायम किया है। डा० मिसेज अनीता बेगम ने ठीक ही बताया कि डॉ० कमलपति के हाथ से, आपरेशन करवाने के लिए मरीज सैकड़ो-हजारों मील से चलकर आते है। इसमे कोई आश्चर्य की बात नही। डा० कमलपति की योग्यता को स्वीकारते हुए एक विदेशी डॉक्टर ने इन्हें ब्रेन ट्यूमर के आपरेशन के लिए स्विटजरलैण्ड बुलाया था।

डॉ० कमलपति (बीच में) एक्स्क्यूज मी, डॉ० बालू! मेरी योग्यता को आप बहुत बढ़ा-चढ़ा कर बता रहे है। बात दरअसल यह है कि...।

बालू कि आप विदेश से भी विजयी होकर लौटे थे...। एक विदेशी मेडिकल जनल मे आपके किये उस ऑपरेशन की बडी तारीफ छपी थी। यह हमारे लिए गर्व की बात है। इसी सिलसिले मे आपका अभिनन्दन करने के लिए आज इस सभा का आयोजन किया गया है। मित्रो, मैं चाहता हू कि डॉ० कमलपति की जबानी प्रशंसा करके ही हम अपने को कृतकृत्य न समझ लें। अगले महीने हमारी मेडिकल एसोसिएशन के चुनाव हो रहे है। मेरा सुझाव है कि हम डा० कमलपति जैसे कर्मवीर को सर्वसम्मति से प्रेजीडेंट चुन लें।

पुष्पवनम	मुझे इस सुझाव पर आपत्ति है ।
बालू	आपत्ति करने वाले आप कौन है ?
पुष्प	मैं हूं पुष्पवनम डॉक्टर पुष्पवनम ।
बालू	डॉ० कमलपति को मेडिकल एसोसिएशन का प्रेजीडेंट चुनने का आप क्या विरोध कर रहे हैं ?
पुष्प	माफ कीजिए, हमारा पेशा एक पुनीत सेवा है। ऐसी पुनीत सेवा करने वाला के संगठन के प्रेजीडेंट में एक विशेष योग्यता होनी चाहिए । मैं समझता हूं डॉ० कमलपति में वह योग्यता नहीं है ।
बालू	इनकी योग्यता में आपको कौन-सी कमी नजर आ रही है ?
पुष्प	आप मुझे गलत न समझिए। सर्जन के रूप में डॉ० कमलपति की योग्यता से मैं पूरी तरह परिचित हूं । दरअसल मैं तो इनका एडमायरर हूं—प्रशंसक हूं ।
कमल	तो फिर मि० पुष्पवनम, क्या आप बता सकते हैं कि मेरी अयोग्यता क्या है ?
पुष्प	(हिचकते हुए) मैं सोच रहा हूं कि मैं वह बात यहां बताऊं या न बताऊं ।
कमल	मैं खुद ही बताए देता हूं । मैं शराब पीता हूं, आप यही कहना चाहते हैं न ?
पुष्प	हां, बिल्कुल यही। आप पीने के आदी हैं और इसलिए आप डाक्टर के रूप में अपना फर्ज निभा नहीं पा रहे हैं ।
कमल	जो कुछ कहना है साफ साफ कहिए ।
पुष्प	क्या आप शाम के छह बजे के बाद मरीजों को देखते हैं ?
कमल	नहीं । मगर दस बजे से शाम के छह बजे तक मरीजों के इलाज में मरता खपता हूं । एक दिन में कई कई आपरेशन कर डालता हूं। कई ऐसे दिन भी आते हैं जब मुझे खाना-खाने की भी फुर्सत नहीं मिलती । मुझे पैसे का कोई लालच नहीं । मरीज जो दे, ले लेता हूं । कइयों से तो मैं कुछ भी चार्ज

	नही करता। अब आप ही बताइए, इसस अधिक मुझसे क्या अपेक्षा करते हैं।
पुष्प	दूसरो को शराब की बुराइया बताने वाले डॉक्टर खुद पिये, यह बात मेरी समझ मे नही आती।
कमल	डॉ० पट्टाभि आप शाम का टेनिस खेलते है न ?
पट्टाभि	हा, जरूर खेलता हू।
कमल	डॉ० गोपी, आप शाम का नाटको मे भाग लेते है न ?
गोपी	नाटको म ही नही निकट भविष्य मे आप मुझे फिल्म मे भी देख सकेंगे।
कमल	कान्ग्रेचुलेशन्स! डॉ० मालती, मैं समझता हू, आप शाम को नियमित रूप से सगीत सभाओ म जाती हैं न ?
मालती	क्यो नही ? सगीत तो मरी जान है।
कमल	और छह बच्चो के बाप डॉ० रगनाथ अपनी शाम कैबरे देखने म बिताते हैं। जैसे आप सब के शौक है, वैसे शराब पीना मेरा भी एक शौक है। खूबी यह कि मैं दिन मे नही शाम के छह बजे के बाद ही पीता हू।
पुष्प	तभी तो आप शाम के छह बजे के बाद रोगियो का इलाज नही कर पाते।
कमल	होश मे न रहू, तो इलाज कैसे करू ?
पुष्प	डाक्टर को, दिन रात, हर वक्त जनता की सेवा के लिए तैयार रहना चाहिए।
कमल	लेकिन डाक्टर भी तो एक इसान है।
पुष्प	मरीज लोग डॉक्टरो को ईश्वर के समान मानते हैं।
कमल	देवी-देवताओ के मन्दिरो के दरवाजे भी तो हर वक्त खुले नही रहते। देव दर्शन निश्चित समय पर ही मिलते हैं।
पुष्प	लेकिन डॉक्टर के घर के दरवाजे तो चौबीसों घटे खुले रहने चाहिए।

कमल — आप चाहें तो मरीजों के इन्तजार में चौबीसों घंटे अपने दरवाजे खुले रखें, मेरे बस की यह बात नहीं। मैं दिन भर कोल्हू के बैल की तरह अपने क्लीनिक में खूब मेहनत करता हूं, हर मरीज की सेवा करता हूं और इस तरह रात का समय अपने लिए रख लेता हूं। अपने समय में मैं खाऊं पिऊं, नाचूं कूदूं, जो जी चाहे करूं यह मेरा व्यक्तिगत मामला है इस में दखल देने का अधिकार किसी को भी नहीं।

पुष्प — एक्सक्यूज मी, मिस्टर कमलपति। शहर में कितने ही लोग शराब पीते हैं। उनकी हम परवाह नहीं है। लेकिन आप न पियें यही हमारी प्रार्थना है।

कमल — क्यों ?

पुष्प — आप आम लोगों से अलग हैं। आप योग्य और अनुभवी सर्जन हैं। आपकी योग्यता बेकार नहीं है। आप कई साल जिएं और आपके इलाज से हजारों की जानें बचें इसीलिए हम कहते हैं कि।

कमल — (बिगड़ कर) रहने दीजिए ये मीठी मीठी बातें। इनके पीछे जो ईर्ष्या, जो प्रोफेशनल जलेसी छिपी है, उसे मैं अच्छी तरह पहचानता हूं।

पुष्प — डॉ० कमलपति, मुझे खेद है कि आप

कमल — (गुस्से से) हद हो गई सम्मान के नाम पर मेरा अपमान करने की कोशिश की जा रही है। लेकिन मुझे इसकी रत्ती भर परवाह नहीं। मैं जा रहा हूं।

(संगीत उभरता है और अंतराल संगीत बनकर पृष्ठभूमि में चला जाता है।)

कमल — (गुस्से में चिल्लाकर), सोमू सोमू सोमू

सोमू — (आकर) जी साहब!

कमल — मेरा मुंह क्या ताक रहा है? देखता नहीं छह बजे गये हैं — जा जल्दी से बोतल ला, गिलास ला, सोडा ला

सोमू — अभी लाया साहब! (जाता है।)

कमल (स्वगत, गुस्से मे) कहते हैं मैं शराब पीता हू। हा, पीता हू। अपने निजी समय म पीता हू । वे कौन होते हैं मुझे रोकने वाले ?

(गिलास और बोतलो की खनखनाहट)

सोमू (आकर) लीजिए साहब !

कमल इस समय नीचे क्लीनिक म ड्यूटी नर्स कौन है ?

सोमू वारिजा बहन जी !

कमल उसको मेरे पास भेजो !

(लकडी की सीढियो से नीचे उतरने की आवाज—साथ ही गिलास मे शराब उडेलने की आवाज)

कमल (स्वगत, झुझलाहट मे) हू—कैसी दिल्लगी है, मेडिकल एसोसिएशन का प्रेजीडेन्ट किसी और को बनाना चाहते है ! कहते है डॉक्टर को अपने घर के दरवाजे रात को भी खुले रखने चाहिए ।

(डॉ० कमल हसता है और तभी सीढ़ियो पर पदचाप सुनाई देती है ।)

वारिजा (आकर) येस डाक्टर !

कमल वारिजा सवेरे हैमासिल ऑपरेशन किया था न ? उस मरीज की हालत कैसी है ?

वारिजा हो इज आल राइट डॉक्टर !

कमल गुड !

वारिजा (झिझकते हुए) डॉक्टर !

कमल कहते-कहते रुक क्या गई ?

वारिजा आज आप मेडिकल एसोसिएशन की मीटिंग म गये थे ?

कमल (रुचि से) हा !

विारजा उस मीटिंग मे मैं भी जाना चाहती थी ।

कमल — क्या ?

वारिजा — शहर के डाक्टरों ने वह मीटिंग आपको सम्मानित करने के लिए बुलाई थी न ?

कमल — (झुंझलाकर) मुझे सम्मानित करने के लिए नहीं, मुझे अपमानित करने के लिए न ो !

वारिजा — (हैरानी से) यह आप क्या कह रहे हैं ?

कमल — (उत्तेजित होकर) मेरा अपमान करने के लिए। मुझ पर शराबनोशी का इल्जाम लगाने के लिए। कहने लगे मैं पियक्कड़ हू, मैं डॉक्टर के कर्तव्य को तिलांजलि देने वाला हू, मैं मैं मैं

वारिजा — कौन थे वह डॉक्टर ?

कमल — डॉ० पुष्पवनम और

वारिजा — क्या सचमुच डॉ० पुष्पवनम ने यह कहा ? मेरा तो ख्याल था वह आपका बड़ा आदर करते हैं और

कमल — उसने कहा कि मैं शराबी होने के कारण मेडिकल एसोसिएशन का प्रेजिडेंट बनने के योग्य नहीं हू। तुम तो जानती हो कि मुझे मान सम्मान या पद की कोई चाह नहीं, लेकिन इस अपमान के बाद मैंने फैसला किया है कि मैं जरूर चुनाव लड़ूगा और जीतकर दिखाऊगा। मैं उन डॉक्टरों को दिखा दूगा कि

वारिजा — डॉक्टर, आप परेशान न हों, टेक इट ईज़ी !

कमल — (पूर्ववत) यह सब गड़बड़ हुई है चाचा जी के कारण। मैं तो एसोसिएशन की मीटिंग मे न कभी गया हू और न ही आज जाने को तैयार था। चाचा जी ने ही मुझे मजबूर किया कि मैं वहा जाऊ और

वारिजा — आपको बुलाने के लिए एसोसिएशन के दो-तीन डॉक्टरों का एक प्रतिनिधि मण्डल आया था न ? उन्होंने चाचा जी को बताया था कि मेडिकल एसोसिएशन ने आपका अभिनन्दन करने की योजना बनाई है ।

कमल — और मैंने उन्हें बता दिया कि मेरी अभिनन्दनों म कोई दिलचस्पी नहीं। मेरी तो दिलचस्पी है सिर्फ क्लीनिक के कामों मे, मरीजों के इलाज म। सवेरे दस बजे नीचे क्लीनिक म जाता हू और पूरे आठ घण्टे की मेहनत के बाद शाम को छह बजे अपने इस कमरे म आता हू। मैंने कभी अपनी जिंदगी के बारे मे सोचा ही नहीं। मैंने अपना तन-मन सब सर्जन के पशे को अर्पित कर दिया है। इसीलिए बाहर मैं कहीं आता-जाता नहीं। लेकिन चाचा जी ने मजबूर किया कि मैं उस मीटिंग में जरूर जाऊ और और

वारिजा — डॉक्टर, मैं चलती हू गुडनाइट!

कमल — गुडनाइट!

(सीढियों पर से नीचे उतरने की आवाज)

कमल — (पूर्ववत) सोमू सोम एक सोडा और लाओ जल्दी लाओ

(अन्तराल-सगीत)

चाचा — । वारिजा!

वारिजा — जी चाचा जी!

चाचा — तुम तो ईवनिग ड्यूटी पर हो। आज सुबह-सुबह कैसे आ गई?

वारिजा — आज सवेरे दो मेजर ऑपरेशन हैं, इसलिए मैं

चाचा — क्या कमलपति ने आने को कहा था?

वारिजा — जी नहीं मैं खुद ही!

चाचा — सुना कल रात कमलपति किस बात पर झल्ला रहा था?

वारिजा — कह रहे थे कि मेडिकल एसोसिएशन की मीटिंग मे उन्हें शराबी कह कर अपमानित किया गया। वह दुखी थे कि आप के मजबूर करने पर ही वह उस मीटिंग म गये थे।

चाचा — हा वारिजा!

वारिजा — हां वे कह रहे थे कि पर चाचा जी अगर आप, उन्हें डांटें तो शायद उनकी शराब की लत छूट जाये!

चाचा — अरे, जब यह सचमुच बच्चा था तब भी मैंने इसे नहीं डांटा! यह तीन साल का था जब इसके माता-पिता इसे मेरी गोदी में डालकर परलोक सिधार गये थे। जब यह दस साल का हुआ तो मेरी पत्नी भी चल बसी। इसी की खातिर मैंने दुबारा शादी नहीं की। मामूली कम्पाउण्डर होते हुए भी मैंने इसे जैसे-तैसे डाक्टर बनाया और स्कालर-शिप दिलाकर विदेश भेजा। वहां से जब यह बहुत ही योग्य सर्जन बनकर लौटा तो मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। लेकिन वह खुशी जल्द ही दुख में बदल गई जब मुझे यह पता चला कि मेरा कमलपति विदेश में शराब की लत लेकर आया है। लेकिन मैं तारीफ करूंगा कि दिन के समय क्लीनिक में काम करते हुए शराब का नाम तक नहीं लेता। बस अब शिकायत यही है कि रात को ऊपर अपने कमरे में बैठकर जो शराब पीना शुरू करता है तो।

वारिजा — (आह भरकर) हमारे डॉक्टर में अगर यह बुरी आदत न होती तो।

चाचा — (हंसकर) चलो हटाओ! यह बुरी आदत छूटती नजर नहीं आती। और हां मार्निंग ड्यूटी वाली नर्स शीला अभी आती होगी! तुम भी आ गई हो। लो नाम लेते ही शीला आ गई! अब तुम दोनों क्लीनिक को संभालो मैं जरा बाहर घूम आऊं! (चला जाता है।)

शीला — (आते हुए) वारिजा तुम्हारी तो कल रात की ड्यूटी थी?

वारिजा — शीला, मेरी बात छोड़ो! लेकिन तुम बताओ कि तुम दिन की ड्यूटी पर देर से क्यों आने लगी हो?

शीला — पहले तुम बताओ कि घर-बार की चिंता छोड़कर ऑफ ड्यूटी में भी यहां क्लीनिक में क्या पड़ी रहती हो? बोर नहीं होती?

वारिजा — अरी बोर तो मैं अकेले घर में होती हूं!

शीला — (हँसकर) अच्छा, यह बात है! सुनो मिस वारिजा! हमारे डॉक्टर कमलपति अक्सर कहा करते हैं कि उनकी आँखों में ऐसी एक्स-रे शक्ति है कि वे बीमार को देखते ही बीमारी का पता लगा लेते हैं।

वारिजा — तो ?

शीला — तो क्या? डॉक्टर कमलपति के पास काम करते करते वह एक्स-रे की शक्ति मेरी आँखों में भी आ गई है और मैंने तुम्हारे रोग का डाइग्नोसिस कर लिया है।

वारिजा — अरे मुझे में क्या रोग है! मैं तो एकदम हल्दी-सी तंदुरुस्त हूँ।

शीला — (शरारत से) हाँ, शरीर से तो तुम एकदम तंदुरुस्त हो लेकिन ...।

वारिजा — लेकिन, क्या ?

शीला — वारिजा, एक बात सच-सच बताओ! आर यू नॉट इन लव विद समवन? मतलब यह कि तुम दर्दे दिल में मुब्तिला हो। (जरा रुककर) है खामोश क्यों हो? अरे यहाँ आस-पास कोई नहीं! मन की बात बोलो न?

वारिजा — (मन्द स्वर में) शीला! मैं ... मैं ...

शीला — अरी बोलो न कहते-कहते रुक क्यों गई?

वारिजा — शीला, मुझे अपने मन की बात मालूम नहीं!

शीला — (शरारत से) मुझे मालूम है! बताऊँ? तुम अपने डॉक्टर कमलपति को दिल दे बैठी हो।

वारिजा — (घबराकर) शीला क्या लोग ऐसा कहते हैं?

शीला — अरी घबरा नहीं, यह राज सिर्फ मुझे ही मालूम है!

वारिजा — तू बड़ी चालाक है!

शीला — सुन क्या डॉक्टर भी तुम से प्यार करते हैं?

वारिजा — अरे नहीं! डॉक्टर को तो अपने रोगी और शराब की बोतल के अलावा किसी बात की सुध-बुध ही नहीं।

शीला	क्या तुमने कभी उस पर जाहिर किया है कि ?
वारिजा	अरी कैसी बात करती है ! वह, वह इतने बड़े डॉक्टर और यहा मैं एक मामूली-सी नर्स ।
शीला	तुम्हारी उम्र क्या है वारिजा ?
वारिजा	छब्बीस साल ।
शीला	और मेरा ख्याल है कि डॉक्टर की उम्र अड़तीस साल की है । पूरे 12 साल तुमसे बड़े हैं ।
वारिजा	(विह्वल सी) मुझे यह सब मालूम है । ओह मैं कैसे बताऊं ।
शीला	आई विश यू बेस्ट आफ लक ! मैं जरा एक पेशेंट को अटैंड कर आऊं !

(अन्तराल-संगीत)

(दीवार की घड़ी छह बजाती है ।)

कमल	ओ , शाम के छह बज गये ।
वारिजा	गुड ईवनिंग डॉक्टर !
कमल	गुड ईवनिंग मिस वारिजा ! क्या बात है कोई नया पेशेन्ट
वारिजा	नहीं डाक्टर ! मैं जानती हूं कि आप छह बजे के बाद पेशेंट नहीं देखते ।
कमल	हां हां मेरा ऑफ का वक्त हो गया है ! (एकाएक) तुम्हारे हाथ में यह कार्ड कैसा है ?
वारिजा	(झिझकते हुए) जी, यह इन्विटेशन कार्ड है आपके ही नाम
कमल	मेरे नाम ? काहे के लिए है यह ?
वारिजा	सर आप कार्ड पढ़कर देखिए न !
कमल	(पढ़ते हुए) ए ग्रैंड डान्स प्रोग्राम बाई कुमारी वारिजा यह कुमारी वारिजा कौन है ?

वारिजा (झिझकते हुए) जी–जी–म–हीं !

कमल (हैरान होकर) अरे, तुम तुम क्या डान्स जानती हो ?

वारिजा येस डॉक्टर ! मैं पिछले दस बरसों से भरतनाट्यम सीख रही हूं। कल मंच पर पहली बार परफोर्मेंस दे रही हूं।

कमल आई सी !

वारिजा डॉक्टर मेरी एक हम्बल रिक्वेस्ट है !

कमल अरे, कल तुम्हें छुट्टी चाहिए न ?

वारिजा नहीं सर, मुझे छुट्टी नहीं चाहिए ! कल यहां मेरी दिन में ड्यूटी है। शाम को ड्यूटी खत्म करके ही जाऊंगी। (झिझकते हुए) सर मेरी प्रार्थना है कि आप मेरा डान्स देखने जरूर आएं !

कमल सॉरी ! मेरी इन चीजों में कोई दिलचस्पी नहीं। और यह नृत्य भी क्या, कोई ता-थई, ता-थई नाच रहा है और लोग बैठे हुए

वारिजा सर, भरत नाट्यम तो बड़े ऊंचे दर्जे की कला है !

कमल लेकिन उसका प्रयोजन क्या है ? तीन तीन घण्टे बैठकर देखने वालों को उसका लाभ क्या है ?

वारिजा सर, आपको यह अच्छा लगे या न लगे आप मेरी खातिर देखने जरूर आएं ! प्लीज मेरी यह रिक्वेस्ट

कमल कल किस समय है ये ?

वारिजा साढ़े छह बजे से नौ बजे तक।

कमल कल शाम के साढ़े छह बजे ?

वारिजा येस सर !

कमल वारिजा तुम भी जानती हो कि शाम के छह बजे के बाद मैं किस दुनिया में होता हूं ?

वारिजा (विनती करते हुए) लेकिन सर, कल सिर्फ एक शाम की भीख मांगती हू आपसे। मेरी खातिर कल आए।

कमल (परेशान-सा) मिस वारिजा यह भीख मागने की क्या बात कर रही हो? नही नहीं, ऐसी बात नही करनी चाहिए। कल मैं तुम्हारा डास देखने के लिए आऊगा, लेकिन सिर्फ आधे घण्टे के लिए। और यह भी सिर्फ तुम्हारे इन्विटेशन का मान रखने के लिए।

वारिजा (गदगद होकर) थैंक यू सर—थैंक यू सर!

कमल अच्छा अब मैं ऊपर जाता हू।

(अतराल सगीत के बाद भीड से भरे हॉल का दृश्य, मच पर भरत नाट्यम नाच का क्लाइमेक्स वाला अश शुरू होता है।)

कमल (स्वगत) अरे, यह वारिजा तो बहुत ही अच्छा नाच रही है! मै कल्पना नही कर सकता कि यह मेरे क्लीनिक की एक नर्स है। यह रूप यह सिंगार, यह कला यह वारिजा तो एकदम उर्वशी-सी लगती है।

(नृत्य उभरकर समाप्त होता है और उसके साथ ही दर्शकों की तालियों की गडगडाहट सुनाई देती है। फिर भीड का हल्का सा शोर जो सवादो की पृष्ठभूमि मे चला जाता है।)

कमल मिस वारिजा!

वारिजा अरे डॉक्टर साहब आप! आप अभी तक रुके हुए थे?

कमल एक्सैंप्ट माइ हार्टियस्ट काग्रेचुलेशन्स, बहुत ही सफल रही परफोर्मेंस तुम्हारी, मैं आधे घटे के लिए आया था और ढाई घटे बैठा रहा!

वारिजा थैंक यू सर! थैंक यू सर! आई फील आनर्ड।

कमल मुझे नही पता था कि तुम इतनी बडी कलाकार हो! और हा, अगर चाहो तो मै तुम्हें कल की छुट्टी दे देता हू। इस परफोर्मेंस मे तुम जरूर थक गई होगी?

वारिजा नहीं सर, मैं कल जरूर आऊगी। कल तो तीन ऑपरेशन हैं।

कमल अच्छा, मैं चलता हूँ ।

(अन्तराल सगीत)

शीला हलो वारिजा !

वारिजा क्या बात है शीला ?

शीला सुना है कि कल रात तुम्हारा डास प्रोग्राम था ।

वारिजा किसने कहा ? तुम तो कल रात आई नहीं थीं ।

शीला मैंने अपना इन्विटेशन कार्ड अपनी मा और भाई को दे दिया था । मां ने घर लौटकर कहा—वारिजा अब नर्स का काम नहीं करेगी ।

वारिजा तुम्हारी मा ने ऐसा क्यों कहा शीला ?

शीला मा का मतलब यह था कि तुम इतना अच्छा नाचती हो कि बिना नर्स का काम किये ही हजारों रुपये कमा सकती हो ।

वारिजा शीला तुम्हारी मा का अनुमान गलत है । नृत्य-कला में गहरी रुचि के कारण ही मैंने भरतनाट्यम सीखा । लेकिन इससे पैसा कमाने का कभी स्वप्न में भी यह ख्याल नहीं आया । बचपन से मेरी आकाक्षा डाक्टर बनने की थी । लेकिन अभी मैट्रिक पास किया ही था कि पिताजी का देहान्त हो गया । तब सोचा डाक्टर न सही नर्स ही बन जाऊ । नर्सिंग की ट्रेनिंग लेकर डॉक्टर कमलाकान्त के क्लीनिक में आ गई । यहा आकर बहुत कुछ सीखा है । आगे और भी सीखने की इच्छा है । सो नर्स का पेशा छोड़ने का सवाल ही कहा पैदा होता है । (एकाएक) ऐ मेरा जाने का समय हो गया ! शीला, तुम तो आ ही गई हो, मैं डाक्टर से परमीशन लेकर जाती हूँ !

शीला डॉक्टर उधर कन्सल्टिंग रूम में हैं ।

वारिजा (फेड आउट —फेड इन) डाक्टर

कमल वारिजा जरा देर रुक सकती हो ? सिर्फ दो ही मरीज रह गये हैं ! इन्हे निबटा कर

वारिजा — ड्रीम ऑल राइट डाक्टर ! ठीक है, ओह विल बट !

कमल — हाँ तो साहब फिर वही पेट का दर्द

रोगी–1 — हाँ डॉक्टर बहुत दर्द होता है ! इतना होता है कि आत्म-हत्या करने को जी चाहता है । कोई ऐसी दवाई दीजिए

कमल — आपका दर्द दवाई से दूर होने का नहीं है ।

रोगी–1 — तो फिर कोई इंजेक्शन लगा दीजिए ।

शीला — नहीं इंजेक्शन से भी कुछ नहीं होगा । आप सिर्फ आपरेशन से ठीक हो सकते हैं ।

रोगी–1 — ऑपरेशन ? नहीं डाक्टर नहीं, मैं ऑपरेशन नहीं कराऊँगा । मैं बाल बच्चेदार हूँ मेरे सिवाय घर में और कोई कमाने वाला नहीं ।

कमल — आप डरिए नहीं ! ऑपरेशन से आपकी जान को कोई खतरा नहीं होगा ।

रोगी–1 — लेकिन डॉक्टर साहब, आपरेशन की तो बहुत फीस देनी पड़ेगी ?

कमल — देखिए, आप जो कुछ देंगे मैं वह ले लूँगा ! अगर कुछ भी न देंगे, तो भी मैं आपरेशन कर दूँगा । हाँ एक शर्त है !

रोगी–1 — क्या ?

कमल — ऑपरेशन के बाद आप बिल्कुल शराब नहीं पियेंगे ।

रोगी–1 — क्या आपरेशन के बाद मुझे शराब छोड़नी होगी ?

कमल — एकदम छोड़नी होगी, वर्ना भगवान भी तुम्हें बचा नहीं सकेंगे ।

रोगी–1 — अच्छा तो

कमल — आप परसों यहाँ एडमिट हो जाइए ! तब तक यह दो दो गोलियाँ रोज़ लेते रहिए !

रोगी–1 — बहुत अच्छा डॉक्टर नमस्कार ! (जाता है ।)

कमल (टेबिल बल बजाकर) नैक्स्ट !

रोगी–2 : गुड ईवनिंग डॉक्टर !

कमल बैठिए ! फरमाइये !

रोगी–2 इस गली म पहले वह जो डॉ० गुरु स्वामी थे, उन्हें तो आप जानते ही होगे ?

कमल हा हा ! कहिए !

रोगी–2 सात साल स वही हमारे फैमिली डॉक्टर थे बहुत ही अच्छे थे वह ।]

कमल वह तो ठीक ह लेकिन आपन मुझमे जो कहना ह वह कहिए। क्या कष्ट है आपको ?

रोगी–2 जी एक रिएम्बसमेंट बिल है ! आप जरा इसे सर्टिफाइड करके अपन हस्ताक्षर कर दीजिए !

कमल : आप गलत जगह आये ! मेडिकल रिम्बसमट बिलो पर सिफ सरकारी डॉक्टर ही हस्ताक्षर कर सकता है। म ता एक प्राइवट डॉक्टर हू ।

रोगी–2 कोई बात नही। हमारी कम्पनी मे प्राइवेट डाक्टरो के हस्ताक्षर भी चलत है। रकम भी कोई बडी नही ह। [बस एक सौ बीस रुपये ।

कमल क्या कैमिस्ट के कैश मीमाज है आपक पास ?

रोगी–2 जी हा यह रहे !

कमल है ! अरे यह तो बहुत कीमती दवाइया है। [कुछ इजेक्शन भी है। लेकिन ठहरिए आप तो अच्छे खास तदुरस्त नजर आते है !

रोगी-2 जी मैंने ये दवाइया और इजेक्शन अपनी सास के लिए खरीद थे ।

कमल सास के लिए ? अपने लिए नही ?

रोगी 2 (जरा हसकर) जी, कश मीमो पर तो मेरा ही नाम है !

डाक्टर गुरुस्वामी स्पिएसमट की रकम का टैन परसेंट लेते थे ।

कमल तो आप चाहते हैं कि मैं दस प्रतिशत रिश्वत लेकर आपका झूठा सर्टिफिकेट दूँ कि आपने मुझसे अपने उन तमाम रोगों का इलाज कराया, जिनके लिए एक महीने में इतने कीमती टानिकों और इंजेक्शनों की जरूरत पड़ी ?

रोगी–2 जी हाँ, हम इत ही !

कमल (गुस्से से) गाइ सयू गट आउट ! निकल जाओ यहाँ से !

रोगी–2 देखिए आप मुझसे बदतमीजी से पेश आ रहे हैं !

कमल (गुस्से से) आप क्रिमिनल हैं, मुजरिम हैं ! क्या इसी चार सौ–बीसी के लिए मेडिकल एडवाइस मिलता है ? आप जैसे पढ़े लिखे लोगों के कारण ही देश के चरित्र का पतन हो रहा है । आप अभी तक यहाँ बैठे हैं ? मैं कहता हूँ निकल जाइए यहाँ से ! गेट आउट !

रोगी–2 मैं इस बेइज्जती का बदला लूँगा ! जरूर लूँगा ! बड़े धर्मात्मा बनते हैं ! क्या शहर में डाक्टरों की कमी है ?

(कहता हुआ चला जाता है ।)

कमल (छटपटा कर) रास्कल !

वारिजा जाने दीजिए डाक्टर ! शांत हो जाइए !

कमल (जरा संभल कर) वारिजा तुम ?

वारिजा मेरी मेरी ड्यूटी खत्म हो गयी है ! मैं अब जाऊँ ?

कमल क्या शीला ड्यूटी पर आ गई है ?

वारिजा यैस डॉक्टर !

कमल तो तुम जा सकती हो ! (जरा रुककर) लेकिन वारिजा

वारिजा (पलटकर) क्या बात है डाक्टर ?

कमल क्या तुम्हें जल्दी है ?

वारिजा नहीं मगर ऐसी कोई जल्दी नहीं है ! आप कुछ ?

कमल उठो वारिजा, मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूं ?

वारिजा जी कहिए !

कमल (जरा रुककर) वारिजा कल तक मैं अपने आपको बहुत बड़ा आदमी समझता था। इस नर्सिंग होम, क्लीनिक और सर्जरी के अलावा मैंने कभी कुछ और नहीं सोचा। शाम को जब मैं शराब पीता हूं, तो उसके नशे में भी मैं ऑपरेशन की नई टेक्नीक के बारे में ही सोचता हूं।

वारिजा डाक्टर आप सचमुच बहुत बड़े इन्सान हैं !

कमल नहीं नहीं अब मैं सोचता हूं कि मैं एक बहुत छोटा और अकेला आदमी हूं।

वारिजा पर आप ऐसा क्यों सोचने लगे ?

कमल कल रात मैं तुम्हारी डांस परफार्मेंस देखने गया था न ?

वारिजा कल रात मैंने पहली बार तुम्हें साड़ी में देखा था। कल तुम मंच में बहुत अच्छी लग रही थीं ! वारिजा मैं सच कहूं, कल रात से मैं तुमसे प्रेम करने लगा हूं ! आई हैव फालेन इन लव विद यू !

वारिजा (चकित सी) मगर आप ... आप मुझसे प्रेम ...

कमल हां वारिजा हां ! आज तक मैंने अपनी शादी के बारे में कभी नहीं सोचा था अब धीरे धीरे शादी की इच्छा हो रही है ! तुम्हें स्वीकार हो तो मैं जल्द ही तुमसे ... (जरा रुककर) वारिजा तुम चुप क्यों हो ?

वारिजा म ... मैं ...

कमल क्या मैंने तुमसे कोई अनुचित बात कही है ?

वारिजा नहीं ! नहीं ... !

कमल तो तुम्हारा क्या उत्तर है ?

वारिजा मैंने बहुत पहले सोचा था एक अरमान पाला था कि आप

कमल हां हां ... कहो !

वारिजा — कि मैं एक ऊंचे चरित्र वाले, आदर्श और सिद्धान्तों वाले पुरुष से शादी करूंगी ।

कमल — तो तुम्हारा मतलब है ?

वारिजा — जिस पुरुष ने अपने दिन मरीजों को और रातें शराब को दे रखी है, उसके पास पत्नी के लिए कहां समय होगा ?

कमल — (सोचते हुए) आई सी ! तुम्हें न मेरा प्यार स्वीकार है और न ही मुझ से शादी स्वीकार है ?

वारिजा — (जल्दी से) नहीं डॉक्टर, ऐसी बात नहीं है, अगर आप शराब पीना छोड़ दें तो

कमल — शराब पीना छोड़ दूं ? नहीं, मैं शराब नहीं छोड़ सकता ! वारिजा, अगर तुम्हें मेरे पिछले जीवन का इतिहास मालूम होता तो तुम ऐसी मांग न करती ! चाचा जी ने मुझे पाला, पढ़ाया और डॉक्टरी के लिए एम० बी० बी० एम० में दाखिला दिलाया । एम० बी० बी० एस० के आखिरी वर्ष मेरा एक लड़की से प्रेम हो गया । मैं उसे अपना सर्वस्व मानने लगा । उसने भी जाहिर किया कि वह भी मुझे चाहती है । तब मैं शराब नहीं, सिगरेट पीता था । एक दिन

(फ्लश बैक, रोमांटिक वातावरण)

कमल — शुभा अब मैं तुम्हारे बिना जिन्दा नहीं रह सकता !

शुभा — कमल सच कहूं, तुम्हारे प्यार में मेरी भी यही हालत हो गई है !

कमल — क्यों न हम शादी कर लें ?

शुभा — शादी ? पहले तुम डॉक्टर तो बन जाओ !

कमल — नहीं शुभा मैं इतनी देर इंतजार नहीं कर सकता । तुम अगर मेरी जीवन संगिनी बन जाओ तो मेरी डॉक्टरी की पढ़ाई निर्विघ्न हो जायेगी ।

शुभा — (जरा सोचकर) देखो कमल मैं भी तुम्हें हमेशा के रूप में पाना चाहती हूं ! मैं तुमसे एक शर्त पर शादी कर सकती हूं !

कमल कौन सी बात ?

शुभा मुझे तुम्हारी सिगरेट पीने की आदत बिल्कुल पसंद नहीं।

कमल यह बात तुमने पहले तो कभी नहीं कही ?

शुभा मैंने कई बार सोचा कि मैं तुम से यह बात कह दूं। मैंने हमेशा यह महसूस किया कि तुम मुझसे ज्यादा सिगरेट से प्यार करते हो। खैर, अब मैं साफ-साफ कहना चाहती हूं! अगर तुम वायदा करो कि आज से तुम सिगरेट पीना छोड़ दोगे, तो मैं तुमसे !

कमल शुभा तुम्हें पाने के लिए मैं सिगरेट क्या, जिंदगी की बड़ी-से-बड़ी चीज छोड़ सकता हूं !

शुभा (प्यार से) मेरे कमल !

(फ्लैश बैक समाप्त)

कमल और अपने वायदे के अनुसार मैंने सिगरेट पीना छोड़ दिया। लेकिन शुभा मेरी नहीं बनी। पहले वह प्यार जताती रही और किसी-न-किसी बहाने से शादी टालती रही। फिर उसने एक मालदार डॉक्टर से शादी कर ली। उसकी बेवफाई से मेरा दिल टूट गया। बाद में मैं सर्जरी की ऊंची ट्रेनिंग के लिए विदेश चला गया। वहां भी मैं कई औरतों से मिला। एक-दो से शादी करने की इच्छा भी हुई। लेकिन उन सबने प्यार के बहाने मुझे शराब पीने की लत डलवा दी। और फिर शराब की धारा में सच्चे प्यार की सब अनुभूतियां बह गईं। शराब ने मुझे सिखाया—केवल अपने डॉक्टरी के पेशे से प्यार करो। डॉक्टरी का पेशा बेवफाई नहीं करेगा। और आज तुम कह रही हो कि मैं शराब छोड़ दूं। नहीं नहीं, मुझे शर्त वाली शादी पसन्द नहीं! मैं एक लड़की की खातिर शराब नहीं छोड़ सकता! मैं इतना कमजोर नहीं हूं। लेकिन लेकिन अगर तुम मुझसे शादी नहीं करोगी, तो अपनी निराशा और पीड़ा को भुलाने के लिए रात को पहले से ज्यादा शराब पिऊंगा। खैर, ठीक है ! यू कैन गो नाऊ !

वारिजा — मुझे खेद है कि ।

कमल — खेद काहे का ? मेरे प्यार का इजहार-अस्वीकार, करने का तुम्हें पूरा अधिकार है। इसके लिए मैं तुमसे नाराज नहीं होऊंगा। लेकिन हमारा काम अलग है और मेरी निजी जिंदगी अलग है।

वारिजा — वह तो ठीक है मगर, लेकिन लेकिन

कमल — हां हां, कहो, झिझको नहीं !

वारिजा — अभी कुछ देर पहले आपने पट्टे के रोगी को जो सीख दी थी वह आपको याद होगी ?

कमल — (हंसकर) अच्छा वह बात ! हां मैंने उससे कहा था कि अगर जिंदगी चाहता है, तो शराब पीना छोड़ दे ! देखो वारिजा मैंने वह सीख डाक्टर के रूप में अपना कर्तव्य निभाते हुए दी थी !

वारिजा — तो उस सीख पर डाक्टर खुद अमल क्यों न करे ?

कमल — और यह तो मेरी हस्ट्रिनी है—भाग्य है । (दीवार की घड़ी छह बजाती है।) अरे छह बज गये। मेरा ऊपर जाने का समय हो गया है। वारिजा, तुम जा सकती हो ! (पुकार कर) सोमू सोमू ऊपर साटा रख दिया ?

(अंतराल संगीत—आपरेशन थियेटर का वातावरण)

सोमू — मिस्टर हिरण्य को लाकर ऑपरेशन के लिए टेबिल पर डाल दिया है।

चाचा — अरे सोमू यह क्या कह रहा है ! हिरण्यकशिपु और प्रह्लाद ?

वारिजा — चाचाजी हिरण्य नहीं हरनिया ! हरनिया के उस रोगी का आज आपरेशन है । सोमू जरा देखो डाक्टर साहब बाहर क्या कर रहे हैं ?

सोमू — कन्सल्टिंग रूम में बैठे सिगरट पी रहे हैं। पता नहीं क्या बात है । एक सिगरेट बुझाते हैं दूसरी जलाते हैं। अब तक चार पांच सिगरट फूंक चुके हैं।

वारिजा — और कहा था ग्यारह बजे आपरेशन करेगा।

चाचा — (ग्यारह तो बज गये ! कमल से जाकर तुम कहो न कि ऑपरेशन थिएटर में सब तैयार है।

वारिजा — मैं अभी कहती हूं। (फेड आउट—फेड इन) गुड मार्निंग डाक्टर !

कमल — (उदास स्वर में) गुड मार्निंग बस !

वारिजा — मगर आपने कहा था कि हर्निया के उस पेशेंट का ग्यारह बजे ऑपरेशन करेंगे !

कमल — येस येस मुझे याद है !

वारिजा — पर ऑपरेशन थिएटर में सब तैयार है !

कमल — गुड !

वारिजा — मगर, आप कुछ उदास लगते हैं ? तबियत तो ठीक है न ?

कमल — हां, सब ठीक है ! कुछ सुस्ती-सी महसूस कर रहा हूं, मन कुछ ढीला-ढाला सा है। आधा पेशेंट पूरा चुका हूं। तब भी ऑपरेशन में आज का मन नहीं कर रहा है ! मैं जरा ऊपर जाकर अभी दस मिनट में आता हूं।

वारिजा — (चौंककर) मगर क्या आप इस समय ऊपर कमरे में जायेंगे ?

कमल — हां ! मन कुछ हल्का हो जायेगा।

वारिजा — (हैरान होकर) तो क्या आप दिन में भी ?

कमल — अरे कुछ नहीं सुस्ती दूर करने के लिए थोड़ी सी जस्ट टु टोन अप माइसेल्फ !

वारिजा — नहीं मगर आप ऑपरेशन के बाद ही ऊपर जाइएगा !

कमल — (जाने उठते हुए) घबराओ नहीं वारिजा ! लगता है मेरा ऊपर जाना जरूरी है। उसके बाद ही मैं ऑपरेशन कर सकूंगा।

(लकड़ी की सीढ़ियां पर बूटों की आवाज धीरे धीरे फेड आउट हो जाती है और फिर उभरती है घड़ी की टिक-टिक।)

कमल (नशे में) नो, ना नम, मैं बिल्कुल ठीक हूँ, परफैक्टली ऑलराइट। चम ऑन। वारिजा।

वारिजा सर, सीढ़ियों से सभल कर उतरिए। आप मेरे कंधे पर हाथ रख लीजिए।

(दो जनों के सीढ़ियों पर से उतरने की आवाज)

कमल (नशे में सीढ़ियों से उतरते हुए) वारिजा, देखा यह तमाशा। एक सीढ़ी नीचे उतरो तो नया एक डिग्री ऊपर (हँसता है) जिन्दगी की फिलासफी भी यही है।

वारिजा सर, जरा ठीक से चलिएगा। रोगी के रिश्तेदार हाल में बैठे हुए हैं।

कमल अरे भई चिंता न करो। मैं बिल्कुल स्टेडी हूँ।

(घड़ी की टिक टिक उभरती है।)

वारिजा सर—आर यू ऑल राइट सर

कमल येस—येस

वारिजा सर—सर

(धड़ाम से गिरने की आवाज)

वारिजा (जल्दी से आकर) चाचा जी, चाचा जी।

चाचा वारिजा तुम ऑपरेशन थियेटर से क्या चली आयी? क्या बात है?

वारिजा डॉक्टर ने ऑपरेशन तो ठीक-ठाक शुरू किया था, लेकिन चन्द मिनट में ही नशे में बेसुध होकर गिर पड़े।

चाचा (घबराकर) क्या कहा, कमल बेसुध होकर गिर गया?

वारिजा जी हाँ। एक बार चाकू लगाया, लेकिन वह चाकू हाथ से गिर गया, उसे उठाने के लिए डॉक्टर झुके, तो नशे में वहीं लुढ़क गये। मैंने उन्हें पुकारा, लेकिन वह बेहोश थे।

चाचा (चिंता से) ओह! अब क्या होगा?

वारिजा मैंने पट्टी बाँध दी है। उसके रिश्तेदारों को यह बात मालूम नहीं होनी चाहिए।

चाचा — क्या कमलपति को होश आने में देर लगेगी ?

वारिजा — मेरा तो ऐसा ही खयाल है चाचा जी।

चाचा — तो एक काम करो। किसी दूसरे डॉक्टर को फोन करके फौरन यहां बुलाओ। डॉक्टर बालू को बुलाओ। तब तक मैं कमल को देखता हूं।

वारिजा — जी बहुत अच्छा। (डायल घुमाने की आवाज) हैलो हैलो डॉक्टर बालू हैं, क्या क्या कहा वह बाहर गये हुए हैं ? कोई बात नहीं ठीक है। (रिसीवर रखने की आवाज) डॉक्टर हुसैन को फोन करती हूं। (डायल घुमाने की आवाज) हैलो आप डॉ० हुसैन के यहां से बोल रहे हैं क्या कहा वह बाहर गये हैं अच्छा कोई बात नहीं। (रिसीवर रखने की आवाज)

चाचा — डॉक्टर बालू मिला ?

वारिजा — नहीं। चाचा जी मैं डा० पट्टाभि को फोन करती हूं (डायल घुमाने की आवाज) हैलो—हैलो ओह कोई फोन नहीं उठा रहा है। (रिसीवर रखने की आवाज) चाचा जी इस समय कोई डॉक्टर नहीं मिल रहा है।

चाचा — (परेशान से) ओहो। अब क्या किया जाए! मरीज टेबिल पर पड़ा-पड़ा कहीं

वारिजा — चाचा जी एक डॉक्टर का नाम सूझा है, लेकिन ।

चाचा — लेकिन-वेकिन छोड़ो। इस वक्त नर्सिंग होम की इज्जत और मरीज की जान का सवाल है। कौन है वह डॉक्टर ?

वारिजा — डॉक्टर पुष्पवनम ।

चाचा — (चौंक कर) वह ? (जरा रुक कर) खैर कोई बात नहीं। उन्हें फोन करके देखो।

वारिजा — चाचा जी सोच लीजिए। डॉ० पुष्पवनम को बुलाने से हमारे डॉक्टर नाराज होंगे।

चाचा — जल्दी से फोन करो डॉ० पुष्पवनम को। नम्बर मालूम है न?

वारिजा — जी हां। (डायल घुमाने की आवाज) हलो डॉ० पुष्पवनम डॉ० साहब मैं हूं वारिजा, नर्स वारिजा। — जी हां मैं डॉ० कमलपति के नर्सिंग होम से बोल रही हूं। क्या आप यहां फौरन आ सकते हैं? जी डॉ० कमलपति बीमार हैं जी नहीं आप डॉ० कमलपति का इलाज नहीं करेंगे? हमारे थिएटर में एक आपरेशन बीच में रुक गया है जी? हर्निया का केस है जी, तो आप आ रहे हैं डॉक्टर थैंक यू डॉक्टर

(रिसीवर रखने की आवाज)

वारिजा — चाचा जी डाक्टर पुष्पवनम दो मिनट में आ रहे हैं। आप स्कूटर की मदद से अपने डॉक्टर साहब को उधर स्टोर वाले कमरे में ले जाइए।

चाचा — ऐसा ही करता हूं वारिजा। मैं डॉ० पुष्पवनम के सामने नहीं आऊंगा। तुम ही सारे मामले को ठीक से संभाल लो।

वारिजा — आप चिंता न कीजिए चाचा जी। आप उनके पास स्टोर में ही रहिए।

वारिजा — आइए डॉक्टर पुष्पवनम।

पुष्प — कमलपति कहां है?

वारिजा — उनसे बाद में मिल सकते हैं। पहले मरीज को एटेण्ड कीजिए।

पुष्प — डा० कमलपति को क्या हुआ?

वारिजा — दो-तीन दिनों में कई ऑपरेशन। खाने की भी फुर्सत नहीं थी। रात को भी नींद नहीं। थकावट से बेहोश हो गये — पेशेंट को भी अभी होश नहीं आया है।

पुष्प — ऑल राइट। यह पट्टी कैसी है?

वारिजा — मैंने बांधी थी।

पुष्प — रिमूव इट। शुरू करें? सब औजार तैयार हैं?

वारिजा	सब तैयार है डॉक्टर ।
पुष्प	गुड ! शुरू करें !
वारिजा	येस डॉक्टर !
पुष्प	या—चालीस मिनट इसमें लग गये हैं। देखो बैंडेज ठीक है न ? अब डॉक्टर कमलपति से मिलेंगे ?
वारिजा	डॉक्टर ! प्लीज यहां आइए !
पुष्प	क्या ? अभी डॉक्टर से नहीं मिलना है क्या ?
वारिजा	माफ कीजिए डॉक्टर ! बात यह है कि आपका इधर आना आपरेशन करना, जो कुछ भी किया है, वह सब बात डॉक्टर कमलपति को मालूम नहीं होनी चाहिए । इस ऑपरेशन की फीस मैं दूंगी डॉक्टर !
वारिजा	मैं कहूंगी मैंने खुद कर दिया !
पुष्प	विश्वास करेंगे क्या ?
वारिजा	जरूर विश्वास करेंगे । मैं खुद इस आपरेशन को कर सकती थी । ऐसी अच्छी ट्रेनिंग मेरे डॉक्टर ने मुझे दी है। तो भी मैं ठहरी एक नर्स, कहीं कुछ हो जाए तो डॉक्टर बदनाम हो जायेंगे न ? इसीलिए ।
पुष्प	इज़ इट ? वह डॉक्टर भाग्यशाली है जिसके साथ तुम काम करती हो वारिजा । अच्छा, मैं चलता हूं !
वारिजा	बहुत-बहुत धन्यवाद डॉक्टर । (गाड़ी के चलने की ध्वनि)
वारिजा	सोमू
सोमू	क्या है जी ?
वारिजा	उस मरीज़ को उठाकर बिस्तर पर लिटाना है ।
सोमू	जी !
चाचा	(आते हुए) वारिजा, पुष्पवनम चले गये क्या ?
वारिजा	जी, चले गये ।

चावा ऑपरेशन पचीदा तो नहीं था ?

वारिजा जी नहीं ! मैं अभी जाकर डॉक्टर को जगाऊंगी।

(अंतराल संगीत)

वारिजा डॉक्टर !

कमल (होश में आकर) हूं ह कौन ?

वारिजा मैं मैं वारिजा हूं डॉक्टर !

कमल ओह तुम हो क्या वक्त हुआ है ?

वारिजा ढाई बजा है !

कमल ओ माई गाड ! (उठकर चलते हुए) वारिजा—वह मरीज जो टेबिल पर था वह कहा है ?

वारिजा उसे बिस्तर पर लिटा दिया गया है ।

कमल बिस्तर पर। क्यों ? आपरेशन नहीं करना क्या ?

वारिजा ऑपरेशन हो चुका !

कमल किसने किया ?

वारिजा मैंने !

कमल (जूता की आवाज) अ अ सब ठीक है न ? वारिजा कन्सल्टिंग रूम में आओ ! (चलने की आवाज)

वारिजा जी !

कमल यहा बठो !

वारिजा काई बात है क्या डॉक्टर !

कमल नियमानुसार इस ऑपरेशन की फीस तुम्ही को मिलनी चाहिए ।

वारिजा मजाक तो नही कर रहे है डॉक्टर ?

कमल नहीं नहीं सच कह रहा हू ! इस मरीज स दो-सौ रुपये फीस मागी है न ? लेकिन मैं एक हजार रुपया तुम्हें दे रहा हू टेक इट

(कुछ कागज थमाने की आवाज)

वारिजा — मुझ रुपये नहीं चाहिए डॉक्टर !

कमल — अरे, चैक को मोड कर क्यों रख रही हो। देख तो लो, सब ठीक लिखा है या नहीं तारीख, [illegible] सब ठीक है या नहीं ?

वारिजा — (आश्चर्य से) डॉक्टर

कमल — क्या ? क्या बात है ?

वारिजा — इसमें डॉक्टर पुष्पवनम का नाम लिखा है

कमल — (हसकर) वारिजा, जब डाक्टर पुष्पवनम ने ऑपरेशन थियेटर में कदम रखा था मैं तभी होश में आ गया था, लेकिन ऑपरेशन करने की ताकत मुझ में नहीं थी। इसी लिए

वारिजा — माफ कीजिएगा डॉक्टर ! सब डक्टरों को फोन किया था लेकिन सिर्फ पुष्पवनम ही मिले थे।

कमल — तुमने ठीक ही किया। डरती क्या हो वारिजा ? मेरे और डॉक्टर पुष्पवनम के बीच मन-मुटाव हो सकता है, लेकिन यह तो जिन्दगी और मौत का सवाल है। कोई भी किसी की जान बचा सकता है। चैक जाकर उन्हें दे दो।

वारिजा — डॉक्टर एक कवरिंग लैटर भी दे दीजिए।

कमल — कवरिंग लटर क्या ?

वारिजा — यही, धन्यवाद देते हुए।

कमल — नहीं मैं उन्हें किस बात का धन्यवाद दू ? वे एक डॉक्टर हैं। उनका फर्ज ऑपरेशन करना है। उनकी मेहनत का पैसा मैं दे रहा हूँ। बस

वारिजा — मरीज से फीस तो दो-सौ ही ली है। लेकिन आप पुष्पवनम को एक हजार क्या दे रहे हैं ?

कमल — वह मरीज इससे ज्यादा नहीं दे सकता था। दूसरी बात यह है कि इस केस में जो पेचीदगी है, उसे मैं खूब समझता हूँ।

[library stamp, illegible]

उसके लिए उचित फीस देना मेरा फर्ज है । जाओ यह चक दे आओ ।

वारिजा	अच्छा डॉक्टर !
कमल	वारिजा !
वारिजा	• येस डॉक्टर ?
कमल	• पुष्पवनम से कहना कि डाक्टर कमलपति अगले चुनाव में प्रेजीडेंट पद का उम्मीदवार नहीं रहेगा ।
वारिजा	क्यों डाक्टर ?
कमल	(दुःख और क्रोध से) मैं किस मुह से वोट मांगू ? आई हैव कमिटेड ए सिन ! मैं पापी हू ! दिन म न पीने की कसम खाई थी लेकिन आज मैं शर्मिन्दा हू । मैं प्रेजीडेंट किस मुह से बन सकता हू । बताओ, वारिजा, कौन-सी सजा मुझे दी जाए ?
वारिजा	आप इतना महसूस करते है डॉक्टर, बस यही काफी है !
कमल	काफी नही है वारिजा, मुझे बडी सजा मिलनी चाहिए ।
वारिजा	तब एक काम कीजिए, प्रायश्चित्त के रूप मे
कमल	• हा बताओ
वारिजा	आगे शराब न पिए
कमल	एकदम छोड देना नामुमकिन है वारिजा ! आल-राइट, आगे से तीन दिन नही पिऊगा ! ठीक है न ?
वारिजा	आप ठीक समझते है, तो होगा

(अन्तराल संगीत)

चाचा	ओह ! तभी वह तीन दिन से ऊपर कमरे मे नहीं गया है !
वारिजा	हा चाचा जी वह अपने कसूर पर बहुत पछताये ! सजा के रूप मे मैंने सलाह दी कि शराब एकदम छोड दें । लेकिन उन्होंने कहा कि वह तीन दिन शराब नहीं पियेंगे ।
चाचा	वारिजा तुम उसे बदल सकती थी अगर तुम उसी दिन

उसकी इच्छा पूरी करने का निश्चय कर लेती । वह तुम्हें अपनी पत्नी बनाना चाहता है ।

वारिजा लेकिन, उनका कहना है कि मैं उस पर अंकुश लगाने वाली कौन हूं ?

चाचा तुम उससे शादी करके अपना हक जता सकती हो । उसे सुधार सकती हो । अभी तुमने तीन दिन शराब से अलग रखा है ।

वारिजा वह मेरी सफलता नहीं चाचा जी, उन्होंने खुद ही प्रतिज्ञा की थी ।

चाचा पीना एकदम बन्द करने की सलाह भी तो तुम्हीं ने दी थी। बेटी मेरा मन कहता है कि सिर्फ तुम ही उसे बदल सकती हो ।

वारिजा चाचा जी, अगर दूसरी बार प्रस्ताव रखा तो मैं स्वीकार कर लूंगी ।

(अंतराल संगीत, टेलीफोन की घंटी, नर्सिंग होम का वातावरण)

शीला हैलो कौन ? वारिजा मैं शीला बोल रही हूं। क्या ? हां, हां मैंने उसे उठाकर रख लिया है वारिजा एक बात तुम्हें मालूम है क्या ? वह पेट दर्द वाला मरीज मर गया सच तुम जरूर आओ

(रिसीवर रखने की आवाज)

चाचा कौन था शीला ?

शीला वारिजा का फोन था चाचा जी ! उस मरीज की मौत की खबर भी मैंने दे दी। उसे विश्वास नहीं हुआ । वह यहां आ रही है । (वक्फा) सोमू कहां जा रहे हो ।

सोमू सोडा और काजू लेने शीला सिस्टर (दबी आवाज में) वे लोग रो रहे हैं ।

शीला (उत्सुकता से) कौन ?

सोमू — मरे हुए मरीज के रिश्तदार

चाचा — (तञ्ज से) फिर क्या हुसगे ?

शीला — वह देखिए वारिजा आ रही है !

(चलने की आवाज पास आती है।)

शीला — क्या वारिजा बाहर ही खडी रहेगी क्या ?

वारिजा — पहले मैं डॉक्टर से मिल कर आऊगी। (फेड आउट)

कमल — (आवाज देते हुए) कौन है ?

वारिजा — मैं हू डाक्टर . . . !

कमल — तुम वारिजा ! मै जानता था तुम आओगी !

वारिजा — आपको कैसे मालूम ? शीला ने बताया ?

कमल — शीला क्यो ? मैं खुद जानता था कि एक दिन तुम आओगी और मेरा प्रेम स्वीकार करोगी।

वारिजा — (बदले हुए लहजे में) मै अब उसके लिए नहीं आई हू !

कमल — फिर ?

वारिजा — वह मरीज . . .

कमल — (लापरवाही से) जीवन क्षण भगुर है।

वारिजा — (दबे स्वर में) हमारे नर्सिंग होम मे यह पहली मौत है। आपकी पहली पराजय . . . !

कमल — (हसते हुए) शायद यह शुरुआत है !

वारिजा — (खीजकर) डॉक्टर होकर इतनी लापरवाही से बात कर रहे हैं ?

कमल — (लापरवाही से) डॉक्टर सिर्फ इलाज कर सकता है। मरे हुओ के लिए रोना उसका काम नहीं।

वारिजा — आह, आपका हृदय पत्थर का तो नही ?

कमल — (बात काटते हुए) वारिजा, हृदय कमजोर रहा तो कोई भी डॉक्टर मजरीम कामयाब नहीं हो सकता !

वारिजा — (हिचकते हुए) एक दिन आपने मुझसे कहा था कि आप मुझसे प्यार करते हैं।

कमल — मैं अभी भी तुम्हें प्यार करता हूं वारिजा।

वारिजा — (भावुक होकर) उस दिन अगर आप अपना प्यार न जताते तो अगले दिन मैं जाहिर कर देती। इस नर्सिंग होम में ही मेरे मन में प्यार के बीज पड़े हैं लेकिन मुझमें इतना साहस नहीं कि मैं अपना प्यार जता सकूं। (रुककर) कहा मैं, कहा आप। लेकिन मैं चाहती थी आप पीना छोड़ दें और सर्जरी के काम में दुनिया भर में मशहूर हो जाएं। इसमें मेरा निजी स्वार्थ भी कुछ कम नहीं था। मैं एक मन से तन मन कर जीवन-भर आपके काम में हाथ बटाना चाहती थी। लेकिन आज आपके नर्सिंग होम में मैं आखिरी बार आई हूं। कल से भूलकर भी यहां कदम नहीं रखूंगी। अच्छा तो अब मैं जाऊं।

कमल — जैसी तुम्हारी मर्जी। चाचाजी को बता दो और अपनी तनख्वाह ले जाओ।

वारिजा — (दुःख से) ओह—एकदम हिसाब खत्म करना चाहते हैं ठीक है। मैं जाती हूं (रोती हुई जाती है।)

(अन्तराल-संगीत)

सोमू — सर, डॉक्टर पुष्पवनम आपका इन्तजार कर रहे हैं।

कमल — डॉ० पुष्पवनम? क्यों, क्या बात है?

सोमू — मालूम नहीं।

कमल — अच्छा!

(तभी दरवाजा खुलने और बंद होने की आवाज)

पुष्प — गुड मार्निंग डाक्टर!

कमल — गुड मार्निंग भई। इनके लिए दो कॉफी

पुष्प — (बात काट कर) धन्यवाद, हम अभी पीकर आये हैं

कमल — मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?

पुष्प — आप अभी तक नाराज हैं ?

कमल — नहीं तो बैठिए ।

पुष्प — थैंक यू याद है कल आपने एक ऑपरेशन किया था ।

कमल — एक नहीं तीन ऑपरेशन ।

पुष्प — तीनों मरीज अच्छे हैं क्या ?

कमल — एक चल बसा ।

पुष्प — वह क्यों मरा ?

कमल — मरने से पहले उसने वजह नहीं बताई ।

पुष्प — (उत्तेजित होकर) मैं आपको बताना चाहता हूं कि आपने ही उसे मार डाला है।

कमल — क्या कह रहे हैं ?

पुष्प — शराब पीकर ऑपरेशन किया उसका नतीजा मरीज ने भुगता ।

कमल — डॉक्टर पुष्पवनम ! आपको मुझसे नफरत होगी, लेकिन मेरे पेशे की निन्दा मत कीजिए ! मुझे बदनाम करने की कोशिश मत कीजिए । इससे हमारे पेशे को बड़ा नुकसान होगा ।

पुष्प — मैं आज फिर दोहराता हूं डॉक्टर कमलपति कि मैं आपसे दुश्मनी रखते हुए भी आपका हितैषी हूं। आप पीते हैं ?

कमल — मगर रात के समय ।

पुष्प — करीब छह महीने पहले एक बार दिन में पीकर आप ऑपरेशन थियेटर में लड़खड़ा कर बेहोश हो गये थे और उस अधूरे ऑपरेशन को मैंने ही पूरा किया था। मामले को दबाने के लिए एक हजार का जो चैक आपने दिया वह आज भी मेरे पास है ।

कमल — एक हजार का जो चैक दिया था वह मामले को दबाने के लिए नहीं । वह आपकी योग्यता का इनाम था। उस दिन के बाद मैंने दिन में पीना बन्द कर दिया।

पुष्प : इस बात का कोई गवाह है कि कल ऑपरेशन करते वक्त आप होश में थे ?

कमल : गवाह मेरी नर्स है।

पुष्प : कौन-सी नर्स ?

कमल : वारिजा।

पुष्प : लेकिन वह कुछ कहने की हालत में नहीं है।

कमल : मतलब ?

पुष्प : कल रात यहां से जो बाहर निकली तो बस की चपेट में आ गई। मेरे अस्पताल में बेहोश पड़ी है।

कमल : (आश्चर्य से) क्या कहा ? इतनी गम्भीर बात को इतना छोटा बनाकर कह रहे हो ? मैं पहले उससे मिलूंगा।

पुष्प : जैसी आपकी मर्जी !

(कार चलने की आवाज के साथ अन्तराल संगीत—नर्सिंग होम का वातावरण)

पुष्प : (आवाज देते हुए) वारिजा मिस वारिजा आंखें खोलकर देखो ! डॉक्टर कमलपति आये हैं ! (वक्फा) अभी भी बेहोश है।

कमल : वारिजा यह तो हिलती तक नहीं

पुष्प : सारे शरीर पर भारी चोटें लगी हैं। मैं पट्टी बांध रहा था, तब भी वह हिली नहीं। आप चाहें तो इसे अपने नर्सिंग होम में ले जा सकते हैं।

कमल : नहीं, आपकी योग्यता पर मुझे विश्वास है डॉक्टर पुष्पवनम।

पुष्प : थैंक यू। (वक्फा) आज बुधवार है न ? अगले बुधवार तक वारिजा होश में आ जायेगी। अगर तब वह गवाही दे दे कि उस दिन, जब आपने ऑपरेशन किया था आप नशे में नहीं थे, तो मैं आपको छोड़ दूंगा। अगर उसने आपके खिलाफ गवाही दी, या उसे कुछ हो गया तो मैं आपके खिलाफ

मेडिकल काउंसिल में रिपोर्ट दायर कर दूंगा। पुलिस को भी खबर कर दूंगा

कमल (आहिस्ता से) एक दो दिन में वारिजा होश में आ जायेगी। अच्छा तो मैं अब चलता हूं।

(अंतराल संगीत)

शीला सामू, कहां से आ रहे हो?

सोमू सिस्टर वारिजा को देखने गया था।

शीला कैसी है? बोलती है?

सोमू नहीं। वैसे ही चुप लेटी है।

शीला (उदास स्वर में) आज आठवां दिन है, मगर हालत सुधरी नहीं। डॉक्टर ने आज कुछ खाया?

सोमू नहीं सिस्टर। तीन दिन से सिर्फ काफी पर हैं। इन दिनों काम भी ज्यादा है। आज बहुत थक गये हैं।

शीला हां, मैंने भी देखा है। आज बहुत धीरे धीरे सीढ़ी चढ़ कर ऊपर जा रहे थे।

सोमू क्या डॉक्टर ऊपर गये हैं?

शीला वारिजा के बारे में पुष्पवनम से बातें कीं और ऊपर चले गये।

सोमू चाचा जी आ रहे हैं। (पैरों के चलने की आहट)

शीला गुड ईवनिंग चाचा जी!

चाचा गुड ईवनिंग!

शीला वारिजा की हालत सुधरी नहीं चाचा जी!

चाचा मैंने भी सुना है। डॉक्टर कहां हैं?

शीला ऊपर!

चाचा आज मैं ऊपर चला गया (सीढ़ियों पर चढ़ने की आवाज)

कमल	कौन ?
चाचा	(हाफते हुए) मैं हू ।
कमल	(आश्चर्य से) चाचा जी आप ?
चाचा	आज पहली बार मैं तेरे कमरे में आया हू । (कुछ याद दिलाते हुए) याद है आज कौन-सा दिन है ?
कमल	: बुधवार ।
चाचा	क क कल तुम्हारी शिकायत होने वाली है ?
कमल	(निश्चिन्त-सा) हा ।
चाचा	(उत्तेजित और दुखी) फिर भी बेफिक्री मे पी रहे हो । मैंने चाहा था कि सब तुम्हारी तारीफ करें, लेकिन तुमने मुझे पराजित कर दिया। तुम्हारे लिए मैंने कितने कष्ट उठाये, लेकिन तुम्हें इस बात की कोई चिंता नही (टूटे हुए लहजे मे) तुम्हें बदनाम होते हुए मैं नही देख सकता। मैं कही चला जाता हू, तुम पीते रहना।
कमल	(उत्तेजित सा) चाचा जी ।
चाचा	(गुस्से मे) अब कोई चाचा नही, काका नही, मैं जा रहा हू

(जल्दी जल्दी सीढिया उतरने की आवाज)

कमल	(अपने आप ठण्डी सास लेकर) जाने दो, जाने वाले का कोई नही रोक सकता ।

(बोतल की खनक, नशे का वातावरण और उसमे कल्पित स्वर)

वारिजा की आवाज	डॉक्टर, अब मै इस नर्सिंग होम मे नही आऊगी
पुष्पवनम की आवाज	आपने नशे मे ऑपरेशन किया था। इसलिए एक जान उठ गई। आपकी ही वजह से वह मरा था ।
चाचा की आवाज	अब कोई चाचा नही, काका नही ।

(आवाजें उभरती है ।)

वारिजा — उस दिन अगर आप अपना प्यार न जताते तो अगले दिन मैं अपना प्यार जता देती मैं नहीं आऊँगी !

पुरुष — मेडिकल कौंसिल में रिपोर्ट दायर कर दूगा तुमने नशे में जान ली है !

चाचा — सब पर पानी फिर गया मैंने चाहा था, सब तुम्हारी तारीफ करें

(आवाजें एकदम उभरती हैं ।)

आवाज — पियक्कड़ नशेबाज हत्यारा डॉक्टर कमलपति मरीज को मार डाला

(आवाज उभर कर फेड होने लगती है, तभी डॉक्टर कमलपति की उत्तेजित आवाज उभरती है ।)

कमल — (जोर से) नहीं, नहीं मैंने नहीं पी थी ! ऑपरेशन करते वक्त मैं—मैं होश मे था !

आवाज — हा हा हा—बोतलो के बीच बैठे शराब पी रहे थे न ?

कमल — (गुस्से मे) पीता हू पिऊगा, खूब नशा करूगा या इसी से बदनाम इसी की वजह से वारिजा बिछुड गई चाचा जी छोड कर चले गये ये बोतल, अब देख मैं तेरी कैसी गत बनाता हू !

(बोतलें फेंकने की आवाज, बोतलो के टूटने का शोर)

बाकी वारिजा के सामने चूर-चूर कर दूगा वारिजा मैं अब कभी नहीं पिऊगा मैं तुम्हारे पास आ रहा हू

(जल्दी-जल्दी सीढ़ियां उतरने की आवाज के साथ ही अतराल-संगीत—नर्सिंग होम का वातावरण)

पुरुष — आइए डॉक्टर कमलपति !

कमल — (उत्तेजित स्वर मे) वारिजा वारिजा मैं अब नहीं पिऊगा ।

(दृढ़ स्वर मे) मैं अब कभी नही पिऊगा। मैंने सारी बोतलें तोड डाली है

पुष्प यह क्या पागलपन है ?

कमल टूटने दो (बोतल टूटने की आवाज) सिर फट गया या बोतल

पुष्प डॉक्टर कमलपति यह क्या पागलपन है ?

(दूसरी बोतल टूटने की आवाज के साथ डॉक्टर कमलपति की चीख, फिर कराह)

कमल (कराह कर) तोड डाली ।

पुष्प (घबराकर) डॉक्टर को सम्भालो नस दवा पटटी जल्दी लाओ। डॉक्टर डॉक्टर कमलपति ।

कमल (घायल की-सी आवाज में) कौन ?

पुष्प नर्स पहले खून बद करो ।

कमल (कुछ याद करते हुए) मैं अभी भी जिंदा हू ?

पुष्प (धीरज बधाते हुए) कुछ नही, सिर पर चोट लगी है ।

कमल डॉक्टर पुष्पवनम ।

पुष्प जी, डॉक्टर कमलपति ।

कमल मैंने पी नहीं थी, पूरे होश मे ऑपरेशन किया था।

पुष्प मैं जानता हू ।

कमल कैसे ?

पुष्प वारिजा ने बताया ।

कमल (ताज्जुब से) वारिजा ! अब कहा है ?

पुष्प दोपहर के बाद होश मे आई थी। करीब एक घटा बात करती रही फिर बेहोश हो गई। (वक्फा) डॉक्टर कमलपति उस दिन एसोसिएशन मे आपकी शिकायत और पुलिस मे रिपोट की जो बात हो रही थी वह सब आपके पीने

	के रास्ता थी। आप शराब छोड़ दें, हम सब यही चाहते थे। लेकिन यह सब सुन किस ने किया किसी से।
चाचा	(बीच मे बात काटते हुए) कमलपति सब मने ही कराया था। तुम्हें बुलाकर नाटक की हिम्मत मुझ में नहीं थी, इसलिए मैंने डॉक्टर पुष्पकाम की मदद ली। ऐसे पुष्पकाम कमलापति बेहोश हो गया।
वारिजा	चाचा जी, इधर कौन लेटे हैं? डॉक्टर कमलापति तो नहीं?
चाचा	हा बेटी वही है।
वारिजा	क्या?
पुष्प	वह सो रहे हैं वारिजा।
वारिजा	सो रहे हैं तो जगाइए। ऑपरेशन के लिए देर हो रही है।
पुष्प	नहीं वारिजा। दिन भर काम मे चूर होकर, शाम को शराब मे डूबने के कारण थक गये हैं। आराम से सोने दो। कल वह एक नए आदमी बनेंगे और एक नई जिन्दगी के राहगीर।
वारिजा	तो सोने दीजिए। अच्छी तरह सोने दीजिए। (धीमे स्वर मे, प्यार से) सर, आपको छोड़कर नहीं जाऊगी, कभी नहीं जाऊगी।

(अतराल—सगीत)

(टेलीफोन की घटी की आवाज)

सोमू	(तद्रा मे, स्वगत) यह कौन इतनी रात गये फोन कर रहा है? ओह घटी बजे ही जा रही है। (रिसीवर उठाने की आवाज) हेलो हा मैं डॉक्टर कमलापति के घर से बोल रहा हूं क्या काम है उनसे? क्या कहा सीने में दर्द है? तो गरम आटे से सेंक लो न? छोटी सी तकलीफ के लिए क्यो डॉक्टर साहब की नीद हराम करते हो? क्या? अरे कह दिया न डॉक्टर सो रहे हैं

कमल (आते हुए) अरे सामू कौन है फोन पर ?

सोमू (जल्दी से) ओह डॉक्टर साहब आप जाग गये। यह कोई मरीज है ! सीने में दर्द बताता है और आपको अपने यहा तुरत बुलाना चाहता है । मैंने कह दिया कि गर्म आटे से सेंक लो ।

कमल (गुस्से से) तुमने यह क्यों कहा ? डॉक्टर मैं हू या तुम ? लाओ (फोन पर) हैलो, मैं डॉ० कमलपति बोल रहा हू । क्या तकलीफ है क्या कहा सीने में बहुत दर्द है ? घबराइए नही मैं अभी आपके यहा पहुचता हू ! आप अपने घर का पता बताइए अरे आप मेरे कष्ट की क्यों चिंता करते है ? हा-हा मैं सो रहा था, लेकिन अब जाग रहा हू । आप जल्दी स अपने घर का पता बताइए ताकि क्या मैंने कभी कहा था कि मंदिरा के दरवाजे भी निश्चित समय पर ही खुले रहते है ? (चौंककर) अरे डॉक्टर पुष्पवनम तो आप मरीज का रोल अदा कर रहे है आप मेरी परीक्षा ले रहे हैं कि मैं रात को मरीजो का इलाज करता हू कि नही । सुनिए डॉक्टर पुष्पवनम देव मंदिर के दरवाजे बद रह सकते हैं, लेकिन कमलपति के नर्सिंग होम के दरवाजे हमेशा खुले रहेंगे । चाहे दिन हो या रात ! □

(समापन संगीत)

मूल तमिल श्रीरंगम नरसिंहन

रूपांतरकार श्री वी० आर० चन्द्रशेखरन